

A
riptiv C t Ic
M u cript

Bhatt rkiy Gr th Bh ndar
NAGAUR

By :
Dr. P. C. Jain

Centre for Jain Studies
UNIVERSITY OF RAJASTHAN, JAIPUR

1981

Published by :

Director,

Centre for Jain Studies

University of Rajasthan

Copies can be had direct from the Centre for Jain Studies
University of Rajasthan, Jaipur-4 [India]

Price Rs. 45.00

Printed at :

Kapoor Art Printers, Jaipur-3

For word

Dr. P. C. Jain is already known to the Jain scholars through the publication of his first Volume of the Five-volume project on the Descriptive Catalogue of the Manuscripts collected in the Bhattarakiya Granth Bhandar, Nagaur. This collection is rich numerically as well as qualitatively. It contains 30,000 manuscripts in Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Rajasthani, Hindi, Marathi and Gujarati languages. Some of these manuscripts belong to the 12th Century A. D. Others not so old belong to the succeeding centuries including the 19th. History of Indian literature will not be complete without taking notice of innumerable manuscripts which are still uncatalogued and hidden from the scholars' view. Rajasthan is specially rich in Jain manuscripts as this state has always been a citadel of Jainism for the long past. The manuscripts of Nagaur Bhandar relate to various subjects including the Agamas, Ayurveda, Subhasitas, tales, poems, dictionaries, **Carita**-literature, rhetorics, prosody, astrology, astronomy, logic, drama, music, Puranas, Tantra, Yoga, grammar, **vratas**, **Stotras**, **Mahatmya** etc. Some of these manuscripts are illustrated with beautiful paintings. In fact, the vast literature produced in medieval India reveals the nature and form of intellectual and creative activity and spiritual movement of the Indians. Much of what is contained in the **stotras**, **vratas**, **Mahatmyas** and the kindred literature manifests the living religion and culture of India gleaned through these works. This Bhandara has old manuscripts of known and published works. Such as the Samayasara of Acharya Kundakunda and more importantly it has some manuscripts, say about 150, which are not known to the scholarly world. In my trips abroad in recent years I found a growing interest in the rich treasure of the manuscripts which India possesses and which are still lying uncared for in the different Bhandaras. Jainas did not have a sectarian outlook in developing collections of the manuscripts. The catholic outlook of this community and its Saints has been mainly responsible in organising a broad-based collection of the manuscripts. While Jainism in its origin patronised the Prakrit, it

remains an historical fact that it extended full support to Sanskrit considered by some to be the language of the Brahmins and the Brahmanical or Vedic culture. Some of the great works were not only written in Sanskrit by the Jainas, many others were preserved and commented upon by them. Mallinatha who commented upon the works of Kalidasa and Bharavi is the shining example of this catholic tradition and patronage of the Sanskrit language and literature by the Jainas.

I need not commend this volume to the scholars, I should however be permitted to state very briefly some facts. This volume contains entries of 2,000 manuscripts. Each manuscript is serially numbered and is followed by the necessary details of the title, author, commentator, if any, number of folios, script, language, probable date, beginning and end of the work and remarks wherever necessary. Various appendices will be found useful by the researchers, more particularly the appendix giving the list of rare manuscripts.

After publication of the five volumes of this project, the Centre would promote cataloguing of the manuscripts in other Bhandaras in Rajasthan. The complete project is quite ambitious as it also aims at the publication of important manuscripts found in the Jain Bhandaras in Rajasthan. How long will it take for us is a matter of guess for me too. But I believe and trust the words of Bhavabhuti. “कालो ह्ययं निरवधि” :

Dated 14-6-81

R. C. Dwivedi
Dean, faculty of Arts &
Director, Centre for Jain Studies,
University of Rajasthan, Jaipur

विषय-सूची

प्रस्तावना :—

I—xxx

ग्रन्थों के लिखने की परम्परा का विकास, लेखन सामग्री का उपयोग, पुस्तकों के प्रकार, उपलब्ध एक हजार वर्ष के ग्रन्थों में प्रयुक्त लेखन सामग्री—लिप्यासन, ताड़पत्र, कागज, कागज के पत्र काटना, घुटाई, कपड़ा, काष्ठ पट्टिका, लेखनी, प्रकार, ओलिया, स्याही तथा उसके प्रकार—काली स्याही, एवं रूपहली स्याही, लाल स्याही, लेखक, लेखक के गुण, ग्रन्थों का रख रखाव, राजस्थान के प्रमुख ग्रन्थ-भण्डार, ग्रन्थ-सूचियों की अनुसंधान एवं इतिहास लेखन में उपयोगिता, नागौर का ऐतिहासिक परिचय, ग्रन्थ-भण्डार की स्थापना एवं विकास, भट्टारक परम्परा, ग्रन्थ के सम्बन्ध में, आभार आदि ।

अध्यात्म, आगम, सिद्धान्त एवं चर्चा	१-२८
आयुर्वेद	२९-३३
उपदेश एवं सुभाषितावली	३४-३६
कथा—	३७-५२
काव्य—	५३-६७
कोश—	६८-७१
चरित्र—	७२-८२
विचित्र ग्रन्थ	८३-८८
छन्द एवं अलंकार	८९-१०२
ज्योतिष	१०३-११६
न्याय शास्त्र	११७-११८
नाटक एवं संगीत	१२०-१२१
नीतिशास्त्र	१२२-१२३
पुराण	१२४-१३०
पूजा एवं स्तोत्र	१३१-१६२
मन्त्र एवं यन्त्र	१६३-१६६
योग	१६७-१६८
व्याकरण	१७०-१७६

व्रत-विधान	१८०-१८३
लोक विज्ञान	१८४-१८५
श्रावकाचार और	१८६-१९७
अवशिष्ट साहित्य	१९८-२०३

परिशिष्ट—

(i) अज्ञात एवं अप्रकाशित ग्रन्थों की नामावली	१९८-२०८
(ii) ग्रन्थानुक्रमणिका	२०९-२४६
(iii) ग्रन्थकारानुक्रमणिका	२४७-२६६

स्ताव 1

ग्रन्थों के लिखने की परम्परा का विकास

प्राचीन काल में लेखनकला का प्रचलन नहीं था। लोगों की स्मृति इतनी तीव्र थी कि उन्हें कभी इसकी आवश्यकता ही नहीं पड़ी। शिक्षा पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से ही दी जाती थी। शिक्षा की यह परम्परा केवल जैनों तक ही सीमित नहीं थी अपितु जैनेतर समाज में भी यही परम्परा प्रचलित थी।

यही कारण है कि समस्त वैदिक वाङ्मय प्रारम्भ से ही मौखिक रूप से ही चला आ रहा था। विद्यार्थियों की स्मरणशक्ति इतनी तीव्र थी कि वे उच्चारण तक में बिना अशुद्धि किये पूरी वैदिक ऋचाओं को स्मरण कर लेते थे। इसी परम्परा के कारण वेदों को श्रुति भी कहा गया है।

जैन मान्यता है कि तीर्थंकरों द्वारा प्रतिपादित उपदेश मौखिक रूप से ही दिये गये थे। यद्यपि प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ ने हजारों लाखों वर्ष पूर्व ब्राह्मी लिपि का आविष्कार कर दिया था। लेकिन महावीर तक मौखिक परम्परा ही चलती रही।

भगवान् महावीर के निर्वाण के पश्चात् जब समूचे आगम साहित्य को मौखिक रूप से स्मरण नहीं किया जा सका तो आगम साहित्य को लिपिबद्ध करके सुरक्षित रखने के लिये विभिन्न नगरों में सभायें आयोजित की जाती रहीं। दिगम्बर सम्प्रदाय के अनुसार भूतवली पुष्पदन्त ने अवशिष्ट आगम साहित्य को लिपिबद्ध किया। जब कि श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार अतिस वाचना देवर्द्धिगणि क्षमाक्षमण की अध्यक्षता में वीर निर्वाण सम्बत् ६८० में बल्लभी में समस्त आगमों को लिपिबद्ध किया गया। उसके बाद ग्रन्थों को लिपिबद्ध करने की परम्परा में अधिकाधिक विकास हुआ। इसके पूर्व भी कथंचित् आगम लिखाने का उल्लेख सम्राट् खारवेल के उल्लेख में पाया जाता है। अनुयोग-द्वार सूत्र में पुस्तक पत्रारूढ श्रुत को द्रव्य-श्रुत माना है।^१

बल्लभी वाचना के पश्चात् तो मौखिक ज्ञान को लिपिबद्ध करने की होड़ सी लग गयी। यही नहीं, नये-नये ग्रन्थों का निर्माण किया जाने लगा। ग्रन्थों को लिखने, लिखवाने पढ़ने एवं सुनने में महान् पुण्य की प्राप्ति मानी जाने लगी।

श्रुतज्ञान की अभिवृद्धि में जैनाचार्यों, भट्टारकों, मुनियों एवं श्रावकों ने सविशेष योगदान दिया। हरिभद्र सूरि ने “योग-दृष्टि समुच्चय” में, “लेखना पूजना दानं” द्वारा पुस्तक, लेखन को योगभूमिका का अंग बतलाया है। “वद्धमान कहा” में पुस्तकलेखन के महत्त्व को इस प्रकार बतलाया है—

१ — “से किं तं जाणयसरीर-भवीयसरीरवइरित्तं ? दव्वसुयं पत्तयपोत्थयलिहि ।” पत्र-३४-१

एहु सत्थु जो लिहइ लिहावइ, पढ़इ पढ़ावइ कहइ कहावइ ।
जो एरु एगारि एहुं मरिण भावइ, पुणह अहिउ पुण्यफल व पावइ ॥

इसी तरह “उपदेश-तरंगिणी” में ग्रन्थों के लिखने, लिखवाने, सुनने एवं रक्षा करने को निर्वाण का कारण बतलाया है—

ये लेखयन्ति जिनशासनं पुस्तकानि, व्याख्यानयन्ति च पठन्ति च पाठयन्ति ।
श्रवणन्ति रक्षणविधौ च समाद्रयन्ते, ते देव मर्त्यशिवशर्म नरा लभन्ते ॥

कुछ समय पश्चात् तो ग्रन्थों के अन्त में लिखी हुई प्रशस्तियों में पुस्तक-लेखन के महत्त्व का वर्णन किया जाने लगा—

ये लेखयन्ति सकलं सुधियोऽनुयोगं शब्दानुशासनमशेषमलंकृतीश्च ।
छन्दांसि शास्त्रमपरं च परोपकारसम्पादनैकनिपुणाः पुरुषोत्तमास्ते ॥६४॥

किं किं तैर्न न किं विवर्षितं दान-प्रदत्तं न किं ।
के वाऽऽपन्ननिवारिता तनुमतां मोहार्णवे मज्जताम् ॥६५॥

नो पुण्यं किमुपार्जितं किमु यशस्तारं न विस्तारितं ।
सत्कल्याणकलापकारणमिदं यैः शासनं लेखितम् ॥

इस प्रकार हस्तलिखित ग्रन्थों की पुष्पिकाओं तथा कुमारपाल प्रबन्ध, वस्तुपाल चरित्र, प्रभावक चरित्र, सुकृतमागर महाकाव्य, उपदेश तरंगिणी, कर्मचन्द्र आदि अनेकों रास एवं ऐतिहासिक चरित्रों में नमृद्ध श्रावकों द्वारा लाखों करोड़ों के सद्व्यय से ज्ञान-कोश लिखवाने तथा प्रचारित करने के विशुद्ध उल्लेख पाये जाते हैं । शिलालेखों की भांति ही ग्रन्थ-लेखन-पुष्पिकाओं का बड़ा भारी ऐतिहासिक महत्त्व है । जैन राजाओं, मन्त्रियों एवं धनाढ्य श्रावकों के सत्कार्यों की विरुदावली में लिखी हुई प्रशस्तियां भी किसी खण्ड काव्य से कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं । गुर्जरेश्वर सिद्धराज, जयसिंह और कुमारपालदेव ने बहुत बड़े परिमाण में शास्त्रों की ताड़पत्रीय प्रतियां स्वर्णाक्षरी व सचित्रादि तक लिखवायीं थीं । यह परम्परा न केवल जैन नरपति श्रावक-वर्ग में ही थी अपितु श्री जिनचन्द्र सूरि का अकबर द्वारा “युग-प्रधान” पद देने पर बीकानेर के महाराजा रायसिंह, कुंवर दलपतसिंह आदि द्वारा भी संख्याबद्ध प्रतियां लिखवाकर भेंट करने के उल्लेख मिलते हैं । एवं इन ग्रन्थों की प्रशस्तियों में बीकानेर, सम्भात आदि के ज्ञान-भण्डारों में ग्रन्थ स्थापित करने के विशद वर्णन पाये जाते हैं ।

जैन श्रावकों ने अपने गुरुओं के उपदेश से बड़े-बड़े शास्त्र-भण्डार स्थापित किये हैं । भगवती सूत्र श्रवण करने समय गौतम-स्वामी के ३६ हजार प्रश्नों पर स्वर्ण मुद्रायें चढ़ाने का पैगुमाह, मोती नंशामसिंह आदि का एवं ३६ हजार मोती चढ़ाने का वर्णन मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्र के चरित्र में भी पाया जाता है । उन मोतियों के बने हुए चार-चार सौ वर्ष प्राचीन चन्दया पुत्रिया आदि आज भी बीकानेर के बड़े उपाश्रय में विद्यमान हैं । जिनचन्द्र सूरि के उपदेश के जैनमंथन, पाटला, सम्भात, जानौर, नागौर आदि स्थानों में शास्त्र-भण्डार स्थापित होने का वर्णन उपाध्याय मन्मथसुन्दर गणित कृत “वस्तुपञ्चा” ग्रन्थ में भी पाया जाता है । धरणा-

शाह मण्डन, धनराज और पेशवाह, पर्वत कान्हा, थारुशाह आदि ने ज्ञान-भण्डार स्थापित करने में अपनी-अपनी लक्ष्मी को मुक्त हस्त से व्यय किया था। थारुशाह का भण्डार आज भी जैसलमेर में विद्यमान है। जैन ज्ञान-भण्डारों में बिना किसी धार्मिक भेद-भाव के ग्रन्थ संग्रहीत किये जाने लगे। यही कारण है कि कितने ही जैनतर ग्रन्थों की पाण्डुलिपियां तो केवल जैन-ग्रन्थागारों में ही उपलब्ध होती हैं।

राजस्थान के जैन मन्दिरों में उपलब्ध एवं प्रतिष्ठापित ग्रन्थ संग्रहालय भारतीय संस्कृति एवं विशेषतः जैन-साहित्य एवं संस्कृति के प्रमुख केन्द्र हैं। राजस्थान में ऐसे ग्रन्थ भण्डारों की संख्या सैकड़ों में हैं और उनमें संग्रहीत पाण्डुलिपियों की संख्या तो लाखों में है। राजस्थान के इन भण्डारों में पाँच लाख से भी अधिक ग्रन्थों का संग्रह उपलब्ध होता है। ये शास्त्र भण्डार प्रत्येक गांव एवं नगर में जहाँ भी मन्दिर हैं, स्थापित हैं, और भारतीय वाङ्मय को सुरक्षित रखने का दायित्व लिये हुए हैं। ऐसे स्थानों में जयपुर, नागौर, जैसलमेर, बीकानेर, उदयपुर, कोटा, बून्दी, भरतपुर, अजमेर आदि नगरों के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं। वास्तव में इन ज्ञान-भण्डारों ने साहित्य की सैकड़ों अमूल्य निधियों को नष्ट होने से बचा लिया। अकेले जैसलमेर के ज्ञान-भण्डार को देखकर कर्नल टॉड, डा० व्यूहलर, डा० जैकोबी जैसे पाश्चात्य विद्वान् एवं भण्डारकर, दलाल जैसे भारतीय विद्वान् आश्चर्य चकित रह गये थे, और उन्हें ऐसा अनुभव होने लगा था कि मानों उनकी वर्षों की साधना पूरी हो गयी हो। मेरा मानना है कि यदि उक्त विद्वानों को उस समय नागौर, अजमेर एवं जयपुर के ग्रन्थ-भण्डारों को भी देखने का सौभाग्य मिल जाता तो सम्भवतः उनकी साहित्यिक धरोहर को देखकर नाँच उठने और फिर न जाने जैनाचार्यों की साहित्यिक सेवाओं पर कितनी श्रद्धा-जलियां अर्पित करते। स्वयं लेखक को राजस्थान के पचासों ग्रन्थ-भण्डारों को देखने का अवसर प्राप्त हुआ है। वास्तव में मुस्लिम युग में धर्मान्ध शासकों द्वारा इन शास्त्र-भण्डारों का विनाश नहीं किया होता अथवा हमारी स्वयं की लापरवाही से सैकड़ों, हजारों ग्रन्थ चूहों, दीमकों एवं सीलन में नष्ट नहीं हुए होते तो पता नहीं आज कितनी अधिक संख्या में इन भण्डारों में पाण्डुलिपियां होती। फिर भी जो कुछ आज अवशिष्ट हैं वही हमारे अतीत पर पर्याप्त प्रकाश डालती हैं, और उसी पर हम गर्व कर सकते हैं।

लेखन सामग्री का उपयोग

प्राचीनकाल में पुस्तकें किस प्रकार लिखी जाती थी ? और लिखने के लिए किन-किन साधनों का उपयोग होता था ? इन्हीं सब बातों पर विचार करने से पूर्व, ग्रन्थ किस-किस प्रकार के होते थे ? यह जानकारी देना अधिक उपयुक्त होगा।

जैसे आजकल पुस्तकों के बारे में रॉयल, मुपर रॉयल, डेमी, क्राउन आदि अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उसी तरह प्राचीनकाल में अमुक आकार और प्रकार में लिखी जाने वाली पुस्तकों के लिए कुछ विशिष्ट शब्द प्रयुक्त होते थे। इन बारे में जैन-भाष्यकार, चूल्हिकार और टीकाकार जो जानकारी देते हैं वह जानने योग्य है—

प्राचीनकाल में विविध आकार-प्रकार की पुस्तकें होने के उल्लेख दशकालिक सूत्र की हरिभद्रीय टीका^१, निशीथ चूर्णि^२, बृहत्कल्प सूत्र वृत्ति^३ आदि में पाये जाते हैं। इनके अनुसार पुस्तकों के पाँच प्रकार थे—^४

गण्डी, कच्छपी, मुष्टि, संपुट तथा छेदपाटी। इनका संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है—

१. गण्डी पुस्तक—जो पुस्तक चौड़ाई और मोटाई में समान हो किन्तु विविध लम्बाई वाली ताड़पत्रीय पुस्तक को गण्डी पुस्तक कहते हैं। गण्डी शब्द का अर्थ कतली होता है, अर्थात् जो पुस्तक गण्डिका अर्थात् कतली जैसी हो, गण्डी-पुस्तक कही जाती है। आजकल जो छोटी-मोटी ताड़पत्रीय पुस्तक मिलती है उसको, एवं इसी पद्धति में लिखे कागज के ग्रन्थों को भी गण्डी-पुस्तक कहा जाता है।

२. कच्छपी पुस्तक—जो पुस्तक दोनों तरफ के छोरों में पतली हो तथा मध्य में कछुए की भांति मोटी हो, उसे कच्छपी पुस्तक कहते हैं। इस प्रकार की पुस्तकें इस समय देखने में नहीं आ रही हैं।

१ —“गण्डी कच्छवि मुट्ठि, संपुडफलए तहा छिवाडी य। एय पुत्थयपणयं, वक्खाणमिणं भवे तस्स ॥ वाहल्ल-पुहत्तेहि, गण्डीपुत्थो उ तुल्लगो दीहो। कच्छवि अंते तरुओ, मज्जे पिहुलो मुण्यव्वो ॥

चउरंगुलदीहो वा, वट्ठागिइ मुट्ठिपुत्थगो अहवा, चउरंगुलदीहो च्चिय, चउरंसो होइ विन्नेओ ॥

संपुडगो दुगमाई, फलगा वोच्छं छिवाडिमेत्ताहे। तरुपत्तूसियव्वो, होइ छिवाडी बुहा वेत्ति ॥

दीहो वा हस्सो वा, जो पिहुलो होइ अप्पवाहल्लो। तं मुणियसमयसारा, छिवाडिपोत्थं भण्णतीह ॥”

—दशकालिक हरिभद्रीय टीका, पत्र २५।

२ —पोत्थयपणयं—दीहो वाहल्लपुहत्तेण तुल्ला चउरंसो गंडीपोत्थगो। अंतेसु तरुओ मज्जे पिहुलो अप्पवाहल्लो कच्छभी। चउरंगुलो दीहो वा वृत्ताकृति मुट्ठिपोत्थगो, अहवा चउरंगुलदीहो चउरंसो मुट्ठीपोत्थगो। दुमादिफलगा संपुडगं। दीहो हस्सो वा पिहुलो अप्पवाहल्लो छिवाडी, अहवा तरुपत्तोहि उस्सितो छिवाडी।

—निशीथचूर्णी।

३ —गंडी कच्छवि मुट्ठि, छिवाटी संपुटग पोत्थगा पंच।

४ —गण्डीपुस्तकः कच्छपी पुस्तकः मुष्टिपुस्तकः संपुटफलकः छेदपाटी पुस्तकश्चेति पंच पुस्तकाः।

३. **मुष्टि पुस्तक**—जो पुस्तक चार अंगुल लम्बी हो और गोल हो उसको मुष्टि पुस्तक कहते हैं। अथवा जो चार अंगुल की चारों तरफ से चौखण्ड हो, तो भी मुष्टि पुस्तक कही जाती है। छोटी-मोटी टिप्पणकाकार में लिखी जाने वाली पुस्तकों का इसमें समावेश होता है। हमारे प्रकार में वर्तमान की छोटी-मोटी डायरियों का या हाथ पोथी जैसी लिखित गुटकाओं का समावेश होता है।

४. **संपुटफलक**—लकड़ी की पट्टियों पर लिखी हुई पुस्तकों का नाम संपुट-फलक होता है। यन्त्र, जम्बू-द्वीप, अर्द्ध-द्वीप, लोकनालिका, समवर्णरंग आदि की चित्रावली जो लकड़ी की पट्टिकाओं पर लिखी हों तो संपुट-फलक में समाविष्ट होती हैं। अथवा लकड़ी की पाटी पर लिखी पुस्तक को संपुट-पुस्तक कहते हैं।

५. **छेदपाटी**—कम पन्नों वाली पुस्तक को छेदपाटी पुस्तक कहते हैं, जो लम्बाई में कितनी ही हो किन्तु मोटाई में थोड़ी हो तो छेदपाटी कहलाती है।

उपर्युक्त सभी प्रकार की पुस्तकें सातवीं शती तक के लिखित प्रमाणों के आधार पर बताई गयी हैं। इस प्रकार की पुस्तकें आज एक भी उपलब्ध नहीं हैं।

उपलब्ध एक हजार वर्ष के ग्रन्थों में प्रयुक्त लेखन सामग्री

पुस्तक लेखन के आरम्भकाल के बाद का लेखनकला का वास्तविक इतिहास अंधेरे में डूबा हुआ होने से प्राचीन उल्लेखों के आधार पर उसके ऊपर जितना प्रकाश डाला जा सकता है उतना प्रयत्न किया गया है। अब उसके बाद वर्तमान में उपलब्ध विक्रम की ११वीं शती से २०वीं शती तक की लेखन-कला के साधन और उनके विकास के सम्बन्ध में कुछ प्रकाश यहाँ डाला जा रहा है—

लिप्यासन—राजप्रश्नीय सूत्र में “लिप्यासन”—लिपि + आसन=लिप्यासन का अर्थ मपीभाजन रूप में लिया है। पर हम यहाँ लिपि के आसन अथवा पात्र, तरीके के साधन में, ताड़पत्र, वस्त्र, कागज, लकड़ी की पट्टिया, भोजपत्र, ताम्रपत्र, रोप्यपत्र, सुवर्णपत्र, पत्थर आदि का समावेश कर सकते हैं।

गुजरात, मारवाड़, मेवाड़, कच्छ दक्षिण आदि प्रान्तों में वर्तमान में जो जैन-ज्ञान भण्डार हैं उन सबको देखने से स्पष्ट समझा जा सकता है कि पुस्तकें मुख्य रूप से विक्रम की तेरहवीं सदी के पहले ताड़पत्र और कपड़े दोनों पर ही लिखी जाती थीं। लेकिन इन दोनों में भी ताड़पत्र का विशेष प्रचार था। लेकिन बाद में कागज का आविष्कार हो जाने से कागज पर ही ग्रन्थ लिखे जाने लगे, और इस प्रकार धीरे-धीरे ताड़पत्र का युग क्रमशः लुप्त होता गया।

प्राचीनकाल में विविध आकार-प्रकार की पुस्तकें होने के उल्लेख दशवीकालिक सूत्र की हरिभद्रीय टीका^१, निशीथ चूर्णि^२, बृहत्कल्प सूत्र वृत्ति^३ आदि में पाये जाते हैं। इनके अनुसार पुस्तकों के पाँच प्रकार थे—^४

गण्डी, कच्छपी, मुष्टि, संपुट तथा छेदपाटी। इनका संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है—

१. गण्डी पुस्तक—जो पुस्तक चौड़ाई और मोटाई में समान हो किन्तु विविध लम्बाई वाली ताड़पत्रीय पुस्तक को गण्डी पुस्तक कहते हैं। गण्डी शब्द का अर्थ कतली होता है, अर्थात् जो पुस्तक गण्डिका अर्थात् कतली जैसी हो, गण्डी-पुस्तक कही जाती है। आजकल जो छोटी-मोटी ताड़पत्रीय पुस्तक मिलती है उसको, एवं इसी पद्धति में लिखे कागज के ग्रन्थों को भी गण्डी-पुस्तक कहा जाता है।

२. कच्छपी पुस्तक—जो पुस्तक दोनों तरफ के छोरों में पतली हो तथा मध्य में कछुए की भांति मोटी हो, उसे कच्छपी पुस्तक कहते हैं। इस प्रकार की पुस्तकें इस समय देखने में नहीं आ रही हैं।

१ —“गण्डी कच्छवि मुट्ठि, संपुडफलए तहा छिवाडी य। एय पुत्थयपरायं, वक्खाणमिणं भवे तस्स ॥ बाहल्ल-पुहत्तेहि, गण्डीपुत्थो उ तुल्लगो दीहो। कच्छवि अंते तरुओ, मज्जे पिहुलो मुण्यव्वो ॥

चउरंगुलदीहो वा, वट्ठागिइ मुट्ठिपुत्थगो अहवा। चउरंगुलदीहो च्चिय, चउरंसो होइ विन्नेओ ॥

संपुडगो दुगमाई, फलगा वोच्चं छिवाडिमेत्ताहे। तरुपत्तूसियव्वो, होइ छिवाडी वुहा वेत्ति ॥

दीहो वा हस्सो वा, जो पिहुलो होइ अप्पवाहल्लो। तं मुणियसमयसारा, छिवाडिपोत्थं भण्णतीह ॥”

—दशकालिक हरिभद्रीय टीका, पत्र २५।

२ —पोत्थयपरायं—दीहो बाहल्लपुहत्तेण तुल्ला चउरंसो गंडीपोत्थगो। अंतेसु तरुओ मज्जे पिहुलो अप्पवाहल्लो कच्छपी। चउरंगुलो दीहो वा वृत्ताकृति मुट्ठिपोत्थगो, अहवा चउरंगुलदीहो चउरंसो मुट्ठीपोत्थगो। दुमादिफलगा संपुडगं। दीहो हस्सो वा पिहुलो अप्पवाहल्लो छिवाडी, अहवा तरुपत्तेहि उस्सितो छिवाडी।

—निशीथचूर्णी।

३ —गंडी कच्छवि मुट्ठि, छिवाडी संपुडग पोत्थगा पंच।

४—गण्डीपुस्तकः कच्छपी पुस्तकः मुष्टिपुस्तकः संपुटफलकः छेदपाटी पुस्तकश्चेति पंच पुस्तकाः।

३. **मुष्टि पुस्तक**—जो पुस्तक चार अंगुल लम्बी हो और गोल हो उसको मुष्टि पुस्तक कहते हैं। अथवा जो चार अंगुल की चारों तरफ से चोखण्ड हो, तो भी मुष्टि पुस्तक कही जाती है। छोटी-मोटी टिप्पणकाकार में लिखी जाने वाली पुस्तकों का इसमें समावेश होता है। दूसरे प्रकार में वर्तमान की छोटी-मोटी डायरियों का या हाथ पोथी जैसी लिखित गुटकाओं का समावेश होता है।

४. **संपुटफलक**—लकड़ी की पट्टियों पर लिखी हुई पुस्तकों का नाम संपुट-फलक होता है। यन्त्र, जम्बू-द्वीप, अढाई-द्वीप, लोकनालिका, समवशरण आदि की चित्रावली जो लकड़ी की पट्टिकाओं पर लिखी हों तो संपुट-फलक में समाविष्ट होती हैं। अथवा लकड़ी की पाट्टी पर लिखी पुस्तक को सम्पुट-पुस्तक कहते हैं।

५. **छेदपाटी**—कम पन्नों वाली पुस्तक को छेदपाटी पुस्तक कहते हैं, जो लम्बाई में कितनी ही हो किन्तु मोटाई में थोड़ी हो तो छेदपाटी कहलाती है।

उपर्युक्त सभी प्रकार की पुस्तकें सातवीं शती तक के लिखित प्रमाणों के आधार पर बताई गयी हैं। इस प्रकार की पुस्तकें आज एक भी उपलब्ध नहीं हैं।

उपलब्ध एक हजार वर्ष के ग्रन्थों में प्रयुक्त लेखन सामग्री

पुस्तक लेखन के आरम्भकाल के बाद का लेखनकला का वास्तविक इतिहास अंधेरे में दूधा हुआ होने से प्राचीन उल्लेखों के आधार पर उसके ऊपर जितना प्रकाश डाला जा सकता है उतना प्रयत्न किया गया है। अब उसके बाद वर्तमान में उपलब्ध विक्रम की ११वीं शती से २०वीं शती तक की लेखन-कला के साधन और उनके विकास के सम्बन्ध में कुछ प्रकाश गढ़ा डाला जा रहा है—

लिप्यासन—राजप्रशनीय सूत्र में “लिप्यासन”—लिपि + आसन=लिप्यासन का अर्थ मपीभाजन रूप में लिया है। पर हम यहाँ लिपि के आसन अथवा पात्र, तरीके के साधन में, ताड़पत्र, वस्त्र, कागज, लकड़ी की पट्टियाँ, भोजपत्र, तास्रपत्र, रोपपत्र, मुचमृगपत्र, परम्पर आदि का समावेश कर सकते हैं।

गुजरात, मारवाड़, मेवाड़, पच्छिम दक्षिण आदि प्रान्तों में वर्तमान में जो जैन-ज्ञान प्रसार है उन सबको देखने से स्पष्ट समझा जा सकता है कि पुस्तकें मुख्य रूप से विक्रम की तेरहवीं शती के पहले ताड़पत्र और कपड़े दोनों पर ही लिखी जाती थीं। लेकिन इन दोनों में भी ताड़पत्र का विशेष प्रचार था। लेकिन बाद में कागज का आविष्कार हो जाने से कागज पर ही ग्रन्थ लिखे जाने लगे, और इस प्रकार धीरे-धीरे ताड़पत्र का पुनः प्रयोग कम होना लगा।

कपड़े पर पुस्तकों ववचित् पत्राकार के रूप में लिखी जाती थी।^१ इसका उपयोग टिप्पणी के लिखने के लिये तथा चित्र, पट, मन्त्र, यन्त्र, लिखने के लिए ही विशेष प्रमाण में हुआ करता था। कपड़े पर लिखे ग्रन्थों में धर्म-विधि-प्रकरण वृत्ति, कच्छलीरास^२ और त्रिपटि-शलाका-पुरुष चरित्र की प्रतियां पत्राकार के रूप में पायी जाती हैं। जो २५"×५" की लम्बाई और चौड़ाई की हैं। परन्तु लोकनालिका, अढाईद्वीप, जम्बूद्वीप, नवपद, ह्रींकार, घण्टाकर्ण, पंचतीर्थोपट आदि के चित्रवस्त्र पट पर प्रचुर परिमाण में पाये जाते हैं। पन्द्रहवीं शताब्दी तक के प्राचीन कई पंचतीर्थोपट भी पाए गये हैं।

भोजपत्र का उपयोग बौद्ध एवं वैदिक लोगों ने ही पुस्तकों लिखने में किया है। अद्यावधि एक भी जैन ग्रन्थ प्राचीन भोजपत्र पर लिखा हुआ नहीं मिला है। सिर्फ १८वीं एवं १९वीं सदी से ही यतियों ने मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र आदि के लिखने में इसका उपयोग किया है। किन्तु वह भी थोड़े परिमाण में।

मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र आदि के लेखन के लिए कांस्यपत्र,^३ ताम्रपत्र, रौप्यपत्र, स्वर्ण-

१. (क) “एकदा प्रातर्गुरुन् सर्वसाधूश्च वन्दित्वा लेखकशालाविलोकनाय गतः।
लेखकाः कागदपत्राणि लिखन्तो दृष्टाः। ततः गुरुपाश्वर् पृच्छा। गुरुभिरुच्ये-
श्री चीलुक्यदेव ! सम्प्रति श्रीताडपत्राणां त्रुटिरस्ति ज्ञानकोशे, अतः कागदपत्रेषु
ग्रन्थलेखनमिति ॥” कुमारपाल प्रबन्ध पृष्ठ ९६।

(ख) श्री वस्तुपालमन्त्रिणा सीवर्णमपीमयाक्षरा एकासिद्धान्त प्रतिलेखिता।
अपरास्तु श्रीताडकागदपत्रेषु मणीवर्णाञ्जिताः ६ प्रतयः। एवं सप्तकोटिद्रव्य-
व्ययेन सप्त सरस्वतीकोशाः लेखिताः ॥” उ० त० पृष्ठ १४२

२. संवत् १४०८ वर्षे चीवाग्रामे श्री नरचन्द्रसूरीणां शिष्येण श्री रत्नप्रभसूरीणां बांधवेन
पंडित गुणभद्रेण कच्छली श्रीपाश्वर्नाथगोष्ठिक लीवाभार्या गोरी तत्पुत्र श्रावक जसा
डूंगर तद्भगिनी श्राविका वीभीतिल्ली प्रभृत्येषां साहाय्येन प्रभुश्री श्री प्रभसूरिविरचितं
धर्मविधिप्रकरणं श्री उदयसिंहसूरि विरचितां वृत्ति श्रीधर्मविधेग्रन्थस्य कार्तिक-
वदिदशमी दिने गुरुवारे दिवसपाश्चात्यघटिकाद्वये स्वपितृमात्रोः श्रयसे श्रीधर्मविधि
ग्रन्थमलिखत् ॥ उदकानलचौरेभ्यो मूपकेभ्यस्तथैव च। कण्ठेन लिखितं शास्त्रं यत्नेन
परिपालयेत् ॥छ॥

३. कांस्यपत्र, ताम्रपत्र, रौप्यपत्र, अने सुवर्णपत्रमां तेमना केटलीकदार पंचधातुना
मिश्रितपत्रमां लखात्रेना ऋषिमण्डल, घण्टाकर्ण धोसहियो यंत्र, वीसो यंत्र वगैरे मंत्र-
यंत्रादि जैनमन्दिरोंमां घरों ठेकारो होय छ। जैन पुस्तको लखवा भाटे..... १

देखिये-भारतीय जैन श्रमण संस्कृति अने लेखन कला पृष्ठ-२७

वसुदेवहिण्डी प्रथम खंडमां ताम्रपत्र ऊपर पुस्तक लखवानो उल्लेख छे:

इयरेण तंवपत्तेसु तरुणसु रायलवखणं रएऊणं तिहलास्सेणं तिम्मेऊणं तंवभायणो
पोत्थओ पक्खित्तो, निविखित्तो नयरवाहि दुव्वावेदमंज्जे। पत्र १८६

थी। उस समय कागज को वांसों की चीपों या लोहे की चीपों के नीचे दबाकर हाथों से सावधानी पूर्वक काटा जाता था। तथा इसके लिये एक होशियार व्यक्ति की आवश्यकता होती थी।

घुटाई—पुस्तक लिखने के लिए सभी देशों कागजों की घुटाई की जाती थी। जिससे उनके ऊपर स्याही नहीं फूटती थी। कागज के बहुत दिनों तक पड़े रहने से अथवा बरसात व सर्दियों के प्रभाव से उसका घूंट कम हो जाता था जिससे उसकी चिकनाहट कम हो जाती थी या हट जाती थी। चिकनाहट कम होने से अक्षर फूट जाया करते थे। इसके लिए उन पर पुनः पालिश चढ़ाना होता था। पालिश चढ़ाने के लिए कागजों अथवा पन्नों को फिटकड़ी के पानी में डुबोकर सुखाने के बाद, कुछ सूखा जैसा हो जाय तब उसको अकीक अथवा कसौटी अथवा किसी जाति के घूंट से अथवा कोड़ा से घुटाई की जाती थी। जिससे अक्षर नहीं फूटते थे।

कपड़ा—पुस्तक लिखने के लिए अथवा चित्र यंत्र आदि के लेखन के लिए कपड़े पर गेहूँ या चावल की कड़प लगाई जाती थी। कड़प लगाकर सुखा लेने के बाद उसको कसौटी आदि से घोट देने से कपड़ा चिकना लिखने लायक बन जाता था। पाटण के बखतजी के “केसरी जैन-भण्डार” में खादी के कपड़े के ऊपर लिखी हुई पुस्तक है। पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में भी कपड़े का एक १६वीं शताब्दी में लिखा हुआ ग्रंथ मिलता है।

काष्ठ पट्टिका—लेखन के साधन के रूप में काष्ठ पट्टिकाएं (लकड़ी की सादी अथवा रंगीन) भी उपयोग में आती थीं। पुराने जमाने में व्यापारी लोग अपने रोजीन्दा, कच्ची बह्नी वगैरह को पट्टी पर लिख रखते थे। उसी प्रकार ग्रंथ की रचना करते समय ग्रंथ का कच्चा खड्डा लकड़ी की पाट्टी के ऊपर करते थे और निश्चित हुए बाद ही पाट्टी के ऊपर से पक्की नकल किया करते थे। लकड़ी की पट्टियों का स्थाई चित्रपट अथवा यंत्र, मंत्र चित्रित करने के लिए भी उपयोग होता था। उत्तराध्ययन वृत्ति (सं० ११२६) को नेमिचन्द्राचार्य ने पट्टिका पर लिखा था जिसे सर्वदेव गरिण ने पुस्तकारूढ़ किया था।^१

लेखनी—जैसे आजकल लिखने में पैन और डाॅटपैन का उपयोग होता है वैसे पहिले होन्डर (कलम) पेन्सिल आदि का उपयोग होता था। उससे पूर्व वांस वेंट आदि के अण्ट से लिखा जाता था। आजकल उसका प्रचलन अत्यधिक अल्पमात्रा में रह गया है। पर हस्तलिखित ग्रंथों को लिखने में आज भी कलम का उपयोग होता है।

कर्नाटक, सिहल, उत्कल, ब्रह्म आदि देशों में जहाँ ताड़पत्र पर कोटकर पुस्तक लिखी जाती है वहाँ लिखने के लिए नोकदार सुइया की जरूरत होती है। कागजों पर

१. पट्टिकातोऽलिखच्चेमां, सर्वदेवाभिधो गरिणः।

आत्मकर्मक्षयायाथ, परोपकृति हेतवे॥

यन्त्र व लाइन बनाने के लिए जुजवल का प्रयोग किया जाता था। जो लोहे के चिमटे के आकार की होती थी। आजकल के होल्डर की नींव इसी का विकसित रूप प्रतीत होती है। कलमों के घिस जाने पर उसे चाकू से धील कर पतला कर लिया जाता था, तथा बीच में से एक खड़ा चीरा कर दिया जाता था। जिससे आवश्यकतानुसार स्याही नीचे उतरती रहती थी।

लेखनियों के शुभाशुभ, कई प्रकार के गुण-दोषों को बताने वाले अनेक श्लोक पाए जाते हैं। जिसमें उनकी लम्बाई, रंग, गांठ आदि से ब्राह्मणादि वर्ण, आयु, धन, सन्तान हानि, वृद्धि आदि के फलाफल लिखे हैं। उनकी परीक्षा पद्धति ताड़पत्रीय युग की पुस्तकों से चली आ रही है। रत्न परीक्षा में रत्नों के श्वेत, पीत, लाल और काले रंग ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की भांति लेखनी के भी वर्ण समझना चाहिए। इसका किम प्रकार उपयोग करना, इसका पुराना विधान तत्कालीन विश्वाम व प्रथाओं पर प्रकाश डालता है।¹

प्रकार—चित्रपट, यन्त्र आदि में गोल आकृतियाँ करने के लिए एक लोहे का प्रकार होता था। यह प्रकार जिस प्रकार की छोटी-मोटी गोल आकृति बनानी हो उस प्रमाण में छोटा-बड़ा बनाया जाता था। आज भी यह मारवाड़ वगैरह में बनाया जाता है। आजकल इसके स्थान में कम्पास भी काम में लाया जाता है।

ओलिया, उसकी बनावट और उत्पत्ति—प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों को एकवार सीधी लाइन में लिखे हुए देखने से मन में यह प्रश्न उठता है, कि यह लेख सीधी पंक्ति में किम प्रकार लिखा गया होगा? इस शका का उत्तर यह ओलिया देती है। ओलिया को मारवाड़ी में लहीआबो फाटीऊ के नाम से जानते हैं। लेकिन इसका वास्तविक उत्पत्ति या अर्थ क्या है? यह समझ में नहीं आता है। इसका प्राचीन नाम ओलियु मिलता है। ओलियु शब्द संस्कृत आलि

1. ब्राह्मणी श्वेतवर्णा च, रक्तवर्णा च क्षत्रिणी ।
वैश्यत्री पीतवर्णा च, शसुरीश्यामलेखिनी ॥१॥
श्वेते सुखं विजानीयात्, रक्ते दरिद्रता भवेत् ।
पीते च पुष्कला, लक्ष्मीः, शसुरी क्षयकारिणी ॥२॥
चिताग्रे हरते पुत्रमघोमुखी हरते धनम् ।
वामे च हरते विद्यां, दक्षिणालेखिनी लिखेत् ॥३॥
अग्रग्रन्थिः हरेदायुर्मध्यग्रन्थिर्हरेद्धनम् ।
मृष्टग्रन्थिर्हरेत्, मवं, निग्रन्थिर्लेखिनी लिखेत् ॥४॥
नवांगुलमिता श्रेष्ठा, अष्टौ वा यदि वाऽधिका ।
लेखिनी लेखयेन्नित्यं, धनधान्यसमागमः ॥५॥
अष्टांगुलप्रमाणेन, लेखिनी मुत्रदायिनी ।
हीनाय हीनकर्म स्यादधिकस्याधिकं फलम् ॥६॥
आयग्रन्थिर्हरेदायुर्मध्यग्रन्थिर्हरेद्धनम् ।
अन्त्यग्रन्थिर्हरेत् सौम्यं, निग्रन्थिर्लेखिनी शुभा ॥७॥

और प्राकृत और गुजराती और शब्द से बना है। लकड़ी के फलक या गत्ते के मजबूत पुठे पर छेद कर मजबूत सीधी डोरी छोटे-बड़े अक्षरों के चीड़े-सकड़े अन्तरालानुसार दोनों और कसकर बांध दी जाती है और उस पर रंग-रोगन लगाकर तैयार किये फाटिये पर कागज को रख कर अंगुलियों द्वारा तान कर लकीर चिह्नित कर ली जाती है। तथा ताड़पत्रीय पुस्तकों पर छोटी सी विन्दु सीधी लकीर आने के लिए कर दी जाती थी।

स्याही पुस्तक लेखन में अनेक प्रकार की स्याहियों का प्रयोग दृष्टिगत होता है। परन्तु सामान्य रूप से लेखन के लिए काली स्याही ही सार्वत्रिक रूप में काम में लाई गई है। सोने-चांदी की स्याही से भी पुस्तकें लिखी जाती थीं, पर सोना-चांदी के महाध्वंसा के कारण उसका उपयोग अत्यल्प परिमाण में ही विशिष्ट शास्त्र लेखन में श्रीमन्तों द्वारा होता था। लाल रंग का प्रयोग बीच-बीच में प्रकरण समाप्ति व हांसिए की रेखा में तथा चित्रादि के आलेखन में प्रयोग होता था।

भारत में हस्तलेखों की स्याही का रंग बहुत पक्का बनाया जाता था। यही कारण है कि वैसी पक्की स्याही से लिखे ग्रंथों के लेखन में चमक अब तक बनी हुई है। विविध प्रकार की स्याही बनाने के नुस्के विविध ग्रंथों में दिये हुए हैं। भारतीय जैन श्रमण संस्कृति अने लेखन कला में जो नुस्के दिये हुए हैं वे इस प्रकार हैं—

प्रथम प्रकार—

“सहवर-भृंग-त्रिफलाः, कासीसं लोहमेव नीली च

समकज्जल-बोलयुता, भवति मपी ताड़पत्राणाम् ॥

व्याख्या—“सहवरेति काटासेहरीओ (धमासो) भृंगेति भांगुरओ । त्रिफला प्रसिद्धैव । कासीसमिति कसीसम्, येन काष्ठादि रज्यते । लोहमिति लोहचूर्णम् । नीलीति गलीनिष्पादको वृक्षः तदरसाः । रसं विना सर्वेषामुत्कृत्य क्वाथः क्रियते, स च न्यसोऽपि । समवर्तितकज्जल-बोलयोर्मध्ये निक्षिप्यते, ततस्ताड़पत्रमपी भवतीति ॥”

अर्थात्—धमासा, जलभांगरा का रस, त्रिफला, कसीस, लोहचूर्ण को उबाल कर, क्वाथ बनाकर इसके बराबर परिमाण में गली के रस को मिलाकर, काजल व बीजाबोल मिलाने से स्याही बन जाती है। इसका उपयोग ताड़पत्र पर लिखने के लिए होता है।

दूसरा प्रकार—

कज्जल पा (पो) इण बोलं, भूमिलया पारदस्स लेसं च ।

उसिणजलेण विघसिया, वडिया काऊण कुट्टिज्जा ॥१॥

तत्तजलेण व पुणओ घोलिज्जंती दंढ मसी होई ।

तेण विलिहिया पत्ता, वच्चह रयणीइ दिवसु व्व ॥२॥

अर्थात्—काजल, पोयण, बीजाबोल, भूमितला, जलभांगरा और पारे को उबलते हुए पानी में मिलाकर, ताम्बे की कड़ाई में सात दिन तक घोटकर एक रस करलें। फिर

उसकी बड़ियां बनालें और उन्हें कूट कर रखें और फिर जब आवश्यक हो उसे गरम पानी में खूब मसल लें स्याही तैयार हो जाती है ।^१

तीसरा प्रकार—

“कोरडप्प वि मरावे, अंगुलिआ कोरडम्मि कज्जलए ।
मद्दह मरावल्लगं, जावं चिय चि (यक्) गं मुअइ ॥३॥
पिचुमंदगुंदलेसं, ग्यायरगुंदं व वीयजलमिस्सं ।
भिज्जवि तोण्णा दहं, मद्दह जा तं जलं मुअई ॥४॥
इति ताडपत्रमस्याम्नायः ॥”

अर्थात्—नये काजल को मिट्टी के कोरे निकोरे में अंगुली से इतना मलें कि उसका चिकनापन छूट जाये । फिर उसे नीम या खेर के गोंद के साथ बीजाजल के मिश्रण में भिगोकर खूब घोंटे जब तक कि पानी सूख न जावे, फिर बड़ियां बनालें ।

चौथा प्रकार—

निर्यासात् पिचुमन्दजाद् द्विगुणितो बोलस्ततः कज्जलं,
मंजातं तिलतैलतो हृतवहे तीत्रातपे मदितम् ।
पात्रे गूलवमये तथा शन (?) जलैर्लक्षारसैर्भावितः ।
मद्भल्लातक-भृंगराजरसयुक् सम्यग् रसोज्यं मयी ॥१॥

अर्थात्—नीम का गोंद, उससे दूगना बीजाबोल, उससे दूगने काजल को गोमूत्र के साथ घोटकर ताम्रपात्र में गरम करें । सूखने पर थोड़ा-थोड़ा पानी देते रहें, फिर इसमें जोधा हुआ भिलावा तथा भांगरे का रस डालें, उत्तम स्याही बन जावेगी ।

पाँचवा प्रकार—

ब्रह्मदेण, कर्नाटक आदि देशों में ताडपत्र पर लोहे की सूई से कोर कर निखा जाता है । उन अक्षरों में काला रंग लाने के लिए नारियल की टोपसी या बादाम के छिलकों को जलाकर, तेल में मिलाकर, गुरेदे हुए अक्षरों पर काले चूर्ण को पोतकर, कपड़े से साफ कर देते हैं । इससे चूर्ण अक्षरों में भरा रह जाता है, और अक्षर स्पष्ट पढ़ने में आ जाते हैं । उपर्युक्त सभी प्रकार, ताडपत्र पर लिखने की स्याही के हैं ।

१. प्लोक में तो यह नहीं बताया गया है कि उक्त मिश्रण को कितनी देर घोंटना चाहिये । परन्तु जयपुर में कुछ परिवार स्याही बाने ही कहलाते हैं । त्रिपोलिया के बाहर उनकी प्रसिद्ध दुकान थी । वहाँ एक कारखाने के रूप में स्याही बनाने का कार्य चलता था । महाराजा के पोथीखाने में भी “सरखराकार” स्याही तैयार किया करते थे । इन लोगों से पूछने पर ज्ञात हुआ कि स्याही की घुटाई कम से कम आठ गहर होनी चाहिए । मात्रा अधिक होने पर अधिक गमय तक घोंटना चाहिए ।

—गोपालनारायण बहुरा

इसी प्रकार कागज और कपड़े पर लिखने की स्याही के बनाने की भी कई विधियां हैं:—

पहली विधि—

जितना काजल उतना बोल, तेथी दूरा गुंद भकोल ।
जो रस भांगरा नो पड़े, तो अक्षरे-अक्षरे दीवा बले ॥

दूसरी विधि—

मण्यर्धे क्षिप सद्गुन्दं गुन्दार्धे बोलमेव च,
लाक्षाबीयारसेनोच्चैर्मर्दयेत् ताम्रभाजने ॥१॥

अर्थात्—काजल से आधा गोंद, गोंद से आधा बीजाबोल, लाक्षारस तथा बीअरस के साथ ताम्रपात्र में रगड़ने से काली स्याही तैयार होती है ।

तीसरी विधि—

बीआ बोल अनइल लक्खा रस, कज्जल वज्जल (?) नइ अंवारस ।
“भोजराज” मिसी नियाद्, पान ओ फाटई मसी बनि जाई ॥

चौथी विधि—

लाख टांक बीस मेल, स्वाग टांक पांच मेल ।
नीर टांक दो सौ लेई हांडी में चढाइये ॥
ज्यों लों आग दीजे त्यों लों और खार सब लीजे ।
लोदर खार बाल-बाल पीस के रखाइये ॥
मीठा तेल दीय जल, काजल सो ले उतार ।
नीकी विधि पिछानी के ऐसे ही बनाइए ॥
चाइक चतुर नर लिखके अनूप ग्रन्थ ।
बांच बांच बांच रीझ-रीझ मौज पाइए ॥

पांचवीं विधि—

स्याही पक्की करने की विधि:—लाख चौखी अथवा चौपड़ी ६ पैसे भर लेकर तीन सेर पानी में डालें, २ पैसा भर सुवागा डालें, ३ पैसा भर लोध डालें, फिर उसको गरम करें और जब पानी तीन पाव रह जावे तब उतार लें । बाद में काजल १ पैसा भर डाल कर घोंट-घोंट कर सुखा लें । आवश्यकतानुसार इसमें से लेकर शीतल जल में भिगो दें । तो पक्की स्याही तैयार हो जाती है ।

छठी विधि—

काजल ६ टांक, बीजाबोल १२ टांक, बेर का गोंद ३६ टांक, अफीम १/२ टांक, अलता पोथी ३ टांक, फिटकड़ी कच्ची १/२ टांक, नीम के घोंटे से ताम्बे के बरतन में सात दिन तक घोंटे ।

उपर्युक्त नुस्खे मुनि श्री पुण्यविजय जी ने यहाँ वहाँ से लेकर दिये हैं। उनका अभिमत है कि पहली विधि से बनी स्याही सर्वश्रेष्ठ है। अन्य स्याही पक्की तो है पर कागज-कपड़े को क्षति पहुँचाती है। लकड़ी की पट्टी पर लिखने के लिए सब ठीक हैं।^१

सुनहरी एवं रूपहली स्याही—

सोना और चाँदी की स्याही बनाने के लिए वर्क को खरल में डालकर धोक के गूँद के स्वच्छ जल के साथ खूब घोंटते जाना चाहिए। बारीक हो जाने पर मिश्री का पानी डालकर हिलाना चाहिए। स्वर्ण चूर्ण नीचे बैठ जाने पर पानी को धीरे-धीरे निकाल देना चाहिए। [इस प्रकार तीन-चार धुलाई पर गूँद निकल जायेगा और सुनहरी या रूपहली स्याही तैयार हो जावेगी।

लाल स्याही—

हिंगुल को खरल में मिश्री के पानी के साथ खूब घोंटकर ऊपर आते हुए पीलास लिए हुए पानी को निकाल दें। इस तरह दस पन्द्रह बार करने से पीलास बाहर निकल जावेगा और शुद्ध लाल रंग रह जावेगा। फिर उसे मिश्री और गूँद के पानी के साथ घोंटकर एक रस कर लें, फिर सुखा कर, बड़ीयां बना लें और आवश्यकतानुसार पानी में घोल कर स्याही बना लें।

लेखक—

“लेखक” शब्द लेखन-क्रिया के कर्त्ता के लिए प्रयुक्त होता है। लेखक के पर्यायवाची शब्द जो भारतीय परम्परा में मिलते हैं वे हैं^२—लिपिकार या लिबिकार या दिपिकार। इस शब्द का प्रयोग चतुर्थ शती ई०पू० से हुआ मिलता है। अशोक के अभिलेखों में भी इसका कई बार उल्लेख हुआ है। इनमें यह दो अर्थों में आया है—प्रथम तो लेखक, दूसरा शिलाओं पर लेख उत्कीर्ण करने वाला व्यक्ति। संस्कृत कोषों में इसे लेखक का ही पर्यायवाची माना गया है। जैसे अमरकोश में—

“लिपिकारोऽक्षरचणोऽक्षरञ्चु-चुश्च लेखके” ।

मत्स्यपुराण में लेखक के निम्न गुण बताये गये हैं—

लेखक के गुण—

सर्वदेशाक्षरभिज्ञः सर्वशास्त्रविशारदः ।

लेखकः कथितो राज्ञः सर्वाधिकरणेषु वै ॥

१. इसी बात को स्पष्ट करते हुए मुनि जी ने बताया है कि जिस स्याही में लाख, कत्था और लोघ पड़ा हो तो वह स्याही कपड़े और कागज पर लिखने के काम की नहीं होती है। इससे कपड़े एवं कागज तम्बाकू के पत्ते जैसे हो जाते हैं।

—भारतीय जैन श्रमण संस्कृति अने लेखन कला पृष्ठ ४२

२. पाण्डे, आर० बी०, इण्डियन पालायोग्राफी पृष्ठ ६०।

शोर्षोपेतान् सुसंपूर्णान् शुभश्रेणिगतान् सगान् ॥
अक्षरान् वै लिखेद्यस्तु लेखकः स वरः स्मृतः ॥

उपायवाक्यकुशलः सर्वशास्त्रविशारदः ।
वह्न्यर्थवक्ता चाल्पेन लेखकः स्यान्नृपोत्तम ॥
वाचाभिप्रायः तत्त्वज्ञो देशकालविभागवित् ।
अनाहार्यो नृपे भक्तो लेखकः स्यान्नृपोत्तम ॥

अध्याय, १८६

गण्ड-पुराण में लेखक के निम्न गुण बताये गये हैं—

मेघावी वाक्पटुः प्राज्ञः सत्यवादी जितेन्द्रियः ।
सर्वशास्त्रसमालोकी ह्यर्षे साधु सः लेखकः ॥

ऊपर के श्लोकों में लेखक के जिन गुणों का उल्लेख किया गया है, उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण है "सर्वदेशक्षराभिज्ञः"—समस्त देशों के अक्षरों का ज्ञान लेखक को अवश्य होना चाहिये। साथ ही "सर्वशास्त्रसमालोकी"—समस्त शास्त्रों में लेखक की समान गति होनी चाहिए।

ऊपर उद्धृत पौराणिक श्लोकों में जिस लेखक की गुणावली प्रस्तुत की गई है, वह वस्तुतः राज-लेखक की है। उसका स्थान और महत्त्व लिखिया या लिपिकार के जैसा माना जा सकता है। हिन्दी में लेखक मूल रचनाकार को भी कहते हैं। लिपिकार को भी विशेषार्थक रूप में लेखक कहते हैं।

मन्दिरों, सस्वती तथा ज्ञान-भण्डारों में लेखक-शालाश्रयों के उल्लेख मिलते हैं। "कुमारपाल प्रबन्ध" में इसका उल्लेख इस प्रकार आया है—“एकदा प्रातर्गुरुन् सर्वसाधून् च वन्दित्वा लेखकशाला विलोकनाय गतः । लेखकाः कागदपत्राणि लिखन्तो दृष्टाः ।” जैनधर्म में पुस्तक लेखन को महत्त्वपूर्ण और पवित्र कार्य माना है। आचार्य हरिभद्रसूरि ने “योग-दृष्टि-समुच्चय” में लेखना पूजना दान” में श्रावक के नित्य कृत्यों में पुस्तक लेखन का भी विधान किया है। जैन ग्रन्थों से यह भी विदित होता है कि ग्रन्थ रचना के लिए विद्वान लेखक को विद्वान शिष्य और श्रमण विविध सूचनायें देने में सहायता किया करते थे।^१ ऐसी भी प्रथा थी कि ग्रन्थ

१. कुमारपाल प्रबन्ध पृष्ठ ६६।

२. (क) “अणहिल्लवाडयपुरे, रइयं सिज्जंससामिणो जरियं ।

साहेज्जेणं पंडियजिणं चन्द्रगणिस्स सीसस्स ॥”

— भगवति वृत्ति अभयदेवीयाः

(ख) साहेज्जं सव्वेहिं कयं... .. समित्थं गंधम्मि ।

नयकित्तिवुहेणं पुण, विसेसओ सोहणाईहि ।”

—अरिष्टनेमिचरित्र रत्नप्रभाय

रचनाकार अपने विषय के मान्य शास्त्रवेत्ता और आचार्य के पास अपनी रचना मंशोधनार्थ भेजा करते थे। उनसे पुष्टि पाने के बाद ही रचनाओं की प्रतियां कराई जाती थीं। ग्रन्थ लेखन या लेखक का कार्य पहले ब्राह्मणों के हाथों में रहा, बाद में “कायस्थों” के हाथों में चला गया। “कायस्थ” लेखकों का व्यवसायी वर्ग था। विज्ञानेश्वर ने याज्ञवल्क्य स्मृति (१/३३६) की टीका में मूल पाठ में आये कायस्थ शब्द का अर्थ लेखक ही किया है—“कायस्थगणका लेखकाश्च”। इसमें शन्देह नहीं कि कायस्थ वर्ग व्यावसायिक लेखकों का वर्ग होता था। यही आगे चलकर जाति के रूप में परिणत हो गया। कायस्थों का लेखन बहुत सुन्दर होता था। डॉ० हीरालाल माहेश्वरी ने निम्न दस प्रकार के लिपिकार बताये हैं :—

(१) जैन/श्रावक या मुनि

(२) साधु

(३) गृहस्थ

(४) पढ़ाने वाला (चाहे कोई हो)

(५) कामदार (राजघराने के लिपिक)

(६) दपतरी

(७) व्यक्ति विशेष के लिए लिखी गई प्रति का लिपिक कोई भी हो सकता है।

(८) अक्सर विशेष के लिए लिखी गई प्रति का लिपिक कोई भी हो सकता है।

(९) संग्रह के लिए लिखी गई प्रति का लिपिक कोई भी हो सकता है।

(१०) धर्म विशेष के लिए लिखी गई प्रति का लिपिक कोई भी हो सकता है।

लेखक की साधन सामग्री—

लेखक को लेखन कार्य के लिए अनेक प्रकार की सामग्री की आवश्यकता रहती थी। एक श्लोक में “क” अक्षर वाली १७ वस्तुओं की सूची मिलती है^१—(१) कुंभी (दवात), (२) काजल (स्याही), (३) केस सिंह के बाल या रेशम), (४) कुश (दर्भ), (५) कम्बल, (६) कांथी, (७) कलम, (८) कृपाशिका (सुती), (९) कतरनी (कैची), (१०) काष्ठ पट्टिका, (११) कागज, (१२) कीकी (घांसे), (१३) कोठड़ी (कमरा), (१४) कलमदान, (१५) क्रमण-पैर, (१६) कटिकमर और (१७) कंकड़।

लेखक की निर्दोषता—

जिस प्रकार ग्रन्थकार अपनी रचना में हुई गलतियाँ के लिए क्षमाप्रार्थी बनता है, वैसे ही लेखक अपनी परिचिति और निर्दोषता प्रकट करने वाले श्लोक लिखता है—

१. भारतीय जैन धर्मशास्त्र मंशुति अमे लेखन कला,—पृष्ठ ५५

अदृष्टदोषान्मतिविभ्रमाद्वा, यदर्थहीनं लिखितं मयाऽत्र ।
तत् सर्वमार्थैः परिणोधनीयं, कोपं न कुर्यात् खलु लेखकस्य ॥

यादृशं पुस्तके दृष्टं, तादृशं लिखितं मया ।

यदि शब्दमशुद्धं वा, मम दोषो न दीयते ॥

भग्नपृष्ठिकटिग्रीवा, वक्रदृष्टिरधोमुखम् ।

कष्टेन लिखितं शास्त्रं, यत्नेन परिपालयेत् ॥

वद्धमुष्टिकटिग्रीवा, मूढ दृष्टिरधोमुखम् ।

कष्टेन लिखितं शास्त्रं, यत्नेन परिपालयेत् ॥

लघु दीर्घ पदहीना, वंजणहीना लखाणां दुर्दै ।

अजाणपणइ मूढपणइ पंडित दुर्दैते सुधकरी भणज्या ॥ इत्यादि ।

ग्रन्थसुरक्षा के लिए शास्त्रभण्डारों की स्थापना —

ग्रन्थों की सुरक्षा के सम्बन्ध में ओझाजी^१ ने यह टिप्पणी दी है कि ताड़पत्र, भोजपत्र या कागज या ऐसे ही अन्य लिप्यासन यदि बहुत नीचे या बहुत भीतर दाब कर रखे जाएं तो दीर्घ-जीवी हो सकते हैं । पर यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि ऐसे दबे हुए ग्रन्थ भी ई० सन् की पहली दूसरी शताब्दी से पूर्व के प्राप्त नहीं होते ।

इसका एक कारण तो भारत पर विदेशी आक्रमणों का चक्र हो सकता है । ऐसे कितने ही आक्रमणकारी भारत में आये जिन्होंने मन्दिरों, मठों, विहारों, पुस्तकालयों, नगरों, बाजारों को नष्ट और ध्वस्त किया । अपने यहाँ भी कुछ राजे महाराजे ऐसे हुए हैं जिन्होंने ऐसे ही कृत्य किए । अजयपाल के सम्बन्ध में टॉड ने लिखा है कि—इसके शासन में सबसे पहला कार्य यह हुआ कि उसने अपने राज्य के सब मन्दिरों को, वे आस्तिकों के हों या नास्तिकों के, जैनों के हों या ब्राह्मणों के नष्ट करवा दिया ।^२ इसी में आगे लिखा है कि समध-मनुष्यायियों के मतभेदों और वैमनस्यों के कारण भी लाखों ग्रन्थों की क्षति पहुँची है । उदाहरणार्थ तपागच्छ और खत्तरगच्छ के जैन धर्म के भेदों के आपसी कलह के कारण ही पुराने ग्रन्थों का नाश अधिक हुआ है और मुसलमानों द्वारा कम ।^३

अतः इन परिस्थितियों के कारण शास्त्रों की सुरक्षा के लिए ग्रन्थागारों या पोथी-खानों या शास्त्र भण्डारों को भी ऐसे रूप में बनाने की समस्या आई, कि किसी आक्रमणकारी को आक्रमण करने का लालच ही न हो पाए । इसलिए ये भण्डार तहखानों में रखे गये ।^४

१. भारतीय प्राचीन लिपिमाला, पृष्ठ १४४-४५

२. टॉड, जेम्स-पश्चिम भारत की यात्रा, पृष्ठ २०२

३. वही, पृष्ठ २६८

४. वही, पृष्ठ २४६

डा. कासलीवाल ने बताया कि अत्यधिक असुरक्षा के कारण ग्रन्थ भण्डारों को सामान्य पहुँच से बाहर के स्थानों पर स्थापित किया गया। जैसलमेर में प्रसिद्ध जैन भण्डार इसलिए बनाया गया कि उधर रेगिस्तान में आक्रमण की कम सम्भावना थी। साथ ही मन्दिर में भू-गर्भस्थ कक्ष बनाए जाते थे, और आक्रमण के समय ग्रन्थों को इन तहखानों में पहुँचा दिया जाता था। सांगानेर, आमेर, नागीर, मीजमाबाद, अजमेर, फतेहपुर, दूनी मालपुरा तथा कितने ही अन्य मन्दिरों में आज भी भू-गर्भित कक्ष हैं। जिनमें ग्रन्थ ही नहीं मूर्तियाँ भी रखी जाती हैं।

इन उल्लेखों से स्पष्ट होता है कि ग्रन्थों की रक्षा की दृष्टि से ही पुस्तकालयों के स्थान चुने जाते थे। और उन स्थानों में सुरक्षित कक्ष भी उनके लिए बनवाये जाते थे। साथ ही उनका उपर का रूप भी ऐसा बनाया जाता था कि आक्रमणकारी का ध्यान उस पर न जा पाये।

ग्रन्थों का रख रखाव—

ग्रन्थों की सुरक्षा, के एवं संग्रह की दृष्टि से जैन समाज ने सबसे महत्वपूर्ण कार्य किया है। उन्होंने प्रत्येक पाण्डुलिपि के दोनों ओर कलात्मक पुट्टे लगाये। कभी-कभी ऐसे पुट्टों की संख्या एक से अधिक भी होती थी। ये पुट्टे कागज के ही नहीं किंतु लकड़ी के भी होते थे। ग्रन्थ को दोनों पुट्टों के बीच में रखने के पश्चात् ग्रन्थ को वेष्टन में बांधा जाता था। “रक्षेत् शिथिलबन्धनात्” का मन्त्र इन्हें सूच गाया था। वेष्टन में लपेटने के पश्चात् उस पर डोरी (फीता) से कसकर बांधा जाता था। जिससे हवा, सीलन एवं दीमक से उसे सुरक्षित रखा जा सके। आज से २०० वर्ष पूर्व तक ऐसे वेष्टनों को मोटे कपड़े के बोरों में रख दिया जाता था और उसको डोरी से बांध दिया जाता था। आमेर शास्त्र भण्डार में पहिले सारे ग्रन्थ इसी तरह रखे जाते थे। इससे ग्रन्थों की सुरक्षित रखने में पर्याप्त सहायता मिली। ताड़पत्र अथवा कागज पर लिखे हुए ग्रन्थों के बीच में एक घागा पियोया हुआ होता था, जिसे ग्रन्थि कहा जाता था। कालान्तर में ग्रन्थि से बाँधने के कारण ही शास्त्रों को ग्रन्थ के नाम से जाना जाने लगा। इसके पश्चात् ग्रन्थों को तलघर में रखा जाता था तथा चूहों, दीमकों एवं सीलन से उनकी पूर्ण सुरक्षा की जाती थी।

सचिन ग्रन्थों की सुरक्षा के विशेष उपाय किये जाते थे। प्रत्येक चित्र के ऊपर एक चारोंक लाल कपड़ा रखा जाता था। जिससे कि चित्र का रंग मराव न हो सके। नाथ ही कलर के रंग भाग पर भी चित्र का कोई चसर नहीं हो। ग्रन्थों की सुरक्षा के लिए निम्न पद्य ग्रन्थों के मन्त्र में निरता रहता था—

“जलाद् रक्षेत्, रानाद् रक्षेत्, रक्षेत् जिदित्वबन्धनात्
गूर्नाम्ने न दातव्या, एवं वदति पुस्तिका”

“अग्ने रक्षेत्, जलाद् रक्षेत् मूपकेभ्यो विशेषतः ।
 कण्ठेन लिखितं शास्त्रं, यत्नेन परिपालयेत् ॥
 उदकानिलचारेभ्यो, मूपकेभ्यो हुताशनात् ।
 कण्ठेन लिखितं शास्त्रं यत्नेन परिपालयेत् ॥”

स्याही का भी पूरा ध्यान रखा जाता था । इसलिए ग्रन्थों के लिए स्याही को पूरी तरह से तैयार किया जाता था । जिससे न तो वह स्याही फैल सके और न एक पत्र दूसरे पत्र से चिपक सके ।

ग्रन्थों के लिए कागज भी विशेष प्रकार का बना हुआ होता था । प्राचीन काल में सांगानेर में इस प्रकार के कागज के बनाने की व्यवस्था थी । जयपुर के शास्त्र भण्डारों में १४वीं शताब्दी तक के लिखे हुए ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं । उनकी न तो स्याही ही बिगड़ी है और न कागज में ही कोई विशेष असर आया है ।

इस प्रकार ग्रन्थों के लिखने एवं उनके रख रखाव में पूर्ण सतर्कता के कारण सैकड़ों वर्ष पुरानी पाण्डुलिपियाँ आज भी दर्शनीय बनी हुई हैं । और उनका कुछ भी नहीं बिगड़ा है ।

राजस्थान के प्रमुख शास्त्र भण्डार—

सम्पूर्ण देश में ग्रन्थों का अपूर्व संग्रह मिलता है । उत्तर से दक्षिण तक तथा पूर्व से पश्चिम तक सभी प्रान्तों में हस्तलिखित ग्रन्थों के भण्डार स्थापित हैं । इनमें सरकारी क्षेत्रों में पूना का भण्डारकर-ओरियंटल इन्स्टीट्यूट, तंजोर की सरस्वती महल लायब्रेरी, मद्रास विश्वविद्यालय की ओरियंटल मैनस्क्रिप्ट्स लायब्रेरी, कलकत्ता की बंगाल एशियाटिक सोसायटी आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । सामाजिक क्षेत्र में अहमदाबाद का एल० डी० इन्स्टीट्यूट, जैन सिद्धान्त भवन-आरा, फत्तलाल ऐलक दि० जैन सरस्वती भवन उज्जैन, भालरापाटन; जैन शास्त्र भण्डार कारंजा, लिम्बीडी-सूरत, आगरा, दिल्ली आदि के नाम भी लिये जा सकते हैं । इस प्रकार सारे देश में इन शास्त्र भण्डारों की स्थापना की हुई है ।

हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रह की दृष्टि से राजस्थान का स्थान सर्वोपरि है । मुस्लिम शासनकाल में यहाँ के राजा महाराजाओं ने अपने-अपने निजी संग्रहालयों में हजारों ग्रन्थों का संग्रह किया, और उन्हें मुलसमानों के आक्रमण से अथवा दीमक एवं सीलन से नष्ट होने से बचाया । स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् राजस्थान सरकार ने जोधपुर में जिस प्राच्यविद्या शोध प्रतिष्ठान की स्थापना की है, उसमें एक लाख से अधिक ग्रन्थों का संग्रह हो चुका है । जो एक अत्यधिक सराहनीय कार्य है । इसी तरह जयपुर, बीकानेर, अलवर जैसे कुछ भूतपूर्व शासकों के निजी संग्रहों में भी हस्तलिखित ग्रन्थों का महत्त्वपूर्ण संग्रह है, जिसमें संस्कृत ग्रन्थों की सर्वाधिक संख्या है । लेकिन इन सबके अतिरिक्त राजस्थान में जन ग्रन्थ भण्डारों की संख्या सर्वाधिक है । डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल, जिन्होंने राजस्थान के ग्रन्थ

भण्डारों की सूचीकरण का कार्य किया है, के अनुसार उनमें संग्रहित ग्रन्थों की संख्या चार लाख से कम नहीं है।

राजस्थान में जैन समाज पूर्ण शान्तिप्रिय एवं प्रभावक समाज रहा है। इस प्रदेश की अधिकांश रियासतों—जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, नागीर, जैसलमेर, उदयपुर, कोटा, बूंदी, डूंगरपुर, अजमेर, भरतपुर, भालावाड़, सिरोही आदि में जैनों की घनी आवादी रही है। यही नहीं शताब्दियों तक जैनों का इन स्टेट्स की शासन व्यवस्था में पूर्ण प्रभुत्व रहा है तथा वे शासन के सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित रहे हैं। इसी कारण साहित्य संग्रह के अतिरिक्त उन्होंने हजारों जैन मन्दिर भी बनवाये। जिनमें आबू, जैसलमेर, जयपुर, सांगानेर, भरतपुर, बीकानेर, सोजत, रणकपुर, मोजमावाद, केशोरायपाटन, कोटा, बूंदी, लाडनू आदि के मन्दिर आज भी पुरातत्त्व एवं कला की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।

ग्रंथों की सुरक्षा एवं संग्रह की दृष्टि से राजस्थान के जैनाचार्यों, मुनियों, यतियों, सन्तों एवं विद्वानों का प्रयास विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने अपनी कृतियों द्वारा जनता में देश-भक्ति, नैतिकता, एवं सांस्कृतिक जागरूकता का प्रचार एवं प्रसार किया। उन्होंने नागीर, बीकानेर, अजमेर, जैसलमेर, जयपुर आदि कितने ही नगरों में ग्रंथ-भण्डारों के रूप में साहित्यिक दुर्ग स्थापित किये। जहाँ भारतीय साहित्य एवं संस्कृति की सुरक्षा एवं उसके विकास के उपाय सोचे गये तथा सारे प्रदेश में ग्रंथों की प्रतिलिपियां करवाने, उनके पठन-पाठन का प्रचार करने का कार्य व्यवस्थित रूप से किया गया, और राजनैतिक उथल-पुथल एवं सामाजिक भगड़ों से इन शास्त्र भण्डारों को दूर रखा गया। इन शास्त्र भण्डारों ने राजस्थान के इतिहास के कितने ही महत्वपूर्ण तथ्यों को नजोया और उन्हें सदा ही नष्ट होने से बचाया। ये ग्रंथ संग्रहालय छोटे-छोटे गांवों से लेकर बड़े-बड़े नगरों तक में स्थापित किये हुए हैं। जयपुर, नागीर, बीकानेर, अजमेर, जैसलमेर, बूंदी जैसे नगरों में एक से अधिक ग्रंथ संग्रहालय हैं। अकेले जयपुर नगर में ऐसे ३० ग्रंथ-भण्डार हैं। जिन सभी में हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का अच्छा संग्रह है। इनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी भाषा के हजारों ग्रंथों की पाण्डुलिपियां सुरक्षित हैं। यहाँ किसी एक विषय पर अथवा एक ही भाषा की पाण्डुलिपियां संग्रहित नहीं हैं अपितु धर्म, दर्शन, पुराण, कथा, काव्य एवं चरित के अतिरिक्त इतिहास ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद, संगीत जैसे लौकिक विषयों पर भी अच्छी से अच्छी कृतियों की पाण्डुलिपियां उपलब्ध होती हैं। इसलिये ये प्राचीन साहित्य, इतिहास, एवं संस्कृति के अध्ययन करने के लिए प्रामाणिक केन्द्र हैं।

राजस्थान के इन ग्रंथ-भण्डारों में ताड़पत्र की पाण्डुलिपियों की दृष्टि से जैसलमेर का बृहद् ज्ञान-भण्डार अत्यधिक महत्वपूर्ण है किन्तु कागज पर लिखी पाण्डुलिपियों की दृष्टि से नागीर, बीकानेर, जयपुर एवं अजमेर के शास्त्र-भण्डार उल्लेखनीय हैं। अकेले नागीर के महारानीय शास्त्र भण्डार में १५,००० हस्तलिखित ग्रंथ एवं २००० गुटकों का संग्रह है। गुटकों में संग्रहित ग्रंथों की संख्या की जावे तो वह भी १०,००० से कम नहीं होगी। उगी

तरह जयपुर में ३० से भी अधिक संग्रहालय हैं जिनमें ग्रामेर शास्त्र भण्डार, दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर ग्रंथ भण्डार, तेरहपन्थियों का शास्त्र भण्डार, पाटोदियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इन भण्डारों में अपभ्रंश एवं हिन्दी के ग्रंथों की पाण्डुलिपियों का अच्छा संग्रह है। इन शास्त्र भण्डारों में जैन विद्वानों द्वारा लिखित ग्रंथों के अतिरिक्त जैनेतर विद्वानों द्वारा निबद्ध ग्रंथों की भी प्राचीनतम एवं महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों का संग्रह मिलता है।

ग्रंथ भण्डारों में संग्रहित पाण्डुलिपियों के अन्त में प्रशस्तियां दी हुई हैं। जो इतिहास की दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। ये प्रशस्तियां ११वीं शताब्दी से लेकर १९वीं शताब्दी तक की हैं। वैसे प्रशस्तियां दो प्रकार की होती हैं—एक स्वयं लेखक द्वारा लिखी हुई तथा दूसरी लिपिकारों द्वारा लिखी हुई होती हैं। ये दोनों ही प्रामाणिक होती हैं और इनकी प्रामाणिकता में कभी शंका नहीं की जा सकती। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इन ग्रंथकारों एवं लिपिकारों ने इतिहास का महत्त्व बहुत पहले ही समझ लिया था इसलिए ग्रंथ लिखवाने वाले श्रावकों का, उनकी गुरु परम्पराओं तथा तत्कालीन सम्राट् अथवा शासक के नामोल्लेख के साथ-साथ उनके नगर का भी उल्लेख किया करते थे। राजस्थान के इन जैन भण्डारों में संग्रहित प्रतियों के मुख्य केन्द्र हैं—अजमेर, जैसलमेर, नागौर, चम्पावती, डूंगरपुर, वांसवाड़ा, चित्तौड़, उदयपुर, आमेर, बून्दी, बीकानेर आदि। इसलिए इनके शासकों एवं राजस्थान के नगरों एवं कस्बों के नाम खूब मिलते हैं, जिनके आधार पर यहाँ के ग्राम और नगरों के इतिहास पर भी अच्छा प्रकाश डाला जा सकता है।

अभी तक जैसलमेर भण्डार के अलावा अन्य किसी भी भण्डार का विस्तृत अध्ययन नहीं किया गया है। जिन्होंने अभी तक सर्वेक्षण किया है उनमें विदेशियों में व्यूहलर, पीटर्सन, तथा भारतीय विद्वानों में श्रीधर, भण्डारकर, हीरालाल, हंसराज, हंसविजय, सी०डी० दलाल आदि ने केवल जैसलमेर भण्डार का ही सर्वेक्षण का कार्य किया है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् राजस्थान साहित्यानुसंधान के कार्य में काफी आगे बढ़ा है। राजस्थान सरकार ने जीधपुर में “राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान” के नाम से एक शोध केन्द्र स्थापित किया है। इसकी मुख्य प्रवृत्ति महत्त्वपूर्ण प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों को संग्रहित व प्रकाशित करने की है। इस केन्द्र की बीकानेर, जयपुर, उदयपुर, कोटा, चित्तौड़गढ़ आदि स्थानों पर शाखा भी हैं। इसके अतिरिक्त राज्य सरकार से अनुदान प्राप्त संस्थाओं में साहित्य संस्थान उदयपुर, भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान बीकानेर, राजस्थानी शोध संस्थान चोपासनी आदि मुख्य हैं। स्वतन्त्र रूप से हस्तलिखित ग्रंथों के संरक्षण का कार्य करने वाली संस्थाओं में महावीर भवन जयपुर, अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, विनय चन्द्र ज्ञान-भण्डार-लाल भवन, जयपुर, खतर गच्छीय ज्ञान भण्डार-जयपुर आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

राजस्थान के ग्रन्थ भण्डारों के सूची-पत्रों के प्रकाशन की दिशा में भी थोड़ा बहुत कार्य अवश्य हुआ है, पर वह पर्याप्त नहीं है। बीकानेर की अनूप संस्कृत लायब्रेरी व उदयपुर

के सरस्वती भवन के हस्तलिखित ग्रन्थों के- सूची-पत्र प्रकाशित हुए हैं। साहित्य संस्थान उदयपुर की ओर से हस्तलिखित ग्रन्थों के सात भाग प्रकाशित हो चुके हैं। राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर व जयपुर के हस्तलिखित ग्रन्थों के भी ७ भाग प्रकाशित हुए हैं। राजस्थानी शोध संस्थान चोपासनी के हस्तलिखित ग्रन्थों के भी कुछ भाग प्रकाशित हुए हैं। महावीर भवन जयपुर ने भी इस दिशा में अनुकरणीय कार्य किया है। वहाँ से डा० कस्तूरचन्द्र कासलीवाल एवं प० अनूपचन्द्रजी न्यायतीर्थ के तैयार किए हुए राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रन्थ सूचियों के पाँच भाग प्रकाशित हो चुके हैं। विनयचन्द्र ज्ञान भाण्डार में उपलब्ध हस्तलिखित ग्रन्थों के एकभाग का प्रकाशन हुआ है। प्रस्तुत ग्रन्थ द्वारा भट्टारकीय ग्रन्थ भण्डार नागौर के हस्तलिखित ग्रन्थों का प्रथम भाग सामने आ रहा है। यदि राजस्थान के सभी भण्डारों की व्यवस्थित सूचियाँ प्रकाशित होकर सामने आ जायें तो साहित्य-जगत् एवं शोधकर्त्ताओं के लिए बड़ी हितकारी सिद्ध हो सकती है।

ग्रन्थ सूचियों की अनुसंधान एवं इतिहास लेखन में उपयोगिता

साहित्यिक, दार्शनिक, ऐतिहासिक अनुसंधानों में ग्रन्थ सूचियों का विशेष महत्त्व होता है। एक प्रकार से ये ग्रन्थ सूचियाँ शोध कार्य में आधार-भित्ति का कार्य करती हैं। भारतीय साहित्य की परम्परा बड़ी समृद्ध और वैविध्यपूर्ण रही है। छापेखाने के अविष्कार के पूर्व यहाँ का साहित्य कंठ-परम्परा से लेखन परम्परा में अवतरित होकर सुरक्षित रहा। विदेशी आक्रमणकारियों ने यहाँ की सांस्कृतिक परम्पराओं को नष्ट करने के लक्ष्य से साहित्य और कला को भी अपना लक्ष्य बनाया। राजघरानों में संरक्षित बहुतसा साहित्य नष्ट कर दिया गया। राजघरानों में निवर्तमान साहित्य उस विशाल साहित्य का अल्पांश ही है। व्यक्तिगत संग्रहालय किसी न किसी रूप में थोड़े बहुत सुरक्षित अवश्य रहे हैं, पर उनके महत्त्व को ठीक प्रकार से न समझने के कारण बहुत सी महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियाँ देश से बाहर चली गई हैं। स्वतन्त्रता के बाद भी यह क्रम जारी है। इस सांस्कृतिक निधि की सुरक्षा का प्रश्न राष्ट्रीय स्तर पर हल किया जाना चाहिए।

प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों की दृष्टि से राजस्थान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रदेश है। रेगिस्तानी इलाका होने के कारण विदेशी आक्रमणकारियों से यह थोड़ा बहुत बचा रहा। इस प्रदेश में जैनो की संख्या अधिक होने के कारण भी भारतीय साहित्य का बहुत बड़ा भाग जैन मन्दिरों और उपाध्यों के माध्यम से सुरक्षित रहा। जैन धावकों में शास्त्र-वाचन और स्वाध्याय की विशेष परम्परा होने के कारण उन्होंने महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की प्रतिनिधियाँ करवा कर उनकी प्रतियाँ मन्दिरों, उपाध्यों एवं व्यक्तिगत संग्रहालयों में सुरक्षित रखीं। ग्रन्थों की सुरक्षा एवं संग्रह की दृष्टि से जैनाचार्यों, साधुओं, यतियों एवं धावकों का प्रयास विशेष उल्लेखनीय है। प्राचीन ग्रन्थों की सुरक्षा एवं नये ग्रन्थों के संग्रह में जितना ध्यान जैन समाज ने दिया है उतना अन्य समाज नहीं दे सका। ग्रन्थों की सुरक्षा में उन्होंने अपना पूरा

जीवन लगा दिया और किसी भी विपत्ति अथवा संकट के समय ग्रंथों की सुरक्षा को प्रमुख स्थान दिया ।

यहाँ एक बात और विशेष ध्यान देने की है और वह यह है कि जैनाचार्यों एवं श्रावकों ने अपने शास्त्र-भण्डारों में ग्रंथों की सुरक्षा एवं संग्रह करने में जरा भी भेदभाव नहीं रखा । जिस प्रकार उन्होंने जैन-ग्रन्थों की सुरक्षा एवं उनका संकलन किया उसी प्रकार जैनतर ग्रन्थों की सुरक्षा एवं संकलन पर भी विशेष जोर दिया ।

राजस्थान के इन जैन-भण्डारों में संग्रहीत ग्रन्थों का अभी तक मूल्यांकन नहीं हो सका है । विद्या के एवं शोध के अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जिन पर इन भण्डारों में संग्रहीत ग्रन्थों के आधार पर कार्य किया जा सकता है । आयुर्वेद, छन्द, ज्योतिष, अलंकार, नाटक, भूगोल, इतिहास, सामाजिक शास्त्र, न्याय व्यवस्था, यात्रा, व्यापार तथा प्राकृतिक सम्पदा आदि विभिन्न विषयों पर इन भण्डारों में संग्रहीत ग्रन्थों के आधार पर शोध कार्य किया जा सकता है । जिससे कितने ही नये तथ्यों की जानकारी मिल सकती है । भाषा-विज्ञान, अर्थशास्त्र एवं समीक्षा ग्रन्थों पर कार्य करने के लिए भी इनमें प्रचुर सामग्री संग्रहीत है । देश में विभिन्न वाद-शाहों एवं राजाओं के शासन काल में विभिन्न वस्तुओं की क्या-क्या कीमतें थीं ? तथा भुखमरी, अकाल जैसे आर्थिक रोचक विषयों पर भी इनमें पर्याप्त सामग्री उपलब्ध होती हैं । ऐसे कितने ही पत्रों का संग्रह मिलेगा जिनमें मां बाप ने भुखमरी के कारण अपने लड़कों को बहुत कम मूल्य में बेच दिया था । इन सब के अतिरिक्त भण्डारों में संग्रहीत ग्रन्थों में एवं उनकी प्रशस्तियों के आधार पर देश के सैकड़ों हजारों नगरों एवं ग्रामों के इतिहास पर, उनमें सम्पन्न विभिन्न समारोहों पर, वहाँ के निवासियों पर प्रचुर सामग्री का संकलन किया जा सकता है ।

नागौर का ऐतिहासिक परिचय , ग्रन्थ भण्डार की स्थापना एवं विकास

वर्तमान में नागौर राजस्थान प्रदेश का एक प्रान्त है जो इसके मध्य में स्थित है । पहिले यह जोधपुर राज्य का प्रमुख भाग था । नागौर जिले का प्रमुख नगर है तथा यहाँ की भूमि अर्द्ध रेगिस्तानी है ।

रामायण कालीन अनुश्रुति के अनुसार पहिले यहाँ पर समुद्र था । लेकिन राम चन्द्रजी ने अग्निबाण चलाकर उस समुद्र को सुखा दिया । महाभारत के अनुसार इस प्रदेश का नाम कुरु-जांगल था । मौर्यवंश का शासन भी इस क्षेत्र पर रहा । विक्रम की दूसरी शताब्दी से पाँचवीं शती तक नागौर का अधिकांश क्षेत्र नागवंशी राजाओं के अधीन रहा । उसी समय से नागौर, नाग पट्टन, अहिपुर, भुजंगपुर अहिछत्रपुर आदि विभिन्न नामों से समय-समय पर जाना जाता रहा । बाद में कुछ समय के लिए इस प्रदेश पर गौड़ राजपूतों का शासन रहा । बाद में गौड़ राजपूत कुचामन, नांवा, मारोठ की ओर चले गये, इसलिए यह पूरा प्रदेश गौड़वाटी के नाम से जाना जाने लगा ।

विक्रम की ७वीं शताब्दी में यहाँ पर चौहानों का शासन हुआ । चौहानों की

राजधानी शाकम्भरी (साम्भर) थी। इनके शासन काल में यह क्षेत्र सपादलक्ष के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यही कारण है कि आज भी स्थानीय लोग इसे सवालक्ष कहते हैं।

इसी बीच कुछ समय के लिये यह नगर प्रतिहारों के अधीन आ गया। जयसिंह सूरि के धर्मोपदेश की प्रशस्ति में मिहिरभोज प्रतिहार का उल्लेख मिलता है। जयसिंह सूरि ने नागौर में ९१५ वि. सं. में इस ग्रन्थ की रचना की थी।^१

अणहिलपुर पाटन (गुजरात) के शासक सिद्धराज जयसिंह ने १२वीं शताब्दी में इस क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया। जो भीमदेव के समय तक बना रहा। महाराजा कुमारपाल के गुरु प्रसिद्ध जैनाचार्य कविकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्र सूरि का पट्टाभिषेक संवत् ११६६ की वैशाख सुदी ३ को यहीं पर हुआ था।

इसके बाद यह नगर तथा क्षेत्र वापिस चौहानों के अधिकार में चला गया। प्राचीन समय से ही यहाँ पर छोटा गढ़ बना हुआ था जिसके खण्डहर आज भी उपलब्ध होते हैं। चौहानों ने अपने मध्य में होने के कारण तथा लाहौर से अजमेर जाने के रास्ते में पड़ने के कारण यहाँ पर दुर्ग बनाना आवश्यक समझा क्योंकि उस समय तक महमूद गजनवी के कई बार आक्रमण हो चुके थे। इसलिए नगर में विशाल दुर्ग का निर्माण वि० सं० १२११ में पृथ्वीराज तृतीय के पिता सोमेश्वर के शासनकाल में प्रारम्भ हुआ। जिसका शिलालेख दरवाजे पर आज भी सुरक्षित है।

सन् १२९३ में पृथ्वीराज चौहान (तृतीय) की हार के बाद यहाँ पर दिल्ली के सुल्तानों का अधिकार हो गया। उसी समय यहाँ पर प्रसिद्ध मुस्लिम संत तारकीन हुआ जो अजमेर वाले ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का शिष्य था। इसकी दरगाह परकोटे के बाहर गिनाली-तालाब के पीछे की तरफ बनी हुई है। इसके लिए उस के अवसर पर अजमेर के मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह से चादर कन्न पर ओढ़ाने के लिए आती है। इसी समय से नागौर मुस्लिम धर्म का भी केन्द्र बन गया।

एक शिलालेख के अनुसार सन् १३९३ में इस क्षेत्र पर देहली के शासक फीरोज-शाह तुगलक का शासन था। फीरोजशाह के शासन में ही दिगम्बर जैन भट्टारक सम्प्रदाय के द्वारा संवत् १३९० पौष सुदी १५ को दिल्ली में वस्त्र धारण करने की प्रथा का श्रीगणेश हुआ। उसके पूर्व वे सब नग्न रहते थे। इन भट्टारकों का मुस्लिम शासकों (बादशाहों) पर अच्छा प्रभाव था। इसलिये उन्हें विहार एवं धर्म प्रचार की पूरी सुविधा थी। यही नहीं मुस्लिम बादशाहों ने इनकी सुरक्षा के लिए समय-समय पर कितने ही फरमान निकाले थे। उसी समय से दिल्ली गादी के भट्टारक नागौर आते रहे और संवत् १५७२ में नागौर में एक स्वतन्त्र रूप में भट्टारक गादी की स्थापना की।

सन् १४०० ई. के बाद नागौर की स्वतन्त्र रियासत स्थापित हुई। जिसका^२ फीरोजखान प्रथम सुल्तान था। जो गुजरात के राजवंश^३ से सम्बन्धित था। जिसका प्रथम

१. Jainism in Rajasthan by Dr. K.C. Jain Page, 153.

२. History of Gujarat, page 68.

३. Epigraphika Indomuslimica 1923-24 and 26.

शिलालेख १४१८ A.D. का मिलता है। सुल्तान फिरोजखान के समय मेवाड़ के महाराजा मोकल ने नागौर पर आक्रमण किया तथा डोडवाना तक के प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया। मोकल के लौटने पर शम्सखां के पुत्र मुजाहिदखां ने इस क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया। शम्सखां ने शम्स तालाब बनवाया। शम्स तालाब के किनारे अपने गुरु की दरगाह तथा मस्जिद बनवाई। इसी दरगाह के प्रांगण में ही शम्सखां तथा उनके वंशजों की कब्रें बनी हुई हैं। इस तालाब के चारों ओर परकोटा बना हुआ है।

महाराजा कुम्भा ने भी एक बार नागौर पर आक्रमण किया था। जिसका शिलालेख गोठ मांगलोद के माताजी के मन्दिर में लगा हुआ है। महाराजा कुम्भा ने राज्य को वापस पुराने सुल्तान को ही सौंप दिया। इसी वंश में मुजाहिद खां, फिरोज खां, जफरखां, नागौरीखां आदि सुल्तान हुए। ये सुल्तान मुस्लिम होते हुये भी हिन्दू तथा जैनधर्म के विरोधी नहीं थे। इनके राज्यकाल में दिगम्बर जैन भट्टारक तथा साधुओं का विहार निर्विघ्न गति के साथ होता था। उस समय जैनधर्म के बहुत से ग्रन्थों की रचनाएं एवं लिपि करने का कार्य सम्पन्न हुआ। तत्कालीन प्रसिद्ध भट्टारक जिनचन्द्र संवत् १५०७ से १५७१ का भी यहाँ आगमन हुआ था। जिनके द्वारा संवत् १५४८ में प्रतिष्ठित सैंकड़ों मूर्तियां सम्पूर्ण देश के बड़े-बड़े जैन मन्दिरों में उपलब्ध होती हैं। पं० मेधावी ने नागौर में ही रहकर संवत् १५४१ में धर्मगृह श्रावकाचार की रचना की थी।^१ इसमें फिरोजखान की न्यायप्रियता, वीरता और उदारता की प्रशंसा की है।^२ मेधावी भट्टारक जिनचन्द्र के शिष्य थे। इस ग्रन्थ की प्रतियां भारत के सभी जैन ग्रन्थ भण्डारों में प्रायः पाई जाती हैं। इसी वंश के नवाब नागौरीखां के दीवान परवतशाह पाटनी हुए थे। जिनका शिलालेख श्री दिगम्बर जैन बीस पन्थी मन्दिर में लगा हुआ है। इन परवतशाह पाटनी ने एक वेदी बनवाई तथा उसकी प्रतिष्ठा बड़ी धूम-धाम से कराई थी। ऐसा शिलालेख में लिखा है। चूने की पुताई हो जाने से पूरा लेख पढ़ने में नहीं आता है।

सुल्तानों के शासन के पतन के पश्चात् नागौर पर मुगल सम्राट् अकबर का अधिकार हो गया। स्वयं अकबर भी नागौर आया था। उसने गिनाणी तालाब के किनारे दो मीनारों वाली मस्जिद बनवाई। जो आज भी अकबरी मस्जिद के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें अकबर के समय का फारसी भाषा का शिलालेख लगा हुआ है।

जोधपुर नरेश महाराजा गजसिंह के दो पुत्र थे—बड़े अमरसिंह तथा छोटे जसवन्त सिंह। अमरसिंह बड़े अक्खड़, निर्भीक और वीर थे। जोधपुर के सरदार अमरसिंह से नाराज हो गये। शाहजहाँ ने इनकी वीरता पर खुश होकर नागौर का प्रदेश इनको जागीर में दे दिया।

१. राजस्थान के ग्रन्थ भण्डारों की सूची, भाग प्रथम, पृष्ठ ७६

२. सपादलक्षे विपयेति सुन्दरे, श्रियापुरं नागपुरं समस्तितत् ।

फैरोजखानो नृपतिः प्रयाति यन्नायेन शौर्येण रिपून्निहन्ति च ॥

अमरसिंह के पश्चात् शाहजहाँ ने इन्दरसिंह को नागौर का राजा बना दिया । इन्दरसिंह ने शहर में अपने रहने के लिए एक सुन्दर महल बनवाया । जिसका उल्लेख महल के दरवाजे पर लेख में मिलता है ।

सैकड़ों वर्षों तक मुस्लिम शासन में रहने के कारण कई धर्मान्ध शासकों ने यहाँ के हिन्दू एवं जैन मन्दिरों को ग़ुल्ल ग़ुल्ल कर दिया । मन्दिरों को मस्जिदों में परिवर्तित किया गया । फिर भी नागौर जैन सस्कृति का एक प्रमुख नगर माना जाता रहा । सिद्धसेनसूरि (१२वीं शताब्दी) ने इसका प्रमुख तीर्थ के रूप में उल्लेख किया है । जैनाचार्य हेमचन्द्रसूरि के पट्टाभिषेक के समय यहाँ के धनद नाम के श्रेष्ठ ने अपनी अपार सम्पत्ति का उपयोग किया था । १३वीं शताब्दी में पेशवाह ने यहाँ एक जैन मन्दिर का निर्माण कराया था । तपागच्छ की एक शाखा नागपुरीय का उद्गम भी इसी नगर से माना जाता है । १५वीं १६वीं शताब्दी में यहाँ कितनी ही श्वेताम्बर मूर्तियों की प्रतिष्ठा हुई । उपदेशगच्छ के कवकसूरि ने ही यहाँ जीतलनाथ के मन्दिर की प्रतिष्ठा कराई थी ।

शास्त्र भण्डार की स्थापना एवं विकास—

सम्बन् १५८१, श्रावण शुक्ला पंचमी को भट्टारक रत्नकीर्ति ने यहाँ भट्टारकीय गादी के साथ ही एक बृहद् ज्ञान भण्डार की स्थापना की । जिनचन्द्र के शिष्य भट्टारक रत्नकीर्ति के पश्चात् यहाँ एक के बाद दूसरे भट्टारक होते रहे । इन भट्टारकों के कारण ही नागौर में जैनधर्म एवं साहित्य का अच्छा प्रचार प्रसार होता रहा । नागौर का यह ग्रन्थ भण्डार सारे राजस्थान में विशाल एवं समृद्ध है । पाण्डुलिपियों का ऐसा विशाल संग्रह राजस्थान में कहीं नहीं मिलता । यहाँ करीब १५ हजार पाण्डुलिपियों का संग्रह है जिनमें करीब दो हजार से अधिक गुटके हैं । यदि गुटकों में संग्रहीत ग्रन्थों की संख्या की जावे तो इनकी संख्या भी १०,००० से कम नहीं होगी । भण्डार में मुख्यतः प्राकृत, अपभ्रंश मस्कृत, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा में निबद्ध कृतियाँ सर्वाधिक संख्या में हैं । अधिकांश पाण्डुलिपियाँ १४वीं शताब्दी से १६वीं शताब्दी तक की हैं । जिनसे पता चलता है कि गत १५० वर्षों से यहाँ ग्रन्थ संग्रह की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया । इससे पूर्व यहाँ ग्रन्थ लेखन का कार्य पूर्ण वेग से होता था । सम्पूर्ण भारत वर्ष के शस्त्रागारों में सैकड़ों ऐसे ग्रन्थ हैं जिनकी पाण्डुलिपियाँ नागौर में हुई थीं । प्राकृत भाषा के ग्रन्थों में आचार्य कुन्दकुन्द के समयसार की यहाँ सन् १३०३ की पाण्डुलिपि है, इसी तरह मूलाचार की १३३८ की पाण्डुलिपि उपलब्ध होती है । कुछ अन्येतर अनुपलब्ध ग्रन्थों में वरांग-चरित (तेजपाल) वसुधर चरित (श्री भूषण), सम्यक्त्व कामुदी (हरिसिंह), ऐमिणाह चरित (दामोदर), जगरूपविलास

(जगरूप कवि), कृपण पञ्चीसी (कल्ह), सरस्वती-लक्ष्मी संवाद (श्री भूषण), त्रियाकोण (सुखदेव) आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं ।

भट्टारक परम्परा—

नागौर की परम्परा में निम्न भट्टारक हुए^१—

- (१) भट्टारक रत्नकीर्ति—संवत् १५८१
- (२) भट्टारक भुवनकीर्ति—संवत् १५८६
- (३) भट्टारक धर्मकीर्ति^२—संवत् १५९०
- (४) भट्टारक विशालकीर्ति—संवत् १६०१
- (५) भट्टारक लक्ष्मीचन्द्र—संवत् १६११
- (६) भट्टारक सहस्रकीर्ति—संवत् १६३१
- (७) भट्टारक नेमिचन्द्र—संवत् १६५०
- (८) भट्टारक यशःकीर्ति—संवत् १६७२
- (९) भट्टारक भानुकीर्ति—संवत् १६९०
- (१०) भट्टारक श्रीभूषण—संवत् १७०५
- (११) भट्टारक धर्मचन्द्र—संवत् १७१२
- (१२) भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति प्रथम—संवत् १७२७
- (१३) भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति—संवत् १७३८
- (१४) भट्टारक रत्नकीर्ति द्वितीय
- (१५) भट्टारक ज्ञानभूषण
- (१६) भट्टारक चन्द्रकीर्ति
- (१७) भट्टारक पद्मनन्द
- (१८) भट्टारक सकलभूषण
- (१९) भट्टारक सहस्रकीर्ति
- (२०) भट्टारक अनन्तकीर्ति
- (२१) भट्टारक हर्षकीर्ति

१. (क) नागौर ग्रन्थ भण्डार में उपलब्ध भट्टारक पट्टावली के आधार पर ।

(ख) डॉ० जोहरापुरकर-भट्टारक सम्प्रदाय पृष्ठ-१२४-२५

२. डॉ० कासलीवाल ने अपनी पुस्तक शाकम्भरी प्रदेश के सांस्कृतिक विकास में जैन-धर्म का योगदान में “भुवनकीर्ति” नाम दिया है ।

- (२२) भट्टारक विशाभूषण
- (२३) भट्टारक हेमकीर्ति
- (२४) भट्टारक क्षेमेन्द्रकीर्ति
- (२५) भट्टारक मुनीन्द्रकीर्ति
- (२६) भट्टारक कनककीर्ति
- (२७) भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति

भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति नागौर गादी के अन्तिम भट्टारक हुए हैं । नागौर गादी का नागपुर, अमरावती, अजमेर आदि नगरों से भी सम्बन्ध रहा है । भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के पश्चात् नागौर ग्रन्थ भण्डार बन्द पड़ा रहा । अनेक वर्षों के बाद पं० सतीशचन्द्र तथा यतीन्द्र कुमार शास्त्री ने ग्रन्थ सूची निर्माण एवं प्रकाशन का कार्य अपने हाथों में लिया था परन्तु किन्हीं कारणों से वे इसे पूरा नहीं कर पाये ।

ग्रन्थ सूचीको अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए अन्त में तीन परिशिष्ट दिये गये हैं । प्रथम में कतिपय अज्ञात एवं अप्रकाशित महत्त्वपूर्ण रचनाओं की नामावली दी गई है । ये रचनायें काव्य, पुराण, चरित, नाटक, रास एवं अलंकार, अर्थशास्त्र इतिहास आदि सभी विषयों से सम्बन्धित हैं । उनमें से बहुत सी रचनायें तो ऐसी हैं जो संभवतः सर्व प्रथम विद्वानों के समक्ष आयी होंगी । इनमें से अपभ्रंश भाषा के ग्रन्थों में जितपूजा पुस्तक विधान (अमरकीर्ति), नायकुमार चरित (पुष्पदन्त), नारायण प्रच्छा जयमाल, बाहुवली पाथड़ी, भविष्यदत्त चरित (पं० वनपाल), प्राकृत के ग्रन्थों में जयति उत्तारण (अभयदेव सूरि), चौबीस दण्डक (गजसार), वनस्पति सत्तरी (मुनिचन्द्र सूरि), संस्कृत के ग्रन्थों में— आश्वानुशासन (पार्श्वनाग), आराधना कथा कोश (चिह्नान्दि), आलाप पद्धति (कवि विष्णु) आशाचराष्टक (मुनिचन्द्र सूरि), कुमारसम्भव सटीक (टीकाकार पं० लालू), मूलसंघागरिण (रत्नकीर्ति), योग शतक (विदग्ध वैद्य), रत्न परीक्षा (चण्डेश्वर सेठ), वाक्य प्रकाश सूत्र सटीक (दामोदर), सम्यक्तव कौमुदी (कवि यशः सेन), सुगन्ध दशमी कथा (ब्रह्म जिनदास), हेमकथा (रत्नामणि), तथा हिन्दी के ग्रन्थों में इन्द्रवधुचित्त हुलास आरती (लचीरग), खूदीप भाषा (भूवानीदास), त्रेपठ श्लाका पुरुष चौपई (पं० जिनमति), प्रथम दखान, रत्नबूढ़रास (यशः कीर्ति), रामाना (तुलसीदास), बाद पञ्चीसी (ब्रह्म गलाल), हरिश्चन्द्र चौपई (ब्रह्म वेणुदास), आदि के नाम उल्लेखनीय हैं ।

ग्रन्थ-सूची के सम्बन्ध में—

ग्रन्थ सूचियों के निर्माण में कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। प्रत्येक पाण्डु-लिपि को सावधानी के साथ पढ़कर, ग्रन्थ, ग्रन्थकार, रचना-संवत्, लिपि-संवत्, रचना स्थल, लिपि स्थल, विषयादि कई बातों का पता लगाना होता है। कभी कभी एक ही पन्ने में एकाधिक रचनाएं भी मिलती हैं। थोड़ी सी भी प्रमाद की स्थिति, लिपि की अस्पष्टता व लिपि-पढ़ने की लापरवाही से अनेक भ्रान्तियों व अशुद्धियों की परम्परा चल पड़ती है। कभी लिपिकार को रचनाकार और कभी रचनाकार को लिपिकार समझ लिया जाता है। इसी तरह कभी लिपि-संवत् को रचना-संवत् समझ लिया जाता है।

रचना के अन्त में दी गई प्रशस्तियों का ऐतिहासिक दृष्टि से बड़ा महत्त्व होता है। ये प्रशस्तियाँ दो प्रकार की होती हैं—पहली स्वयं लेखक द्वारा लिखी हुई तथा दूसरी लिपिकारों द्वारा लिखी हुई। ये दोनों ही प्रामाणिक होती हैं, और इनकी प्रामाणिकता में कभी शंका भी नहीं की जा सकती। ऐसा प्रतीत होता है कि इन ग्रन्थकारों एवं लिपिकारों ने इतिहास के महत्त्व को बहुत पहले ही समझ लिया था, शायद इसलिए ही ग्रन्थ लिखवाने वाले श्रावकों का, उनकी गुरु-परम्परा तथा तत्कालीन सम्राट् अथवा शासक के नाम्मोल्लेख के साथ-साथ उनके नगर का भी उल्लेख किया जाता था। इनमें ग्रन्थ, ग्रन्थकार, रचना-संवत्, लिपि-संवत्, लिपिकार, लिपिस्थल आदि की भी बहुमूल्य सूचनाएं मिलती हैं। साहित्य के इतिहास लेखन में इन सूचनाओं का बड़ा महत्त्व होता है।

प्रत्येक रचना से सम्बन्धित ऊपर लिखित जानकारी प्राप्त कर लेने के बाद समग्र रचनाओं को वर्गीकृत करना पड़ता है। वर्गीकरण का यह कार्य जितना सरल दिखाई देता है, वह उतना ही दुरूह भी है। कई विषय और काव्य-रूप अन्य विषयों और काव्य-रूपों से इस तरह मिले दिखाई देते हैं कि उनको अलग-अलग वर्गों में बाँटना बड़ा मुश्किल हो जाता है। इसका एक कारण तो यह है कि जैन-साहित्यकारों ने काव्य-रूपों के क्षेत्र में नानाविध नये-नये प्रयोग किये। एक ही चरित्र व कथा को भिन्न-भिन्न रूपों में वर्णित किया। उन्होंने प्रचलित सामान्य काव्य-रूपों को हुबहु स्वीकार न कर उनमें व्यापकता, लौकिकता और सहजता का रंग भरा। संगीत को शास्त्रीयता से मुक्त कर विभिन्न प्रकार की लोकदेशियों को अपनाया। आचार्यों द्वारा प्रतिपादित प्रबन्ध-मुक्तक की चली आती हुई काव्य परम्परा के बीच काव्य रूपों के कई नये नये स्तर निर्मित किये। साथ ही काव्य विषय की दृष्टि से भी उन्हें नयी भाव-भूमि और मौलिक अर्थवत्ता दी। उदाहरण के लिए वेलि, बारहमासा, विवाहलो, रासो, चौपई संज्ञक विभिन्न काव्यों व रूपों का परिक्षण किया जा सकता है।

इस ग्रन्थ-सूची में समाविष्ट हस्तलिखित ग्रन्थों को २२ विषयों में विभाजित किया गया है। ये विषय क्रमशः इस प्रकार हैं—(१) अव्यात्म, आगम, सिद्धान्त एवं चर्चा, (२) आयुर्वेद (३) उपदेश एवं सुभाषितावली, (४) कथा, (५) काव्य, (६) कोश, (७) चरित्र (८) सचित्र ग्रन्थ, (९) छन्द एवं अलंकार, (१०) ज्योतिषः (११) न्यायशास्त्र, (१२) नाटक एवं संगीत,

ग्रन्थसूची के इस भाग में करीब दो हजार ग्रन्थों का विवरणात्मक परिचय प्रस्तुत किया गया है। इसमें यदि कोई कमी रह गयी हो अथवा लेखक का नाम, लिपिकाल, रचनाकाल आदि के देने में कोई अशुद्धि रह गयी हो तो पाठक विद्वान् हमें सूचित करने का कष्ट करेंगे, जिससे भविष्य के लिए उन पर ध्यान रखा जा सके। नागौर का परिचय जब मैं प्रथम बार ग्रन्थ भण्डार देखने के लिए गया था तब श्री मदनलालजी जैन के साथ पूरे नागौर का भ्रमण किया था, तब उन्हीं जैन सा० के माध्यम से तथा वहाँ प्रचलित किंवदन्तियों लेखों तथा शिलालेखों के आधार पर ही दिया है। इस सूची के आधार पर साहित्य एवं इतिहास के कितने ही नए तथ्य उद्घाटित हो सकेंगे तथा राजस्थान के कितने ही विद्वानों, श्रावकों, शासकों एवं नगरों के सम्बन्ध में नवीन जानकारी मिल सकेगी।

आभार—

मैं सर्वप्रथम जैन अनुशीलन केन्द्र के निदेशक प्रो० रामचन्द्र द्विवेदी का आभारी हूँ जिन्होंने ग्रन्थ-सूची के इस भाग को प्रकाशित करवाकर साहित्य जगत् का महान् उपकार किया है। जैन अनुशीलन केन्द्र द्वारा साहित्य-शोध, साहित्य-प्रकाशन एवं हस्तलिखित ग्रन्थों के सूचीकरण के क्षेत्र में जो महत्वपूर्ण कार्य किया है, व किया जा रहा है वह अत्यधिक प्रशंसनीय एवं श्लाघनीय है। आशा है भविष्य में साहित्य प्रकाशन के कार्य को और भी प्राथमिकता मिलेगी।

ग्रन्थ-सूची के इस भाग के स्वरूप एवं रूपरेखा आदि के निखारने में जिन विद्वानों का परामर्श एवं प्रोत्साहन मिला है उनमें प्रमुख हैं—प्रो० रामचन्द्र द्विवेदी (जयपुर) प्रो० गोपीनाथ शर्मा (उदयपुर), प्रो० सुधीरकुमार गुप्त (जयपुर), प्रो० के० सी० जैन (उज्जैन), डॉ० कस्तुरचन्द कासलीवाल एवं पं० अरुणचन्द्र न्यायतीर्थ (जयपुर)। इन सबके सहयोग के लिए मैं आभारी हूँ और कृतज्ञ हूँ।

भट्टारकीय दिगम्बर जैन ग्रन्थ भण्डार नागौर के उन सभी व्यवस्थापकों का आभारी हूँ जिन्होंने अपने यहाँ स्थित शास्त्र-भण्डार की ग्रन्थ-सूची बनाने में मुझे पूर्ण सहयोग दिया। वास्तव में यदि उनका सहयोग नहीं मिलता तो मैं इस कार्य में प्रगति नहीं कर सकता था। ऐसे व्यवस्थापक महानुभावों में श्री पन्नालाल जी चान्दवाड़, श्री डुंगरमलजी जैन, श्री जीवराज जी जैन, श्री शिखरीलाल जी जैन एवं श्री मदनलाल जी जैन आदि [सज्जनों के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं, इन सबका मैं हृदय से आभारी हूँ।

प्रेस कापी बनाने, अनुक्रमणिका तैयार करने व प्रूफ आदि में सहघर्मिणी स्नेहमयी चन्द्रकला जैन बी० ए० एलएल० बी० ने जो सहयोग दिया उसके लिए धन्यवाद देकर मैं उनके गौरव को कम नहीं करना चाहता।

अन्त में पुस्तक के प्रकाशन की व्यवस्था आदि में केन्द्र के सक्रिय निदेशक प्रो० द्विवेदी एवं कपूर आर्ट प्रिन्टर्स जयपुर के प्रबन्धकों का जो सहयोग मिला है उसके लिए मैं इन सबका हृदय से आभारी हूँ।

भट्टारकीय ग्रन्थ भण्डार नागौर में संलित

ग्रन्थों की सूची

विषय—अध्यात्म, आगम, सिद्धान्त एवं चर्चा

१. अमल वरान—X । देजी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—१" X ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२५७२ । रचना काल—X । लिपिकाल—X ।

२. अष्टोत्तरो शतक—यं० नगवतीदास । देजी कागज । पत्र संख्या—३३ । आकार—१०" X ६" । दशा—सामान्य । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२२६५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

३. आगम—X । देजी कागज । पत्र संख्या—२० । आकार—१० $\frac{3}{4}$ " X ४ $\frac{3}{4}$ " । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या—१३७४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—ज्येष्ठ सुदी १ मंगलवार, सं० १६५६ ।

४. आठ कर्म प्रकृति विचार—X । देजी कागज । पत्र संख्या—३१ । आकार—११ $\frac{3}{4}$ " X ६ $\frac{3}{4}$ " । दशा—सामान्य । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२७३६ । रचना काल—X । लिपिकाल—X ।

५. आत्म भीमांसा वचनिका—समस्तमद्र । वचनिकाकार—लयचन्द छावड़ा । देजी कागज । पत्र संख्या—६६ । आकार—१०" X ४ $\frac{3}{4}$ " । दशा—सामान्य । पूर्ण । भाषा—हिन्दी एवं संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । रचनाकाल—X । वचनिका रचनाकाल—चैत्र कृष्णा १४ सं० १८६६ । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला २, सं० १८३३ ।

६. आत्म सम्बोध काव्य—रघवू । देजी कागज । पत्र संख्या—२६ । आकार—११" X ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश । लिपि—नागरी । विषय—अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या—X । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

७. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या—२५ । आकार—११ $\frac{1}{2}$ " X ४ $\frac{3}{4}$ " । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१०२४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

८. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या—२७ । आकार—१० $\frac{1}{2}$ " X ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१०२७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—फाल्गुन सुदी १० बुधवार, सं० १६२६ ।

९. आत्मानुशासन—गुरुमन्नाचार्य । देजी कागज । पत्र संख्या—४६ । आकार—१० $\frac{3}{4}$ " X ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—सामान्य । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या—११३८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—कार्तिक शुक्ला १४ सोमवार, सं० १६१२ ।

१०. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या २७ । आकार- $11 \times 4\frac{1}{2}$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या १४०५ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला १२ सोमवार, सं० १७४२ ।

११. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या-४६ । आकार- $10\frac{1}{2} \times 4\frac{3}{4}$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३७६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला १० शनिवार, सं० १६२८ ।

१२. प्रति संख्या ४ । पत्र संख्या-३८ । आकार- $11 \times 4\frac{1}{2}$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११८६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा ६, मंगलवार, सं० १६०५ ।

विशेष—लिपिकार ने पूर्ण प्रशस्ति लिखि है ।

१३. प्रति संख्या-५ । पत्र संख्या-२७ । आकार- $10\frac{1}{2} \times 4\frac{3}{4}$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७०६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल ।

१४. आत्मानुशासन सटीक—गुणमद्राचार्य । टीकाकार- $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-५० आकार- $11\frac{1}{8} \times 4\frac{3}{4}$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या-२५३२ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

१५. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-७५ । आकार- $10\frac{1}{2} \times 4\frac{3}{4}$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१४०६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला १०, सं० १६१८ ।

१६. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या-६८ । आकार- $11 \times 4\frac{3}{4}$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३६८ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला १४ शुक्रवार, सं० १८५३ ।

१७. आत्मानुशासन सटीक—गुणार्थ । टीकाकार-टोडरमल । देशीकागज । पत्र संख्या-१३६ । आकार- $12\frac{1}{2} \times ६\frac{1}{2}$ । दशा-सामान्य । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या-११२७ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-आषाढ़ कृष्णा ८, शुक्रवार, सं० १८६८ ।

१८. आत्मानुशासन टीका—पं० प्रभाचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-२६ । आकार $11\frac{1}{8} \times 6$ । दशा-सामान्य । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८०५ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-माघ शुक्ला ४, सं० १८५६ ।

आदि भाग :—

वीरं प्रणम्य भववारिनिधिप्रपोष मुद्योतिताखिल पदार्थमनल्पपुण्यम् ।

निर्वाणमार्गमनवद्यगुणप्रबन्धमात्मानुशासनमहं प्रवरं प्रवक्ष्ये ॥

बृहद्दर्शमभ्रातुल्लोकसेनस्य विषयव्याभुग्ध बुद्धेः संबोधन व्याजेन सर्वोपकारकं
सन्भार्गमुपदर्शयितुकामो गुणभद्र देवो निर्विघ्नतः शास्त्र परिसमाप्त्यादिकं
फलमभिलषन्नभिष्ट देवताविशेषं नमस्कुर्वामि लक्ष्मीत्याद्याह

दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२७०७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

४२. अंक गर्भ खण्डारचक्र—देवनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार— $११\frac{१}{२} \times ५$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२३४३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

४३. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-४ । आकार— $११\frac{३}{४} \times ५\frac{१}{२}$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४५२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

४४. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या-४ । आकार— $१०\frac{१}{२} \times ५$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०७५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

४५. प्रति संख्या ४ । पत्र संख्या-४ । आकार— १२×५ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०३४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-चैत्र कृष्ण ३, सं० १७६७ ।

४६. अंक प्रमाण-× । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार— $१० \times ४\frac{१}{२}$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१६३१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

४७. कर्मकाण्ड सटीक-× । टीकाकार-पं० हेमराज । देशी कागज । पत्र संख्या-५० । आकार— $१०\frac{१}{२} \times ५\frac{३}{४}$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । टीका हिन्दी में । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१३५६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला ५, सं० १८४८ ।

४८. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-३१ । आकार— $१०\frac{१}{२} \times ६\frac{१}{२}$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६५४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

४९. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या-४४ । आकार— $१२\frac{१}{२} \times ५\frac{१}{२}$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५८५ । रचनाकाल-× । टीकाकाल-× । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला ६, सोमवार, सं० १७६४ ।

५०. कर्म प्रकृति—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार— $१०\frac{१}{२} \times ४\frac{१}{२}$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०२८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

५१. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-१६ । आकार— $११ \times ५\frac{१}{२}$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६७७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

५२. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या-६ । आकार— $११\frac{३}{४} \times ६$ । दशा-सामान्य । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१८३२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-माघ कृष्ण ५, सं० १८२२ ।

५३. प्रति संख्या ४ । पत्र संख्या-२० । आकार— $१०\frac{१}{२} \times ४\frac{१}{२}$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१५७४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

५४. प्रति संख्या ५ । पत्र संख्या-२० । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२८८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

५५. प्रति संख्या ६ । पत्र संख्या-१७ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ५''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०६६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-आश्विन शुक्ला १३, सं० १६५६ ।

विशेष—यह जोवनेर में लिखा गया है ।

५६. प्रति संख्या ७ । पत्र संख्या-१६ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०६८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १६१४ ।

५७. प्रति संख्या ८ । पत्र संख्या-१० । आकार- $१०'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२२५६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

५८. कर्म प्रकृति सार्थ—सि० च० नेमिचन्द्र । अर्थकार-× । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । आकार- $११'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२३६५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल ।

५९. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-४० । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ५''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५३८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६०. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या-११ । आकार- $१२\frac{३}{४}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०६३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-चैत्र कृष्णा ६, शुक्रवार, सं० १७६३ ।

६१. प्रति संख्या ४ । पत्र संख्या-२३ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५१६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-मंगशीर्ष शुक्ला ३, सं० १८२२ ।

विशेष—सं० १७२७ मंगशीर्ष शुक्ला १४, मंगलवार को महाराष्ट्र में श्री महाराज रघुनाथसिंह के राज्य में प्रति का संशोधन किया गया ।

६२. प्रति संख्या ५ । पत्र संख्या-२५ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३४७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६३. प्रति संख्या ६ । पत्र संख्या-१६ । आकार- $१२\frac{३}{४}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-सामान्य । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६५८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६४. प्रति संख्या ७ । पत्र संख्या-१२ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१४६६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६५. कर्म प्रकृति सूत्र भाषा-× । देशी कागज । पत्र संख्या-७१ । आकार- $६\frac{३}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-सामान्य । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१६०१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला १, मंगलवार, सं० १८२८ ।

६६. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-१५६ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२८०१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-मंगशीर्ष शुक्ला २, बुधवार, सं० १६६१ ।

७८. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-१५ । आकार-१६" × ६" । दशा-प्रतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६०६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला ११, सं० १६३६ ।

नोट—ग्रन्थ के पत्र आपस में चिपके हुए हैं । इसकी कालाढेरा जयपुर में लिपि की गई ।

७९. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या-१८ । आकार-११" × ५" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४६० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

८०. गोम्मटसार सटीक—सि० च० नेमिचन्द्र । टीकाकार-× । देशी कागज । पत्र संख्या-३४ । आकार-११" × ४^१/_४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२८३५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

८१. गोम्मट सार (जीवकाण्ड मात्र)—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-७१ । आकार-११" × ४^१/_४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२५६६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा १० सोमवार, सं० १५१८ ।

८२. गोम्मटसार सटीक—सि० च० नेमिचन्द्र । टीका-अज्ञात । देशीकागज । पत्र संख्या-२६० । आकार-१२" × ४^३/_४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१५७५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-आषाढ़ कृष्णा २ वृहस्पतिवार, सं० १६५६ ।

८३. गोम्मटसार भाषा—सि० च० नेमिचन्द्र । भाषाकार-महापण्डित टोडरमल । देशी कागज । पत्र संख्या-१०२६ । आकार-१४^१/_४" × ८^१/_४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-राजस्थानी (ढूँढारी) । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२६२२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

विशेष—नागौर गादी के भट्टारक १०८ श्री मुनीन्द्रकीर्तिजी ने “निसरावल” मूल्य देकर इस ग्रन्थ को सं० १९१९ माघ शुक्ला ५ को लिया है । भाषाकार ने लिखा है कि जीव तत्त्व प्रदीपिका संस्मृत टीका के अनुसार भाषा की गई है । टीका का नाम “सम्यज्ञान चन्द्रिका टीका” है । वचनिकाकार श्री पं० टोडरमलजी जयपुर निवासी ने अन्त में लिखा है कि लब्धिसार और क्षणसार शास्त्रों का व्याख्यान भी आवश्यकतानुसार मिला दिया गया है । अक्षर मोटे एवं सुन्दर हैं ।

८४. चक्रवर्ती ऋद्धि वर्णन-× । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-९^३/_४" × ४^३/_४" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या-२२७५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

८५. चतुर्दश गुणस्थान चर्चा—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-१५ । आकार-८" × ४^३/_४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१७८२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा १, सं० १९४३ ।

८६. चतुर्दश गुणस्थान व्याख्यान—× । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार-१०^१/_४" × ५" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त ।

ग्रन्थ संख्या-२५६७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

८७. चतुर्विंशति स्थानक चर्चा—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । आकार-१२ $\frac{१}{२}$ " × ५ $\frac{१}{२}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१२४३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-आपाद शुक्ला ११, मं० १८०० ।

८८. चतुर्विंशति स्थानक—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-२६ । आकार-१० $\frac{३}{४}$ " × ५" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२३४४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-मंगशीर्ष कृष्णा २, मं० १८७८ ।

८९. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-४२ । आकार-११" × ४ $\frac{१}{२}$ " । दशा-सामान्य । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०८० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-प्रथम ज्येष्ठ शुक्ला १, मं० १८७७ ।

९०. चतुस्त्रिंशद भाषना—मुनि पद्मनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार-११ $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४२२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

९१. चरचा पत्र—संकलित । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार-११" × ४ $\frac{१}{२}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२१३६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

९२. चरचा पत्र-× । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-८ $\frac{३}{४}$ " × ४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२१३४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

९३. चरचा पत्र-× । देशी कागज । पत्र संख्या-४३ । आकार-१२ $\frac{३}{४}$ " × ५ $\frac{३}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२७५७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

९४. चर्चापि—× । देशी कागज । पत्र संख्या-५६ । आकार-११ $\frac{१}{२}$ " × ५ $\frac{३}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत एवं हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-चर्चा । ग्रन्थ संख्या-१२७८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

९५. चर्चा तथा शील की नवपाटी-× । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-१२" × ५ $\frac{१}{२}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत एवं हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१६६३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

९६. चरचा शतक (सटीक)—पं० छानतराय । टीकाकार-हरजीमल । देशी कागज । पत्र संख्या-५२ । आकार-१२ $\frac{१}{२}$ " × ८ $\frac{३}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२५०१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा ३, बुधवार, मं० १६२८ ।

९७. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-८२ । आकार-१३" × ८ $\frac{३}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१५७८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-वैशाख कृष्णा ७, मंगलवार, मं० १६१० ।

६८. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या-४७ । आकार- $1\frac{3}{4}'' \times 5\frac{1}{4}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१५७७ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

६९. चरचा शास्त्र- $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-४५ । आकार- $1\frac{1}{2}'' \times 5\frac{1}{4}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१६४१ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-पोप शुक्ला १, सं० १८६६ ।

१००. चरचा समाधान-पं० भूधरदास । देशी कागज । पत्र संख्या-३ से १२६ । आकार- $5\frac{1}{4}'' \times 5''$ । दशा-बहुत अच्छी । अपूर्ण । भाषा-प्राकृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-चर्चा एवं सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१२७७ । रचनाकाल-माघ शुक्ला ५, सं० १८०६ । लिपिकाल- $\times$ ।

१०१. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-७७ । आकार- $1\frac{1}{2}'' \times 5\frac{1}{4}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२८१ । रचनाकाल-माघ शुक्ला ५, सं० १८०६ । लिपिकाल-आषाढ शुक्ला ४, शुक्रवार, सं० १८३० ।

१०२. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या-४८ । आकार- $1\frac{1}{2}'' \times 5\frac{1}{4}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२८० । रचनाकाल-सं० १८०६ । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा १२, सं० १८८१ ।

१०३. चौबीस ठाणा चौपई भाषा-पं० लोहर । देशी कागज । पत्र संख्या-३५ । आकार- $1\frac{1}{2}'' \times 5\frac{1}{4}''$ । दशा-सामान्य । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१७६६ । रचनाकाल-मंगसिर सुदी ५, सं० १७३६ । लिपिकाल-सं० १८५२ ।

टिप्पणी-चौबीस ठाणा के मूलकर्ता सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्द्राचार्य हैं । उस ग्रन्थ के आधार पर ही हिन्दी रूप में पं० लोहर ने रचना की है ।

१०४. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-५६ । आकार- $1\frac{1}{2}'' \times 5''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१५७० । रचनाकाल-मंगसिर सुदी ५, सं० १७३६ । लिपिकाल-अश्विन कृष्णा १, सं० १७६० ।

१०५. चौबीस ठाणा पिठीका- $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार- $1\frac{1}{2}'' \times 5\frac{1}{4}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१७७० । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

१०६. चौबीस ठाणा पिठीका तथा बंध व्युच्छति प्रकरण-सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-७३ । आकार- $1\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{4}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत व संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२२४२ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

१०७. चौबीस ठाणा सार्थ-सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-३० । आकार- $1\frac{1}{2}'' \times 5''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२४५६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

१०८. चौबीस दण्डक-गजसार । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार- $1\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{4}''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२७२० । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

नोट—अध्यात्मर आम्नायानुसार वर्णन किया गया है ।

१०६. चौबीस दण्डक सार्थ—गजसार । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार— $१०'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—प्राकृत, हिन्दी तथा गुजराती । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२५६५ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

११०. चौबीस दण्डक गति चिह्नरत्न— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या—१६३८ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१११. जन्मान्तर गाथा— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—प्राकृत । लिपि—नागरी । विषय—अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या—१४२४ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

११२. जीव तत्व प्रदीप—केशवाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—११३ । आकार— $१०'' \times ७''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२४१४ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

११३. जीव प्ररूपण—गुरु रयण भूषण । देशी कागज । पत्र संख्या—२८ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—प्राकृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—३७७/अ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—चैत्र सुदी २, सं० १५११ ।

११४. जीव विचार प्रकरण— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—८ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—प्राकृत और संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—१६८२ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला १, सं० १७०५ ।

११५. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या—१२ । आकार— $८\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२८०६ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—फाल्गुन कृष्णा १२, सं० १८४५ ।

११६. जीव विचार सूत्र सटीक—शान्ति सूर । देशी कागज । पत्र संख्या—३१ । आकार— $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—प्राकृत और संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—१३०८ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

११७. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या—५ । आकार— $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२७११ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

११८. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या—६ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२७१७ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—पौष कृष्णा १३, सं० १७६७ ।

विशेष—अन्तिम पत्र पर २२ अभक्ष पदार्थों के नाम दिये हुए हैं ।

११९. जैन शतक—भूधरदास खण्डेलवाल । देशी कागज । पत्र संख्या—१३ । आकार— $११'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२३०८ । रचनाकाल—पौष कृष्णा १३, सं० १७८१ । लिपिकाल—चैत्र शुक्ला १, बुधवार सं० १९४८ ।

१२०. ढाढसी मुनि गाथा—मुनि ढाढसी । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार— $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—प्राकृत और संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त ग्रन्थ संख्या—२५६५ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—चैत्र शुक्ला २, सं० १७८८ ।

१२१. तर्क परिभाषा—केशव मिश्र । देशी कागज । पत्र संख्या—१८ । आकार— $११\frac{१}{४}'' \times ५''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—तर्क शास्त्र संख्या—१६७६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—अश्विन शुक्ला ४, सं० १६८६ ।

१२२. तत्त्व धर्ममृत—चन्द्रकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या—३३ । आकार— $११\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा—सामान्य । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—आगम संख्या—३८२/अ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१२३. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या—३३ । आकार— $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—जीर्ण । ग्रन्थ संख्या—१०६८ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—भाद्रपद वृदी ६, सं० १५६७ ।

१२४. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या—३२ । आकार— $१२'' \times ५''$ । दशा—जीर्ण । ग्रन्थ संख्या—१०३२ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—अश्विन शुक्ला ५, सं० १५६७ ।

टिप्पणी—आमेर शास्त्र भण्डार की ग्रन्थ सूची में इसके कर्ता का नाम चन्द्र उल्लिखित है । प्रारम्भ का एक श्लोक दोनों ग्रन्थों का एक ही है किन्तु श्लोक भिन्न-भिन्न हैं । आमेर के ग्रन्थ में श्लोक संख्या ४ जबकि यहाँ इस ग्रन्थ में ५०० श्लोक हैं । यहाँ इस ग्रन्थ के रचयिता नाम ग्रन्थ में मुझे दृष्टिगत नहीं हुआ । अतः मैंने इसे उसकी रचना मानी है ।

१२५. तत्त्वबोध प्रकरण—× । देशी कागज । पत्र संख्या—२१ । आकार— $१२'' \times १२''$ । दशा—सामान्य । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—१७ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१२६. तत्त्व सार—देवसेन । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार— $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—प्राकृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—१५ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१२७. तत्त्वत्रय प्रकाशिनी—ब्रह्म श्रुतसागर । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार— $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । संख्या—२४४२ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

नोट—टीका का नाम तत्त्वत्रय प्रकाशिनी है ।

१२८. तत्त्वज्ञान तरंगिणी—भ० ज्ञानभूषण । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्ध ग्रन्थ संख्या—२८५६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१२९. तत्त्वज्ञान तरंगिणी सटीक—भ० ज्ञानभूषण । टीकाकार—× । देशी का

पत्र संख्या-८६। आकार-११"×७^१/_२"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत और हिन्दी। लिपि-नागरी। विषय-सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या-२२६७। रचनाकाल-सं० १५६०। लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला ६, सं० १६८६।

१३०. तत्त्वार्थ रत्न प्रभाकर—प्रभाचन्द्र देव। देशी कागज। पत्र संख्या-२ से ७४। आकार-११^१/_२"×५"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या-२८५४। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

नोट—प्रथम पत्र नहीं है।

१३१. प्रति संख्या २। पत्र संख्या-८२। आकार-१२"×५"। दशा-जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या-२३५२। रचनाकाल-भाद्रपद शुक्ला ५, सं० १४८६। लिपिकाल-श्रावण शुक्ला १३, शुक्रवार, सं० १५५०।

१३२. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या-१६६। आकार×११^३/_४"×३^३/_४"। दशा-प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-१२६२। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

१३३. तत्त्वार्थ सूत्र—उमा स्वामी। देशी कागज। पत्र संख्या-८। आकार—१०^३/_४"×५^१/_४"। दशा-जीर्ण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१७६२। रचना काल-×। लिपिकाल-×।

१३४. प्रति संख्या २। पत्र संख्या-२२। आकार-११^३/_४"×५^३/_४"। दशा-जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-२५२०। रचनाकाल-×। लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला २, रविवार, सं० १६२०।

१३५. तत्त्वार्थ सूत्र सटीक—उमास्वामि। टीकाकार—श्रुतसागर। देशी कागज। पत्र संख्या-३०। आकार-१०"×४^१/_२"। दशा-अच्छी। अपूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या-२०८२। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

१३६. तत्त्वार्थ सूत्र सार्थ-×। देशी कागज। पत्र संख्या-२७। आकार-१०^१/_२"×४^३/_४"। दशा-जीर्ण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत व हिन्दी। लिपि-नागरी। विषय-सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या-१३४६। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

१३७. तत्त्वार्थ सूत्र सटीक—सदासुख। देशी कागज। पत्र संख्या-८६। आकार—१२^१/_४"×५^१/_२"। दशा-सामान्य। पूर्ण। भाषा-संस्कृत और हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१८६४। रचनाकाल-फाल्गुन कृष्णा १०, सं० १६१०। लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा ३, सं० १६६३।

१३८. तत्त्वार्थ सूत्र भाषा-कनककीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या-४६। आकार—११^१/_२"×५"। दशा-सामान्य। पूर्ण। भाषा-संस्कृत और हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१३५०। रचनाकाल-×। लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला ६, सं० १८७२।

१३९. तत्त्वार्थ सूत्र वचनिका—पं० जयचंद। देशी कागज। पत्र संख्या-४७६। आकार-१०^३/_४"×५^१/_४"। दशा-सामान्य। पूर्ण। भाषा-संस्कृत एवं हिन्दी। लिपि-नागरी।

विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—१८०१ । रचनाकाल—चैत्र शुक्ला ५, सं० १८३६ । लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला ५, सं० १९०४ ।

विशेष—अन्त में वचनिकाकार ने स्वयं का तथा अन्य अनेक पण्डितों का परिचय दिया है ।

१४०. तेरह पंथ खण्डन—पं० पन्नालाल । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । आकार— $१२\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—चर्चा । ग्रन्थ संख्या—२२७३ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

विशेष - दिगम्बर सम्प्रदाय के तेरह पंथ के सिद्धान्तों का खण्डन किया गया है ।

१४१. दण्डक चौपई—पं० दौलतराम । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $१०\frac{३}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—१६६३ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१४२. दण्डक सूत्र—गजसार मुनि । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार— $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—प्राकृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—१७३२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—पौष शुक्ला १०, सं० १७५४ ।

१४३. दश अछेरा—X । देशी कागज । पत्र संख्या—८ । आकार— $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश और हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२२५७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—मगसिर शुक्ला ५, सं० १७६६ ।

१४४. दर्शनसार सटीक देवसेनाचार्य । टीका—शिवजीलाल । देशी कागज । पत्र संख्या—१२० । आकार— $१२\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा—सामान्य । पूर्ण । भाषा—प्राकृत और संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—१५६६ । टीकाकाल—माघ शुक्ला १०, सं० १९२३ । लिपिकाल—X ।

१४५. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या—६५ । आकार— $११\frac{१}{४}'' \times ७\frac{३}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२३६९ । रचनाकाल—माघ शुक्ला १०, सं० १९६० । लिपिकाल—अश्विन शुक्ला ८, शनिवार, सं० १९२८ ।

विशेष—वि० सं० १९६० माघ शुक्ला १०, को मूल रचना द्वारा नागरी के श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में की गई । और हिन्दी टीका १९२३ माघ शुक्ला १० को हुई है ।

१४६. दर्शन सार—म० देवसन । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $११\frac{१}{४}'' \times ५''$ । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—प्राकृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२६५४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१४७. द्रव्य संग्रह—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार— $९\frac{१}{४}'' \times ४''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—प्राकृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२४१६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—फाल्गुन कृष्णा ८, सं० १९६९ ।

१४८. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या—१९ । आकार— $९\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२६१८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१४९. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या-४ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५८२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१५०. प्रति संख्या ४ । पत्र संख्या-६ । आकार- $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३२९ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१५१. द्रव्य संग्रह सटीक—प्रभाचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-३२ । आकार- $९\frac{३}{४}'' \times ३\frac{३}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-११०६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

आदिभाग—

नत्वा जिनाकर्मपहस्तितसर्वदोषं,
लोकत्रयाधिपति संस्तुत पादपद्मम्
ज्ञान प्रभा प्रकटिताखिलवस्तुसार्थं,
षड्द्रव्यनिर्णयमहं प्रकटं प्रवक्ष्ये ॥१॥

अन्तभाग—

इति श्री परमागमिक भट्टारक-श्री नेमिचन्द्रविरचित-षड्द्रव्यसंग्रहे श्रीप्रभाचन्द्रदेवकृत संक्षेप टिप्पणकं समाप्तम् ॥

१५२. द्रव्य संग्रह सटीक—पर्वत धर्मार्थी । देशी कागज । पत्र संख्या-५४ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ५''$ । दशा-सामान्य । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१३५४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-आषाढ़ कृष्णा १४, वृहस्पतिवार, सं० १८२८ ।

१५३. द्रव्य संग्रह सटीक—ब्रह्मदेव । देशी कागज । पत्र संख्या-६८ । आकार- $११\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२४१२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला १०, रविवार, सं० १४९९ ।

१५४. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-७२ । आकार $१२\frac{१}{२}'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६८१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ७, वृहस्पतिवार, सं० १५२९ ।

१५५. द्रव्य संग्रह सार्थ-× । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार- $९'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२५७६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१५६. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-७ । आकार- $१२\frac{१}{२}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३८६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१५७. द्रव्य संग्रह टिप्पण—प्रभाचन्द्रदेव । देशी कागज । पत्र संख्या-३२ । आकार- $११'' \times ५''$ । दशा प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२७६९ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-अश्विन कृष्णा १०, रविवार, सं० १६१७ ।

१५८. दोहा पाहुड़—कुन्दकुन्दाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-१९ । आकार—

१०" × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२२६१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला १०, सं० १५६२ ।

१५६. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-१६ । आकार-१० $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । ग्रन्थ संख्या-१४४६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला ५, सं० १५५८ ।

१६०. द्वादश भावना-श्रुत सागर । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार-१० $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या-१६३५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१६१. धर्म परीक्षा-हरिषेण । देशीकागज । पत्र संख्या-७३ । आकार-१० $\frac{३}{४}$ " × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । विषय-अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या-१७७४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-चैत्र कृष्णा १२, रविवार, सं० १५६५ ।

१६२. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-१३३ । आकार-९ $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७६६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा १३, शुक्रवार, सं० १६०६ ।

विशेष-लिपिकार ने अपनी पूर्ण प्रशस्ति लिखी है ।

१६३. धर्म परीक्षा रास-सुमति कीर्ति सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-२३५ । आकार-९ $\frac{३}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-सामान्य । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । विषय-अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या-१०१२ । रचनाकाल-मंगसिर सुदी २, सं० १६२५ । लिपिकाल-× ।

१६४. धर्म प्रश्नोत्तर-म० सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-५३ । आकार-१०" × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-सामान्य । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या-११४४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१६५. धर्म रसायण-पद्मनंदि मुनि । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार-११" × ५" । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या-१६२५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला ३, सं० १६५४ ।

१६६. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-१३ । आकार-११" × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३८३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१६७. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या-१० । आकार-११ $\frac{१}{४}$ " × ५ $\frac{१}{४}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१६४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१६८. धर्म संवाद-× । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । आकार-१० $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२४७७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१६९. ध्यान वत्तीसी-बनारसीदास । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-१० $\frac{३}{४}$ " × ५" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२४५३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१७०. नन्दी सूत्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-२१ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१६०६ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

१७१. नयचक्र—देवसेन । देशी कागज । पत्र संख्या-३६ । आकार- $१३\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत एवं प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२३२४ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-अश्विन कृष्ण ११, रविवार, सं० १५४२ ।

१७२. नयचक्र बालावबोध—सदानन्द । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२८२७ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

१७३. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-११ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६१८ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

१७४. नयचक्र भाषा—पं० हेमराज । देशी कागज । पत्र संख्या-१८ । आकार- $८\frac{१}{४}'' \times ४''$ । दशा-सामान्य । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६४८ । रचनाकाल-फाल्गुन शुक्ला १०, सं० १७२६ । लिपिकाल-X ।

१७५. नवतत्त्व टीका—X । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $११'' \times ५''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६११ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

१७६. नवतत्त्व वर्णन—अभयदेव सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत व हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या २७१२ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-सं० १७६४ ।

१७७. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-१३ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७२३ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-पौष शुक्ला १२, बृहस्पतिवार, सं० १७४७ ।

१७८. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या-६ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१४०३ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

१७९. नवरत्न—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५३४ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

१८०. नास्तिकवाद प्रकरण—X । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $६\frac{१}{४}'' \times ५''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१६७२ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

१८१. नित्य क्रिया काण्ड—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१-३६ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । अपूर्ण । भाषा-प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२८४६ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

१८२ प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-१-१७ । आकार- $११\frac{३}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी ।
अपूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२८५१ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१८३. परमात्म छत्तीसी- पं० भगवतीदास । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-
 $११'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-आगम । ग्रन्थ संख्या-
१६५८ । रचनाकाल-सं० १७५० । लिपिकाल- X ।

१८४. परमात्म प्रकाश- योगिन्द्र देव । देशी कागज । पत्र संख्या-२१ । आकार-
 $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । विषय-अध्यात्म ।
ग्रन्थ संख्या-१३४४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१८५. परमात्म प्रकाश टीका- ब्रह्मदेव । देशी कागज । पत्र संख्या-१०६ । आकार-
 $१०'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश, टीका संस्कृत में । लिपि-नागरी । विषय-
अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या-१८४६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ६, मंगलवार,
सं० १८८५ ।

१८६ पुण्य वत्तीसी- समय सुन्दर । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-
 $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ
संख्या-१३१२ । रचनाकाल-सं० १६६६ । लिपिकाल-माघ कृष्णा ७, सं० १७८६ ।

१८७. पुरुषार्थ सिद्धिपाय - अमृतचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-
 $११\frac{१}{४}'' \times ५''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त ।
ग्रन्थ संख्या-२१२४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-सं० १८४८ ।

विशेष-इसकी लिपि इन्दौर में की गई ।

१८८. पंचसंग्रह- X । देशी कागज । पत्र संख्या-७७ । आकार- $११\frac{३}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ ।
दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२५३१ ।
रचनाकाल- X । लिपिकाल-सं० १५३५ ।

१८९. पंचप्रकाशसार- X । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $१०'' \times ५''$ ।
दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ
संख्या-२४६८ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१९०. पंचास्तिकाय समयसार सटीक-अमृतचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-
४८ । आकार- $१२\frac{१}{४}'' \times ५''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी ।
विषय-आगम । ग्रन्थ संख्या-२३८१ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ५, सं०
१७०६ ।

१९१. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-३५ । आकार- $१२'' \times ६''$ । दशा-सामान्य ।
पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११६० । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१९२. पंचास्तिकाय व समयासार टीका- पं० हे । देशी कागज । पत्र संख्या-
८४ । आकार- $१०'' \times ५''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और हिन्दी । लिपि-नागरी ।
विषय-आगम । ग्रन्थ संख्या-१६०२ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-सं० १८८५ ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ का हिन्दी पद्यानुवाद अमृतचन्द्राचार्य की टीकानुसार किया गया है। ग्रन्थ में हिन्दी अनुवाद के कर्ता का नामोल्लेख नहीं है।

२०३. प्रश्नोत्तरोपासकाचार—म० सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या—१५१ । आकार— $10\frac{1}{2}'' \times 4''$ । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२४६५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—माघ कृष्ण २, शुक्रवार, सं० १६२६ ।

विशेष—अकबर के राज्यकाल में लिपि की गई है । १७१७ भाद्रपद शुक्ला १३, शुक्रवार, शक संवत् १५८२ में दान दी गई ।

२०४. प्रश्नोत्तर रत्नमाला—राजा अमोघहर्ष । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $8\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—देवनागरी । विषय—अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या—१३१३ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—माघ शुक्ला १५, सं० १६७३ ।

२०५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $10'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१३३६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

२०६. बंधस्वामित्व (बंधतत्व)—देवेन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार— $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—प्राकृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२७१० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—श्रावण कृष्ण १२, सं० १७१३ ।

२०७. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या—८ । आकार— $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२४८५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—श्रावण कृष्ण ११, सं० १७१३ ।

विशेष—श्री ब्रह्महेमा ने नागपुर में लिपि की है ।

२०८. बन्धोदयदीरणसत्ता विचार—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार— $12\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—प्राकृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२६३१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

२०९. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या—१ । आकार— $8\frac{1}{2}'' \times 4''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२६८३ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

२१०. बन्धोदयदीरणसत्ता स्वामित्व सार्थ—X । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार— $11\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा—प्राकृत और संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२०५३ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—माघ कृष्ण १२, सं० १७१६ ।

२११. भगवती आराधना सटीक—X । देशी कागज । पत्र संख्या—५६२ । आकार— $11'' \times 4''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—प्राकृत और संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—१७८१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—सं० १५१८ ।

२१२. भव्य मार्गणा—X । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार— $12'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२३८८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

२१३. भविष्यत् चौईसी—X । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $११\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-आगम । ग्रन्थ संख्या-२२४१ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

२१४. भावना वत्तीसी—X । देशी कागज । पत्र संख्या-६४ । आकार- $११\frac{३}{४}'' \times ५''$ । दशा-सामान्य । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१२८७ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

२१५. भावनासार संग्रह—महाराजा चामुण्डराय । देशी कागज । पत्र संख्या-६१ । आकार- $११\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१७३२ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

आदिभाग— ॥ॐ॥ स्वस्ति ॥ ॐ नमो वीतरागाय ॥

अरिहननरजो हननरहस्यहरप्रजनार्हमर्हत् ॥

सिद्धान्त सिद्धाष्ट गुणान् रत्नत्रयसाधकान् सुवेसाधन् ॥

अन्तभाग—इति सकलागम संग्रह सम्पन्न श्रीमद् जिनसेन भट्टारक श्री पादपद्म प्रसादा रादित चनु रनु योगपारावार पारम धर्म विजयते श्री चामुण्डमहाराज विरचिते भावनासार संग्रहे चारित्र सारे अनागार धर्मः समाप्तः ॥छा॥

टिप्पणी—ग्रन्थ के दीमक लग गई है, फिर भी अक्षरों को विशेष क्षति नहीं हुई है ।

२१६. भावसंग्रह—देवसेन । देशी कागज । पत्र संख्या-५४ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२५०० । रचनाकाल-X । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला १३, सं० १५६४ ।

२१७. भावसंग्रह—देवसेन मुनि । देशी कागज । पत्र संख्या-३१ । आकार- $१०'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१०५३ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ५, सं० १५२६ ।

२१८. भावसंग्रह—श्रुतमुनि । देशी कागज । पत्र संख्या-४० । आकार- $१३'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१०३१ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

आदिभाग—

खविदघण घाङ्कम्मे अरहंते सुविदिदत्थ - शिवहेय ।

सिद्धदठ गुणो सिद्धे रयणत्तय साहणे शुवे साहू ॥१॥

इदि वंदियं - पंचगुरु सरुवसिद्धत्थ भविय वोहत्थं ।

सुत्तुत्तं मूलुत्तर - भावसरुवं पवक्खामि ॥२॥

अन्तभाग—

णाद-णिखिलत्थ-सत्थो सयल-णारिदेहि पूजिओ विमलो ।

जिण-मग्ग-गमणा-सूरोजयउ चिरं चारुकित्तिमुणी ॥२२॥

वर सारत्तय-णिउणो सुद्धं परओ विरहिय - परभाओ ।

भविषाणं पडिबोहरापरो पहाचंद - णाममुणी ॥२३॥

२१६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-४२ । आकार- $10\frac{3}{4}'' \times 4''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१००७ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

२२०. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-४० । आकार- $11\frac{3}{4}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११६५ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला १०, वृहस्पतिवार, सं० १७२२ ।

२२१. भावसंग्रह—पं० वामदेव । देशी कागज । पत्र संख्या-३७ । आकार- $11'' \times 4''$ । दशा-बहुत अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१८६६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-आषाढ़ कृष्णा ३, सं० १६०८ ।

२२२. भावसंग्रह सटीक— X । देशी कागज । पत्र संख्या-३५ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२०६७ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

२२३. भाव त्रिमंगी (सटीक)—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-८३ । आकार- $11\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१३७६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-प्रथम श्रावण शुक्ला १, सं० १७३३ ।

२२४. महावीर जिन नय विचार—यशः विजय । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $12'' \times 6''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या १७०५ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-आषाढ़ कृष्णा ७, सं० १८६७ ।

२२५. मोक्षमार्ग प्रकाशक वचनिका—महापण्डित टोडरमल । देशी कागज । पत्र संख्या-२०६ । आकार- $16'' \times 6\frac{3}{4}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (राजस्थानी) । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२३६६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ला १३, शुक्रवार, सं० १६३४ ।

२२६. मृत्यु महोत्सव वचनिका—पं० सदासुख । देशी कागज । पत्र संख्या-१८ । आकार- $15\frac{1}{2}'' \times 4\frac{3}{4}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत एवं हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२३६२ । वचनिका रचनाकाल-आषाढ़ शुक्ला ५, सं० १६१८ । लिपिकाल-श्रावण शुक्ला ७, रविवार, सं० १६२५ ।

२२७. राजवार्तिक—अकलंकदेव । देशी कागज । पत्र संख्या-३०८ । आकार- $12'' \times 4''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-आगम । ग्रन्थ संख्या-१८६२ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

२२८. लघू तत्त्वार्थ सूत्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $7\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२२७२ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्त्वार्थसूत्र से संकलन करके ही लघूसूत्र की रचना की गई है ।

२२६. बृहद् द्रव्यसंग्रह सटीक—सि० च० नेमिचन्द्र । टीकाकार—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१५५ । आकार—१०" × ३½" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—प्राकृत और टीका संस्कृत में । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—११७२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—ज्येष्ठ बुदी १०, बृहस्पतिवार, सं० १४६२ ।

२३०. व्युच्छति त्रिभंगी—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या—११ । आकार—१०½" × ५" । दशा—अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—प्राकृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—१५०७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—आषाढ कृष्णा ५, बृहस्पतिवार, सं० १५६२ ।

२३१. वाद पञ्चोत्ती—ब्रह्म गुलाल । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—१६" × ४½" । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२४४५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

२३२ विचार षट् त्रिशंक (चौबीस दण्डक सार्थ)—गजसार । देशी कागज । पत्र संख्या—२२ । आकार—६¾" × ४½" । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—प्राकृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२७४१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—अश्विन शुक्ला १२, शनिवार, सं० १७६४ ।

२३३. विशेष सत्ता त्रिभंगी—नयनंदि । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार—१३" × ५" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—प्राकृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६६२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

२३४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार—११" × ४¾" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या १६३६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

२३५. वेद कान्ति—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—११¾" × ४½" । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—चर्चा । ग्रन्थ संख्या—२२४३ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

२३६. शोभन श्रुति—पं० घनपाल । टीकाकार—क्षेमसिंह । देशी कागज । पत्र संख्या—८ । आकार—१०½" × ४½" । दशा—अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—१३६४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—द्वितीय ज्येष्ठ कृष्णा १३, सं० १५२७ ।

२३७. षट्कर्मोपदेश रत्नमाला—अमरकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या—१०४ । आकार—१२" × ४¾" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२७६५ । रचनाकाल—विक्रम सं० १२७४ । लिपिकाल—माघ शुक्ला ५, सं० १६०१ ।

२३८. षट् दर्शन समुच्चय—X । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार—१०¾" × ४¾" । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२६६८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

२३९. षट् दर्शन विचार—X । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार—१२" × ५¾" ।

दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५२४ । रचनाकाल-× ।
लिपिकाल-× ।

२४०. षट् दर्शन समुच्चय टीका—हरिभद्र सूरि । पत्र संख्या-२८ । आकार-
१० $\frac{३}{४}$ " × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११५५ । रचना-
काल-× । लिपिकाल-× ।

२४१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार-११" × ५ $\frac{१}{२}$ " ।
दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६४६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-वैशाख शुक्ला १४,
सं० १८६१ ।

२४२. षट् द्रव्यसंग्रह टिप्पण—प्रभाचन्द्र देव । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ ।
आकार-११" × ५" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ
संख्या-१६६६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

२४३. षट् द्रव्य विवरण—× । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-१० $\frac{१}{२}$ " × ४ $\frac{१}{२}$ " ।
दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४८२ । रचनाकाल—× ।
लिपिकाल-× ।

२४४. षट् पाहुड़—कुन्दकुन्दाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-१५ । आकार-
११" × ५" । दशा-अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-आगम । ग्रन्थ
संख्या-२१०६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

२४५. षट् पाहुड़ सटीक—कुन्दकुन्दाचार्य । टीकाकार-× । देशी कागज । पत्र संख्या-
४७ । आकार-१० $\frac{१}{२}$ " × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी ।
ग्रन्थ संख्या-११७६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ६, रविवार, सं० १५८६ ।

२४६. षट् पाहुड़ सटीक—श्रुत सागर । देशी कागज । पत्र संख्या-१५३ । आकार-
११ $\frac{१}{४}$ " × ५ $\frac{१}{२}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-
१०८२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला १४, सं० १८३० ।

टिप्पणी—लिपिकार ने अपनी विस्तृत प्रशस्ति लिखी है ।

२४७. षट् पाहुड़ सटीक—× । देशी कागज । पत्र संख्या-१८ । आकार-
११ $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{१}{२}$ " । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत व संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-
१०७६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-पौष बुदी १३, सोमवार, सं० १७८६ ।

२४८. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-२७ । आकार-१०" × ५ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्ण ।
पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६६६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

२४९. षट् त्रिशंति गाथा सार्थ—मुनिराज ढाढसी । देशी कागज । पत्र संख्या-७ ।
आकार-६ $\frac{३}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ
संख्या-१६६७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-माघ कृष्णा १, सं० १६८५ ।

२५०. समयसार नाटक सटीक—अमृतचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-७५ ।

आकार- $10'' \times 4\frac{1}{8}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२७३५ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-सं० १८०६ ।

२५१. समयसार वृत्ति —अमृतचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-२७ । आकार- $11'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२६६० । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-श्रावण कृष्णा ६, बुधवार, सं० १६२२ ।

विशेष रणथम्भोर गढ़ के राजाधिराज श्री राव सूरजनदेव के राज्य में जोशी चतुर गर्ग गोत्री बुंदी वाले ने लिपि की है ।

२५२. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-२८ । आकार- $12\frac{1}{8}'' \times 4\frac{1}{8}''$ । दशा-अति जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२६४ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-माघ शुक्ला ५, सं० १७३२ ।

२५३. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या-३७ । आकार- $10\frac{3}{8}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०२० । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

२५४. प्रति संख्या ४ । पत्र संख्या-८३ । आकार- $10'' \times ५''$ । दशा-सामान्य । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१८४८ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-पौष शुक्ला १२, शुक्रवार, सं० १९७८ ।

२५५. प्रति संख्या ५ । पत्र संख्या-८० । आकार- $८\frac{1}{8}'' \times 4\frac{1}{8}''$ । दशा-सामान्य । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२३७ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

२५६. समयसार भाषा —पं० हेनराज । पत्र संख्या-१९४ । आकार- $11\frac{1}{2}'' \times ५\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०६० । रचनाकाल-माघ शुक्ला ५, सं० १७६९ । लिपिकाल- $\times$ ।

२५७. समयसार नाटक भाषा —पं० बनारसीदास । देशी कागज । पत्र संख्या-४० । आकार- $९\frac{3}{8}'' \times 4\frac{1}{8}''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११९८ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-सं० १७२३ ।

२५८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-५५ । आकार- $10'' \times 4\frac{3}{8}''$ । दशा-सामान्य । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२३८ । रचनाकाल-अश्विन शुक्ला १३, रविवार, सं० १६६३ । लिपिकाल- $\times$ ।

२५९. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । आकार- $10\frac{3}{8}'' \times ४''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०५९ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

२६०. समाधिगतक —पूज्यपाद स्वामी । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $11'' \times 4\frac{3}{8}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२३९७ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा ६, सं० १७०० ।

२६१. सत्ता त्रिभंगी —सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-१७ । आकार- $10\frac{1}{8}'' \times 4\frac{1}{8}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५११ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-माघ कृष्णा ६, शुक्रवार, सं० १५२४ ।

२६२. स्याद्वादरत्नाकर—देवाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६७२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

२६३. स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामी कार्तिकेय । देशी कागज । पत्र संख्या-२७ । आकार- $11'' \times 4\frac{3}{4}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११२८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-अश्विन कृष्ण ११, सं० १५६८ ।

२६४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३३ । आकार- $11'' \times 5''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११४६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ल ५, सं० १६७७ ।

२६५. सागर धर्ममृत—पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या-१२२ । आकार- $11'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-प्रतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२३२६ । रचनाकाल-विक्रम सं० १३०० । लिपिकाल-× ।

विशेष—ग्रन्थकर्ता पं० आशाधर की पूर्ण प्रशस्ति दी हुई है ।

२६६. सामायिकपाठ सटीक—पाण्डे जयवन्त । देशी कागज । पत्र संख्या-६३ । आकार- $5'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२२६२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्ण ७, सं० १६०२ ।

२६७. सिद्ध दण्डिका—देवेन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-प्रतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४८० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

२६८. सिद्धान्तसार—जिनचन्द्रदेव । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार- $5'' \times 4''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३२० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-अश्विन कृष्ण १०, रविवार, सं० १५२५ ।

२६९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-९ । आकार- $12'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६०१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

२७०. सुभद्रानो चौडालियो—नवि मानसागर । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या-२८२६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-अश्विन कृष्ण ४, सं० १८४१ ।

२७१. सुभाषित कोष—हरि । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार- $11'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या-२०५० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

२७२. संबोध पंचासिका—× । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $10'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२०८७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-चैत्र कृष्ण १, सं० १६८५ ।

२७३. संबोध पंचासिका—कवि दास । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१६६७ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

२७४. संबोध सत्तरी—जयशेखर सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१६६७ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

२७५. संबोध सत्तरी— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२७५६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-श्रावण कृष्ण ६, वृहस्पतिवार, सं० १६६७ ।

२७६. सुखबोधार्थमाला—पं० देवसेन । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार- $10'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६६६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-भाद्रपद कृष्ण ६, सं० १८८३ ।

२७७. श्रुतस्कन्ध—ब्रह्म हेमचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार- $10'' \times 4''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१४५२ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

२७८. श्रुतस्कन्ध—ब्रह्म हेम । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{3}{4}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२७७४ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-चैत्र शुक्ल ८, सं० १५३१ ।

२७९. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-८ । आकार- $11\frac{1}{2}'' \times 4\frac{3}{4}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४०३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

२८०. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या-७ । आकार- $10\frac{3}{4}'' \times 4\frac{3}{4}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०१६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

२८१. श्रेणिक गौतम संवाद— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $11\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२६३० । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-फाल्गुन कृष्ण ११, सं० १७५८ ।

२८२. क्षणसार—माधवचन्द्र गणि । देशी कागज । पत्र संख्या-१०३ । आकार- $11\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२५४१ । रचनाकाल-सं० १२६० । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ल ५, सं० १६२३ ।

२८३. त्रिभंगी—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-२३ (अन्तिम पत्र नहीं है) । आकार- $11\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण । अपूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१६६६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

२८४. त्रिभंगी टिप्पण— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-४६ । आकार- $12\frac{3}{4}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-

१०६६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—फाल्गुन कृष्ण ४, सोमवार, सं० १७६३ ।

२८५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—५१ । आकार—१२" X ५ $\frac{1}{2}$ " ।
दशा—प्राचीन । पूर्ण । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

२८६. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या—२१ । आकार—१४" X ८ $\frac{1}{2}$ " । दशा—अतिजीर्ण
क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२२५८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

२८७. त्रिभंगी भाषा—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१४२ । आकार—११ $\frac{3}{4}$ " X ५ $\frac{1}{2}$ " ।
दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—प्राकृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—
१२०८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—मंगसिर शुक्ला ७, शनिवार, सं० १८०७ ।

२८८. ज्ञान पञ्चीसी—पं० बनारसीदास । पत्र संख्या—१ । आकार—९ $\frac{1}{2}$ " X ४ $\frac{1}{2}$ " ।
दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—१६६१ । रचना-
काल—X । लिपिकाल—X ।

—————

विषय—आयुर्वेद

२८९. अश्विनीकुमार संहिता—अश्विनी कुमार । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । आकार— $११'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—आयुर्वेद । ग्रन्थ संख्या—२०३० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

२९०. अंजन निदान सटीक—अग्निवेश । देशी कागज । पत्र संख्या—५० । आकार— $११\frac{१}{२}'' \times ४''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—आयुर्वेद । ग्रन्थ संख्या—११०५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

२९१. आयुर्वेद संग्रहीत ग्रन्थ—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१७५ । आकार— $९\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—आयुर्वेद । ग्रन्थ संख्या—१०२२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

२९२. आसव विधि—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $१२\frac{१}{२}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—आयुर्वेद । ग्रन्थ संख्या—२२७८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

२९३. काल शास्त्र—शंभूनाथ । देशी कागज । पत्र संख्या—११ । आकार— $१०'' \times ६\frac{१}{४}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—आयुर्वेद । ग्रन्थ संख्या—१४१७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

२९४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—८ । आकार— $११'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—अतिजीर्ण । ग्रन्थ संख्या—१४३६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

२९५. काल ज्ञान—X । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार— $११\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२४५५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—कार्तिक कृष्ण ३, बुधवार, सं० १८१६ ।

२९६. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या—११ । आकार— $८\frac{१}{२}'' \times ४''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२७७२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—माघ शुक्ला १४, सं० १७३४ ।

२९७. गुण रत्नमाला—दामोदर । देशी कागज । पत्र संख्या—११ । आकार— $११\frac{१}{४}'' \times ५''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—आयुर्वेद । ग्रन्थ संख्या—१६१४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

२९८. चन्द्रहासासव विधि—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $१२\frac{१}{२}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२७७६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

२९९. चिन्त चमत्कार सार्य—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१७ । आकार— $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—

२७७५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—माघ कृष्ण २, रविवार, सं० १८५६ ।

३००. ज्वर पराजय—पं० जयरत्न । देशी कागज । पत्र संख्या—३६ । आकार— $१०'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११७३ । रचनाकाल—फाल्गुन शुक्ला १, सं० १६६६ । लिपिकाल—मंगसिर शुक्ला ४, बुधवार, सं० १८६८ ।

३०१. नाडी परीक्षा—X । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार— $८\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१४८४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—सं० १६२१ ।

३०२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $१०'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६६० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

३०३. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $१०\frac{३}{४}'' \times ७''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२३७५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—सं० १६४७ ।

३०४. नाडी परीक्षा सार्थ—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $६\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८५३ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

३०५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या १ । आकार— $६\frac{१}{२}'' \times ५''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१४६५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

३०६. निघण्टु—हेमचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या ६ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५३० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

३०७. निघण्टु नाम रत्नाकर—परमानन्द । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५२७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

३०८. निघण्टु—सौराश्री । देशी कागज । पत्र संख्या—४७ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१०२१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—ज्येष्ठ बुदी ८, बुधवार, सं० १६६५ ।

३०९. निघण्टु—X । देशी कागज । पत्र संख्या—५१ । आकार— $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११८१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

३१०. पथ्यापथ्य संग्रह—X । देशी कागज । पत्र संख्या—२६ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—बहुत अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१४७४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला ५, सं० १८३७ ।

३११. पाकार्णव—X । देशी कागज । पत्र संख्या—६६ । आकार— $८\frac{१}{२}'' \times ६\frac{१}{२}''$ ।

दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८७६ । रचनाकाल- X ।
लिपिकाल- X ।

३१२. मनोरमा— X । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । आकार- ११" X ५" ।
दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७२० । रचनाकाल- X ।
लिपिकाल- X ।

३१३. योग चिन्तामणि — X । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । आकार-
१० $\frac{३}{४}$ " X ५ $\frac{३}{४}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-
२४६५ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-गौड़ शुक्ला ५, सं० १८४४ ।

३१४. योग शतक—विदग्ध वैद्य पूर्णसेन । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार-
१२ $\frac{१}{४}$ " X ५ $\frac{३}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६०४ ।
रचनाकाल- X । लिपिकाल-मार्गशीर्ष शुक्ला १०, मंगलवार सं० १८०० ।

३१५. योग शतक — X । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार-८ $\frac{३}{४}$ " X ६ $\frac{३}{४}$ " ।
दशा-बहुत अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७१६ । रचनाकाल- X ।
लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला १, सं० १६१४ ।

३१६. योग शतक टिप्पण— X । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार-
१२ $\frac{१}{४}$ " X ५ $\frac{१}{४}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-
१३६८ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-माघ कृष्णा १, सं० १८५२ ।

३१७. योग शतक सटीक— X । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । आकार-
१२" X ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-प्रतिगीर्ण जीग । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-
२०१८ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-गौड़ शुक्ला १३, सं० १७३६ ।

३१८. योग शतक—धन्वन्त । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार-११ $\frac{३}{४}$ " X
५ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४२० ।
रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

३१९. योग शतक सार्थ— X । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार-१२ $\frac{१}{४}$ " X
५ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६४६ ।
रचनाकाल- X । लिपिकाल-फाल्गुन कृष्णा १, सं० १८६० ।

३२०. रस मंजरी—प्रज्ञात । देशी कागज । पत्र संख्या २६ । आकार-१०" X ५" ।
दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११८३ । रचनाकाल- X ।
लिपिकाल- X ।

३२१. रस रत्नाकर (धातु रत्नमाला)— X । देशी कागज । पत्र संख्या ७ । आकार-
१० $\frac{३}{४}$ " X ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-प्रतिगीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६६१ ।
रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

३२२. रसेन्द्र मंगल—नागाजुन । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार-
६ $\frac{३}{४}$ " X ५ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११०३ ।
रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

३२३. रामविनोद—रामचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-६१ । आकार- $5\frac{3}{4}$ " $\times$ $4\frac{3}{4}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११८४ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-वैशाख शुक्ला ७, शनिवार, सं० १८३६ ।

३२४. लोकनाथ रस— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $5\frac{3}{4}$ " $\times$ $4\frac{3}{4}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४६३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

३२५. लंघन पथ्य निर्णय—वाचक दीपचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $12\frac{1}{2}$ " $\times$ $4\frac{3}{4}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६६५ । रचनाकाल-माघ शुक्ला १, सं० १७६६ । लिपिकाल-अश्विन कृष्णा ६, सोमवार, सं० १८३१ ।

विशेष—श्लोक संख्या ३०४ हैं । अन्तिम पत्र पर गर्भ न गिरने का मन्त्र तथा मिरगी रोग की दवा हिन्दी भाषा में लिखी हुई है ।

३२६. वनस्पति सत्तरी सार्थ—मुनिचन्द्रसूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $10\frac{1}{8}$ " $\times$ $4\frac{1}{2}$ " । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२०६३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

३२७. वैद्यकसार—नयनमुख । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $10\frac{1}{8}$ " $\times$ $4\frac{3}{4}$ " । दशा-बहुत अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४४२ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

३२८. वैद्य जीवन—पं० लोलिम्मराज कवि । देशी कागज । पत्र संख्या-२६ । आकार- $10\frac{1}{8}$ " $\times$ $4\frac{3}{4}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११६२ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला ६, सं० १९०४ ।

३२९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-४७ । आकार- $11\frac{3}{4}$ " $\times$ $4\frac{1}{2}$ " । दशा-बहुत अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३५८ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला १५, रविवार, सं० १८४५ ।

३३०. वैद्य जीवन सटीक—लोलिम्मराज । टीका—इन्द्रमह । देशी कागज । पत्र संख्या-३१ । आकार- $12\frac{1}{2}$ " $\times$ $6\frac{1}{2}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३६१ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

३३१. वैद्य मदनोत्सव—पं० नयनमुख दास । देशी कागज । पत्र संख्या-१५ । आकार- $10\frac{1}{8}$ " $\times$ $4\frac{1}{2}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२७३७ । रचनाकाल-सं० १६४६ । लिपिकाल- $\times$ ।

३३२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार- $11\frac{1}{2}$ " $\times$ $6\frac{1}{2}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१८३६ । रचनाकाल-माघ शुक्ला २, वृहस्पतिवार, सं० १६४६ । लिपिकाल- $\times$ ।

३३३. वैद्य रत्नमाला—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या—४६ । आकार— $12\frac{3}{4}'' \times 4\frac{3}{4}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११०० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—सं० १८७० ।

३३४. वैद्य विनोद—शंकर भट्ट । देशी कागज । पत्र संख्या—७३ । आकार— $10\frac{3}{4}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१११५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—मंगसिर बुदी १४, सं० १८३० ।

३३५. शत श्लोक—वैद्यराज त्रिमल्ल भट्ट । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार— $10\frac{1}{4}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२७०४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—चैत्र कृष्णा ७, सं० १७६८ ।

३३६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । आकार— $8'' \times 4''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२८१० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला ८, सं० १७६६ ।

३३७. सन्निपात कलिका (लक्षण)—वैद्य धन्वन्तर । देशी कागज । पत्र संख्या—१५ । आकार— $11\frac{1}{4}'' \times 4\frac{3}{4}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२५४५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—चैत्र कृष्णा १४, रविवार, सं० १८४६ ।

—————

विषय—उपदेश एवं सुभाषित

३३८. दान शील तप संवाद शतक—समयसुन्दर गरिण । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $10\frac{3}{4}'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सुभाषित । ग्रन्थ संख्या-२६८५ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

३३९. भूषण वावनी—द्वारकावास पाटणी । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $10\frac{3}{4}'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सुभाषित । ग्रन्थ संख्या-२००६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल X ।

३४०. भूषण वावनी—भूषण स्वामी । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $10\frac{3}{4}'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सुभाषित । ग्रन्थ संख्या-१३०४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

३४१. सिन्दुर प्रकरण—सौमप्रभाचार्य (सौमप्रभसूरि) । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार- $11\frac{1}{4}'' \times 5\frac{1}{4}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सुभाषित । ग्रन्थ संख्या-१११२ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-पौष शुक्ला १०, शुक्रवार, सं० १८६० ।

३४२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । आकार- $10\frac{3}{4}'' \times 5''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२६५ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-माघ कृष्णा ५, शनिवार, सं० १७७३ ।

३४३. सुक्ति मुक्तावली शास्त्र—सौमप्रभाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार- $8'' \times 4''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१९४४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला ३, बुधवार, सं० १८४१ ।

टिप्पणी—सिन्दुर प्रकरण वर्णित है ।

३४४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१७ । आकार- $10\frac{3}{4}'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१९५३ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला ६, बृहस्पतिवार, सं० १८०६ ।

३४५. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-९ । आकार- $10'' \times 8\frac{3}{4}''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१९५९ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

३४६. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 5''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१९३१ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-फाल्गुन कृष्णा ११, सं० १८६८ ।

३४७. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१५९५ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ८, सं० १९०२ ।

३६०. सुभाषितावली—अ० स नीति । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । आकार— $६\frac{1}{2}'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८८६ । रचना-काल— $\times$ । लिपिकाल—फाल्गुन कृष्णा ३, रविवार, सं० १८२३ ।

३६१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२४ । आकार— $१०\frac{1}{2}'' \times ४\frac{3}{4}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१००५ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—फाल्गुन कृष्णा २, सं० १६१३ ।

३६२. प्रति ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—२६ । आकार— $१०\frac{1}{2}'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१२२३ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—भाद्रपद कृष्णा ४, सं० १६६६ ।

३६३. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—३१ । आकार— $११'' \times ४\frac{3}{4}''$ । दशा—अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१०१० । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

३६४. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या—२६ । आकार— $६\frac{1}{2}'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा—अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१०६० । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला १५, सं० १६१५ ।

३६५. प्रति ६ । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । आकार— $१०\frac{1}{2}'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१६२ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

विषय—कथा साहित्य

३६६. अनन्त कथा—पद्मनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार— $11" \times 5"$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—कथा । ग्रन्थ संख्या—२६२५ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—भाद्रपद कृष्ण ९ शुक्रवार, सं० १६२६ ।

३६७. प्रति संख्या २ । आकार— $11" \times 4"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२५१३ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

३६८. अनन्तव्रत कथा—ब्रह्म जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार— $11\frac{3}{4}" \times 5\frac{1}{2}"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—कथा । ग्रन्थ संख्या—२६१४ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—अश्विन कृष्ण ९, रविवार, सं० १६४५ ।

विशेष—ग्रन्थ में पद्य संख्या १७२ हैं ।

३६९. अवन्ति सुकुमाल कथा—हस्ती सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $10" \times 4"$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—कथा । ग्रन्थ संख्या—१७३१ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

३७०. अशोक सप्तमी कथा— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार— $11\frac{3}{4}" \times 4\frac{1}{2}"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—कथा । ग्रन्थ संख्या—१७८८ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

३७१. अष्टान्हिका व्रत कथा— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । आकार— $10\frac{3}{4}" \times 4\frac{1}{2}"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२४४७ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला १३, सं० १८६७ ।

३७२. आकाश पंचमी व्रत कथा—ब्रह्म जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार— $11\frac{3}{4}" \times 5\frac{1}{2}"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२८४३ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

विशेष—इस ग्रन्थ में पद्यों की संख्या १२० हैं ।

३७३. आख्य दशमी व्रत कथा—ब्रह्म जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार— $11\frac{3}{4}" \times 5\frac{1}{2}"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६१२ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

विशेष—ग्रन्थ में पदों की संख्या १११ हैं ।

३७४. आदित्यवार कथा—कवि भानुकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार— $10\frac{3}{4}" \times 4\frac{1}{2}"$ । दशा—अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२००१ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

विशेष—इस ग्रन्थ की रचना श्री गलूकादास अग्रवाल गर्ग गोत्र के पुत्र कवि भानु कीर्ति ने की है ।

३७५. आदिशिवार कथा—ब्रह्म रायमल्ल । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार— $10'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा—अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (पद्य) और संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१४५६ । रचनाकाल—भाद्रपद शुक्ला २, बुधवार, सं० १६३१ । लिपिकाल—चैत्र कृष्णा १३, सं० १७१० ।

३७६. आराधना कथा कोश—ब्रह्म नेमिदत्त । देशी कागज । पत्र संख्या—१५६ । आकार— $11\frac{3}{4}'' \times 5\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२७०५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—अश्विन कृष्णा १, सं० १८०३ ।

३७७. एक पद—गुलाबचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $10'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा—बहुत अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१४४३ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

टिप्पणी—इसमें आत्मा को सम्बोधित किया गया है ।

३७८. एक पद—रंगलाल । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $6\frac{5}{8}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१४८१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

३७९. कथा कोश—ब्रह्म नेमिदत्त । देशी कागज । पत्र संख्या—३२३ । आकार— $8\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१२३१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

३८०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१५६ । आकार— $12\frac{3}{8}'' \times 5\frac{3}{8}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१०७८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—भाद्रपद बुदी ५, सं० १८६० ।

३८१. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—१२२ । आकार— $8\frac{3}{8}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१२१६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

३८२. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—१०१ । आकार— $14\frac{1}{2}'' \times 6\frac{1}{2}''$ । दशा—बहुत अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१७६५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

३८३. कथा प्रबन्ध—प्रभाचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या—६२ । आकार— $11\frac{1}{2}'' \times 5''$ । दशा—अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११४१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला ७, सं० १५६२ ।

३८४. कथा संग्रह—X । देशी कागज । पत्र संख्या—२५ । आकार— $10\frac{1}{8}'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा—अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश व संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१७७५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

३८५. कथा संग्रह—X । देशी कागज । पत्र संख्या—२३ । आकार— $10\frac{1}{8}'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा—अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११५४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

३८६. कनकावली व शील कथा— × । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार— $६\frac{3}{4}'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१७८६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

३८७. काष्ठागार कथा — × । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार— $१०\frac{3}{4}'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा—अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६३६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—फाल्गुन कृष्ण ३, सं० १७१० ।

३८८. काष्ठागार कथा — × । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार— $१०'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२२६० । रचनाकाल— × । लिपिकाल—आषाढ़ शुक्ला ११, सं० १७०६ ।

३८९. गौतम ऋषि कुल — × । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $१०\frac{1}{4}'' \times ४\frac{1}{4}''$ । दशा—अतिजीर्ण शीर्ण । पूर्ण । भाषा—प्राकृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६१७ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

३९०. चतुर्दशी गरुड़ पंचमी कथा—भिन्न भिन्न कर्ता हैं । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार— $१३\frac{1}{2}'' \times ८\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—मराठी । ग्रन्थ संख्या—२८४१ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

३९१. चन्दनमलयगिरी वार्ता—भद्रशेन । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार— $६\frac{3}{4}'' \times ३\frac{1}{2}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२००४ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

३९२. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या—८ । आकार— $१०\frac{3}{4}'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२४५४ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—वैशाख कृष्ण १२, सं० १६६८ ।

३९३. चन्दनराजामलयगिरी चौपई—जिनहर्ष सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार— $१०\frac{1}{4}'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२४६० । रचनाकाल—चैत्र शुक्ला १५, सं० १७११ । लिपिकाल— × ।

३९४. चौबीस कथा—पं० कामपाल । देशी कागज । पत्र संख्या—२८ । आकार— $११'' \times ४''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१२५४ । रचनाकाल—फाल्गुन वृद्धी ३, सं० १७१२ । लिपिकाल—कार्तिक कृष्ण १, सं० १७८३ ।

३९५. जम्बूस्वामी कथा—पाण्डे जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या—१३ । आकार— $१२\frac{1}{2}'' \times ५\frac{3}{4}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२५११ । रचनाकाल—भाद्रपद कृष्ण ५, गुरुवार सं० १६४२ । लिपिकाल—आषाढ़ कृष्ण २, सं० १७६७ ।

विशेष—इस ग्रन्थ की कुचामण ग्राम में लिपि की गई ।

३९६. जिनदत्त कथा—गुणनन्दाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—६७ । आकार— $११'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५८५ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—वीप शुक्ला ५, बुधवार, सं० १६१६ ।

३६७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार- $11\frac{3}{4}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६२४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला ३, शुक्रवार, सं० १८६१ ।

३६८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-४६ । आकार- $11'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२४४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-द्वितीय श्रावण शुक्ला १४, शनिवार, सं० १७०३ ।

३६९. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-३६ । आकार- $11'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२४६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा ६, बुधवार, सं० १७०३ ।

४००. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-६७ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२३२ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-श्रावण कृष्णा २, सोमवार, सं० १६२४ ।

४०१. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-५२ । आकार $11'' \times 4''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२०३ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

४०२. जिनपुजा पुरन्दर कथा — X । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $11'' \times 4''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६८० । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

४०३. जिनरात्रि कथा — X । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $10\frac{3}{4}'' \times 4\frac{3}{4}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६२० । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

४०४. जिनांतर वर्णन - X । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार- $11\frac{3}{4}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी और अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३६१ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

४०५. तीर्थ जयमाल-सुमति सागर । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७६१ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

४०६. दशलक्षण कथा-पं० लोकसेन । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $12'' \times 4''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६५२ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ५, सं० १५८८ ।

४०७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $11'' \times 4''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६५६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला ११, सं० १६४७ ।

४०८. दशलक्षण कथा-ब्रह्म जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार-

१३ $\frac{1}{2}$ " $\times$ ८ $\frac{1}{2}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६१३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ७, सं० १९४५ ।

४०९. दर्शन कथा—पं० भारमल । देशी कागज । पत्र संख्या-३२ । आकार-१३ $\frac{1}{2}$ " $\times$ ८ $\frac{1}{2}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५८० । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-माघ कृष्णा ६, सं० १९३६ ।

४१०. द्वादशचक्री कथा—ब्रह्म नेमिदत्त । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-११" $\times$ ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६८४ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

४११. धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई—विजयराज । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । आकार-११ $\frac{1}{2}$ " $\times$ ५" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०१७ । रचनाकाल-सं० १७४२ । लिपिकाल- $\times$ ।

टिप्पणी—भट्टारक जितचन्द्र सूरि के तपागच्छ में श्री विजयाराज ने रचना की है ।

४१२. धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई—लालचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या-१८ । आकार-११ $\frac{3}{4}$ " $\times$ ५" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७६८ । रचनाकाल-सं० १७४२ । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा १३, बृहस्पतिवार सं० १८२६ ।

४१३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२७ । आकार-८ $\frac{1}{2}$ " $\times$ ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४६७ । रचनाकाल-सं० १७४२ । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा १०, सं० १८२३ ।

४१४. धूप दशमी तथा अनन्तव्रत कथा— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार-१२ $\frac{1}{2}$ " $\times$ ५ $\frac{3}{4}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२८६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

४१५. नन्द सप्तमी कथा—ब्रह्म रायमल्ल । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-१०" $\times$ ४" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१९१२ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

४१६. नन्दीश्वर कथा— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार-१० $\frac{1}{2}$ " $\times$ ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-प्रतिजीर्ण धीरा । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । पत्र संख्या-१५५१ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

४१७. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-६ । आकार-९ $\frac{3}{4}$ " $\times$ ४ $\frac{3}{4}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२८०२ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

४१८. नवपार कथा—श्रीमत्पाद । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार-१० $\frac{3}{4}$ " $\times$ ४" । दशा-प्रतिजीर्ण धीरा । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६०५ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

४१९. नागकुमार पंचमी कथा—उभय नाया कवि चक्रवर्ती श्री मल्लिकार्जुन सूरि । देशी

कागज । पत्र संख्या-२० । आकार-११"×४½" । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत ।
लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६१० । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

आविभाग—

श्री नेमि जिनमानस्य सर्वसत्त्वहितप्रदम् ।
वक्ष्ये नागकुमारस्य चरितं दुरितापहं ॥१॥
कविभिर्जयदेवाद्यैर्गद्यैर्पद्यैर्विनिर्मितम् ।
यत्तदेवास्ति चेदत्र विषमं मन्दमेघसाम् ॥२॥

अन्तभाग—

श्रुत्वा नागकुमार चारुचरितं श्री गीतमेनोदितं:
भव्यानां सुखदायकं भवहरं पुण्यास्त्रवोत्पादकं ।
नत्वा तं भगधाधिपो गणधरं भक्त्यापुरं प्रागभच्छी-
मद्राजगृहं पुरंदर पुराकारं विभूत्या समं ॥६॥

इत्युभयभाषाकवि चक्रवर्ति—श्री मल्लिषेणसूरि विरचितायां श्री नागकुमार पंचमीकथायां
नागकुमार—मूनीश्वर—निर्वाणगमनो नाम पंचमः सर्गः ।

जितकपायरिपुर्गुण वारिधिनिधत चारु चरित्र तपो निधिः ।
जयतु भूपतिरीटविषद्वित क्रमयुगोऽजितसेन मुनीश्वरः ॥१॥
अजनि तस्य मुनेर्वरदीक्षितो विगतमानमदो दूरितांतकः ।
कनकसेन मुनिर्मुनि पुंगवो वर चरित्र महाव्रतपालकः ॥२॥
गतमदोऽजनि तस्य महामुनेः प्रथितवान् जिनसेनमुनीश्वरः ।
सकल शिष्यवरो हतमन्मथो भवमहोदधितारतरं कः ॥३॥
तस्याऽनुज श्चारुचरित्रवृत्तिः प्रख्यातकीर्तिभुवि पुण्यमूर्तिः ।
नरेन्द्रसेनो जितवादिसेनो विशाततत्त्वो जितकामसूत्रः ॥४॥

तच्छिष्यो विबुधाग्रणीगुणनिधिः श्री मल्लिषेणाह्वयः,
संजातः सकलागमेषु निपुणो वाग्देवतालंकृतः ।
तेनैषा कविचक्रिणा विरचिता श्री पंचमीसत्यकथा,
भव्यानां दुरितीघनाशनकरी संसार विच्छेदिनी ॥५॥

स्पष्ट श्री कवि चक्रवर्ति गणिना भव्याब्जधर्माशुनां,
ग्रन्थी पंचशती मया विरचिता विद्वज्जनानां प्रिया ।
तां भक्त्या विलिखन्ति चारु वचनैर्व्यावर्णयन्त्यादरा,
द्ये शृण्वन्ति मुदा सदा सहृदयास्ते यांति मुक्तिश्रियं ॥

इति नागकुमार चरित्रं समाप्तम् ॥

४२०. नागश्री कथा—ब्रह्म नेमीदत्त । देशी कागज । पत्र संख्या-२४ । आकार-

कथा साहित्य]

६३"×४३" । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५८७ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

४२१. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-१५ । आकार-११"×४३" । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०५२ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

४२२. निर्दोष सप्तमी कथा— × । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार-६३"×४३" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७८७ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

४२३. निर्दोष सप्तमी कथा—ब्रह्म जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या-१५ । आकार-१३३"×८३" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२८४२ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला ५, बुधवार, सं० १६४५ । पद्य संख्या १०६ है ।

४२४. पद्मावती कथा—महीचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-२७ । आकार-१०"×४३" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११६३ । रचनाकाल-अश्विन बुदी १३, सं० १५२२ । लिपिकाल- × ।

४२५. पद्मनन्दि पंचविंशति—पद्मनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या-८८ । आकार-११"×१३" । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२४८ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

४२६. प्रति सं० २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१०१ । आकार-११" × ५" । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२४५ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

४२७. परमहंस चौपई—ब्रह्म रायमल्ल । देशी कागज । पत्र संख्या-३६ । आकार-१०" × ५३" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१११६ । रचनाकाल-ज्येष्ठ बुदी १३, शनिवार, सं० १६३६ । लिपिकाल- × ।

४२८. पंचपर्व कथा—ब्रह्मचारी वेणु । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार-१०" × ४३" । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७२५ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

४२९. प्रियमेल कथा—ब्रह्म वेणीदास । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । आकार-१०३" × ४३" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४८४ । रचनाकाल-श्रावण कृष्णा ११, सं० १७०० ।

विशेष—ग्रन्थ की रचना अलिपुर में की गई है ।

४३०. पुण्यासव कथा कोश—मुमुक्षु रामचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-१५६ । आकार-६३" × ४३" । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२७१३ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-चैत्र कृष्णा ३ शुक्रवार, सं० १४८७ ।

४३१. पुण्यासव कथा कोश सार्थ— × । देशी कागज । पत्र संख्या-११४ ।

आकार— $11\frac{3}{4}" \times 4\frac{3}{4}"$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६४६ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—चैत्र कृष्ण १८, सं० १७६७ ।

४३२ पुष्पांजली कथा—ब्रह्म जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार— $13\frac{3}{4}" \times 5\frac{1}{4}"$ । दशा—सुन्दर । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६११ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—अश्विन शुक्ला ११, सोमवार, सं० १६४५ ।

नोट—पद्य संख्या १६१ हैं ।

४३३. पुष्पांजलि कथा—मण्डलाचार्य श्रीभूषण । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार— $10\frac{1}{4}" \times 4\frac{1}{4}"$ । दशा—अतिजीर्ण । पूर्ण भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५४५ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

४३४. प्रति सं० २ । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार— $10\frac{3}{4}" \times 4\frac{1}{4}"$ । दशा—अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१५७१ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

४३५. प्रद्युम्न कथा—ब्रह्म वेणीदास । देशी कागज । पत्र संख्या—२७ । आकार— $11" \times 4\frac{3}{4}"$ । दशा—अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२००२ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

विशेष—यह ग्रन्थ आणन्दपुर में समाप्त किया गया है । ग्रन्थाग्रन्थ संख्या ६०० है ।

४३६. वारह व्रत कथा— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार— $6\frac{3}{4}" \times 4\frac{1}{4}"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१७८५ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

४३७. बाहुबली पाथड़ी— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार— $11" \times 4\frac{3}{4}"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२११८ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—अश्विन शुक्ला ११, सं० १६६७ ।

४३८. बुद्धवर्णन—कविराज सिद्धराज । देशी कागज । पत्र संख्या—२० । आकार— $5\frac{1}{4}" \times 4\frac{1}{4}"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६२२ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

४३९. बंकचूल कथा—ब्रह्म जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार— $10\frac{1}{4}" \times 4\frac{1}{4}"$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२७२६ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

विशेष—श्लोक संख्या १०६ है ।

४४०. प्रति सं० २ । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार— $10\frac{1}{4}" \times 4\frac{1}{4}"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२०६० । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—माघ शुक्ला १४, सं० १७१० ।

४४१. भरत बाहुबली वर्णन—शौशराज । पत्र संख्या-६ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३३६ । रचना-काल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

४४२. मदनयुद्ध—बूचराज । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२७०० । रचनाकाल-अश्विन शुक्ला १, सं० १५८६ । लिपिकाल- $\times$ ।

४४३. मृगीसंवाद चौपाई— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । आकार- $६\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४६६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

४४४. माधवानल कथा—कुंवर हरिराज । देशी कागज । पत्र संख्या-४२ । आकार- $१०'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३५२ । रचनाकाल-फाल्गुन शुक्ला १३, सं० १६१६ । लिपिकाल-पौष शुक्ला ८ शुक्रवार सं० १६५६ ।

विशेष—यह प्रतिलिपि जैसलमेर में लिखि गई ।

४४५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११२३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-सं० १७४३ ।

४४६. माधवानल कामकन्दला चौपाई—देवकुमार । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या १०२६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-माघ शुक्ला ११, सं० १७१७ ।

४४७. मुक्तावलीकथा— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $६\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७८६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

४४८. भूलसंघाग्रणी—रत्नकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $१२'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२११७ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

४४९. मेघमालावत कथा—वत्सभ मुनि । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $८\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३१६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

४५०. मेघमालावतकथा- $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $११\frac{१}{२}'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा-सुन्दर । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६५६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

४५१. यज्ञवत्त कथा— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्णक्षीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२१६५ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

विशेष—नागपुर में ग्रन्थ की निधि की गई ।

४५२. रत्नत्रयव्रतकथा—श्रुतसागर । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२०६५ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

४५३. रत्नत्रयविधानकथा—पं० रत्नकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२८०३ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

४५४. रत्नावलीव्रतकथा— X । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ५''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४३१ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-चैत्र कृष्णा २, रविवार, सं० १६६६ ।

४५५. रक्षावन्धनकथा— X । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $१०'' \times ४''$ । दशा-सुन्दर । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२८३० । रचनाकाल- X । लिपिकाल-श्रावण शुक्ला ८, बुधवार, सं० १८६७ ।

४५६. रात्रि भोजन दोष चौपई—श्री मेघराज का पुत्र । पत्र संख्या-१२ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१९६६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

४५७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०८३ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

४५८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२००५ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

४५९. रात्रि भोजन त्याग कथा—भ० सिंहनंदि । देशी कागज । पत्र संख्या-२१ । आकार- $११\frac{१}{२}'' \times ५''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२७४६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- सं० १६६२ ।

४६०. रात्रि भोजन त्याग कथा— X । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४४३ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा १०, बृहस्पतिवार सं० १७१७ ।

४६१. रोदतीजकथा—गुणनंदि । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $८\frac{१}{२}'' \times ४''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७२६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

४६२. लब्धिविधानव्रतकथा—ब्रह्म जिनदास । पत्र संख्या-५ । आकार- $१३\frac{१}{२}'' \times ८\frac{१}{२}''$ । दशा-सुन्दर । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६०६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला १५, शुक्रवार, सं० १९४५ ।

विशेष—ग्रन्थ में पद्यों की संख्या १६६ हैं ।

४६३. व्रतकथाकोश—श्रुतसागर । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार- $१२\frac{१}{२}'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३८० । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

४६४. विक्रमादित्योत्पत्ति कथानक—भगवती । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५३२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

४६५. विद्यानवकथासंग्रह—भिन्न-भिन्न कथा के भिन्न कर्ता हैं । देशी कागज । पत्र संख्या-४५ । आकार- $10'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७६४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

टिप्पणी—पृष्ठ १ से ४ तक नक्षत्रमाला विधान, ५ से ६ तक विमानपंक्ति कथा, ७ से ८ तक मेरुपंक्तिविधान, ११ तक श्रुतज्ञानकथा, १२ तक सुख सम्पत्ति व्रतफल कथा, २२ तक जिनरात्रिकथा, २४ तक रुक्मणि कथा, २७ तक चन्द्रषष्टि कथा, ३३ तक ज्येष्ठ जिनवर व्रतोपाख्यान, ३६ तक सप्त परमस्थान विधान कथा, ४२ तक पुरन्दर विधान कथोपाख्यान, ४३ तक श्रावण द्वादशी कथा, ४५ तक लक्षणपंक्तिकथा वर्णित हैं ।

४६६. वैताल पच्चीसी कथानक—शिवदास । देशी कागज । पत्र संख्या-४४ । आकार- $12\frac{1}{2}'' \times 5\frac{3}{4}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८१५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १८६२ ।

४६७. प्रति २ । देशी कागज । पत्र संख्या-५० । आकार- $11\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५८० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-फाल्गुन कृष्ण १४, सं० १८८६ ।

४६८. शनिश्चर कथा—जीवणदास । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $12\frac{1}{2}'' \times 5\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या १४४० । रचनाकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ७, सं० १८०४ । लिपिकाल-आषाढ़ शुक्ला १३, सं० १८६४ ।

४६९. शुक सप्तति कथा-× । देशी कागज । पत्र संख्या-४७ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७७१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला १०, सं० १८७६ ।

४७०. सप्तव्यसन कथा—सोमकीर्ति आचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-८५ । आकार- $10\frac{3}{4}'' \times 5''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११०६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला ५, मंगलवार, सं० १८६७ ।

आदिभाग—

प्रणय श्रीजिनान् सिद्धान् आचार्यान् पाठकान् यतीन् ।

सर्वद्वन्द्वविनिर्मुक्तान् सर्वकामार्थदायकान् ॥ १ ॥

अन्तभाग—

नन्दीतटाके विदिते हि संधे श्री रामसेनास्य पद प्रसादात् ।

विनिर्मितो मंदविद्या ममायं विस्तारणीयो भुवि साधुसर्धः ॥

यो वा पठति त्रिमृषयति भव्योपि भावनायुक्तः ।

लभते स गौह्यमनिशं ग्रन्थं सोमकीतिना विरचितं ॥

रसनयनसमेते वाणयुक्तेन चन्द्रे १५२६ गतवति सति तूनं विक्रमस्यैव काले ।
प्रतिपदि घवलायां भावमासस्य सोमे हरिभदिनमनाज्ञे निर्मितो ग्रन्थः एषः ॥

सहस्रद्वयसंख्योऽयं सप्तपण्ठी समन्वितः ।

सप्तैव व्यसनाद्यश्च कथा समुच्चयोत्ततः ॥

यावत् सुदर्शनो मेरुर्विच्च सागरा घरा ।

तावन्नन्दत्वयं लोके ग्रन्थो भव्यजनाश्रितः ॥

इति श्री इत्यार्षे भट्टारक श्री धर्मसेनाभः श्री भीमसेनदेवशिष्य आचार्य सोमकीति विर-
चिते सप्तव्यसनकथा समुच्चये परस्त्रीव्यसनफलवर्णनो नाम सप्तमः सर्गः । इति सप्त-
व्यसनचरित्र कथा संपूर्णा ।

४७१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार-१०" × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-
बहुत अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१४४८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

टिप्पणी—केवल दो ही सर्ग हैं ।

४७२. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-११" × ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा-
अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६५६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

४७३. सम्यक्त्व कौमुदी—जयशेखर सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-३६ । आकार-
१० $\frac{1}{8}$ " × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२१२ ।
रचनाकाल-× । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा ४, मंगलवार, सं० १६४६ ।

४७४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३७ । आकार १२ $\frac{1}{2}$ " × ५ $\frac{1}{8}$ " । दशा-
अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२२४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

४७५. प्रति ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-३७ । आकार-१५" × ६ $\frac{3}{8}$ " । दशा-
बहुत अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२७० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

४७६. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-१०० । आकार-८ $\frac{1}{2}$ " × ४ $\frac{1}{8}$ " । दशा-
बहुत अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२६८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा ३, सं०
१८४६ ।

४७७. प्रति ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-४१ । आकार-११ $\frac{1}{8}$ " × ४ $\frac{1}{2}$ " ।
दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११६६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला
७, शनिवार, सं० १५७५ ।

टिप्पणी—अन्तिम प्रशस्ति पत्र नहीं है । कर्णकुब्ज नगर में श्री अहमदखान के राज्य
काल में श्री पूज्य प्रभसूरि के शिष्य मुनि विजयदेव ने लिपि की है । लिपि-
कार ने अपनी प्रशस्ति भी लिखि है—प्रशस्ति का अन्तिम पत्र नहीं है ।

४७८. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-६४ । आकार- $12\frac{1}{8}'' \times 4''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११५६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

४७९. सम्यक्त्व कौमुदी-पं० खेता । देशी कागज । पत्र संख्या-१३५ । आकार- $11'' \times 4\frac{3}{8}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२५३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १८३६ ।

४८०. सम्यक्त्व कौमुदी-कवि यशसेन । देशी कागज । पत्र संख्या-७३ । आकार- $12'' \times 4\frac{3}{8}''$ । दशा-सुन्दर । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५६९ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला १३, सं० १८५३ ।

४८१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-६६ । आकार- $10\frac{1}{8}'' \times 4\frac{3}{8}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५६८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-वैशाख कृष्णा ९, वृहस्पतिवार, सं० १५३५ ।

४८२. सम्यक्त्व कौमुदी-जोधराज गोदीका । देशी कागज । पत्र संख्या-३७ । आकार- $12\frac{1}{8}'' \times 4\frac{3}{8}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५५३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला १३, शुक्रवार, सं० १७२४ ।

विशेष—छन्द संख्या ११७८ हैं ।

४८३. सम्यक्त्व कौमुदी-× । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । आकार- $10\frac{1}{8}'' \times 4\frac{1}{8}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३३७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

४८४ सम्यक्त्व कौमुदी सार्थ—× । देशी कागज । पत्र संख्या-१४४ । आकार- $10\frac{3}{8}'' \times ६\frac{1}{8}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५७१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ८, सं० १८५० ।

४८५. सिंहल सुत चतुष्पदी-समयसुन्दर । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार- $10\frac{1}{8}'' \times 4''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२०७० । रचनाकाल-सं० १६७२ । लिपिकाल-सं० १७००, मेड़ता नगर में समाप्त किया ।

४८६.सिंहासन बत्तीसी-सिद्धसेन । देशी कागज । पत्र संख्या-७३ । आकार- $11'' \times 4\frac{1}{8}''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११०८ । रचनाकाल-अश्विन बुदी २, सं० १६३६ । लिपिकाल-वैशाख बुदी ५, मंगलवार, सं० १७०३ ।

४८७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१७८ । आकार- $10'' \times 4''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२३५ । रचनाकाल-अश्विन कृष्णा २, सं० १६३२ । लिपिकाल-× ।

४८८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१७५ । आकार- $11\frac{1}{8}'' \times 4\frac{1}{8}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२५५ । रचनाकाल-अश्विन कृष्णा २, सं० १६३२ । लिपिकाल-× ।

४८९. सुगन्ध दशमी कथा भाषा—खुशालचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । आकार- $६\frac{1}{2}'' \times ६\frac{3}{4}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६५४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १९४४ ।

४९०. सुगन्ध दशमी कथा—सुशीलदेव । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $११\frac{1}{2}'' \times ५''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२७९४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला १०, सं० १५२२ ।

४९१. सुगन्ध दशमी कथा—ब्रह्म जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार- $१३\frac{1}{2}'' \times ८\frac{1}{2}''$ । दशा-सुन्दर । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६०८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-अश्विन कृष्णा १०, मंगलवार, सं० १९४५ ।

४९२. सुगन्ध दशमी कथा—ब्रह्मज्ञान सागर । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $९\frac{1}{2}'' \times ५''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३४२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला १, सं० १९०३ ।

४९३. सुगन्ध दशमी व पुष्पाञ्जली कथा-× । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $१०\frac{1}{2}'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६६४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

४९४. षोडशकारण कथा-× । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $१०'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी और संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६०२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

४९५. श्रावक चूल कथा-× । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $१०'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२०५५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-माघ शुक्ला १३, सं० १७१९ ।

४९६. श्रीपाल कथा—पं० खेमल । देशी कागज । पत्र संख्या-३५ । आकार- $११'' \times ५\frac{1}{2}''$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७२८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा १३, सं० १६१० ।

४९७. श्रुतज्ञान कथा-× । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $१०'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५५० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-श्रावण शुक्ला १५, सं० १६८५ ।

४९८. हनुमान कथा—ब्रह्म रायमल्ल । देशी कागज । पत्र संख्या-५७ । आकार- $९\frac{1}{2}'' \times ५''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२०० । रचनाकाल-वैशाख कृष्णा ९, सं० १६१६ । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ६, रविवार, सं० १६३९ ।

४९९. हणवन्त चौपई (हनुमन्त चौपई)—ब्रह्म रायमल्ल । देशी कागज । पत्र संख्या-४२ । आकार- $१२\frac{1}{2}'' \times ५\frac{3}{4}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५८३ । रचनाकाल-वैशाख शुक्ला ९, सं० १६५७ । लिपिकाल-चैत्र कृष्णा १३, बृहस्पतिवार, सं० १८६४ ।

५००. हरिश्चन्द्र चौपई—ब्रह्म वेण्णिदास । देशी कागज । पत्र संख्या—१७ । आकार— $६\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२०२३ । रचनाकाल—सं० १७७८, आणन्दपुर मध्ये । लिपिकाल—सं० १८१६ ।

५०१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—११ से ३६ । आकार— $१२'' \times ६''$ । दशा—अच्छी । अपूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२८६२ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

५०२. हेमकथा—रक्षामणि । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार— $११'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२४२६ । रचना काल— $\times$ । लिपिकाल—पौष शुक्ला ११, सं० १६८६ ।

५०३. होली कथा—छोत्तर ठोलिया । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार— $६\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२०६१ । रचना-काल—फाल्गुन शुक्ला १५, सं० १६६० । लिपिकाल—सं० १८३१ ।

५०४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—८ । आकार— $१०\frac{३}{४}'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२५१२ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

५०५. होलीपर्व कथा— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार— $६'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६६५ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

५०६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार— $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२२८७ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला ११, सं० १७५० ।

५०७. होली पर्व कथा सार्थ— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२२८६ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा १०, सं० १८५२ ।

५०८. हंसराज बच्छराज चौपई—भावहर्ष सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—३३ । आकार— $८\frac{१}{४}'' \times ७\frac{३}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२४७८ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—भाद्रपद कृष्णा १४, सं० १६५० ।

५०९. हंस वत्स कथा— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२३५७ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

५१०. क्षत्र चूड़ामणि—वादिभसिंह सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—३६ । आकार— $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—प्रतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१२६७ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला १४, सोमवार, सं० १५४४ ।

५११. क्षुल्लककुमार—सुन्दर । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार— $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ ।

दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२००३ । रचनाकाल—फाल्गुन शुक्ला ५, सं० १६६७ में मूलतान नगर में पूर्ण किया गया । लिपिकाल—कार्तिक शुक्ला १०, सं० १८०१ । लिपि आणन्दपुर नगर में की गई ।

५१२ त्रेपठ श्लाका पुरुष चौपई—पं० जिनमति । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार— $१२\frac{१}{२}'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२३८५ । रचनाकाल—फाल्गुन शुक्ला २, सं० १७०० । लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा १३, सं० १८०० ।

विशेष—इसमें त्रेपठ श्लाका पुरुषों का अर्थात् २४ तीर्थंकरों, ६ नारायणों, ६ प्रति-नारायणों, ६ बलभद्रों एवं १२ चक्रवर्तियों के जीवन चरित्र वर्णित हैं ।

विषय—काव्य

५१३. अन्यायपदेश शतक—मैथिल मधुसूदन । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $६'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-काव्य । ग्रन्थ संख्या-१८६६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा ११, सं० १८३८ ।

५१४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५२८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-श्रावण शुक्ला ६, शनिवार, सं० १८५४ ।

५१५. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ५''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३११ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

५१६. अष्टनायिका लक्षण । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२१३१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

५१७. अनित्य निरूपण चतुर्विंशति—× । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $११'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६२३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

५१८. आत्म सम्बोधन काव्य—× । देशी कागज । पत्र संख्या-३० । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२८४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

५१९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२६ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ५''$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३४८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

नोट—अन्तिम पत्र नहीं है ।

५२०. आत्म सम्बोध पंचासिका—× । देशी कागज । पत्र संख्या-४१ । आकार- $११'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२१५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

५२१. आर्य वसुधारा धारणी नाम महाविद्या—बोद्ध श्री नन्दन । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५६० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १७४१ ।

टिप्पणी—यह बोद्ध ग्रन्थ है । लक्ष्मी प्राप्ति के लिए पाठ कैसे किया जाता है इसमें, बताया गया है ।

५२२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या ६ । आकार- $10\frac{3}{4}" \times 4\frac{1}{2}"$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५८४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

५२३. ईश्वर कार्तिकेय संवाद, रुद्राक्ष उत्पत्ति धारण मंत्र विधान—× । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $10\frac{1}{2}" \times 4\frac{3}{4}"$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६७२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

५२४. एक गीत - श्रीमती कीर्तिवाचक । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $10\frac{1}{2}" \times 4\frac{1}{2}"$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३५६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× । मेड़ता में लिपि की गई ।

५२५. काठिन्य श्लोक-× । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार- $10\frac{3}{4}" \times 4\frac{1}{2}"$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२४६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

५२६. क्रिया गुप्त पद्य-× । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $10\frac{1}{2}" \times 4\frac{3}{4}"$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२५६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

५२७. किरातार्जुनीय -भारवि । देशी कागज । पत्र संख्या ५१ । आकार- $11\frac{1}{2}" \times 4\frac{3}{4}"$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । । ग्रन्थ संख्या-१८१८ रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

५२८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-८६ । आकार- $10" \times 4\frac{1}{2}"$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०७६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

५२९. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-६० । आकार- $10\frac{3}{4}" \times 4\frac{1}{2}"$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०६७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

नोट—केवल प्रथम के दस सर्ग ही हैं ।

५३०. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-७२ । आकार- $11\frac{1}{2}" \times 4\frac{1}{2}"$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४४६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

५३१. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-१०७ । आकार- $10\frac{1}{2}" \times 4\frac{1}{2}"$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३७१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-माघ शुक्ला २, सोमवार, सं० १६७५ को अजयमेरु (अजमेर) में लिपि की गई ।

५३२. किरातार्जुनीय सटीक—भारवि । टीकाकार—कोचल मल्लीनाथ सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-२७ से ४८ । । आकार- $12" \times 4\frac{1}{2}"$ । दशा-अच्छी । अपूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८१६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला सं० १८६२ ।

५३३. किरातार्जुनीय सटीक—भारवि । टीकाकार—एकनाथ भट्ट । देशी कागज । पत्र संख्या-२ से ३६ । आकार- $10\frac{1}{2}" \times 4\frac{1}{2}"$ । दशा-सामान्य । अपूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-

५४४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३३३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

५४५. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ५''$ । दशा-सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७६४ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

५४६ चन्द्रप्रभ ढाल- $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $८'' \times ४''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२६३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

५४७. चार्तुमास व्याख्यान पद्धति-शिव निधान पाठक । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५५२ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला ६, सं० १८०० ।

५४८. चौवोली चतुष्पदी - जिनचंद्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार- $९\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३६० । रचनाकाल-सं० १७२४ । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा ५, बुधवार, सं० १८२० ।

५४९. चौर पंचाशिका--कवि चौर । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $९'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७४५ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

५५०. ढाल बारह भावना- $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $९'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३०० । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

५५१. ढाल मंगल की- $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $४\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२६५ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

५५२. ढाल सुभद्रारी- $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $८\frac{१}{४}'' \times ४''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२८२ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

५५३. ढाल श्री मन्दिरजी- $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $९'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३०१ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

५५४. ढाल क्षमा की-मुनि फकीरचन्दजी । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $९'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२६८ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

५५५. तीस बोल- $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $७\frac{३}{४}'' \times ४''$ ।

दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२६६ । रचनाकाल-× ।
लिपिकाल-× ।

५५६. दया नरसिंह ढाल — दया नरसिंह । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार-
६ $\frac{1}{2}$ " × ४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२६४ । रचनाकाल
-× । लिपिकाल-× ।

५५७. दश अच्छेरा ढाल — रायचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-
८" × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२८० । रचना-
काल-सं० १८६५ । लिपिकाल-× ।

विशेष—मेड़ता सेर में चौमासा किया तब श्री रायचन्द्रजी ने रचना की ।

५५८. दान निर्णय — सूत । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-१२" × ५ $\frac{1}{2}$ " ।
दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२०७६ । रचनाकाल-× ।
लिपिकाल-× ।

५५९. द्विसन्धानकाव्य-नेमिचन्द्र । देशी कागज । । पत्र संख्या-२५४ । आकार—
११ $\frac{3}{4}$ " × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-जीर्ण क्षीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०४६ ।
रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला १४, शनिवार, सं० १७०४ ।

नोटः—विस्तृत प्रशस्ति उपलब्ध है ।

५६०. द्विसन्धानकाव्य (सटीक)—नेमिचन्द्र । टीकाकार-पं० राधव । देशी कागज ।
पत्र संख्या-२२० । आकार-११" × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-जीर्ण क्षीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि—
नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४०६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १७१७ ।

५६१. धर्म परीक्षा-अमितगती सूरि । देशी-कागज । पत्र संख्या-११७ । आकार—
११" × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-जीर्णक्षीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२२५ ।
रचनाकाल-सं० १०७० । लिपिकाल-सं० १७१५ ।

५६२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-४६ । आकार-१८ $\frac{3}{4}$ " × ६ $\frac{3}{4}$ " ।
दशा-बहुत अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२७३ । रचनाकाल-सं० १०७० । लिपिकाल-× ।

५६३. धर्म परीक्षा-पं० हरिवेण । देशी कागज । पत्र संख्या-११७ । आकार—
८ $\frac{1}{2}$ " × ३ $\frac{1}{2}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-५५८ ।
रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

५६४. धर्मगर्भाःपुद्गल — हरिवेण काव्य । देशी कागज । पत्र संख्या-२१६ । आकार—
१० $\frac{1}{2}$ " × ८ $\frac{1}{2}$ " । दशा-जीर्णक्षीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५८६ ।
रचनाकाल-× । लिपिकाल-शुक्ला ७, सं० १६८२ ।

५६५. गदीश्वर काव्य—मृगेन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार-११" × ४ $\frac{1}{2}$ " ।

दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२३४६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—सं० १७२३ ।

५६६. नलदमयन्ती चउपई—समयसुन्दर सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—३० । आकार— $10'' \times 8\frac{1}{4}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११६४ । रचनाकाल—सं० १६०३ । लिपिकाल—ज्येष्ठ बुदी १, सं० १८२८ ।

५६७. नलोदय टीका—रामऋषि मिश्र । टीकाकार—रविदेव । देशी कागज । पत्र संख्या—३० । आकार— $10'' \times 8\frac{1}{4}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८६८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

५६८. नलोदय टीकाकार—रविदेव । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । आकार— $11'' \times 8\frac{3}{4}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८५० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—माघ शुक्ला १५, शनिवार, सं० १७१० ।

५६९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—३५ । आकार— $8\frac{1}{2}'' \times ५''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—११२५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

५७०. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—३४ । आकार— $10\frac{3}{4}'' \times ४\frac{1}{4}''$ । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२५३५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—वैशाख शुक्ला २, सं० १७७० ।

५७१. नवरत्न काव्य—X । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $10\frac{3}{4}'' \times ५''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१७४१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—माघ शुक्ला १, सं० १८६७ ।

५७२. नीतिशतक—भर्तृहरि । देशी कागज । पत्र संख्या—२८ । आकार— $12'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६३७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

५७३. नेमजी की ढाल—रायचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $8\frac{1}{4}'' \times ४\frac{1}{4}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२२७७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

विशेष—पार्ली में रचना हुई बताई गयी है, परन्तु समय नहीं दिया गया है ।

५७४. नेमिदूत काव्य—श्री विक्रम देव । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार— $10\frac{3}{4}'' \times ४\frac{3}{4}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८५८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा १२, सं० १८६० ।

५७५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार— $13'' \times ५\frac{3}{4}''$ । दशा—बहुत अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१६२६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—फाल्गुन कृष्णा ६, शुक्रवार, सं० १८२४ ।

नोट—इस महाकाव्य में भगवान् नेमिनाथ के दूत का राजमति के पिता के यहाँ जाने

का वर्णन है। इस ग्रन्थ में कवि विक्रम ने महाकवि कालिदास कृत मेघदूत काव्य के पद्यों के एक एक चरण को श्लोक के अन्त में अपने अर्थ में प्रयोग किया है।

५७६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०३७ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

५७७. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । आकार- $१०'' \times ५''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०८५ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-पौष कृष्णा ७, मंगलवार, सं० १८१६ ।

५७८. नेमिनिर्वाण महाकाव्य—कवि वाग्भट्ट । देशी कागज । पत्र संख्या-६७ । आकार- $११'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११६५ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

५७९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-६० । आकार- $११'' \times ५''$ । दशा-अति जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३४५ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला ११, मंगलवार, सं० १५६४ ।

५८०. प्रतिसंख्या—३ । देशी कागज । पत्र संख्या-६८ । आकार- $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४३५ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला १, वृहस्पतिवार सं० १६६७ ।

५८१. नैषध काव्य—हर्षकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-२१ । आकार- $९\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०६६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

नोटः—केवल द्वितीय सर्ग ही है ।

५८२. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-६८ । आकार- $१४'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६०१ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला ११, वृहस्पतिवार, सं० १४५३ ।

५८३. पण्डानौ गीत— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५७८ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

५८४. पांच बोल- $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२७३६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

५८५. प्रतापसार काव्य—जीवन्धर । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६४६ । रचनाकाल-सं० ११६५ । लिपिकाल- $\times$ ।

५८६. प्रश्नोत्तर रत्नमाला—विमल । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार—

१० $\frac{3}{8}$ " × ४ $\frac{1}{8}$ " । दशा—जीर्ण क्षीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२५६३ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

५८७. प्रायश्चित्त बोल—× । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार ७ $\frac{1}{2}$ " × ४" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२२८१ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

५८८. पुष्पांजलि व्रतोद्यापन—पं० गंगादास । देशी कागज । पत्र संख्या—१० । आकार—६ $\frac{1}{2}$ " × ४ $\frac{1}{8}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१७४४ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

५८९. पंचमी सप्ताय—कांतिविजय । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—१० $\frac{3}{8}$ " × ४ $\frac{1}{8}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२७२२ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

५९०. बावन दोहा बुद्धि रसायण—पं० महिराज । देशी कागज । पत्र संख्या—४७ । आकार—६ $\frac{3}{8}$ " × ४ $\frac{1}{8}$ " । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२५३६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—सं० १७३३ ।

५९१. भक्तामर री ढाल—× । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार—७ $\frac{1}{2}$ " × ४" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२२७६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

५९२. भामिनी विलास—पं० जगन्नाथ । देशी कागज । पत्र संख्या—२१ । आकार—१० $\frac{3}{8}$ " × ४ $\frac{1}{8}$ " । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१०४७ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

५९३. भोज प्रबन्ध—कवि वल्लाल । देशी कागज । पत्र संख्या—३४ । आकार—१०" × ४" । दशा—जीर्ण क्षीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६६५ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—फाल्गुन कृष्ण २, शुक्रवार, सं० १५५८ ।

५९४. मदन पराजय—जिनदेव । देशी कागज । पत्र संख्या—४६ । आकार—६ $\frac{1}{8}$ " × ४ $\frac{1}{8}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत (चम्पुकाव्य) । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११२५ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला ११, सं० १८३७ ।

५९५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१७ । आकार—११ $\frac{1}{8}$ " × ५ $\frac{3}{8}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१६४५ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण १०, सं० १८५८ ।

५९६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—३२ । आकार—१० $\frac{1}{2}$ " × ४ $\frac{3}{8}$ " । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—११८८ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—श्रावण शुक्ला २, सं० १५६२ ।

५९७. मदन पराजय—हरिदेव । देशी कागज । पत्र संख्या—२४ । आकार—११ $\frac{1}{8}$ " × ४ $\frac{3}{8}$ " । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१३०० । रचनाकाल—× । लिपिकाल—अश्विन शुक्ला १०, वृहस्पतिवार, सं० १५७४ ।

५६८. मयुराष्टक-कवि मयुर । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $5\frac{3}{4}'' \times 4''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३५८ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

५६९. मेघकुमार डाल-मुनि यशनाम । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $६\frac{3}{4}'' \times ४\frac{1}{4}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२०६६ । रचना-काल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

६००. मेघदूत काव्य-कालिदास । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार- $१०'' \times ४\frac{1}{4}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३०३ । रचना-काल- $\times$ । लिपिकाल-भाद्रपद ५, सं० १७८३ ।

६०१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार- $१०'' \times ४\frac{1}{4}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१४३३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-वैशाख शुक्ला ३, वृहस्पति-वार, सं० १७४६ ।

६०२. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । आकार- $१०'' \times ४\frac{3}{4}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१३६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-अश्विन कृष्णा ८, सं० १६२० ।

विशेष-सं० १६२० अश्विन कृष्णा ८, सोमवार को पं० खेता ने अहिपुर में लिपि की है ।

६०३. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार- $१०\frac{1}{4}'' \times ४\frac{1}{4}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१४६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-द्वितीय आषाढ़ कृष्णा १, सं० १६८६ में अहमदाबाद में लिपि की गई ।

६०४. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार- $११'' \times ५''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१६१ । रचना काल- $\times$ । लिपिकाल-वैशाख कृष्णा ६, सं० १६८६ ।

६०५. मेघदूत काव्य सटीक-लक्ष्मी निवास । देशी कागज । पत्र संख्या-३० । आकार- $६\frac{3}{4}'' \times ४\frac{1}{4}''$ । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-चैत्र कृष्णा १, सं० १७४५ ।

६०६. मेघदूत काव्य सटीक-वल्लभ देव । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार- $१३\frac{1}{4}'' \times ५\frac{1}{4}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३४६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-भाद्रपद कृष्णा १२, सोमवार, सं० १८८१ ।

६०७. मेघदूत काव्य सटीक-कालिदास । टीकाकार-यत्न । देशी कागज । पत्र संख्या-२८ । आकार- $१२\frac{3}{4}'' \times ५\frac{3}{4}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११७१ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ७, रविवार, सं० १८२२ ।

६०८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । आकार- $८\frac{3}{4}'' \times ४\frac{1}{4}''$ । दशा-जीर्णजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०१८ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

६०६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । आकार— $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०६३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६१०. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । आकार— $10\frac{3}{4}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१७५६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-माघ शुक्ला १५, सं० १८११ ।

६११. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार— $12\frac{1}{2}'' \times ६''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१७५३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-पौष शुक्ला ३, सं० १८५३ ।

६१२. प्रति संख्या ६ । (टीका-मल्लिनाथ सूरि) देशी कागज । पत्र संख्या-३६ । आकार— $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११६४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-माघ कृष्णा १४, सं० १७६३ ।

६१३. मंगल कलश चौपई—लक्ष्मी हर्ष । देशी कागज । पत्र संख्या-२४ । आकार— $10\frac{1}{8}'' \times 4\frac{3}{8}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२८६१ । रचनाकाल-माघ शुक्ला ११, वृहस्पतिवार सं० १७५६ । लिपिकाल-पौष कृष्णा १२, सं० १८०३ ।

६१४. यमक स्तोत्र—चिरन्तनाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार— $10\frac{1}{8}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३२३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६१५. रघुवंश महाकाव्य—कालिदास । देशी कागज । पत्र संख्या-७६ । आकार— $10\frac{1}{8}'' \times 4\frac{1}{8}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११३६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६१६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३६ । आकार— $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४६६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६१७. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-३५ । आकार— $12\frac{1}{2}'' \times ६''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२२६३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

विशेष—नवम् सर्ग पर्यन्त है ।

६१८. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-६८ । आकार— $11'' \times ५''$ । देशी-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५६८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १८०७ ।

६१९. रघुवंश वृत्ति—कालीदास । टीका-आनन्द देव । देशी कागज । पत्र संख्या-२ से १४० । आकार— $10'' \times 4\frac{1}{8}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । अपूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२३६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

नोट—प्रथम पत्र नहीं है ।

६२०. राम आज्ञा—तुलसीदास । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार— $10'' \times 4\frac{1}{8}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२०४३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६२१. लघुस्त्वेराज काव्य सटीक—लघु पण्डित । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-६ $\frac{1}{2}$ " × ४ $\frac{1}{8}$ " । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२८३८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १६४८ ।

६२२. लक्ष्मी सरस्वती संवाद—श्री भूषण । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार-१० $\frac{1}{2}$ " × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२११३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६२३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार-११" × ५" । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५४४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६२४. वर्धमान काव्य—जयमित्र हल । देशी कागज । पत्र संख्या-५६ । आकार-१० $\frac{1}{2}$ " × ४ $\frac{3}{8}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-४४३/अ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६२५. वसुधारा धारिणी नाम महाविद्या—नन्दन । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार-१०" × ४ $\frac{1}{8}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२७८० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

विशेष—यह बौद्ध ग्रन्थ है । इसमें लक्ष्मी प्राप्ति के लिए कैसे पाठ किया जाता है, बताया गया है।

६२६. वृन्दावन काव्य—कवि माना । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार-११ $\frac{1}{8}$ " × ५" । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३३५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६२७. विक्रमसेन चौपई-× । देशी कागज । पत्र संख्या-५० । आकार-१०" × ४ $\frac{1}{8}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२७४२ । रचनाकाल-सं० १७२४ । लिपिकाल-× ।

६२८. विदग्धमुखमण्डन (सटीक)—धर्मदास बोद्धाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । आकार-१० $\frac{1}{2}$ " × ५ $\frac{1}{8}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०६५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६२९. विद्वद्भूषण काव्य—बालकृष्ण भट्ट । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार-६" × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२१२३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ६, सोमवार, सं० १८३० ।

६३०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-१२ $\frac{1}{8}$ " × ५ $\frac{1}{8}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१४२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६३१. विद्वद्भूषण सटीक—बालकृष्ण भट्ट । टीकाकार-मधुसूदन भट्ट । पत्र संख्या-७७ । आकार-६" × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-बहुत अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५६५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६३२. विशेष महाकाव्य सटीक (ऋतु संहार)—कालिदास । टीकाकार—प्रमरकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या—२५ । आकार— $10\frac{1}{4}'' \times 4\frac{1}{4}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६२५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—पौष शुक्ला १०, सं० १८५७ ।

६३३. वैराग्यमाला—सहल । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार— $12'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२१०५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—प्रथम श्रावण कृष्णा ५, सं० १८२५ ।

६३४. वैराग्यशतक—भर्तृहरि । देशी कागज । पत्र संख्या—१० । आकार— $11\frac{3}{4}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८१२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

६३५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१७ । आकार— $10\frac{1}{4}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—जीर्ण । अपूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२७६६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

६३६. वैराग्य शतक सटीक—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१५ । आकार— $10\frac{1}{4}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—प्राकृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२७४५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला ११, सं० १८५१ ।

६३७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१० । आकार— $10\frac{1}{4}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२७१६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—श्रावण शुक्ला ४, सं० १८४० ।

६३८. वैराग्यशतक सार्थ—X । देशी कागज । पत्र संख्या—८ । आकार— $11\frac{1}{2}'' \times 4''$ । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—प्राकृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२०८६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—मंगसिर कृष्णा १३, मंगलवार, सं० १८३१ ।

६३९. शत्रुंजय तीर्थद्वार—नयसुन्दर । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार— $10'' \times 4\frac{3}{4}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२७६१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

६४०. शिशुपालवध—महाकवि माघ । पत्र संख्या—७३ । आकार— $11\frac{3}{4}'' \times 4\frac{3}{4}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८२० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा ८, बुधवार, सं० १८५६ ।

६४१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । आकार— $10'' \times 4\frac{1}{4}''$ । दशा—अतिजीर्ण क्षीण । अपूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१४५८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

६४२. शिशुपालवध सटीक—X । देशी कागज । पत्र संख्या—११८ । आकार— $11\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२३७० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

६४३. शिशुपालवध सटीक—माघ । टीकाकार आनन्ददेव । देशी कागज । पत्र संख्या—

८७। आकार- $12\frac{1}{2}'' \times 4\frac{3}{4}''$ । दशा-अच्छी । अपूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८२६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

नोट—टीका का नाम 'सन्देह विपेवधि' है । ग्यारहवें सर्ग की टीका भी पूर्ण नहीं की गई है । ग्रन्थ अपूर्ण है ।

६४४. शोलरथ गाथा — $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times ६\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५१७ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

६४५. शोल विनती-कुमुदचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $11'' \times 4\frac{3}{4}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी और गुजराती मिश्रित । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४८३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

६४६. शोलोपारी चितासन पद्मावती कथानक- $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times ४''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३२० । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

६४७. सज्जन चित्तवल्लभ—मल्लिखेण । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६१३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-वैशाख शुक्ला १२, बृहस्पतिवार, सं० १६४६ ।

६४८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $11\frac{3}{4}'' \times 4\frac{3}{4}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६७८ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-आषाढ़ कृष्णा २, शनिवार, सं० १८१७ ।

६४९. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $11'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४६१ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-भाद्रपद कृष्णा ३३ रविवार, सं० १६८६ ।

विशेष—१६८६ पौष कृष्णा ७ शुक्रवार को ब्रह्मचारी बेणीदास ने संशोधन किया है । श्लोक संख्या २४ हैं ।

६५०. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $९\frac{1}{2}'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५७७ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-आषाढ़ शुक्ला ११, मंगलवार, सं० १८४४ ।

६५१. सप्तव्यसन समुच्चय-पं० भीमसेन । देशी कागज । पत्र संख्या-७१ । आकार- $11\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२७४ । रचनाकाल-माघ शुक्ला १, सं० १५२६ । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला ३, सं० १६७६ ।

६५२. समगत वोल- $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $९\frac{1}{2}'' \times ४''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२८३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-सं० १६२७ ।

विशेष—सम्यक्त्व का श्वेताम्बर आम्नाय के अनुसार वर्णन किया गया है ।

६५३. सम्यक्त्वरास—ब्रह्म जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार— $६\frac{३}{४}'' \times ३\frac{३}{४}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१३१० । रचना—काल—X । लिपिकाल—पौष कृष्णा ३, सं० १८०० मालपुरा मध्ये ।

६५४. सिन्दुर प्रकरण—सोमप्रभाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—जीर्ण । अपूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१३२४ । रचना—काल—X । लिपिकाल—X ।

नोट—इस ग्रन्थ में केवल ७५ श्लोक ही उपलब्ध होते हैं । जबकि आचार्य की अन्य प्रतियों में १०० श्लोक उपलब्ध होते हैं ।

६५५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२०४६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

६५६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—१४ । आकार— $११\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२४२० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

६५७. सिन्दुर प्रकरणसार्थ—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१७ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ४''$ । दशा—अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२०४६ । रचना—काल—X । लिपिकाल—X ।

६५८. सीता पच्चीसी—श्री वृद्धिचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $१२'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५३६ । रचनाकाल—सं० १६०० । लिपिकाल—माघ शुक्ला १२, सं० १६३६ ।

६५९. सीता सती जयमाला—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $१०'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५०५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

६६०. सुभाषित रत्न संदोह—अमितगति । देशी कागज । पत्र संख्या—६२ । आकार— $११'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६७८ । रचनाकाल—सं० १०५० । लिपिकाल—वैशाख कृष्णा ५, सं० १६३२ को नागौर में लिपि की गई ।

विशेष—लिपिकार ने अपनी पूर्ण प्रशस्ति लिखी है । रचना बहुत ही सुन्दर और सरल संस्कृत में है ।

६६१. सुमतारी ढाल—शिब्वूराम । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार— $८\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२३०२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

६६२. सोनागौरि पच्चीसी—कवि भागीरथ । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार— $७'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२४८२ । रचना—काल—ज्येष्ठ शुक्ला १४, सं० १८६१ । लिपिकाल—X ।

६६३. सोली रो ढाल—X । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $८\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ ।

दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२६६ । रचनाकाल-× ।
लिपिकाल-× ।

६६४ स्थूलभद्र मुनि गीत—नथमल । देशी कागज । पत्र संख्या-१ आकार-१० $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५७० । रचना-काल-× । लिपिकाल-× ।

६६५. श्रंगार शतक (सटीक)—भर्तृहरि । देशी कागज । पत्र संख्या-३० । आकार-११ $\frac{३}{४}$ " × ५ $\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११५७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६६६. श्रीमान् कुतूहल—वित्तय देवी । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-६ $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४५१ । रचना-काल-× । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला २, सं० १६२० ।

नोट—इस ग्रन्थ में कामिनी को क्रियाओं का वर्णन किया गया है ।

६६७. क्षेम कुतूहल—क्षेम कवि । देशी कागज । पत्र संख्या-२३ । आकार-१० $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७५७ । रचना-काल-सं० १४५३ । लिपिकाल-सं० १६२३ ।

६६८. ज्ञान हिमची—कवि जगद्विप । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार-१० $\frac{१}{४}$ " × ५" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२०६४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

विशेष—मुसलमान, मुल्ला, पीर, अल्ला आदि शब्दों का विवेचन तात्त्विक ढंग से किया गया है । ग्रन्थ दृष्टव्य है ।

विषय—कोश साहित्य

६६६. अनेकार्थ मंजरी—नन्ददास । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $10'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-कोश । ग्रन्थ संख्या-१३२८ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-वैशाख शुक्ला १३, वृहस्पतिवार, सं० १८२३ ।

६७०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार- $5'' \times 4''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०४० । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

६७१. अनेकार्थध्वनि मंजरी—कवि सूद । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२१३३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ८, शनिवार, सं० १६८१ ।

विशेष—नागौर में लिपि की गई ।

६७२. अनेकार्थध्वनि मंजरी— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४२४ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-मांगशीर्ष शुक्ला १४, सं० १७१० ।

विशेष—ग्रन्थ के फट जाने पर भी अक्षरों की कोई क्षति नहीं हुई है ।

६७३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार- $10'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४१६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

६७४. अनेकार्थ नाममाला—हेमचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-५४ । आकार- $10'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । अपूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-कोश । ग्रन्थ संख्या-१०४६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

६७५. अनेकार्थ नाममाला— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $10'' \times 4\frac{3}{4}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३०४ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

६७६. अभिधान चिन्तामणि—हेमचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-३० । आकार- $11'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५७२ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-पौष शुक्ला १, बुधवार, सं० १६१० ।

६७७. अमर कोश—अमरसिंह । देशी कागज । पत्र संख्या-७६ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७१७ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला १३, सं० १८१५ ।

६७८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार- $5\frac{1}{2}'' \times 4\frac{3}{4}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२२६८ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा १३, सं० १६०८ ।

विशेष—केवल प्रथम काण्ड मात्र ही है ।

६७६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-३६ से ११७ तक । आकार- $१२" \times ५\frac{३}{४}"$ । दशा-अच्छी । अपूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२८४६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

६८०. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ से ८१ तक । आकार- $११\frac{१}{४}" \times ४\frac{१}{४}"$ । दशा-अच्छी । अपूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२८६३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-फाल्गुन कृष्ण ३, बुधवार, सं० १८२२ ।

६८१. अमरकोश वृत्ति—अमरसिंह । वृत्तिकार—महेश्वर शर्मा । देशी कागज । पत्र संख्या-६५ । आकार- $१२\frac{१}{४}" \times ४"$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६८२ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-शक् सं० १७७१ ।

६८२. अमरकोश वृत्ति—अमरसिंह । वृत्तिकार—भट्टोपाध्याय सुनुलिंगयसूरी । देशी कागज । पत्र संख्या-१२३ । आकार- $१२" \times ४\frac{१}{४}"$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०२५ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-मंगसिर सुदी ६, मंगलवार, सं० १७१२ ।

६८३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-७६ । आकार- $११" \times ५\frac{१}{४}"$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४०५ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-मंगसिर पुगला ५, मंगलवार, सं० १६२२ ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ संख्या ६५०० है ।

६८४. एकाक्षर नाममाला—पं० वररुचि । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार- $१०" \times ५\frac{३}{४}"$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८८४ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-श्रावण कृष्ण ६, सोमवार, सं० १६२२ ।

६८५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $१२" \times ५\frac{३}{४}"$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६७१ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

६८६. एकाक्षरी नाममाला—प्राकसूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $१०" \times ४\frac{१}{४}"$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२१५६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

६८७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $१०\frac{३}{४}" \times ४\frac{३}{४}"$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४३३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

६८८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $११" \times ४\frac{३}{४}"$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४६३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

६८९. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $१०\frac{१}{४}" \times ४\frac{१}{४}"$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२८५८ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-श्वेष्ठ शुक्ला ८, सं० १८२६ ।

६६०. क्रियाकोश—किशनसिंह । देशी कागज । पत्र संख्या-१७ । आकार- $११\frac{३}{४}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३१५ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

६६१. गणित नाममाला—हरिदत्त । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६४३ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

नोट—ग्रन्थ का दूसरा नाम ज्योतिष नाममाला भी है ।

६६२. चिन्तामणि नाममाला—हेमचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-४४ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११७७ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-अश्विन वृदी २, सं० १६७८ ।

६६३. द्वि अभिधान कोश—X । देशी कागज । पत्र संख्या ११ । आकार- $८\frac{३}{४}'' \times ५''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६८६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

६६४. धनंजय नाममाला—धनंजय । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ५''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७६६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

६६५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६६६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

६६६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार- $११'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७५० । रचनाकाल- X । लिपिकाल-पौष शुक्ला १२, सं० १८२२ ।

६६७. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१४५७ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

६६८. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३६५ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

६६९. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१२६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला १, सं० १८०५ ।

७००. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ५''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६६२ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

७०१. प्रति संख्या ८ । देशी कागज । पत्र संख्या-१८ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६६१ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

७०२. प्रति संख्या ९ । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । आकार- $११\frac{१}{२}'' \times ५''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६५० । रचनाकाल- X । लिपिकाल-माघ कृष्णा ६, सोमवार, सं० १५६२ ।

७०३. प्रति संख्या १० । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार-१०"×४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४१८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ५, सं० १७१५ ।

७०४. नाममाला—हेमचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-४० । आकार-१० $\frac{३}{४}$ "×४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२६६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला १२, वृहस्पतिवार, सं० १६३४ ।

७०५. नाममाला—कवि धनंजय । देशी कागज । पत्र संख्या-१७ । आकार-११"×४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३०७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ११, सं० १६८१ ।

७०६. पुण्यासत्र कथाकोश—रामचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-२०३ । आकार-१०"×४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११२२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला १५, सं० १८६२ ।

७०७. महालक्ष्मी पद्धति—पं० महादेव । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । आकार-६ $\frac{३}{४}$ "×५ $\frac{३}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६०६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-श्रावण कृष्णा ६, शुक्रवार, सं० १६२२ ।

७०८. मानमंजरी नाममाला—नन्ददास । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । आकार-७ $\frac{१}{४}$ "×६" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८७७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला ४, शुक्रवार, सं० १६०३ ।

७०९. लघुनाममाला—हर्षकीर्ति सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-६३ । आकार-१०"×४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८६० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला १, सं० १८७३ ।

७१०. लिंगानुशासन—अमरसिंह । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-११"×५" । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३०६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-भाद्रपद कृष्णा १३, सं० १८६४ ।

७११. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-७४-६६ । आकार-११"×६" । दशा-जीर्ण । अपूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०७६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-भाष शुक्ला ५, सं० १८६६ ।

नोट—इसे अमरकोश भी कहा गया है ।

विषय—चरित्र

७१२. अर्जुन चौपई—समयसुन्दर सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-चरित्र । ग्रन्थ संख्या-१११० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

७१३. अवन्ति सुकुमाल महामुनि वरुण—महानन्द मुनि । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-चरित्र । ग्रन्थ संख्या-२८२५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला ७, सं० १७६६ ।

७१४. उत्तम चरित्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-चरित्र । ग्रन्थ संख्या-१५१३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

७१५. ऋषभनाथ चरित्र—भ० सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-१४५ । आकार- $१२\frac{३}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-चरित्र । ग्रन्थ संख्या-२६७७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा १२, सं० १८३३ ।

विशेष—श्लोक संख्या ४६२८ हैं ।

७१६. अंबड चरित्र—पं० अमरसुन्दर । देशी कागज । पत्र संख्या-३१ । आकार- $६\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२७१५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-अश्विन कृष्णा १३, सं० १८२६ ।

७१७. करकण्ड, महाराज चरित्र—कनकामर । देशी कागज । पत्र संख्या-७३ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०७० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

७१८. कुल ध्वज चौपई—पं० जयसर । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३६६ । रचनाकाल-अश्विन शुक्ला १०, सं० १७३४ । लिपिकाल-अश्विन कृष्णा २; वृहस्पतिवार, सं० १७५३ ।

७१९. गुज सघन्टप चरित्र—पं० सुन्दरराज । देशी कागज । पत्र संख्या-१८ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२०६ । रचनाकाल-प्रथम ज्येष्ठ बुदी १५, बुधवार, सं० १५५३ । लिपिकाल-श्रावण शुक्ला १२, शनिवार, सं० १६७० ।

७२०. गौतमस्वामी चरित्र—मण्डलाचार्य धर्मचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या-३१ । आकार- $१२'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२२६ । रचनाकाल-ज्येष्ठ शुक्ला २, सं० १७१६ । लिपिकाल-चैत्र कृष्णा ८, शुक्रवार, सं० १८३१ ।

७२१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३३ । आकार- $११\frac{३}{४}$ " $\times$ $५\frac{३}{४}$ " ।
दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१८६७ । रचनाकाल- १ । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला ११,
शनिवार, सं० १८२१ ।

७२२. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-३८ । आकार- $१०\frac{३}{४}$ " $\times$ $५\frac{३}{४}$ " ।
दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११३६ । रचनाकाल-जेष्ठ शुक्ला २, शुक्रवार, सं० १७२६ ।
लिपिकाल-पौष शुक्ला ८, रविवार, सं० १८४८ ।

७२३. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-३३ । आकार- $११\frac{३}{४}$ " $\times$ $५\frac{३}{४}$ " ।
दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५५५ । रचनाकाल-ज्येष्ठ शुक्ला २, शुक्रवार, सं० १७२६ ।
लिपिकाल-अश्विन शुक्ला ११, सं० १८२५ ।

७२४. चन्द्रप्रभ चरित्र—पं० दामोदर । देशी कागज । पत्र संख्या-६२ । आकार-
 $१२\frac{३}{४}$ " $\times$ $५\frac{३}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७४३ ।
रचनाकाल-भाद्रपद ६, सं० १७२७ । लिपिकाल-आषाढ़ कृष्णा २, सं० १८४४ ।

आदिभाग—

धियं चन्द्रप्रभो नित्यां चन्द्रदशचन्द्र लांछितः ।

भव्य कुमुदचन्द्रो वषट्चन्द्रप्रभो जिनः श्रियात् ॥ १ ॥

कुशासन वचोवृद्धजगत्सारण हितवे ।

तेन स्ववाक्य मृगार्धमंथितः प्रकाशितः ॥ २ ॥

युगादौ येन तीर्थेणा धर्मतीर्थः प्रवर्तितः ।

तमहं वृषभं वन्दे वृषदं वृषनायकम् ॥ ३ ॥

अन्तभाग—

जिनर्षिविद्वद्भूतो ज्ञान विज्ञान पीठः शुभविचरण साक्ष्यचार्त्तलीलादि पत्रः ।

सुगुणत्रयसमृद्धः स्वर्गसाध्यप्रभूतः शिवसुखफलदो वै जैनधर्मद्रुमोऽस्तु ॥ ८४ ॥

भूमृन्नेत्राचलजयवरांकप्रभे (१७२७) वर्षेऽतीते नवमीदिनसे मासि भाद्रे सुयोगे ।

रम्ये ग्रामे विरचितमिदं श्रीमहाराष्ट्रनाम्नि नाभेयस्य प्रवरभवेन मूरिशोभा निवासि ॥ ८५ ॥

रम्यं चतुः सहस्राणि पञ्चदशयुतानि वै ।

अनृदुष्कैः समाख्यातं श्लोकीरिदं प्रमाणतः ॥ ८६ ॥

इति श्रीमण्डनमूरि श्रीभूषण तत्तद्गच्छेण श्रीधर्मचन्द्र शिष्य केविदामोदर-विरचिते
श्री चन्द्रप्रभचरिते श्री चन्द्रप्रभ निर्वाणगमन वर्णनो नाम सप्त-विंशतितमः सर्गः ।

७२५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-६५ । आकार- १५ " $\times$ $६\frac{३}{४}$ " ।
दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११५० । रचनाकाल-भाद्रपद शुक्ला ६, सं० १७२७ ।
लिपिकाल-सं० १८६६ ।

७२६. चन्द्रप्रभ चरित्र—यशः कीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-११७ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण क्षीर्ण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३५५ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-माघ शुक्ला ५, सं० १६०१ ।

७२७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-६४ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण क्षीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३४१ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-वैशाख कृष्णा १०, सं० १६२७ ।

७२८. चन्द्रलेहा चरित्र—रामवल्लभ । देशी कागज । पत्र संख्या-३५ । आकार- $१०'' \times ५''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५२६ । रचनाकाल-अश्विन शुक्ला १०, रविवार, सं० १७२८ । लिपिकाल-पौष कृष्णा १०, सं० १८५४ ।

७२९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-४४ । आकार- $६'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७५१ । रचनाकाल-अश्विन शुक्ला १०, सं० १७२८ । लिपिकाल-माघ शुक्ला ११, सं० १८३१ ।

७३०. चरित्रसार टिप्पण—चामुण्डराय । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५१० । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

७३१. चेतन कर्म चरित्र—भैया भगवतीदास । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार- $१२'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२१२२ । रचनाकाल-ज्येष्ठ कृष्णा ७, मंगलवार, सं० १७३२ । लिपिकाल-मंगसिर कृष्णा ३, सं० १८५६ ।

विशेष—इस ग्रन्थ की लिपि नागरी में की गई ।

७३२. चेतनचरित्र—यशः कीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-१५ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५६६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला ६, सं० १६०८ ।

७३३. जम्बूस्वामीचरित्र-म० सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-५८ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण क्षीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८०३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

७३४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-७५ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण क्षीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०८५ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-सं० १७१३ ।

७३५. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-४८ । आकार- $१५'' \times ७''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६१६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-आषाढ शुक्ला १५, मंगलवार, सं० १८६६ ।

विशेष—श्लोक संख्या २१७० हैं ।

७३६ जम्बूत्वामीचरित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार- $10\frac{3}{4}'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२७१४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला ७, सं० १७२४ ।

७३७. जितदत्तचरित्र—पं० लाखू । देशी कागज । पत्र संख्या-१५८ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 8\frac{3}{4}''$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२६१ । रचनाकाल-पौष वृदी ६, सं० १२७५ । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा ६, बुधवार, सं० १५६८ ।

नोट—ज्येष्ठ कृष्णा ६, बुधवार को नागपुर (नागौर) में मुहम्मद खान के राज्यकाल में लिपि की गई है ।

७३८. जितदत्तचरित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-२५ । आकार- $11\frac{1}{2}'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३४८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

विशेष इस ग्रन्थ में १०६० श्लोक हैं, संपूर्ण ग्रन्थ में ६ सर्ग हैं । श्री विद्यानन्ददेव ने अपने पढ़ने के लिए लिपि करवाई ।

७३९. जीवंधरचरित्र—म० शुभचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-७७ । आकार- $11\frac{1}{2}'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा-अतीजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३७० । रचनाकाल-अश्विन शुक्ला १३, सं० १६२८ । लिपिकाल—X ।

आदिभाग—

श्रीसन्मतिः सतां कुर्यात्समीहितफलं परं ।

येनाप्येत महानुक्तराजस्य वर—वैभवः ॥१॥

अन्तभाग—

येषां धर्मकपालयोगसुविधिना प्रमोदा,
गमाचार श्रीशुभचन्द्र एष भविता संसारतः संभव ।

नागदर्शनकोविदं हनहितं तानस्यभारं सदा,
छिद्याडाकिरणैः कपंचिदतुलैः सर्वत्र सुव्यापिभिः ॥२॥

श्रीसूक्तं चोदातिमुख्यसेव्यः श्रीभारतीगच्छ विशेषशोभः ।

निष्पन्नतध्वान्त विनाशदशो जीयान्चिरं श्रीशुभचन्द्रमासी ॥३॥

श्रीनदिभक्तभूषतेर्वसुहृत् ददैतेभ्यो सप्तके,

देवैः न्यूनरेतमे श्रुतरे नासे वरेष्वे शुचौ ।

वारे गीर्णतिके वयोदश नियौ सन्तुते पत्तने,

श्रीचन्द्रभक्तानि वै विरचितं देवं नया तोषतः ॥४॥

आचन्द्रार्कं चिरं जीयाच्छुभचन्द्रेण भाषितं ।

चरितं जीवकस्याऽथ स्वामिनः शुभकारणं ॥८८॥

इति श्री मुमुक्षु—शुभचन्द्रविरचिते श्रीमज्जीवधरस्वामिचरिते जीवधरस्वामिमोक्ष
गमनवर्णनं नाम त्रयोदशोलम् ॥१३॥

७४०. धन्यकुमारचरित्र—ब्रह्म नेमिदत्त । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार-
१० $\frac{१}{२}$ "×४ $\frac{१}{२}$ " । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३५६ ।
रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

७४१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । आकार-११"×५ $\frac{१}{२}$ " ।
दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३४१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

७४२. धन्यकुमार चरित्र—भ० सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-३१ ।
आकार-११ $\frac{१}{२}$ "×५ $\frac{१}{२}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२५१ ।
रचनाकाल-× । लिपिकाल-बैशाख कृष्ण ४, रविवार, सं० १८५० ।

७४३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२६ । आकार-११ $\frac{१}{२}$ "×५" ।
दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सं० १८६१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १८४४ ।

७४४. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । आकार-१० $\frac{१}{२}$ "×४ $\frac{१}{२}$ " ।
दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३६३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-माघ शुक्ला ४,
मंगलवार, सं० १९६४ ।

७४५, धन्यकुमारचरित्र—गुणभद्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-४४ । आकार-
१०"×५ $\frac{१}{२}$ " । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०४२ ।
रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ५, शुक्रवार, सं० १९५३ ।

आदिभाग—

स्वयंभूवं महावीरं लब्धाऽनन्तचतुष्टयं ।
शतेन्द्रप्रणतं वन्दे मोक्षाय शरणं सताम् ॥१॥
प्रणमामि गुरुंश्चैव सर्वसत्त्वाऽभयंकरान् ।
रत्नत्रयेण संयुक्तान्ससारार्णवतारकान् ॥२॥
दिश्यात्सरस्वती बुद्धि मम मन्दधियो दृढा ।
भक्त्यानुंरजिता जैनी मातेव पुत्र वत्सला ॥३॥
स्याद्वादवाक्यसंदर्भं प्रणमम् परमागमम् ।
श्रुतार्थभावनां वक्ष्ये कृतपुण्येन भाविताम् ॥४॥

अन्तभाग—

यः संसारमसारमुन्नतमतिज्ञत्वा विरक्तोऽभवद्धत्वा
मोहमहाभटं शुभमना रागांधकारं तथा ।
आदायेति महाव्रतं भवहरं माणिक्यसेनो मुनि-
र्नेर्ग्रन्थं सुखदं चकार हृदये रत्नत्रयं मण्डनं ॥१॥

शिष्योऽभूत्पदपंकजैकभ्रमरः श्रीनेमिसेनोविभूस्तस्य,
श्रीगुरुपुंगवस्य सुनपाश्चारित्रभूपान्वितः ।
कामक्रोधमदान्ध गन्ध करिणो ध्वंसे मृगाणां पतिः,
सम्यग्दर्शित-बोध-साम्य निवितो भवयांऽबुजानां रविः ॥२॥

प्राचारं समितीर्दधी दशविधं धर्मं तपः संयमम्
सिद्धान्तस्य गणाधिपस्य गुणिनः शिष्यो हि मान्योऽभवत् ।
सैद्धान्तो गुरुभद्रनाममुनिपो मिथ्यात्वकामान्तकृत्
स्याद्वादामलरत्नभूषणधरो मिथ्यानयध्वंसकः ॥३॥

तस्येयं निरलंकारा ग्रन्थाकृतिरसुन्दरा ।
भलंकारवता दृष्या सालंकाराकृता न हि ॥४॥

शास्त्रमिदं कृतं राज्ये राज्ञी श्रीपरमादिनः ।
पुरे विलासपूर्वे च जिनालयैर्विराजिते ॥५॥

यः पाठयति पठत्येव पठन्तमनुमोदयेत् ।
सः स्वर्गं लभते भव्यः सवक्षिसुखदायकं ॥६॥

लम्बकंजुकऽगोत्रीऽभूच्छुभचन्द्रो महामनाः ।
साधुः सुशीलवान् शान्तः श्रावको धर्मवत्सलः ॥७॥

तस्य पुत्रो वभूवाऽत्र बल्हणो दानवान्वशी ।
परोपकारचेतस्को न्यायेनाजितसद्धनः ॥८॥

धर्मानुरागिणा तेन धर्मकथा निबन्धनं ।
चरितं कारितं पुण्यं शिवायेति शिवार्थिनः ॥९॥

इति धन्यकुमारचरित्रं सम्पूर्णं ।

७४६. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-६ । आकार-६ $\frac{3}{4}$ "×३ $\frac{3}{4}$ " । दशा-अतिजीर्णं ।
पूर्णं । ग्रन्थ संख्या-११७६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ६, वृहस्पतिवार,
सं० १५२० ।

७४७. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-५० । आकार-११ $\frac{3}{4}$ "×५" । दशा-
अतिजीर्णं क्षीण । पूर्णं । ग्रन्थ संख्या-१४१४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

नोट—कई पत्र परस्पर चिपक गये हैं जिनको अलग करने पर भी अक्षर स्पष्ट नहीं हैं ।

७४८. धन्यकुमारचरित्र—पं० रयधू । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । आकार-
१०"×४ $\frac{3}{4}$ " । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्णं । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२३६ ।
रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

७४९. नवपदयंत्रचक्रद्वार (श्रीपालचरित्र)-× । देशी कागज । पत्र संख्या-३ ।
आकार-१०"×५ $\frac{3}{4}$ " । दशा-अच्छी । पूर्णं । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६३० ।
रचनाकाल-× । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ६, सं० १६२२ ।

नोट—यह ग्रन्थ श्वेताम्बराम्नाय के अनुसार है । इसमें श्रीपाल का चरित्र प्राकृत गाथाओं में निबद्ध किया हुआ है ।

७५०. नागकुमारचरित्र—पुष्पदन्त । देशी कागज । पत्र संख्या—७० । आकार— $11\frac{1}{2}'' \times 8\frac{3}{4}''$ । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१०७३ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—क्रांतिक शुक्ला १३, सोमवार, सं० १६३६ ।

७५१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—६७ । आकार— $12'' \times 5''$ । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२६७६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—मंगसिर शुक्ला ५, सोमवार, सं० १५३८ ।

७५२. नागकुमारचरित्र—पं० धर्मधर । देशी कागज । पत्र संख्या—४२ । आकार— $11\frac{1}{2}'' \times 5''$ । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११३४ । रचनाकाल—श्रावण शुक्ला १५, सोमवार, सं० १२१३ । लिपिकाल—चैत्र शुक्ला २, शुक्रवार, सं० १५६६ ।

७५३. नागकुमार चरित्र—मल्लिषेण सूरी । देशी कागज । पत्र संख्या—२८ । आकार— $11\frac{1}{2}'' \times 5''$ । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१२७१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

आदिभाग —

श्रीनेमि जिनमनस्य सर्वसत्त्वहितप्रदम् ।
वक्ष्ये नागकुमारस्य चरितं दुरितापहं ॥१॥
कविभिर्जयदेवादयैर्षदयैर्विनिर्मितम् ।
यत्तदेवारित चेदत्र विषम् मन्दमेधसाम् ॥२॥
प्रसिद्धैः संस्कृतैर्विषयैर्विद्वज्जन मनोहरम् ।
तन्मया पद्यबन्धेन मल्लिषेणेन रच्यते ॥३॥

अन्तभाग—

श्रुत्वा नागकुमार चारु चरितं श्री गौतमेनोदितं ।
भव्यानां सुखदायकं भवहरं पुण्याल्लवोत्पादकं ।
नत्वा तं मुग्धाधिपो गणधरं भक्त्या पुरं प्रागम—
च्छीमद्राजगृहं पुरन्दरपुराकारं विभूत्या समं ॥६॥
इत्युभयभाषाकविचक्रवर्ति श्री मल्लिषेणसूरि
विरचितायां श्री नागकुमार पंचमीकथ—यां नागकुमार मुनीश्वर—
निर्वाणगमनो नाम पंचमः सर्गः ।

७५४. नागश्रीचरित्र—कवि किशनसिंह । देशी कागज । पत्र संख्या—२८ । आकार— $8'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दीपद्य । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११६२ । रचनाकाल—श्रावण बुदी ६, बृहस्पतिवार, सं० १७७० । लिपिकाल—क्रांतिक शुक्ला २, सं० १७७६ ।

७५५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१८ । आकार- $६\frac{१}{२}'' \times ५''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०१५ । रचनाकाल-श्रावण शुक्ला ६, बृहस्पतिवार, सं० १७७३ । लिपिकाल- X ।

७५६. नैषधचरित्र (केवल द्वितीय सर्ग)-महाकवि हर्ष । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । आकार- $१२'' \times ६''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३२६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

७५७. पहजंगमहाराज चरित्र - पं० दामोदर । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । आकार $११\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७७२ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

७५८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-८६ । आकार- $११\frac{१}{२}'' \times ५''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७६६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

७५९. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-८६ । आकार $१०\frac{३}{४}'' \times ५''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१७६७ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

७६०. ४०७. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-७८ । आकार- $११'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०६१ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-श्रावण शुक्ला ५, मंगलवार, सं० १८२१ ।

७६१. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-१३१ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१११४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-श्रावण शुक्ला ५ मंगलवार, सं० १८२१ ।

७६२. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-१०८ । आकार- $११\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२४६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

७६३. प्रद्युम्न चरित्र-पं० रघू । देशी कागज । पत्र संख्या-११६ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ५''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४१० । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

७६४. प्रद्युम्न चरित्र-गहासेनाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-१३० । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३७२ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-पीप शुक्ला ६, शनिवार, सं० १६६० ।

७६५. प्रद्युम्न चरित्र श्री सिंह । देशी कागज । पत्र संख्या-११८ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०७२ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

७६६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१४३ । आकार- $६\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ ।

दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—११३१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—भाद्रपद शुक्ला १४, वृहस्पतिवार, सं० १६८० ।

७६७. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—४०३ । आकार— $5\frac{3}{4}" \times 6"$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२२६० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

७६८. प्रद्युम्न चरित्र—आचार्य सोमकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या—१३८ । आकार— $12" \times 5\frac{3}{4}"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११२४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—आषाढ़ वृदी ११, मंगलवार, सं० १६२८ ।

७६९. प्रभजंन चरित्र - X । देशी कागज । पत्र संख्या—१७ । आकार— $11" \times 5"$ । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२११४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—कार्तिक शुक्ला १, रविवार, सं० १७४२ ।

७७०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । आकार— $10\frac{1}{2}" \times 4\frac{3}{4}"$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२०१० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—अश्विन शुक्ला १५, शनिवार, सं० १७०० ।

नोट—यशोधर चरित्र पीठिका में से ही प्रभजंनचरित्र लेकर वर्णन किया गया है ।

७७१. प्रीतिकरमहोमुनि चरित्र—ब्रह्म नेमिदत्त । देशी कागज । पत्र संख्या—३० । आकार— $11" \times 5"$ । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५८१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

७७२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२६ । आकार— $11\frac{1}{2}" \times 4\frac{1}{2}"$ । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१११६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—पौष शुक्ला ८, सं० १६०६ ।

७७३. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—३२ । आकार— $11" \times 4\frac{1}{4}"$ । दशा—अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१३६६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा ८, सं० १७४६ ।

७७४. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । आकार— $10\frac{1}{2}" \times 4\frac{3}{4}"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२६४३ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—वैशाख शुक्ला ५, सं० १६८२ ।

७७५. प्रीतिकरमुनि चरित्र भाषा—साह जोधराज गोदीका । देशी कागज । पत्र संख्या—५३ । आकार— $11\frac{1}{2}" \times 3"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६१५ । रचनाकाल—फाल्गुन शुक्ला ५, शुक्रवार, सं० १७२१ । लिपिकाल—चैत्र कृष्णा १, सं० १८६४ ।

७७६. बाहुबली चरित्र—धनपाल । देशी कागज । पत्र संख्या—२४६ । आकार— $12" \times 5\frac{1}{4}"$ । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१०५५ । रचनाकाल—वैशाख शुक्ला १३, सं० १४५० । लिपिकाल—X ।

७७७. बाहुवली पायद्वी—अभयवली । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $10\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४५६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-फाल्गुन कृष्ण १, सं० १६६८ ।

७७८. भद्रबाहु चरित्र—आचार्य रत्ननन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । (२१वां नहीं है) । आकार- $12\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ । दशा-प्रति जीर्ण क्षीण । अपूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७०४ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-माघ शुक्ल १, सोमवार, सं० १६६६ ।

७७९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२३ । आकार- $11\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६२६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-भाद्रपद कृष्ण १, सप्तम १८४३ ।

७८०. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-२८ । आकार- $11\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०८८ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

७८१. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-५१ । आकार- $12\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ । दशा-बहुत अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी टीकाकी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५६८ । रचनाकाल-श्रावण शुक्ल १५, सं० १८६३ । लिपिकाल- $\times$ ।

७८२. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । आकार- $11\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३५० । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-श्रीष शुक्ल १२, बृहस्पतिवार, सं० १६४५ ।

७८३. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । आकार- $11\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४५१ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-सं० १६५० ।

७८४. भविष्यदत्त चरित्र—पं० श्रीधर । देशी कागज । पत्र संख्या-७३ । आकार- $10\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१११८ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ल १२, बृहस्पतिवार, सं० १६१८ ।

आदि भाग :—

श्रीमतं त्रिजगन्नाथं नमामि वृषभं जिनं ।

इन्द्रादिभिः सदा यस्य पादपद्मद्वयी नना ॥ १ ॥

अन्त भाग :—

श्री नन्दप्रभस्य जगतामविपरस्य तीर्थे गतिर्यमदभुतकथा कविकण्ठमुपा ।

विन्ताशिता च मुनिनाथगर्गः प्रमेण ज्ञाता मयाप्यपरमृन् मुत्ताम्बुजेभ्यः ॥५१॥

मन्त्राणां ये चरितमेतद् दूनबुद्ध्या श्रव्यति संमदि पठति च पाठयति ।

यदा पन्नं निजकरेण च नेरयति व्युदश्याहमावगतिनाञ्च विनति नतः ॥५२॥

ते भवति यत्नमगमुद्राः श्रीधरामन्त्रमुपा जन्मुत्तमाः ।

प्राण विनिन नमस्त मुनार्थाः मुद्रादीनियवनी कृतयोकाः ॥५३॥

इति श्री भविष्यदत्त चरिते श्रीवरविरचिते साधु लक्ष्मण नामांकिते
श्री वर्धन—नंदि वर्धन मोक्षगमन वर्णनं
नाम पंचदशः सर्ग समाप्तः ॥

७८५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-६३ । आकार- $11\frac{3}{4}'' \times 8\frac{3}{4}''$ ।
दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१८४३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक
कृष्णा १० बृहस्पतिवार सं० १६७२ ।

७८६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-६८ । आकार- $5\frac{3}{4}'' \times ६''$ ।
दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१८७६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १९१४ ।

७८७. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-५४ । आकार- $11\frac{3}{4}'' \times ४\frac{1}{2}''$ ।
दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५६१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला
१३, रविवार, सं० १५३२ ।

विशेष :—ग्रन्थ के दीमक लग जाने से क्षतिग्रस्तता को प्राप्त हो रहा है । श्लोक
संख्या १५०४ है ।

७८८. भविष्यदत्त चरित्र-धनपाल । देशी कागज । पत्र संख्या-१०४ । आकार-
 $10\frac{1}{2}'' \times ४\frac{3}{4}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-
१०१४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-वैशाख शुक्ला ५ बृहस्पतिवार । सं० १८६२ ।

७८९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१४५ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times ४\frac{3}{4}''$ ।
दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११३२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला
१३, बृहस्पतिवार सं० १५९७ ।

७९०. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-११६ आकार- $11'' \times ४\frac{1}{2}''$ ।
दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११७० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला
५, रविवार सं० १५९५ ।

७९१. भविष्यदत्त चौपई—ब्रह्मरायमल्ल । देशी कागज । पत्र संख्या ५६ ।
आकार- $11\frac{1}{2}'' \times ५\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी पद्य । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-
१५६१ । रचनाकाल-कार्तिक शुक्ला १४, सं० १६३३ । लिपिकाल-श्रावण कृष्णा १४,
सं० १८८४ ।

७९२. मलय सुन्दरी चरित्र—अखयराम लुहाड़िया । देशी कागज । पत्र संख्या-
१२० । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ
संख्या-१३८५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

विशेष—ग्रन्थ के दीमक लगजाने पर भी अक्षरों की क्षति नहीं हुई है ।

७९३. मल्लिनाथ चरित्र-भ० सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-३२ । आकार-
 $10'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८६२ । रचना-
काल-× । लिपिकाल-फाल्गुन कृष्णा ११, सं० १८२३ ।

७९४. महिपाल चरित्र भाषा—पं० नथमल । देशी कागज । पत्र संख्या-६७ । आकार-

१२ $\frac{3}{4}$ " × ५ $\frac{3}{4}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२७० ।
रचनाकाल-आषाढ कृष्ण ४, बुधवार, सं० १९१८ । लिपिकाल-श्रावण बुदी २, सं० १९३६ ।

विशेष—भाषाकार ने अपनी पूर्ण प्रशस्ति लिखि है ।

७६५. यशोधर चरित्र—मुमुक्षु विद्यानन्द । देशी कागज । पत्र संख्या-६५ । आकार-
१० $\frac{3}{4}$ " × ४ $\frac{3}{4}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०३५ ।
रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

७६६. यशोधर चरित्र—सोमकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-८१ । आकार-१०" ×
४ $\frac{3}{4}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०४५ । रचना-
काल-पौष बुदी ५, रविवार, सं० १५४२ । लिपिकाल-× ।

आदिभाग—

प्रणम्य शंकरं देवं सर्वज्ञं जितमन्मथं ।
रागादिसर्वदोषधनं मोहनिद्रा विवर्जितं ॥ १ ॥
अर्हतः परमाभवत्या सिद्धान्सूरीश्वरस्तथा ।
पाठकान् साधवान्चेति नत्वा परमया मुदा ॥ २ ॥
यशोधरनरेन्द्रस्य जनन्या सहितस्य हि ।
पवित्रं चरितं वक्ष्ये समासेन यथागमं ॥ ३ ॥
जिनेन्द्रवन्दनोद्भूतां नमामि शारदां परां ।
श्री गुरुभ्यः प्रमोदेन श्रेयसे प्रणमाम्यहम् ॥ ४ ॥
यत्प्रोक्तं हरिषेणाद्यैः पुष्पदंतपुरस्सरैः ।
श्रीमद्वासवसेनाद्यैः शास्त्रस्यार्णवपारगैः ।

अन्तभाग—

नंदीतटाख्यगच्छे वंशे श्री रामसेनदेवस्य ।
जातो गुणार्णवैकश्च श्रीमांश्च श्रीभीमसेनेति ॥ ६० ॥
निमित्तं तस्य शिष्येण श्रीयशोधर सन्नकं ।
श्रीसोमकीर्तिमुनिना विशोध्याज्जीयतां बुधाः ॥ ६१ ॥
वर्षे पट्त्रिंशसंख्ये तिथिपरगणनायुक्त संवत्सरे (१५३६) वै
पंचम्यां पौषकृष्णे दिनकरदिवसे चोत्तरास्थे हि चन्द्रे ।
गोढिल्यां मेदपाटे जिनवरभवने शीतलेन्द्रस्य रम्ये
सोमादिकीर्तिनेदं नृपवरचरितं निमित्तं शुद्धभक्त्या ॥ ६२ ॥

इति श्री यशोधरचरिते श्री सोमकीर्त्याचार्य—विरचिते अभयरुचि-भट्टारक-स्वर्गगमनो
नाम अष्टमः सर्गः ॥ ८ ॥

ग्रन्थाग्रन्थ १०१८ । इति श्रीयशोधर चरितं समाप्तं ।

७६७. यशोधर चरित्र—सोमदेव सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-२२८ । आकार- $१०\frac{३}{४}" \times ४\frac{३}{४}"$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३६३ । रचनाकाल-चैत्र शुक्ला १३, सं० ८८१ । लिपिकाल-सं० १६५१ ।

७६८. यशोधर चरित्र—पुष्पदन्त । देशी कागज । पत्र संख्या-५७ । आकार- $१०\frac{३}{४}" \times ५\frac{१}{४}"$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या १०५१ । रचना-काल- $\times$ । लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला १४, सं० १६६४ ।

७६९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-६८ । आकार- $९" \times ४"$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०६३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-माघ शुक्ला ५, सं० १५२१ ।

८००. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-५९ । आकार- $१०\frac{३}{४}" \times ४\frac{१}{४}"$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११२९ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-पौष कृष्णा ३, सं० १५७४ ।

८०१. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-७४ । आकार- $९\frac{३}{४}" \times ४\frac{१}{४}"$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११३० । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला ५, शुक्रवार, सं० १४८७ ।

८०२. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-५९ । आकार- $१०\frac{३}{४}" \times ४\frac{१}{४}"$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११६९ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला १, वृहस्पतिवार, सं० १६२१ ।

८०३. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-८० । आकार- $१०\frac{३}{४}" \times ४\frac{१}{४}"$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२१८ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-आषाढ कृष्णा ११, सं० १५८९ ।

८०४. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र संख्या-७४ । आकार- $१०\frac{३}{४}" \times ४\frac{३}{४}"$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१४०१ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

८०५. प्रति संख्या ८ । देशी कागज । पत्र संख्या-७१ । आकार- $११" \times ५\frac{१}{४}"$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१४१२ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला ५, शनिवार, सं० १६५१ ।

८०६. यशोधर चरित्र—पद्मनाभ कायस्थ । देशी कागज । पत्र संख्या-८१ । आकार- $१०\frac{१}{४}" \times ४\frac{३}{४}"$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०७५ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला ९, सं० १६७४ ।

अन्तभाग—

जातः श्री वीरसिंहः सकलरिपुकुलव्रातनिर्घातिपातो,
वंशे श्री तोमराणां निजविमल यशोव्याप्तदिवचक्रवालः ।
दानैर्मनैर्विवेकैर्न भवति समता येन साकं नृपाणां,

केषामेषा कविनां प्रभवति धिषणा वर्णने तद्गुणानां ॥ १ ॥

ईश्वरचूडारत्नं विनिहतकरघातवृत्तसंहातः ।

चन्द्र इव दुग्धसिधोस्तस्मादुद्धरण भूपतिर्जनितः ॥ २ ॥

यस्य हि नृपते यशसा सहसा शुभ्रीकृतं त्रिभुवनेऽस्मिन् ।

कलाशति गिरिनिकरः क्षीरति नीरं शुवीयते तिमिरं ॥ ३ ॥

तत्पुत्रो वीरमेन्द्रः सकलवसुमतीपाल चूडामणिर्यः

प्रख्यातः सर्वलोके सकलवृषकलानन्दकारी विशेषात् ।

तस्मिन् भूपालरत्ने निखिलनिधिगृहे गोपदुर्गे प्रसिद्धि

भुजाने प्राज्यराज्यं विगततिपुत्रयं सुप्रजः सेव्यमानं ॥ ४ ॥

वंशेऽमूर्जजगवाले विमलगुणनिधिभूतलः साधुरत्नं ।

साधुश्री जैनपालो भवदुदित यास्तत्पुत्रो दानशीलः ।

जैनेन्द्राराधनेषु प्रमुदितहृदयः सेवकः सद्गुणां

लोणाग्या सत्यशीलाऽजनिविमलमतिर्जैनपालस्य भार्या ॥ ५ ॥

जानाः पट् तनयास्तयोः मुकुतिनोः श्री हंसराजोऽभवत् ।

तेषामाद्यतमस्ततस्तदनुजः शैराजनामाऽजनि ।

शैराजो भवराजकः समजनि प्रख्यातकीर्तिमहा—

साधुश्री कुशराजकस्तदनुजः च श्री क्षेमराजो लघुः ॥ ६ ॥

जातः श्रीकुशराज एव सकलदमापाल चूडामणोः ।

श्रीमत्तोमरवीरस्य विदितो विश्वामपात्रं महान् ।

मंथी मंत्र विनधण, क्षणमयः क्षीणारिपक्षः क्षणात्

क्षीणीमीक्षणरक्षणाक्षमतिः जैनेन्द्रपूजारतः ॥ ७ ॥

स्वर्गंरूढिमृदिकोतिविमलवर्णेत्यानयः कारितो ।

स्वोक्तानां हृदयंगमो बहुधर्मचन्द्रप्रभस्य प्रभोः ।

मेनेनस्वमकान्तमेवमतिरं भव्यं च काव्यं तथा

नाथु श्रीकुशराजकेन मुधिया कीर्तितचिरस्वापकं ॥ ८ ॥

विस्तारयैव भार्या गुणचरित्रपुत्रंस्वामु रक्तोनिधाना ।

पत्नी पत्न्या चरित्रा प्रवर्तयमयुता शीलशीलेन युक्ता ।

दात्री देवानांभ्या गृहकृतिगुणसा तत्पुत्रः कामरूपो ।

दाता कल्याणमिहो जिनगुणरत्नाग्राधने तत्पुत्रोऽभूत् ॥ ९ ॥

नक्षत्राः द्वितीयाभ्युत्थिता च पतिप्रिया ।

कीर्तिना च मुनीन्दिपमभद्रमुत्पादनी स्वामी ॥ १० ॥

चावत्कूर्मस्य पृष्ठे भुजगपतिरयं तत्र तिष्ठेद्गरिष्ठे
यावत्तत्रापि चंचद्विकटफणिफणामण्डले क्षोणिरेषा ।
यावत्क्षोणी समस्त त्रिदश पतिवृत शचारुचामीकराद्रि ।
स्तावद्भव्यं विशुद्धं जगति विजयतां काव्यमेतच्चिराय ॥ १२ ॥
कायस्थ पक्षनाभेन बुधपादाम्बजरेणुनां ।
कृतिरेषा विजयतां स्येयादाचन्द्रतारकं ॥ १३ ॥

इति समाप्तम् ॥

८०७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-७७ । आकार-११" × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-
अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११७४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक बुदी ५, बृहस्पतिवार,
सं० १६२३ ।

८०८. प्रति ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-६४ । आकार-१०" × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-
अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११७५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १८०६ ।

८०९. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-७६ । आकार-१० $\frac{1}{2}$ " × ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा-
जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३८६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

८१०. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-६४ । आकार-१०" × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-
जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४२८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-वैशाख शुक्ला १०, बृहस्पति-
वार, सं० १६८६ ।

८११. यशोधरचरित्र—मट्टारक कीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-४६ ।
आकार-१० $\frac{1}{2}$ " × ४ $\frac{3}{4}$ " । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ
संख्या-११३५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-माघ शुक्ला ७, सं० १७४० ।

८१२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३४ । आकार-११" × ५" ।
दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१८६३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा १३,
बृहस्पतिवार, सं० १६४४ ।

नोट—लिपिकार की प्रशस्ति दी हुई है ।

८१३. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-४६ । आकार-११ $\frac{1}{2}$ " × ५" । दशा-
जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६८७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

८१४. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-४४ । आकार-१० $\frac{3}{4}$ " × ४ $\frac{3}{4}$ " ।
दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६६३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला ३, सं०
१५४७ ।

८१५. यशोधर चरित्र—पूर्णदेव । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार-१२" ×
५ $\frac{1}{2}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३१७ । रचनाकाल-× ।
लिपिकाल-सं० १७६० ।

८१६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । आकार-११" × ४" । दशा-जीर्ण क्षीण पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६२१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला १, बुधवार, सं० १६०८ ।

८१७. यशोधरचरित्र—वासवसेन । देशी कागज । पत्र संख्या-५८ । आकार-११" × ५" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५२२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला १३, सं० १६१६ ।

विशेष—लिपिकार की प्रशस्ति का अन्तिम पत्र नहीं है ।

८१८. यशोधरचरित्र (पोठिका बंध)—× । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । आकार-११" × ४^३/_४" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५६२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

८१९. यशोधर चरित्र टिप्पण—प्रभाचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-१८ । आकार-११" × ५" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३५५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला ३, शनिवार, सं० १६३५ ।

विशेष—हुमायु के राज्यकाल में लिपि की गई है ।

८२०. रत्न चूड़रास—यशःकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-१०^१/_४" × ४^१/_४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४७३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-मंगसिर कृष्णा २, सं० १६४० ।

८२१. वर्द्धमान काव्य—पं० नरसेन । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । आकार-११" × ४^१/_४" । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३६७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

नोट—पत्र परस्पर में चिपके हुए होने से अक्षर अस्पष्ट हो गये हैं ।

८२२. वर्द्धमान चरित्र—कवि असग । देशी कागज । पत्र संख्या-८३ । आकार-११" × ४^३/_४" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२८६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

८२३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-६० । आकार-१४^१/_२" × ६^१/_४" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६३८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

८२४. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-७६ । आकार-११" × ४^३/_४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५०३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला ५, सं० १६६० ।

८२५. वर्द्धमान चरित्र-पुष्पदन्त । देशी कागज । पत्र संख्या-६७ । आकार-११^१/_४" × ४^३/_४" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०६४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

८२६. वरांग चरित्र—पं० तेजपाल । देशी कागज । पत्र संख्या-५५ । आकार—

११ $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२१३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला ५, शुक्रवार, सं० १६२१ ।

८२७. वरांग चरित्र - भट्टारक वर्द्धमान । देशी कागज । पत्र संख्या-३६ । आकार-१२ $\frac{१}{४}$ " × ५" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७८३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

८२८. विक्रमसेन चौपई—मानसागर । देशी कागज । पत्र संख्या-५३ । आकार-८ $\frac{३}{४}$ " × ५ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४५७ । रचनाकाल-सं० १७२४ । लिपिकाल-× ।

८२९. शान्तिनाथ चरित्र—भट्टारक सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-१०५ । आकार-१२ $\frac{३}{४}$ " × ६" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०८३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला १४, मंगलवार, सं० १८३३ ।

८३०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१७४ । आकार-१२ $\frac{३}{४}$ " × ६" । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३८२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा १३, रविवार, सं० १८३५ ।

८३१. शालिभद्र महामुनि चरित्र—जिनसिंह सूरि (जिनराज) । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । आकार-१०" × ४" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२७३८ । रचनाकाल-अश्विन-कृष्णा ६, सं० १६७८ । लिपिकाल-फाल्गुन कृष्णा १, सं० १६८९ ।

८३२. सन्मतिजिन चरित्र—रघू । देशी कागज । पत्र संख्या-१४५ । आकार-११ $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०५४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-माघ शुक्ला ९, सोमवार, सं० १६०६ ।

८३३. सम्भवनाथचरित्र—पं० तेजपाल । देशी कागज । पत्र संख्या-७९ । आकार-११" × ५" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३५३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला ४, सं० १६४८ ।

८३४. सुकुमाल महामुनि चौपई—शान्ति हर्ष । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । आकार-९ $\frac{३}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४२१ । रचनाकाल-आषाढ शुक्ला ८, सं० १७४१ । लिपिकाल-× ।

८३५. सुकुमाल स्वामी चरित्र—भट्टारक सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-३४ । आकार-१०" × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८३८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-आषाढ कृष्णा ३, सोमवार, सं० १८२४ ।

८३६. प्रति २ । देशी कागज । पत्र संख्या-४१ । आकार-१० $\frac{३}{४}$ " × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३७३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-आषाढ कृष्णा १, सं० १६८१ ।

८३७. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-३६ । आकार- $10\frac{1}{8}'' \times 6\frac{1}{8}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३७६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-आषाढ़ शुक्ला ७, शनिवार, सं० १८२४ ।

नोट—श्लोक संख्या ११०० है ।

८३८. सुदर्शनचरित्र—भ० सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-४ से २३ । आकार- $11'' \times 5\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२८५६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-द्वितीय श्रावण कृष्णा ५, सं० १५६२ ।

८३९. सुदर्शन चरित्र-मुमुक्षु श्री विद्यानन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या-४२ । आकार- $11'' \times 5\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८६६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा, १४, शुक्रवार, सं० १८२५ ।

८४०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-५७ । आकार- $10'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०८६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-वैशाख शुक्ला ५, सं० १६८२ ।

८४१. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-७६ । आकार- $8\frac{3}{4}'' \times 4''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३६० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-चैत्र कृष्णा ८, शुक्रवार, सं० १७०२ ।

८४२. सुदर्शनचरित्र—ब्रह्म नेमिदत्त । देशी कागज । पत्र संख्या-७१ । आकार- $11'' \times 4\frac{3}{4}''$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२४७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-माघ कृष्णा १२, रविवार, सं० १६६१ ।

८४३. सुदर्शनचरित्र—मुनि नयनंदि । देशी कागज । पत्र संख्या-८६ । आकार- $10\frac{1}{8}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०५२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला २, बुधवार, सं० १५७० ।

८४४. सुरपति कुमार चतुष्पदी—पं० मानसागर गरिण । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५६० । रचनाकाल-सं० १७२६ । लिपिकाल-सं० १७२६ ।

८४५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार- $10'' \times 5\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११०२ । रचनाकाल-सं० १७२६ । लिपिकाल-माघ शुक्ला १५, सं० १८६६ ।

८४६ श्रीपाल चरित्र—भट्टारक सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार- $12'' \times 5\frac{3}{4}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५२० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-माघ कृष्णा २, सं० १८२७ ।

८४७. श्रीपालचरित्र—प० नरसेन । देशी कागज । पत्र संख्या-४१ । आकार- $10\frac{1}{8}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३४६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

८४८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-४७ । आकार- $10\frac{3}{4}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२५६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

८४९. श्रीपालचरित्र-पं० रघू । देशी कागज । पत्र संख्या-१११ । आकार- $12'' \times 4''$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११६८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-फाल्गुन बुदी १०, सं० १५६५ ।

नोट—पोरवाल वंशीय श्री हरसिंह के पुत्र पं० रघु खालियर निवासी १५वीं शताब्दी के विद्वान हैं । बादशाह हमायु के राज्य में लिपि की गई है ।

८५०. श्रीपाल चरित्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या-४६ । आकार- $11\frac{1}{2}'' \times ५\frac{1}{2}''$ । दशा-सुन्दर । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५५६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला ११, वृहस्पतिवार, सं० १६३६ ।

विशेष—भ० सकलकीर्ति के संस्कृत चरित्र के आधार पर हिन्दी लिखी गई है । हिन्दी-कार ने अपना नाम नहीं दिया है ।

८५१. श्रीपालरास—यशः विजयगणि । देशी कागज । पत्र संख्या-२६ । आकार- $10\frac{3}{4}'' \times ४\frac{3}{4}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१००४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-भादवा बुदी ११, सं० १६३२ ।

८५२. प्रति २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२६ । आकार- $10\frac{3}{4}'' \times ४\frac{3}{4}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०६२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-बैशाख कृष्णा ११, सं० १६३२ ।

८५३. श्रेणिकचरित्र—शुभचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-६४ । आकार- $10\frac{3}{4}'' \times ५\frac{1}{4}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७६४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-बैशाख शुक्ला १५, बुधवार, सं० १८५४ ।

आदिभाग—

श्री वर्द्धमानमानंदं नोमि नानागुणाकरं ।
विशुद्ध ध्यान दीप्तान्चिहूर्तकर्म समुच्चयं ॥ १ ॥

अन्तभाग—

जयतु जितविपक्षो मूलसंघः सुपक्षो,
हरतु तिमिरभारं भारती गच्छवारः ।
नयतु सुगतमार्गं शासनं शुद्धवर्गं
जयतु शुभचन्द्रः कुन्दकुन्दो मुनीन्द्रः ॥ १७ ॥
तदन्वये श्रीमुनिपद्मनन्दी विभाति भव्याकर-पद्मनन्दि ।
शोभाविशाली वरपुष्पदन्तः सुकांतिसंभिन्न सुपुष्पदन्तः ॥ १८ ॥
पुराण काव्यार्थं विदांवरत्वं विकाशयन्मुक्तिविदांवरत्वं ।
विभातु वीरः सकलाद्यकीर्तिः कृतापकेनौ सकलाद्यकीर्तिः ॥ १९ ॥

भूवनकीर्तिः यतिः जयताद्यमी भूवनपूरितकीर्तिचयः सदा ।

भूवनबिम्बजिनागमकारणो भव नवाम्बुदवातभरः परः ॥ २० ॥

तत्पट्टोदयपर्वते रविरभूद्य व्याम्बुजं भासयन् ।

सन्नेत्रास्त्रहरं तमो विघटयन्नानाकरैः भासुरः ।

भव्यानां सुगतश्च विग्रहमतः श्रीज्ञानभूषः सदा

चित्रं चंद्रकसंगतः शुभकरः श्रीवर्द्धमानोदयः ॥ २१ ॥

जगति विजयकीर्तिः पुण्यमूर्तिः सुकीर्तिः जयतु च यतिराजो भूमिपैः स्पृष्टपादः ।

नय नलिन हिमांशुर्ज्ञानभूषस्य पट्टे विविध-परविवादिक्षमाघरे वज्रपातः ॥ २२ ॥

तच्छिष्येण शुभेन्दुना शुभमतः श्रीज्ञानभावेन वै पूतं पुण्यपुराण मानुषभवंसंसार विध्वंसकः ।

नो कीर्त्या व्यरचि प्रमोहवशातो जैने मते केवलं नाहंकारवशात्कवित्तमदतः श्रीपद्मनाभेहितं ॥ २३ ॥

इदं चरित्रं पठतः शिवं वै श्रीतुष्य पद्मे श्वरवत्पवित्रं ।

भविष्यु संसारसुखं नृदेवं संभुज्य सम्यक्त्व फलप्रदीपं ॥ २४ ॥

चन्द्रार्क हेमगिरीसागर भूविमानं गंगानदीगमनसिद्धशिलाश्च लोके ।

तिष्ठन्ति यावदभितो वरमर्त्यशेवास्तिष्ठन्तु कीविदमनोम्बुजमध्यभूताः ॥ २५ ॥

इति श्रीश्रेणिकभवानुवद्ध-भविष्यत्पद्मनाभपुराणे पंचकल्याणवर्णनं नाम पंचदशः पर्वः ॥ १५ ॥

८५४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१२४ । आकार-११" × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०८१ रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

८५५. श्रेणिकचरित्र-× । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । आकार-१२" × ६ $\frac{३}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५०४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

नोट-केवल चार सर्ग ही हैं ।

८५६. श्रेणिक महाराज चरित्र-अभयकुमार । देशी कागज । पत्र संख्या-१७ । आकार-१० $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४६२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-श्रावण शुक्ला १५, शुक्रवार, सं० १६६५ ।

८५७. हनुमच्चरित्र सहाजित । देशी कागज । पत्र संख्या-७८ । आकार-११" × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७६३ । रचना-काल-× । लिपिकाल-पौष शुक्ला ८, रविवार, सं० १६७५ ।

८५८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-७४ । आकार-११" × ५" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०८७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-आश्विन कृष्णा ७, बुधवार, सं० १६४४ ।

८५९. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-७४ । आकार-१० $\frac{१}{४}$ " × ५" ।

दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—११०७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला ११, बृहस्पतिवार, सं० १६४६ ।

८६०. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—८७ । आकार— $11\frac{1}{4}'' \times 5''$ । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१२५६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—कार्तिक शुक्ला ५, सं० १५८३ ।

८६१. प्रति संख्या ५ । देशी—कागज । पत्र संख्या—८१ । आकार— $11'' \times 4\frac{3}{4}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१२५२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—सं० १६६१ ।

८६२. होलरेणुका चरित्र—पं० जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या—४६ । आकार— $10\frac{1}{4}'' \times 5''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५७३ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

८६३. हंसराज वैद्यराज चौपई—जिनोदय सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—२६ । आकार— $10\frac{1}{4}'' \times 4\frac{1}{4}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२८०७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा ६, शुक्रवार, सं० १७६६ ।

८६४. त्रिषष्टि पर्वाणिस्य विरावली चरित्र—हेमचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—१५४ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१०३४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

नोट—ग्रन्थाग्रं० सं० ३५०० है । गुणसुन्दर के पढ़ने के लिए लिपि की गई, ग्रन्थ १३ सगों में विभक्त है ।

विषय— चित्र न्थ

८६५. अढाई द्वीप चित्र—X । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । आकार— $३३\frac{1}{2}" \times ३३\frac{1}{2}"$ ।
दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२२२० । रचनाकाल—X ।

विशेष —अढाई द्वीप का रंगीन चित्र कपड़े पर बना हुआ है ।

८६६. अढाई द्वीप चित्र—X । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । आकार— $४२\frac{1}{2}" \times ४२\frac{1}{2}"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—अढाई द्वीप चित्र । ग्रन्थ संख्या—२२१६ । रचनाकाल—चैत्र शुक्ला ५, वृहस्पतिवार, सं० १८०१ को श्री गुणचन्द्र मुनि ने पद्मपुरा में लिखा ।

विशेष—वस्त्र में छिद्र हो जाने पर भी अक्षरों को कोई क्षति नहीं हुई है । हाथ से किया हुआ रंगीन चित्र बहुत सुन्दर है ।

८६७. अढाई द्वीप चित्र—X । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । आकार— $३७" \times ३७"$ ।
दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२२०८ । रचनाकाल—X ।

८६८. अरहनाथ जी चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $३\frac{1}{2}" \times २\frac{1}{2}"$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२२०१ । रचनाकाल—X ।

विशेष—चित्र श्वेताम्बराम्नायानुसार बना हुआ है ।

८६९. कुन्धनाथ जी का चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $३\frac{3}{4}" \times ३"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । विषय—कुन्धनाथ तीर्थंकर चित्र । ग्रन्थ संख्या—२१९७ । रचनाकाल—X ।

८७०. गरुड चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $८" \times ६"$ ।
दशा—सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१६७ । रचनाकाल—X ।

विशेष—गरुड का अतीव सुन्दर रंगीन चित्र कागज पर बना हुआ है, जिसमें एक स्त्री गरुड जी के समक्ष खड़ी हुई प्रार्थना कर रही है ।

८७१. गरुड चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $८\frac{3}{4}" \times ४\frac{3}{4}"$ ।
दशा—सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१८९ । रचनाकाल—X ।

८७२. गरुड व सरस्वती चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $८" \times ६"$ । दशा—सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१६८ । रचनाकाल—X ।

विशेष—गरुड के चित्र के समक्ष सरस्वती हंस के वाहन सहित है । यह चित्र कागज पर चित्राङ्कित है । सिंहासन के नीचे जुहा भी चित्राङ्कित किया गया है ।

८७३. गायक का चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $६\frac{3}{4}" \times ३\frac{3}{4}"$ ।
दशा—सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१८५ । रचनाकाल—X ।

विशेष—बहुत ही पतले कागज पर हाथ का बना हुआ रंगीन चित्र है।

८७४. चतुर्विंशति तीर्थंकर चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $५\frac{1}{2}" \times ५\frac{1}{8}"$ । दशा—सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१७६ । रचनाकाल—X ।

विशेष—यह चित्र श्वेताम्बर आम्नायानुसार बना हुआ है।

८७५. चतुर्विंशति तीर्थंकर चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $२" \times १\frac{3}{8}"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२२०२ । रचनाकाल—X ।

८७६. चन्द्रप्रभ चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $६\frac{1}{2}" \times ७\frac{1}{8}"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२२०३ । रचनाकाल—X ।

विशेष—चित्र श्वेताम्बर आम्नायानुसार है।

८७७. चन्द्रप्रभ चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $४\frac{1}{2}" \times ४"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१६४ । रचनाकाल—X ।

८७८. चन्द्रप्रभ चित्र । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $६" \times ४"$ । दशा—सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१८२ । रचनाकाल—X ।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नायानुसार हाथ का बना हुआ रंगीन चित्र है।

८७९. जम्बूद्वीप चित्र—X । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । आकार— $२५\frac{1}{2}" \times २५\frac{1}{2}"$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२११३ । रचनाकाल—X ।

विशेष—जम्बूद्वीप का कपड़े पर रंगीन चित्र है, चित्र में सुनहरी काम अतीव सुन्दर मनोहारी लगता है।

८८०. जम्बूद्वीप चित्र—X । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । आकार— $३१\frac{1}{2}" \times २७"$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२२०५ । रचनाकाल—X ।

८८१. तीन लोक का चित्र—X । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । आकार— $३१" \times १६\frac{1}{2}"$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२२१२ । रचनाकाल—X ।

८८२. तीन लोक का चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $१०\frac{1}{2}" \times ५"$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—प्राकृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२८१४ । रचनाकाल—X ।

८८३. दूगदेवी चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $१०\frac{1}{2}" \times ४\frac{3}{8}"$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१७७ । रचनाकाल—X ।

विशेष—सिंह पर बैठी हुई दुगदेवी के आगे वीर भेरी बजा रहा है तथा पिछे की तरफ हाथ में छत्र लिये हुए दूसरा वीर खड़ा है। पतले कागज पर हाथ का बना हुआ अतीव सुन्दर चित्र है।

८८४. दूगदेवी चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $६\frac{1}{2}" \times ४"$ । दशा—सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१८४ । रचनाकाल—X ।

विशेष—सिंह पर बैठी हुई देवी के समक्ष, मोछा देवी को रोकते हुए रंगीन चित्र द्वारा बताया गया है।

८८५. दुर्गा का चित्र—X। देशी कागज। पत्र संख्या—१० $\frac{3}{4}$ "X५ $\frac{3}{4}$ "। दशा—जार्ज कीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२१९२। रचनाकाल—X।

८८६. द्वादश भूजा हनुमत् चित्र—X। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—१३ $\frac{1}{2}$ "X१३ $\frac{1}{2}$ "। दशा—प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२२३५। रचनाकाल—X।

८८७. नरकों के पायड़ों का चित्र—X। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—२६ $\frac{1}{2}$ "X२३ $\frac{1}{2}$ "। दशा—सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२२१५। रचनाकाल—X।

विशेष—कपड़े पर सातों नरकों के पायड़ों का सुन्दर चित्रण किया हुआ है।

८८८. नैमिनाथ चित्र—X। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—५ $\frac{1}{2}$ "X५ $\frac{1}{2}$ "। दशा—सुन्दर। ग्रन्थ संख्या—२१७५। रचनाकाल—X।

८८९. नैमिनाथ चित्र—X। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—६ $\frac{3}{4}$ "X४"। दशा—सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२१८१। रचनाकाल—X।

विशेष—ज्वेताम्बर आम्नायानुसार कागज पर हाथ का बना हुआ नैमिनाथ का सुन्दर चित्र है।

८९०. नैमिनाथ चित्र—X। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—३ $\frac{1}{2}$ "X२ $\frac{1}{2}$ "। दशा—सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२१९६। रचनाकाल—X।

विशेष—ज्वेताम्बर आम्नायानुसार बना हुआ चित्र है।

८९१. पद्मप्रभू चित्र—X। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—५ $\frac{3}{4}$ "X४ $\frac{1}{4}$ "। दशा—सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२१८०। रचनाकाल—X।

विशेष—ज्वेताम्बर मतानुसार बना हुआ कागज पर रंगीन चित्र है।

८९२. पद्मावती देवी व पार्वनाथ का चित्र—X। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—१० $\frac{3}{4}$ "X५ $\frac{3}{4}$ "। दशा—सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२१७३। रचनाकाल—X।

विशेष—कागज पर हाथ का बना हुआ सुन्दर रंगीन चित्र है।

८९३. पार्वनाथ चित्र—X। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—१२"X५ $\frac{3}{4}$ "। दशा—सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२१९०। रचनाकाल—X।

विशेष—चित्र में पार्वनाथ स्वामी के दाहिनी ओर श्री ऋषभनाथ और सम्भवनाथ का चित्र है। बाईं ओर श्री नैमिनाथ और महावीर स्वामी का चित्र है।

८९४. पार्वनाथ चित्र—X। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—४ $\frac{1}{4}$ "X२ $\frac{3}{4}$ "। दशा—प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२१९६। रचनाकाल—X।

विशेष—ज्वेताम्बर मतानुसार चित्र है।

८६५. पार्श्वनाथ का चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-६" X ४" । दशा-सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१८३ । रचनाकाल-X ।

विशेष—कागज पर हाथ का बना हुआ मनोहारी चित्र है ।

८६६. पार्श्वनाथ का चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-५ $\frac{3}{4}$ " X ३ $\frac{1}{4}$ " । दशा-सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१८६ । रचनाकाल-X ।

८६७. पार्श्वनाथ व पद्मावती का चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-६ $\frac{1}{4}$ " X ४ $\frac{3}{4}$ " । दशा-सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१७४ । रचनाकाल-X ।

८६८. पार्श्वनाथ व पद्मावती देवी का चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-८ $\frac{1}{2}$ " X ५" । दशा-सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१७२ । रचनाकाल-X ।

८६९. पुष्पदन्त चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-४ $\frac{3}{4}$ " X ४" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१९५ । रचनाकाल-X ।

विशेष—श्वेताम्बर मतानुसार रंगीन चित्र है ।

८७०. पुष्पदन्त चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-५ $\frac{1}{2}$ " X ५" । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१७९ । रचनाकाल-X ।

८७१. भरत क्षेत्र विस्तार चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-११ $\frac{1}{2}$ " X ५" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२८२० । रचनाकाल-X ।

८७२. भैरव चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-८" X ६" । दशा-सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१७१ । रचनाकाल-X ।

विशेष—भैरव जी का चित्र, विशाल नरमुण्डी व खाण्डा हाथ में लिए हुये है ।

८७३. महावीरस्वामी चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-५" X ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१७८ । रचनाकाल-X ।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नायानुसार कागज पर रंगीन चित्र अतीव सुन्दर बना हुआ है ।

८७४. महावीरस्वामी चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-६ $\frac{3}{4}$ " X ५ $\frac{1}{4}$ " । दशा-सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१९१ । रचनाकाल-X ।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नाय के अनुसार चित्र है ।

८७५. बृहद् कलिफुण्ड चित्र—X । वस्त्र पर । पत्र संख्या-१ । आकार-२३ $\frac{3}{4}$ " X २३ $\frac{1}{4}$ " । दशा-सुन्दर । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२०९ । रचनाकाल-फाल्गुन शुक्ला ५, सं० १६०७ ।

विशेष—कपड़े पर बने हुए इस चित्र में ९ कोठे हैं ।

८७६. वासुपूज्य चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-३ $\frac{1}{4}$ " X २ $\frac{1}{4}$ " । दशा-सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२२०० । रचनाकाल-X ।

विशेष—चित्र श्वेताम्बर आम्नायानुसार है ।

६०७. शीतलनाथ चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $३\frac{1}{2}'' \times २\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१६८ । रचनाकाल-X ।

विशेष—चित्र श्वेताम्बर मतानुसार है ।

६०८. श्रीकृष्ण का चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $६'' \times ४''$ । दशा-प्राचीन । अपूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१६३ । रचनाकाल-X ।

विशेष—केवल खाका बना हुआ है ।

६०९. श्रीकृष्ण चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $६\frac{1}{2}'' \times ३\frac{3}{4}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२१८७ । रचनाकाल-X ।

विशेष—पतले कागज पर हाथ का बना हुआ रंगीन चित्र है, साथ ही नीचे श्रीकृष्ण की संस्कृत में स्तुति भी दी गई है ।

६१०. सरस्वती चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $४\frac{3}{4}'' \times ३\frac{3}{4}''$ । दशा-सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१८८ । रचनाकाल-X ।

विशेष—चित्र में हंस पर एक बैठी हुई देवी का चित्र है और समक्ष में एक स्त्री प्रार्थना करती हुई चित्रित है ।

६११. सामुद्रिक विचार चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $२१\frac{1}{2}'' \times ११\frac{3}{4}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । विषय-ज्योतिष । ग्रन्थ संख्या-२२२४ । रचनाकाल-ज्येष्ठ कृष्ण ३, सं० १८७० ।

विशेष—स्त्री और पुरुष के हाथ व पैर का चित्र अंकित है । १८७० ज्येष्ठ कृष्ण ३, इस चित्र पर लिखा हुआ है । "आचार्यश्री रामकीर्ति छात्र रामचन्द्रस्यमिदं पत्रम्," हाथ व पैर के चित्रों में चित्राङ्कित है ।

६१२. हनुमान चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $८'' \times ६''$ । दशा-सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१६६ । रचनाकाल-X ।

विशेष—हनुमान जी का रंगीन चित्र जिसके एक हाथ में गदा तथा दूसरे हाथ में नर मुण्ड है । चित्र हाथ का बनाया हुआ है और अतीव सुन्दर लगता है ।

६१३. हनुमान चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $८'' \times ६''$ । दशा-सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१६६ । रचनाकाल-X ।

विशेष—कागज के सुन्दर बने हुए चित्र में हनुमान जी को पहाड़ से जाते हुए चित्रित किया गया है ।

६१४. हनुमान चित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $८'' \times ६''$ । दशा-सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१७० । रचनाकाल-X ।

विशेष—कागज पर हाथ से बने हुए चित्र में हनुमानजी हाथ में गदा तथा कुत्ते की मुण्डि लिए हुए हैं ।

६१५. ज्ञानचौपड़—X । वस्त्र पर । पत्र संख्या-१ । आकार-३५" X २६ $\frac{1}{2}$ " ।
दशा-सुन्दर । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२२६ । रचनाकाल-X ।

६१६. ज्ञानचौपड़—X । वस्त्र पर । पत्र संख्या-१ । आकार-२२" X २१ $\frac{1}{8}$ " ।
दशा-सुन्दर । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२२८ । रचनाकाल-
सं० १८६२ ।

विषय—छन्द शास्त्रा एवं अलंकार

६१७. खूदीप भाषा—कुंवर भूवानीदास । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार—६ $\frac{1}{2}$ "×४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—छन्द शास्त्र । ग्रन्थ संख्या— २०५८ । रचनाकाल—भाद्रपद शुक्ला २, वृहस्पतिवार, सं० १७७२ । लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा ३, सं० १८१८ ।

६१८. छन्द रत्नावली—हरिराम । देशी कागज । पत्र संख्या—१४ । आकार—१० $\frac{1}{2}$ "×५" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—छन्द शास्त्र । ग्रन्थ संख्या—२५४० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—वैशाख शुक्ला ६, सं० १८३४ ।

६१९. छन्द शतक—हर्षकीर्ति सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—१७ । आकार—६ $\frac{1}{2}$ "×४" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश । लिपि—नागरी । विषय—छन्द शास्त्र । ग्रन्थ संख्या—१४६१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

६२०. छन्द शास्त्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार—८ $\frac{1}{2}$ "×४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—छन्द शास्त्र । ग्रन्थ संख्या—१४८५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

६२१. छन्दसार—नारायण दास । देशी कागज । पत्र संख्या—८ । आकार—१० $\frac{1}{2}$ "×५" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—छन्द शास्त्र । ग्रन्थ संख्या—१६५५ । रचनाकाल—भाद्रपद कृष्णा १४, वृहस्पतिवार, सं० १८२९ । लिपिकाल—X ।

६२२. छन्दोमञ्जरी—गंगादास । देशी कागज । पत्र संख्या—१४ । आकार—१० $\frac{1}{2}$ "×४" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—प्राकृत और संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—छन्द शास्त्र । ग्रन्थ संख्या—२५८१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—चैत्र कृष्णा ११, सं० १८४६ ।

६२३. छन्दोवंतस—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । आकार—१० $\frac{1}{2}$ "×४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—छन्द शास्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२५४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा १०, वृहस्पतिवार, सं० १७८४ ।

६२४. पार्श्वनाथजी की देशान्तरी छन्द—X । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार—६ $\frac{1}{2}$ "×४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—छन्द शास्त्र । ग्रन्थ संख्या—२१५३ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—सं० १८६८ ।

विशेष—कवि ने अपना नाम न लिख कर कविराज लिखा है । आगे कवि ने लिखा है कि मैंने कविराज कवि जैसे छन्दों की रचना की है ।

६२५. विगत छन्दशास्त्र—पुष्प सहाय (पुष्प सहाय) । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार—१० $\frac{1}{2}$ "×४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश । लिपि—नागरी । विषय—छन्द शास्त्र । ग्रन्थ संख्या—१७११ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—सं० १७८६ ।

६२६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । आकार-१०" × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३१६ । रचनाकला-× । लिपिकाल-× । सं० १६३६ ।

६२७. पिङ्गल रूप दीपक—जयकिशन । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार-८ $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-छन्द शास्त्र । ग्रन्थ संख्या-२४६३ । रचनाकाल-फाल्गुन शुक्ला २, सं० १७७२ । लिपिकाल-सं० १८८२ ।

६२८. प्रस्तार वर्णन—हर्षकीर्ति सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-१० $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-छन्द शास्त्र । ग्रन्थ संख्या-२४२७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६२९. भाषा भूषण—महाराजा जसवन्त सिंह । देशी कागज । पत्र संख्या-१५ । आकार-१०" × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । विषय-अलंकार शास्त्र । ग्रन्थ संख्या-११०४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६३०. वृत्त रत्नाकर—केदारनाथ भट्ट । देशी कागज । पत्र संख्या-९ । आकार-११" × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-छन्द शास्त्र । ग्रन्थ संख्या-१९६४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा १, मंगलवार, सं० १६९० ।

६३१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार-११ $\frac{३}{४}$ " × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१९६१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला १५, बृहस्पतिवार, सं० १५२६ ।

६३२. प्रति ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-११ $\frac{३}{४}$ " × ५ $\frac{३}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१३८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६३३. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-१०" × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७६३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला १३, सं० १८११ ।

६३४. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार-१०" × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३८७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६३५. वृत्त रत्नाकर सटीक—पं० केदार का पुत्र राम । देशी कागज । पत्र संख्या-७३ । आकार-१० $\frac{१}{४}$ " × ५" । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-छन्द शास्त्र । ग्रन्थ संख्या-२६४६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६३६. वृत्तरत्नाकर सटीक—केदारनाथ भट्ट । टीकाकार—समयसुन्दर उपाध्याय । देशी कागज । पत्र संख्या-२७ । आकार-१२" × ५ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत ।

४३। दशा-जीर्णशीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६३४ । रचना-काल-× । लिपिकाल-× ।

६४८. श्रुतबोध सटीक-× । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार-१० $\frac{१}{४}$ "×४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्णशीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२१६० । रचना-काल-× । लिपिकाल-श्रीव कृष्णा ५, सं० १७७३ ।

—————

विषय—ज्योतिष

६४६. अध्यात्म तरंगिणी—सोमदेव शर्मा । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार- $११'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-ज्योतिष । ग्रन्थ संख्या-१७५१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-आषाढ कृष्णा १४, बृहस्पतिवार, सं० १८०७ ।

६५०. अरिष्टफल-× । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $११'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-ज्योतिष । ग्रन्थ संख्या-१४७५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६५१. अवयव केवली । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-ज्योतिष । ग्रन्थ संख्या-२८१५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६५२. अंग फूरकण शास्त्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-ज्योतिष । ग्रन्थ संख्या-१३२२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६५३. आराधना कथा कोष—मुनि सिंहनन्द । देशी कागज । पत्र संख्या-३४ । आकार- $११\frac{३}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । अपूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-ज्योतिष । ग्रन्थ संख्या-२८४४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६५४. कालज्ञान—महादेव । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार- $११\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-ज्योतिष । ग्रन्थ संख्या-२१०२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-आवण शुक्ला ८, रविवार, सं० १७१६ ।

६५५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०७१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६५६. कालज्ञान—लक्ष्मी वल्लभ गणि । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-ज्योतिष । ग्रन्थ संख्या-१७६२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६५७. गणित नाममाला—हरिदत्त शर्मा । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ५''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-ज्योतिष । ग्रन्थ संख्या-१६६८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १७७६ ।

६५८. गर्भिण्यादि प्रश्न विचार—× । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $१०'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२८३६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६५६. गुरुचार—X । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-११"X४^३/_४" । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३६८ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

६६०. ग्रह दृष्टि वर्णन—X । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-११"X५" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५४१ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

६६१. ग्रह दीपक--X । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार-१०"X४^३/_४" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२१११ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

६६२. ग्रह शान्ति विधि (हवनपद्धति)—X । देशी कागज । पत्र संख्या-३३ । आकार-१०"X४^३/_४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५६७ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

६६३. ग्रह शान्ति विधान—पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । आकार-१०"X५" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-होम विधान । ग्रन्थ संख्या-१६६६ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-श्रावण शुक्ला ८, सं० १६१६ ।

६६४. ग्रहायु प्रमाण—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-६^३/_४"X४" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४५४ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

६६५. गौरख यन्त्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-११^३/_४"X५^३/_४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६२१ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

६६६. चन्द्र सूर्य कालानल चक्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-१०"X४^३/_४" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७२३ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

६६७. चमत्कार चिन्तामणि—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार-६^३/_४"X५^३/_४" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६४२ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

६६८. चमत्कार चिन्तामणि-स्थानपाल द्विज । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-१०"X४^३/_४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१४६६ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला १, सं० १८५८ ।

६६९. चौघड़िया चक्र--X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-६"X" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५६० । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

६७०. जन्म कुण्डली विचार—X । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $11\frac{1}{2}'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५५२ । रचना-काल-X । लिपिकाल-X ।

६७१. जन्म पत्रिका—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $10'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा-अति जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५०० । रचना-काल-X । लिपिकाल-X ।

६७२. जन्मपत्री पद्धति-हर्षकोटि द्वारा संकलित । देशी कागज । पत्र संख्या-३४ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८२३ । रचना-काल-X । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला १३, शनिवार, सं० १७७२ ।

६७३. जन्मफल विचार—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४२६ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

६७४. जन्म पद्धति—X । देशी कागज । पत्र संख्या-६३ । आकार- $8'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८३७ । रचना-काल-X । लिपिकाल-X ।

नोट—इसमें जन्म पत्रिका बनाने की विधि को सरल तरीके से समझाया गया है ।

६७५. जातक—दण्डिराज दैवज्ञ—X । देशी कागज । पत्र संख्या-४६ । आकार- $12'' \times 5''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११८२ । रचना-काल-X । लिपिकाल-X ।

६७६. जातक प्रदीप-सांवल । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । आकार- $10'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-गुजराती मिश्रित हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५६१ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

६७७. ज्योतिष चक्र—हेम प्रभसूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-६७ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा-सुन्दर । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३५४ । रचना-काल-X । लिपिकाल-X ।

६७८. ज्योतिष रत्नमाला—श्रीपति । देशी कागज । पत्र संख्या-२१ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२४५ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला १०, बृहस्पतिवार, सं० १६८५ ।

विशेष—पत्र संख्या १ से १८ तक तो ज्योतिष रत्नमाला ग्रन्थ है और उसके पश्चात् २१ तक श्री भाष्करादित ग्रहागम कुतुहल श्री विदग्ध बुद्धि वल्लभ कृत ग्रन्थ लिखा गया है ।

६७९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३८ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२५० । रचनाकाल-सं० १५७३ । लिपिकाल-X ।

६८०. ज्योतिषसार—नारचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-६० । आकार-६ $\frac{1}{2}$ " × ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११०१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-अधिक मास अश्विन शुक्ला १५, सोमवार, सं० १८७६ ।

६८१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२३ । आकार-१० $\frac{1}{2}$ " × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२०६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६८२. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-३१ । आकार-१० $\frac{1}{2}$ " × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२८५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६८३. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-४४ । आकार-१०" × ३ $\frac{3}{4}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२२० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-श्रावण शुक्ला ६, मंगलवार, सं० १७६३ ।

नोट—पत्रों के कोणे जीर्ण हो गये हैं ।

६८४. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-२५ । आकार-६ $\frac{3}{4}$ " × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१७८४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६८५. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-२५ । आकार-१० $\frac{1}{2}$ " × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१५५८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६८६. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र संख्या-२६ । आकार-११" × ४ $\frac{3}{4}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१२८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला ६, सं० १७८८ ।

६८७. ज्योतिषसार भाषा-कवि कृपाराम । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । आकार-१० $\frac{3}{4}$ " × ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५८७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-मंगसिर कृष्णा १४, सं० १८८५ ।

६८८. ज्योतिषसार टिप्पण—पं० नारचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार-८ $\frac{3}{4}$ " × ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा-सुन्दर । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२८४७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६८९. ज्योतिषसार (सटीक)—नारचन्द्र । टीकाकार—भुजोदित्य । देशी कागज । पत्र संख्या-१७ । आकार-१० $\frac{1}{2}$ " × ४ $\frac{3}{4}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४६० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-फाल्गुन कृष्णा १, सं० १८३७ ।

६९०. टीपरौ री पाटी—× । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-६ $\frac{3}{4}$ " × ४ $\frac{3}{4}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५४७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-माघ कृष्णा १२, सं० १६३३ ।

६९१. ताजिक नीलकण्ठी—पं० नीलकण्ठ । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । आकार-

१० $\frac{1}{2}$ " × ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८०२ । रचनाकाल—सं० १६६४ । लिपिकाल—X ।

६६२. ताजिक पद्यकोश—पद्यकोश । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार—१०" × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२०७३ । रचनाकाल—सं० १६२३ । लिपिकाल—माघ शुक्ला ७, सं० १८५३ ।

६६३. ताजिक रत्नकोश—X । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार—१० $\frac{1}{2}$ " × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२२४८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—मंगसिर शुक्ला २, सं० १८४४ ।

विशेष—इस ग्रन्थ का अपर नाम पद्यकोष भी है ।

६६४. दशान्तर दशा फलाफल—X । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार—११" × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५४० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा १०, वृहस्पतिवार, सं० १८४१ ।

६६५. द्वादशराशी फल—X । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार—११" × ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६५२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

६६६. द्वि घटिक विचार—पं० शिवा । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—११" × ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८२७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—वैशाख शुक्ला १, वृहस्पतिवार, सं० १८६८ ।

६६७. दिनमान पत्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—६ $\frac{1}{2}$ " × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६३२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा ५, सं० १८५१ ।

६६८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—१० $\frac{1}{2}$ " × ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१६२० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

६६९. दिन रात्रि मान पत्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—११ $\frac{1}{2}$ " × ५ $\frac{3}{4}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२०७८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१०००. दुषडिया विचार—पं० शिवा । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार—११" × ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८३३ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१००१. नवग्रह फल—X । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार—१२ $\frac{1}{2}$ " × ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा—जीर्णधीण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६२२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१००२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार—६ $\frac{1}{2}$ " × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—

अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२७७३ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१००३. नवग्रह स्तोत्र व दान—X । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५५५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१००४. नारद संहिता—X । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $८\frac{३}{४}'' \times ३\frac{१}{२}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२१५१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१००५. पंचाग विधि—X । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $१२'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२२५१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१००६. पल्य विचार—वंसतराज । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $६\frac{१}{४}'' \times ४''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२५१५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१००७. प्रश्नसार—हयग्रीव । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । आकार— $११\frac{१}{४}'' \times ६''$ । दशा—जीर्णक्षीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१७०० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—फाल्गुन कृष्ण ३, सं० १८८६ ।

१००८. प्रश्नसार संग्रह । देशी कागज । पत्र संख्या—१४ । आकार— $१२'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६१६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—अश्विन शुक्ला ६, सं० १८८८ ।

१००९. ली . जिनवल्लभ सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—१४ । आकार— $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१४३७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१०१०. ब्रह्म प्रदीप—पं० काशीनाथ । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार— $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८६४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—माघ कृष्ण ४, सं० १८८२ ।

१०११. भाडली पुराण —भाडली ऋषि । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार— $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८३६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१०१२. प्रति . २ । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार— $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२६१७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१०१३. भुवन दीपक—पद्म प्रभसूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२४८१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१०१४. मास लग्न फल—X । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार— $११'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६७६ । रचना-काल-X । लिपिकाल-X ।

१०१५. मुहूर्त चिन्तामणि—देवज्ञराम । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार— $११\frac{१}{२}'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७३० । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

१०१६. मुहूर्त चिन्तामणि सटीक—देवज्ञराम । टीकाकार-नारायण । देशी कागज । पत्र संख्या-६५ । आकार— $१३\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६८३ । रचनाकाल-X । टीकाकाल-सं० १६२६ । लिपिकाल-सं० १६३१ ।

१०१७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१५७ । आकार— $१०\frac{३}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१८५२ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

नोट—इस ग्रन्थ की टीका सं० १६५७ गीरीश नगर (अब चाराणसी) में होना बताया गया है ।

१०१८. मुहूर्त मुक्तावली—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार— $६\frac{३}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५१८ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-माघ कृष्णा १, सं० १८५२ ।

१०१९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार— $१०'' \times ५''$ । दशा-प्राचीन । अपूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१५५ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

१०२०. भेद्यवर्षा—X । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार— $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४७६ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

१०२१. मेदनीपुर का लग्न पत्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार— $११\frac{१}{४}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२०७७ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

१०२२. योगसार ग्रहफल—X । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार— $७'' \times ६''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४६८ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-श्रावण शुक्ला ५, सोमवार, सं० १६०७ ।

१०२३. रमल शकुनावली । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४४४ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-माघ कृष्णा १, सं० १८४४ ।

१०२४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार— $१२\frac{१}{२}'' \times ६\frac{१}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६३६ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा ६, सोमवार, सं० १८७० ।

१०२५. रमल शास्त्र—पं० चिन्तामणि । देशी कागज । पत्र संख्या—१४ । आकार— $६\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६३८ । रचना-काल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१०२६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१५ । आकार— $६\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५५६ । रचनाकाल— $\times$ । लिपि-काल— $\times$ ।

१०२७. राशि नक्षत्र फल—महादेव । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार— $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५४४ । रचना-काल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१०२८. राशि फल— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $८\frac{३}{४}'' \times ५''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५४६ । रचना-काल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१०२९. राशि लाभ व्यय चक्र— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $६\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५८४ । रचना-काल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१०३०. राशि संक्रान्ति— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $६'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६३३ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—सं० १८४४ ।

१०३१. लग्न चक्र— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $१२\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२८१३ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१०३२. लग्नचन्द्रिका—काशीनाथ । देशी कागज । पत्र संख्या—६६ । आकार— $६'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६०३ । रचना-काल— $\times$ । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला २, वृहस्पतिवार, सं० १८४१ ।

१०३३. लग्न प्रमाण — $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८३७ । रचना-काल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१०३४. लग्नादि वर्णन— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५४२ । रचना-काल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१०३५. लग्नाक्षत फल— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $७\frac{१}{४}'' \times ५''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१७१६ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१०३६. लघु जातक (सटीक)—भट्टोत्पल । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार— $६\frac{३}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८२४ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

१०३७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२१ । आकार— $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०७४ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—सं० १८३५ ।

१०३८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार— $११\frac{१}{४}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१८२१ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

१०३९. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार— $६'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२२४६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला ३, रविवार, सं० १८१६ ।

१०४०. लघु जातक भाषा—कृपाराम । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार— $११'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५४६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

विशेष—ज्योतिष सार नामक संस्कृत ग्रन्थ का ही हिन्दी ग्रन्थ नाम लघु जातक रखकर कर्ता ने लिखा है ।

१०४१. लीलावती भाषा—लालचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या-१५ । आकार— $१२'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५५७ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-मंगसिर कृष्णा १, वृहस्पतिवार, सं० १७६८ ।

विशेष—भाषाकार ने उस समय के राजादि का पूर्ण वर्णन किया है । ग्रन्थ इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है ।

१०४२. लीलावती सटीक—भास्कराचार्य । टीकाकार-गंगाधर । देशी कागज । पत्र संख्या-६७ । आकार— $११\frac{१}{४}'' \times ५''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५६७ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

१०४३. वर्ष कुण्डली विचार- $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार— $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२१४१ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

१०४४. वर्ष फलाफल चक्र— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार— $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२८२८ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-श्रेष्ठ शुक्ला ७, सं० १८४६ ।

१०४५. बृहद जातक (सटीक)—वराहमिहिराचार्य । टीकाकार-भट्टोत्पल । देशी कागज । पत्र संख्या-१०९ । आकार— $१३\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६८४ । रचनाकाल- $\times$ । टीकाकाल-चैत्र शुक्ला ५, वृहस्पतिवार, सं० १०२३ । लिपिकाल-सं० १६८२ ।

१०४६. विचिन्तमणि अंक—× । देशी कागज । पत्र संख्या—१४ । आकार—६" × ४ $\frac{१}{२}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२७८७ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा ४, मंगलवार सं० १७७३ ।

१०४७. विपरीत ग्रहण प्रकरण । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—१० $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२१४५ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१०४८. विवाह पटल—× । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार—१०" × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा—प्रतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५०१ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला १, सं० १७८१ ।

१०४९. विवाह पटल—श्रीराम मुनि । देशी कागज । पत्र संख्या—१५ । आकार—११" × ४" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६११ । रचनाकाल—अश्विन कृष्णा २, बुधवार, सं० १७२० । लिपिकाल—× ।

१०५०. विवाह पटल (भाषा)—पं० रूपचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार—१० $\frac{१}{२}$ " × ४ $\frac{१}{२}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८६६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१०५१. विवाह पटल सार्थ—× । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार—७ $\frac{३}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२४१५ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—माघ कृष्णा ६, बृहस्पतिवार, सं० १८१७ ।

१०५२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार—१०" × ३ $\frac{३}{४}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२२५० । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१०५३. शकुन रत्नावली—× । देशी कागज । पत्र संख्या—१३ से ३२ । आकार—१०" × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा—अच्छी । अपूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२८५२ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१०५४. शकुन शास्त्र—भगवद् भाषित । देशी कागज । पत्र संख्या—८ । आकार—१०" × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६६८ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—भाद्रपद शुक्ला १०, सं० १८१७ ।

नोट—सुपारी रखकर देखने से विचारे हुए प्रश्न का फल ज्ञात होता है । इसके लिये इस ग्रन्थ का पत्र ७ और ८ देखें ।

१०५५. शकुनावली—× । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार—८ $\frac{१}{२}$ " × ४ $\frac{१}{२}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२८२३ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१०५६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार—१० $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२७८१ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१०५७. शीघ्र बोध (सटीक)—काशीनाथ भट्टाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-६१ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ६\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६८१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-वैशाख शुक्ला ५, सं० १९१७ ।

१०५८. शीघ्रबोध—काशीनाथ भट्टाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-१८ । आकार- $११\frac{३}{४}'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८१० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१०५९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३० । आकार- $१०'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११४२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१०६०. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार- $९\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३३१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-श्रावण कृष्णा ७, सं० १९०९ ।

१०६१. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $९'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३३२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१०६२. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-१५ । आकार- $१२\frac{१}{४}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१५२१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१०६३. शीघ्रबोध सार्थ—× । देशी कागज । पत्र संख्या-५३ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४८९ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-श्रावण शुक्ला ५, रविवार, सं० १८९० ।

१०६४. शुक्रोदयफल—× । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६७८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१०६५. पट् पंचाशिका-भट्टोत्पल । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $११\frac{३}{४}'' \times ५''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८४५ । रचनाकाल-लिपिकाल-× ।

१०६६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१९६७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१०६७. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ५\frac{१}{२}''$ । अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१८३० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-श्रावण कृष्णा ५, वृहस्पतिवार सं० १८८५ ।

१०६८. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१४३० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१०६६. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२११० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१०७०. सट् पंचासिका—वराहमिहिराचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार- $10'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२४७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-फाल्गुन कृष्ण २, सं० १७६० ।

१०७१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६४२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१०७२. षट् पंचासिका सटीक—× । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार- $10\frac{3}{4}'' \times ५''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२१२६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१०७३. षट् पंचासिका सटीक—वराहमिहिराचार्य । टीकाकार-भट्टोत्पल । देशी कागज । पत्र संख्या-२७ । आकार- $10\frac{3}{4}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३५३ । रचना टीकाकाल-सं० ६०० । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला १५, बुधवार, सं० १८७७ ।

विशेष—टीका का नाम “प्रश्नसागरोत्तरणोत्पल” है ।

१०७४. षोडशयोग—× । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $12'' \times ५\frac{1}{2}''$ । दशा-प्राचीन । अपूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२८४५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१०७५. स्वरोदय—× । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । आकार- $11\frac{1}{2}'' \times ५\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८४७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१०७६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $12\frac{1}{2}'' \times ५\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१७०२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १८६६ ।

१०७७. प्रति ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $11\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६६८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१०७८. प्रति ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $10'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२८३३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१०७९. स्वप्न विचार—× । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $10'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२७७६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

विशेष—स्वप्न में देखी हुई वस्तुओं का फल का वर्णन वर्णित है ।

१०८०. स्वप्नाध्याय—X । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार— $६\frac{1}{2}'' \times ४\frac{1}{8}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२८१६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—श्रावण शुक्ला ७, गुरुवार, सं० १७८३ ।

१०८१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $१७\frac{1}{8}'' \times ६\frac{1}{2}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२८३७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—सं० १७३५ ।

विशेष—ग्रन्थ की अंदावती नगर में लिपि की गई ।

१०८२. साठी संवत्सरी—X । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार— $१०\frac{1}{8}'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६८८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१०८३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार— $११\frac{1}{2}'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२५३६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१०८४. सामुद्रिकशास्त्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । आकार— $१०'' \times ४''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१४८६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१०८५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार— $१०\frac{1}{2}'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२४५६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१०८६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—८ । आकार— $१०'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२४७१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१०८७. सारणी—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । आकार— $११\frac{1}{2}'' \times ४\frac{1}{8}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२०६८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१०८८. सारणी—X । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $१०'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६२७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१०८९. सारणी—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $६\frac{1}{2}'' \times ४''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१४२८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१०९०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार— $१०'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१६२६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१०९१. सारणी—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१३७ । आकार— $११'' \times ५''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१००२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—कार्तिक कृष्ण १, मंगलवार, सं० १८४६ ।

१०९२. सूर्य ग्रह घात—पं० सूर्य । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार— $६'' \times$

४ $\frac{1}{8}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५३६ । रचनाकाल-× ।
लिपिकाल-× ।

१०६३. संवत्सर फल—× । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार-११"×४ $\frac{3}{8}$ " ।
दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२१०७ । रचनाकाल-× ।
लिपिकाल-अश्विन कृष्ण १०, सं० १७८८ ।

विशेष—इस ग्रन्थ की लिपि डेह नामक ग्राम में की गई ।

१०६४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार-१३"×६ $\frac{1}{2}$ " ।
दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०७२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१०६५. होरा चक्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-१२"×५ $\frac{3}{8}$ " ।
दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६३४ । रचनाकाल-× ।
लिपिकाल-× ।

१०६६. त्रिपता चक्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-१० $\frac{1}{8}$ "×५" ।
दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५५३ । रचनाकाल-× ।
लिपिकाल-× ।

१०६७. ज्ञान प्रकाशित दीपार्णव—× । देशी कागज । पत्र संख्या-४४ । आकार-११"×
५ $\frac{1}{8}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५७६ । रचनाकाल-
× । लिपिकाल-× । कार्तिक कृष्ण १४, सं० १६३० ।

१०६८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-४१ । आकार-११"×५ $\frac{1}{8}$ " ।
दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१५७६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

विषय—न्याय १२

१०६६. अष्ट सहस्री—विद्यानन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या—२४५ । आकार— $११\frac{३}{४}$ " × $५\frac{१}{४}$ " । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—न्याय शास्त्र । ग्रन्थ संख्या—१३८० । रचनाकाल—× । लिपिकाल—पौष प्रतिपदा, बुधवार, सं० १६७४ ।

११००. आख्या दन्तवाद—× । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार— १० " × $४\frac{१}{२}$ " । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—न्याय शास्त्र । ग्रन्थ संख्या—१७६६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

११०१. आप्तमीमांसा वचनिका—समन्तभद्राचार्य । टीकाकार—जयचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या—७२ । आकार— $११\frac{१}{४}$ " × ५ " । दशा—सुन्दर । पूर्ण । भाषा—संस्कृत, टीका हिन्दी में । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८७० । रचनाकाल—× । टीकाकाल—चैत्र कृष्णा १४, सं० १८६६ । लिपिकाल—× ।

११०२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—५८ । आकार— $१३\frac{१}{४}$ " × $६\frac{१}{४}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२६४७ । वचनिका का रचनाकाल—चैत्र कृष्णा १४, सं० १८६६ । लिपिकाल—अश्विन शुक्ला १०, रविवार, सं० १८६४ ।

११०३. आलाप पद्धति—पं० देवसेन । देशी कागज । पत्र संख्या—१० । आकार— १० " × $४\frac{१}{२}$ " । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५३१ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा ७, सं० १७१५ ।

११०४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार— $१२\frac{१}{२}$ " × $५\frac{१}{४}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१६०६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

११०५. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—१० । आकार— $१०\frac{१}{४}$ " × $४\frac{१}{४}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२४२३ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

११०६. प्रति ' ४ ' । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार— $१२\frac{१}{४}$ " × $५\frac{३}{४}$ " । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२३३४ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

११०७. प्रति ' ५ ' । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार— $१०\frac{३}{४}$ " × $४\frac{३}{४}$ " । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२५६६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—चैत्र कृष्णा ६, मंगलवार, सं० १५६८ ।

११०८. ईश्वर प्रत्यभिज्ञा सूत्र—अभि गुप्ताचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—५३ । आकार— १३ " × $७\frac{१}{४}$ " । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—न्याय । ग्रन्थ संख्या—१६८८ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

११०९. गरुडोपनिषद्—हरिहर ब्रह्म । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार—

११३०. $११\frac{३}{४}'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७७८ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ६, वृहस्पतिवार, सं० १८६४ ।

१११०. गुण स्वरूप-रत्नशेखर सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६२७ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-द्वितीय श्रावण शुक्ला ५, सं० १८१८ ।

११११. चतुर्दश गुणस्थान- $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $१२\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५४६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

१११२. जीव चौपई-पं० दीनतराम । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $६'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४३८ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

१११३. तर्क परिभाषा-केशव मिश्र । देशी कागज । पत्र संख्या-१५ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३७३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-श्रावण कृष्णा ५, मंगलवार, सं० १६६६ ।

१११४. तर्क संग्रह-अनन्त भट्ट । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ५''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७१२ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-सं० १८७६ ।

१११५. तार्किकसार संग्रह-पं० वदराज । देशी कागज । पत्र संख्या-२५ । आकार- $१३\frac{१}{२}'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०३८ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

१११६. न्यायसूत्रमिथिलेश्वर सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार- $८\frac{३}{४}'' \times ३\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३१८ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ५, शुक्रवार, सं० १६६७ ।

१११७. न्याय दीपिका-अमिनव धर्मभूषणचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-२७ । आकार- $११\frac{१}{२}'' \times ५''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३५७ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला १३, रविवार, सं० १८१० ।

१११८. प्रमेय रत्नमाला-माणिक्य नन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या-७७ । आकार- $६\frac{१}{२}'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११६३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

१११९. विधि सामान्य- $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७५६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

११२०. सप्त पदार्थ सत्रावचूरि—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३१७ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

११२१. सिद्धान्त चन्द्रोदय (तर्क संग्रह व्याख्या) —अनन्तभट्ट टीका-श्रीकृष्ण घूर्जटि दीक्षित । देशी कागज । पत्र संख्या-३२ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६६६ । रचनाकाल-X । टीकाकाल-सं० १२७५ । लिपिकाल-X ।

विषय—नाटक एवं संगीत

११२२. मदन पराजय—जिनदेव । देशी कागज । पत्र संख्या-२६ । आकार- $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-नाटक । ग्रन्थ संख्या-२४३६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला १४, सं० १६६१ ।

११२३. मिथ्यात्व खण्डन—कवि अनुप । देशी कागज । पत्र संख्या- । ४५ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ७''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय— नाटक । ग्रन्थ संख्या-२२७४ । रचनाकाल-पौष शुक्ला ५, रविवार, सं० १८२१ ।

११२४ मिथ्यात्व खण्डन ()—साह कन्नीराम । देशी कागज । पत्र संख्या-६३ । आकार- $६\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । विषय-नाटक । ग्रन्थ संख्या-१२७६ । रचनाकाल-पौष शुक्ला ५, सं० १८२० । लिपिकाल-भाद्रपद कृष्णा ६, शनिवार सं० १६०० ।

नोट—कवि ने अपनी पूर्ण प्रशस्ति लिखि है । ग्रन्थकर्त्ता आदि निवासी चाकसू श्री पेमराज के सुपुत्र हैं । सवाई जैपुर के लश्कर के मन्दिर के पास बोरडी के रास्ते में रचना की गई है ।

११२५. हनुमन्नाटक-पं० दामोदर मिश्र । देशी कागज । पत्र संख्या-३६ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-सुन्दर । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-नाटक । ग्रन्थ संख्या-१४१६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-वैशाख कृष्णा ६, सं० १८४१ ।

११२६. ज्ञानसूर्योदय नाटक—वादिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-३१ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-नाटक । ग्रन्थ संख्या-५०७ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-द्वितीय श्रावण सुदी २ सं० १७६८ ।

अन्त—इति श्रीवादिचन्द्र विरचित ज्ञानसूर्योदयनामनाटको चतुर्थो अध्यायः ४ ।
इति नाटकं सम्पूर्णम् । सं० १७६८ वर्षे मिति द्वितीया श्रावण शुक्ला तृतीया
लिपिकृतं मण्डलसूरि श्री चन्दकीर्तिना लुणवा मध्ये स्वात्मार्थम् लेखकवाचकयो
शिवं भूयात् ॥ १ ॥

११२७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३७ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-नाटक । ग्रन्थ संख्या-१२३० । रचनाकाल-माघ शुक्ला ८, सं० १६४८ । लिपिकाल- $\times$ ।

११२८. प्रति ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-५३ । आकार- $१२\frac{१}{२}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१०१ । रचनाकाल-माघ शुक्ला ८, सं० १६४८ । लिपिकाल- $\times$ ।

आदिभाग—

अनाद्यनन्तरूपाय पंचवर्णात्ममूर्त्तये ।

अनन्तमहिमाप्ताय सदीकार नमोस्तु ते ॥ १ ॥
 तस्मादभिन्नरूपस्य वृषभस्य जिनेशतुः ।
 नत्वा तस्य पदांभोजं भूपिताऽखिलं भूतलं ॥ २ ॥
 भूषीठभ्रान्तभूतानां भूयिष्ठानन्ददायिनीं ।
 भजे भवापहां भाषां भवभ्रमणभंजिनीं ॥ ३ ॥
 येषां ग्रन्थस्य सन्दर्भो प्रोस्फुरीतिविदोहृदि ।
 ववन्दे तान् गुरुन् भूयो भक्तिभारनमः शिराः ॥ ४ ॥

अन्तभाग—

मूलसंधे समासाद्य ज्ञानभूषं बुधोत्तमाः ।
 दुस्तरं हि भवांभोषि सुतरि मन्वते हृदि ॥ ८५ ॥
 तत्पट्टामलभूषणं समभवद्धैगम्बरीये मत्ते,
 चंचद्धर्हकरः स भाति चतुरः श्रीमत्प्रभाचन्द्रमाः ।
 तत्पट्टेऽजनि वादिवृन्दतिलकः श्रीवादिचन्द्रो यति ।
 स्तेनायं व्यरचि प्रबोधतरणिः भव्याब्जसंबोधनः ॥ ८६ ॥
 वसुवेदरसाब्जांके १६८४) वषे माघे सिताष्टमी दिवसे ।
 श्रीमन्मधूकनगरे सिद्धोऽयं बोधसंरंभः ॥ ८७ ॥ इति समाप्तम् ॥

११२६. संगीतसार—पं० दामोदर । देशी कागज । पत्र संख्या-८४ । आकार-६ $\frac{३}{४}$ " × ४ $\frac{१}{२}$ " । दशा-अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-संगीत । ग्रन्थ संख्या-१३७१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

विषय—नीतिशास्त्र

११३०. चाणक्य नीति - चाणक्य । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ५''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-नीतिशास्त्र । ग्रन्थ संख्या-१८४२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १८५३ ।

११३१. नन्दबत्तीसी—नन्दसेन । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-नीतिशास्त्र । ग्रन्थ संख्या-१३४० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

११३२. नीतिवाक्यामृत—सोमदेव सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-६३ । आकार- $१०'' \times ५''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-नीतिशास्त्र । ग्रन्थ संख्या-२४१७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

११३३. नीतिशतक (सटीक)—भर्तृहरि । देशी कागज । पत्र संख्या-१५ । आकार- $११\frac{३}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-नीतिशास्त्र । ग्रन्थ संख्या-१८७१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला १, सं० १८२७ ।

११३४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३३ । आकार- $११\frac{१}{२}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११५८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

११३५. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार- $८\frac{१}{२}'' \times ४''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५६४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला ११, सं० १८७१ ।

११३६. नीतिशतक सटीक—× । देशी कागज । पत्र संख्या-५६ । आकार- $१२\frac{३}{४}'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६४८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-माघ शुक्ला १०, मंगलवार, सं० १८३३ ।

११३७. नीतिसंग्रह—× । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $११'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२८३४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

११३८. पंचतन्त्र-विष्णु शर्मा । देशी कागज । पत्र संख्या-८० । आकार- $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०१६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

११३९. राजनीतिशास्त्र— । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $१२\frac{१}{२}'' \times$

५ $\frac{१}{२}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१४४७ । रचनाकाल—
× । लिपिकाल—× ।

११४०. बृहद् चाणक्य राजनीतिशास्त्र—चाणक्य । देशी कागज । पत्र संख्या—१५ ।
आकार—१०"×४ $\frac{१}{२}$ " । दशा—अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—
१६५५ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

११४१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । आकार—११"×४ $\frac{१}{२}$ " ।
दशा—अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१६५६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—आवण शुक्ला
११, बुधवार, सं० १७१६ ।

— — — — —

विषय—पुराण

११४२. उत्तरपुराण—पुष्पदन्त । देशी कागज । पत्र संख्या—२६३ । आकार—१३ $\frac{१}{२}$ " × ५ $\frac{३}{४}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश । लिपि—नागरी । विषय—पुराण । ग्रन्थ संख्या—१०४१ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—सं० १४८२ ।

११४३. उत्तरपुराण (सटीक)—पुष्पदन्त । टीकाकार—प्रभाचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—३१ । आकार—११ $\frac{३}{४}$ " × ५" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश और संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—पुराण । ग्रन्थ संख्या—११६१ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—कार्तिक कृष्ण १५, शनिवार, सं० १६५८ ।

११४४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—३३ । आकार—१३ $\frac{१}{२}$ " × ५ $\frac{१}{४}$ " । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१०३६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

११४५. उत्तरपुराणटिप्पण—प्रभाचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—६३ । आकार—११" × ५" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२५२१ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

११४६. गरुडपुराण (सटीक)—वेदव्यास । टीकाकार—× । देशी कागज । पत्र संख्या—६८ । आकार—१३" × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा—अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—पुराण । ग्रन्थ संख्या—१६८० । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

११४७. चक्रधरपुराण—जिनसेनाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—१३६ । आकार—११ $\frac{३}{४}$ " × ५ $\frac{३}{४}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—४०८३ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

११४८. नेमिजितपुराण—ब्रह्म नेमिदत्त । देशी कागज । पत्र संख्या—२२६ । आकार—११ $\frac{३}{४}$ " × ५" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । ग्रन्थ संख्या—१२३४ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—कार्तिक शुक्ला २, सोमवार, सं० १६०६ ।

११४९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२०८ । आकार—१० $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१४०४ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—आषाढ शुक्ला १४, शनिवार, सं० १६६१ ।

११५०. प्रति ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—१६५ । आकार—१० $\frac{१}{२}$ " × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१२६१ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

११५१. प्रति ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—२५३ । आकार—१०" × ४ $\frac{१}{४}$ " ।

दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०११ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-फाल्गुन सुदी १३, शुक्र-
वार, सं० १६७४ ।

११५२. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-१६६ । आकार-१२" × ४ $\frac{३}{४}$ " ।
दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६७६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १६७४ ।

११५३. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-१८५ । आकार-११ $\frac{१}{२}$ " × ४ $\frac{१}{२}$ " ।
दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५६२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-आषाढ़ कृष्णा १, रवि-
वार, सं० १७०६ ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ संख्या ४५०० है । लिपिकार की प्रशस्ति का अन्तिम पत्र नहीं है ।

११५४. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र संख्या-२३० । आकार-११" × ५" ।
दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३२२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-द्वितीय भाद्रपद कृष्णा
८, सोमवार, सं० १६६५ ।

११५५. पद्मनाभपुराण—महाराज सफलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-६४ ।
आकार-६" × ६ $\frac{१}{२}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३७६ ।
रचनाकाल-× । लिपिकाल-मंगशीर्ष शुक्ला ५, सोमवार, सं० १८५३ ।

११५६. पद्मपुराण भाषा-पं० लक्ष्मीदास । देशी कागज । पत्र संख्या-१७१ । आकार-
११ $\frac{३}{४}$ " × ५ $\frac{३}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७८० । रचना-
काल-गोप शुक्ला १०, सं० १७८३ । लिपिकाल-सं० १८१८ ।

११५७. पद्मपुराण—रविवेणाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-५६७ । आकार-
१३" × ५ $\frac{३}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२२६ ।
रचनाकाल-× । लिपिकाल-मंगसिर कृष्णा १३, सं० १८२३ ।

नोट—श्री पार्श्वनाथ के मन्दिर में नागौर में लिपि की ।

११५८. पार्श्वनाथपुराण—पद्मकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-७६ । आकार-
११" × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७७३ ।
रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १५०० ।

११५९. पार्श्वनाथ पुराण—पं० रङ्गू । देशी कागज । पत्र संख्या-८६ । आकार-
११" × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११६७ ।
रचनाकाल-× । लिपिकाल-माघ शुक्ला ६, बुधवार, सं० १६४६ ।

नोट—लिपिकार की प्रशस्ति विस्तृत दी गई है ।

११६०. पार्श्वनाथपुराण—भूधरदास । देशी कागज । पत्र संख्या-६३ । आकार-
१०" × ५ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०६६ ।

रचनाकाल—आपाढ़ शुक्ला ५, सं० १७८६ । लिपिकाल—भाद्रपद बुदी ११, सं० १८३८ ।

११६१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—५६ । आकार—१२ $\frac{१}{२}$ "×५ $\frac{३}{४}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२६७० । रचनाकाल—आपाढ़ शुक्ला ५, सं० १७८६ । लिपिकाल—चैत्र कृष्णा ६, मंगलवार, सं० १७९८ ।

११६२. पुण्यचन्द्रोदयमुनिमुत्रतपुराण—केशवसेनाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—१११ । आकार—१० $\frac{३}{४}$ "×६" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२०४६ (ब) । रचनाकाल—X । लिपिकाल—चैत्र बुदी ७, सं० १८६७ ।

११६३. पुराणसार संग्रह—भ० सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या—१२२ । आकार—११"×५ $\frac{१}{२}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६७४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला ६, रविवार, सं० १८३७ ।

११६४. भविष्यपुराण—X । देशी कागज । पत्र संख्या—८ । आकार—६"×४" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५३८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

११६५. मार्कण्डेयपुराण (सटीक)—ऋषि मार्कण्डेय । देशी कागज । पत्र संख्या—६२ । आकार—११ $\frac{१}{४}$ "×६ $\frac{१}{२}$ " । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८३५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—मंगसिर कृष्णा ८, बृहस्पतिवार, सं० १६२० ।

११६६. रामपुराण—भट्टारक सोमसेन । देशी कागज । पत्र संख्या—१४ । आकार—१०"×५ $\frac{३}{४}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१२१४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

आदिभाग—

श्रीजिनाय नमः वदेऽहं सुव्रतदेवं पंचकल्याणनायकं ।

देवदेवादिभिः सेव्यं भव्यवृंदं सुखप्रदं ॥ १ ॥

शेषान् सिद्धजिनान् सरीन् पाठकानां साधू संयुक्तान् ।

नत्वा वक्षे हि पद्मस्य पुराणगुणं सागरं ॥ २ ॥

वन्दे वृषभसेनादिन् गुणाधीशान् यतीश्वरान् ।

द्वा दशांगं श्रुतयैश्च कृतं मोक्षस्य हेतवे ॥ ३ ॥

वन्दे समन्तभद्रं तं श्रुतसागरं पारंगं ।

भविष्यत् समये योऽत्र तीर्थनाथो भविष्यति ॥ ४ ॥

अन्तभाग—

सप्तदश सहस्राणि वर्षाणि राघवस्येव ।

ज्ञेयं हि परमायुश्च सुखसंततिं सम्पदं ॥ १४ ॥

श्रष्टादश सहस्राणि वर्षाणि लक्ष्मणस्य च ।
 आयुः परमं सौख्यं भोग सम्पत्ति दायकं ॥ १५ ॥
 रामस्य चरितं रम्यं श्रुणोति यश्च धार्मिकः ।
 लभते सः शिवस्थानं सर्वमुखाकरं परं ॥ १६ ॥
 विक्रमस्य गते शाके षोडश (१६५६) शतवर्षके ।
 शतपंचाशत समायुक्ते मासे श्रावणिके तथा ॥ १७ ॥
 शुक्लपक्ष त्रयोदश्यां बुधवारे शुभे दिने ।
 निष्पन्नं चरितं रम्यं रामाचन्द्रस्त पावनं ॥ १८ ॥
 महेन्द्रकीर्ति योगीन्द्र प्रासादात् च कृतं मया ।
 सोमसेन रामस्य पुराण पुण्य हेतवे ॥ १९ ॥
 यदुक्तं रविपेणेन पुराणं विस्तरा ।
 संकुच्य किञ्चित् विकथितं मया ॥ २० ॥
 गर्वेण न कृतं शास्त्रं नापि कीर्ति फलाप्तये ।
 केवलं पुण्य हेत्वर्थं स्तुता रामगुणा मया ॥ २१ ॥
 नाहं जानामि शास्त्राणि न छन्दो न नाटकं ।
 तथापि च विनोदेन कृतं रामपुराणकं ॥ २२ ॥
 ये संतति विपुषो लोके मोघयं उच्यते मम ।
 शास्त्रं परोपकाराय ते कृता ब्रह्मणामुखि ॥ २३ ॥
 कथा मात्रं च पद्मस्य वर्त्तते वर्णानां विना ।
 अस्मिन् ग्रन्थे उभौ भव्याः श्रवन्तु सावधानतः ॥ २४ ॥
 विस्तार रुचिनः सिव्या ये संति भद्रमानसाः ।
 ते श्रवन्तु पुराणं हि रविपेणस्य निर्मितं ॥ २५ ॥
 रविपेण कृते ग्रन्थे कथा यावत्पवर्त्तते ।
 तावत् च सकलात्रापि वर्त्तते वर्णं मां विना ॥ २६ ॥
 वर्षत्रिपये रम्ये जिनूर नगरे वरे ।
 मन्दिरे पार्श्वनाथस्य सिद्धोः ग्रन्थः शुभे दिने ॥ २७ ॥
 सेनगणोति विख्याति गुणभद्रो भवन्मुनिः ।
 पट्टे तस्यैव संजातः सोमसेनो यतीश्वरः ॥ २८ ॥
 तेनेदं निर्मितं शास्त्रं रामदेवस्य भक्तितः ।
 स्वस्य निर्वाणहेत्वर्थं संक्षेपेण महात्मनः ॥ २९ ॥
 यस्मिन् निदपुरे शास्त्रं श्रवन्ति च पठन्ति च ।
 तत्र सर्वं सुखक्षेमं परं भवति मंगलं ॥ ३० ॥

धर्मात् लभन्ते शिव-सौख्य-सम्पदः स्वर्गादि राज्याणि भवन्ति ।
 धर्मात् तस्मात् कुर्वन्ति जिनधर्ममेकं, विहाय पाप नरकादिकारकं ॥ ३१ ॥
 सेरागरो याति परं पवित्रे वृषभपेरा गणधर शुभवंशे ।
 गुणभद्रोजनिकः विजनमुख्यः पमितवर्गा सुखाकरजातः ॥ ३२ ॥
 श्री मूलसंवे वर पुष्कराख्ये गच्छे सुजातोगुणभद्रसूरिः ।
 पट्टे च तस्यैव सुसोमसेनो भट्टारको भुवि विदुषां शिरोमणि ॥ ३३ ॥
 सहस्रं सप्तशतं त्रीणि वर्तते भूवि विस्तरात् ।
 सोमसेनमिदं वक्षे चिरंजीव चिरंजीवितं ॥ ३४ ॥

इति श्री रामपुराणे भट्टारक श्री सोमसेन विरचिते रामस्वामिनो निर्वाणवर्णननामनो
 त्रयस्त्रिंशत्तमोऽधिकारः ॥३३॥ छः । ग्रन्थाग्रन्थ ७३०० । । मिति श्री जिनायनमः ॥

११६७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१८ । आकार-१२"×६" ।
 दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२६३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

११६८. रामायण शास्त्र-चिन्तन महामुनि । देशी कागज । पत्र संख्या-५१ ।
 आकार-११ $\frac{१}{४}$ "×४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-
 १०५६ । रचनाकाल-आषाढ़ बुदी ५, रविवार सं० १४६३ । लिपिकाल-× ।

११६९. वर्द्धमान पुराण-नवलदास शाह । देशी कागज । पत्र संख्या-१७७ । आकार-
 १२ $\frac{१}{२}$ "×६" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५८९ । रचना-
 काल-मंगशीर्ष शुक्ला १५, सं० १६९१ । लिपिकाल-मंगशीर्ष शुक्ला ८, बुधवार, सं० १८५८ ।

विशेष—भट्टारक सकलकीर्तिजी के उपदेश के मुताबिक ग्रन्थ की रचना की है । पुराण
 कर्ता ने पूर्ण प्रशस्ति तथा उस समय के राज्य कालादि का विस्तृत वर्णन किया है ।

११७०. शान्तिनाथपुराण (सटीक)—भ० सकलकीर्ति । टीकाकार—सेवारास ।
 देशी कागज । पत्र संख्या-३२७ । आकार-८ $\frac{१}{२}$ "×७" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और
 हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४७९ । रचनाकाल-× । टीकाकाल-श्रावण कृष्णा ८,
 सं० १८३४ । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला ११, सं० १९२९ ।

विशेष—भाषाकार ने अपनी पूर्ण प्रशस्ति लिखि है ।

११७१ शिवपुराण—वेदव्यास । देशी कागज । पत्र संख्या-१८९ । आकार-
 ११"×७ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३६२ ।
 रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

विशेष—वैष्णव पुराण है ।

११७२. सम्यक्त्वकौमुदी पुराण—महीचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या—६७ । आकार— $10'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१११३ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—सं० १८८४ ।

११७३. हरिवंशपुराण—ब्रह्म जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या—२६ । आकार— $8\frac{3}{4}'' \times 4''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५८२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

११७४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—३४८ । आकार— $11\frac{1}{8}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२५६४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—आषाढ़ कृष्ण ५, शुक्रवार, सं० १७१८ ।

११७५. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—२६६ । आकार— $12'' \times 5''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२४८० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला १४, सं० १७५६ ।

११७६. हरिवंशपुराण—मुनि यशःकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या—२६३ । आकार— $11\frac{1}{8}'' \times 5\frac{1}{8}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६४४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—आषाढ़ शुक्ला ७, बृहस्पतिवार, सं० १६५२ ।

११७७. त्रिषष्टिस्मृति—पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या—२२ । आकार— $10\frac{1}{2}'' \times 3\frac{3}{4}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१२६३ । रचनाकाल—सं० १२६२ । लिपिकाल—पौष शुक्ला ६, शुक्रवार, सं० १५५५ ।

११७८. त्रिषष्टिस्तोत्रा महापुरुषचरित्र—हेमचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—११६ । आकार— $10'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१३६२ । रचनाकाल—सं० १५०४ । लिपिकाल—अश्विन कृष्ण १०, सं० १६४८ ।

११७९. त्रिषष्टिलक्षण महापुराण—पुष्पदन्त । देशी कागज । पत्र संख्या—१७१ । आकार— $13\frac{3}{4}'' \times 5\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१३५१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

११८०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२५३ । आकार— $13'' \times 5\frac{1}{2}''$ । दशा—अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१४१५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—वैशाख शुक्ला ६, सं० १५८५ ।

११८१. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—१५५ । आकार— $13\frac{1}{2}'' \times 5\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१०४० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—सं० १४६३ ।

११८२. त्रिषष्टि लक्षणमहापुराण—गुणभद्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—४१० । आकार— $11\frac{1}{2}'' \times 4''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१२११ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

११८३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—४६३ । आकार— $11\frac{1}{2}'' \times 5\frac{1}{2}''$ ।

दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१०५० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—आपाढ़ शुक्ला १३, शनिवार, सं० १७०८ ।

नोट—विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है ।

११८४. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—३३६ । आकार—११"X५" । दशा—अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१४०२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—मंगसिर शुक्ला १४, बुधवार, सं० १६६० ।

११८५. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—३१६ । आकार—१३^३/_४"X६" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१८८६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—माघ शुक्ला १३, सं० १६७६ ।

विषय—पूजा एवं स्तो

११८६. अकलंक स्तुति—बौद्धाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार-११"×४^३/_४" । दशा-जीर्णशीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२०३६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

विशेष—इस ग्रन्थ के अन्त में “अकलंकाचार्य विरचितं स्तोत्रं” लिखा है, और इसके निचे बौद्धाचार्य लिखा है । यह स्तुति बौद्धाचार्य ने अवश्य की है । किन्तु बौद्धाचार्य का नाम अकलंक होना शंकास्पद है ।

११८७. अग्निस्तोत्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार-९^१/_२"×३^३/_४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-१६६२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ३, शुक्रवार, सं० १८१८ ।

११८८. अढाईद्वीपपूजन भाषा—डालूराम । देशी कागज । पत्र संख्या-२४४ । आकार-१३^३/_४"×९ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२८४० । रचनाकाल-ज्येष्ठ शुक्ला १३, शुक्रवार, सं० १८८७ । लिपिकाल-द्वितीय वैशाख कृष्णा २, रविवार, सं० १९०७ ।

११८९. अढाईद्वीपपूजा—× । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार-१०"×५^३/_४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-१६०२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १७९४ ।

११९०. अन्नपूर्णास्तोत्र—शंकराचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार-९^१/_२"×३^३/_४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१६१७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-माघ शुक्ला १ सं० १८९० ।

११९१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-९^१/_२"×४^१/_२" । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७७१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-पौष कृष्णा १, रविवार, सं० १८२१ ।

११९२. अपामार्ग स्तोत्र—गोविन्द । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार-८^१/_२"×२^१/_२" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२०१८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १८६१ ।

विशेष—अपामार्ग का हिन्दी नाम “आंधा भाड़ा” है ।

११९३. अष्टदल पूजा और षोडशफल पूजा—× । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-११"×५^१/_४" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-१५९२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

११६४. अष्टान्हिका पूजा—म० शुभचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२७२५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

११६५. अंकगर्भखण्डारचक्र—देवनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२०२१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

११६६. आशाधराष्टक—शुभचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार- $१२'' \times ५''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२६४१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

११६७. इन्द्रध्वज पूजा—× । देशी कागज । पत्र संख्या-७६ । आकार- $१२\frac{१}{४}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-१७१७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ५, सं० १८३४ ।

११६८. इन्द्रध्वज पूजन—म० विश्व भूषण । देशी कागज । पत्र संख्या-१२२ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२७४७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ६, सं० १८६६ ।

११६९. इन्द्र वधुचित्त हुलास आरती—रुचिरंग । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $७'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-आरती । ग्रन्थ संख्या-२७०६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१२००. इन्द्र स्तुति—× । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-अप्रभ्रंश । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-१५०४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१२०१. इन्द्राक्षिजगच्चिन्तामणि कवच—× । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार- $८\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६७६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१२०२. इन्द्राक्षि नित्य पूजा—× । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $६\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-१६२३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला १२ सं० १९२२ ।

१२०३. इन्द्राक्षिसहस्रनामस्तवन—× । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $६\frac{१}{२}'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१६२१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१२०४. एकीभावस्तोत्र—वादिराज । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $१२\frac{१}{२}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१६६४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१२०५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३१४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-सं० १८६० ।

१२०६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $११'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६८१ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्ण १३, सं० १७१४ ।

१२०७. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३४० । रचनाकाल- X । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्ण ३, शनिवार सं० १४६२ ।

१२०८. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३४५ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१२०९. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०२७ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१२१०. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०४७ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१२११. एकीभाव स्तोत्र (सार्थ)-वादिराज सूरि । ढीकाकार-नागचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार- $९\frac{३}{४}'' \times ४''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१३२५ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१२१२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४७५ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-श्रावण कृष्ण १४, सं० १६८८ ।

१२१३. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७२८ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-प्रथम श्रावण शुक्ल ८, सं० १७१४ ।

१२१४. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७२१ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१२१५. एकीभाव व कल्याण मन्दिर स्तोत्र- X । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार- $१२\frac{१}{४}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१८०९ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-वैशाख शुक्ल १२, सं० १८३९ ।

१२१६. ऋषभदेव स्तवन- X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१५०२ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१२१७. ऋषिमण्डलपूजा-गुणनंदि । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । आकार-

११"×५ $\frac{१}{२}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२३३८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१२१८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । आकार-११"×५" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५५१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१२१९. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । (२वां तथा १६ वां पत्र नहीं है) । आकार-१०"×४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । अपूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२८६० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला ११, सं० १७०८ ।

१२२०. ऋषिमण्डलस्तोत्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-९ $\frac{१}{२}$ "×३ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१२०७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

नोट : प्रथम पत्र के फट जाने से अक्षर अस्पष्ट हो गये हैं ।

१२२१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार-१२ $\frac{१}{२}$ "×५ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१९५७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला ११ सं० १८२६ ।

१२२२. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार-८ $\frac{३}{४}$ "×४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१२० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा ८, बृहस्पतिवार सं० १८८१ ।

विशेष—यह स्तोत्र मन्त्र सहित है ।

१२२३. ऋषिमण्डलस्तोत्र (सार्थ) —गौतम स्वामी । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-९ $\frac{३}{४}$ "×५ $\frac{३}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२४८७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१२२४. कर्मदहनपूजा—× । देशी कागज । पत्र संख्या-२५ । आकार-८ $\frac{३}{४}$ "×४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२२७१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-आषाढ़ कृष्णा ७ शनिवार, सं० १८८४ ।

१२२५. कल्दाणमन्दिरस्तोत्र—कुमुदचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार-१०"×४ $\frac{१}{२}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८१४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१२२६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-९ । आकार-१० $\frac{१}{२}$ "×४ $\frac{१}{२}$ " । दशा-अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१९१४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१२२७. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । आकार-९"×४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१९५४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला १४, सं० १८२७ ।

१२२८. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-१० $\frac{१}{४}$ "×४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३८४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१२२६. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार-१०" × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६४७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला ५, सं० १८४० ।

१२३०. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार-६ $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६७० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-अश्विन कृष्णा ८, बुधवार सं० १८४६ ।

१२३१. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । आकार-११" × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्ण क्षीण । पत्र संख्या । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६७५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१२३२. प्रति संख्या ८ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार-१० $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१७४६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १६३१ ।

१२३३. प्रति संख्या ९ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार-६ $\frac{३}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३६३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१२३४. प्रति संख्या १० । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार-६ $\frac{३}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२०२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१२३५. प्रति संख्या ११ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-११ $\frac{१}{४}$ " × ५ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३१५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला ५, सोमवार, सं० १८६० ।

१२३६. प्रति संख्या १२ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार-१०" × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२०१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला १५ सं० १४६७ ।

१२३७. प्रति संख्या १३ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार-१०" × ४" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४११ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-आषाढ़ शुक्ला ६, सं० १६०७ ।

१२३८. प्रति संख्या १४ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-१० $\frac{३}{४}$ " × ५ $\frac{१}{४}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३३१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१२३९. प्रति संख्या १५ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार-८ $\frac{१}{४}$ " × ५" । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२२८४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× । पौष शुक्ला ४, सं० १८८१ ।

१२४०. कल्याण मन्दिर स्तोत्र (सटीक)—कुमुदचन्द्राचार्य । टीकाकार-× । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । आकार-८ $\frac{१}{४}$ " × ४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८६१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-वैशाख कृष्णा १४ बृहस्पतिवार सं० १८७० ।

१२४१. कल्याणमन्दिरस्तोत्र (सटीक)—कुमुदचन्द्राचार्य । टीकाकार—भट्टारक

हर्षकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३३४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-वैशाख कृष्ण ५, सं० १६७७ ।

१२४२. कल्याणमन्दिरस्तोत्र (सार्थ) — X । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२७४६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१२४३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार- $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७६८ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला १, बुधवार, सं० १६०१ ।

१२४४. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७६९ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-सं० १६६३ ।

१२४५. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार- $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१४० । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१२४६. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०२४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१२४७. कल्याणमन्दिरस्तोत्र (सटीक) — कुमुदचन्द्राचार्य । टीकाकार-श्री सिद्ध-सेनाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या ६ । आकार- $८'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७१८ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१२४८. कल्याण मन्दिर स्तोत्र (सटीक) — कुमुदचन्द्राचार्य । टीकाकार-हुकमचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत व हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५१२ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१२४९. गणधरलक्ष्मण- X । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२७६१ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१२५०. प्रति २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१५८ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१२५१. गर्भखंडारचक्र-देवनंदि । देशी कागज । पत्र संख्या-५५ से ६६ = २९ आकार- $१२'' \times ५''$ । दशा-जीर्णक्षीण । अपूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तुति । ग्रन्थ संख्या-१३५६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१२५२. गौतम स्तोत्र-जिनप्रभसूरि । देशी कागज । पत्र संख्या- १ । आकार- $०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१५६३ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१२५३. चतुर्दशीव्रतोद्यापन पूजा — पं० ताराचन्द्र श्रावक । देशी कागज । पत्र

संख्या—८ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ५''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी ।
ग्रन्थ संख्या—१६१६ । रचनाकाल—चैत्र शुक्ला ५, सं० १८०२ । लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला ६,
सं० १८६२ ।

१२५४. चतुर्विंशति जिननमस्कार— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र ।
ग्रन्थ संख्या—२५५० । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१२५५. चतुर्विंशति जिनस्तवन— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—
२३१६ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

विशेष—अन्तिम पत्र में कुछ उपदेशात्मक श्लोक हैं ।

१२५६. चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति—समन्तभद्र स्वामी । देशी कागज । पत्र संख्या—
१५ । आकार— $११'' \times ५''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—
स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२११६ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—बैशाख कृष्णा १०, मंगलवार,
सं० १६५६ ।

१२५७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ ।
दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२११५ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—आषाढ़ कृष्णा ११,
मंगलवार, सं० १६७८ ।

१२५८. चतुर्विंशति तीर्थंकरों की स्तुति—माधनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या—
२ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ५''$ । दशा—अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी ।
विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—१४६६ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—पौष कृष्णा ६, सं०
१६६१ ।

१२५९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $११'' \times ४\frac{१}{२}''$ ।
दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२०६२ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—आषाढ़ शुक्ला ७,
सं० १७०५ ।

१२६०. चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति (सटीक) — पं० घनश्याम । टीकाकार—पं०
शोभनदेवाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—११ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—जीर्णक्षीण ।
पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२१६३ । रचनाकाल— $\times$ ।
टीकाकाल— $\times$ । लिपिकाल—श्रावण कृष्णा ८, सं० १६७० ।

विशेष—मूल ग्रन्थ कर्ता पं० घनपाल के लघुभ्राता श्रीशोभनदेवाचार्य ने वृत्ति की है ।

१२६१. चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा—चौधरी रामचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या—
६० । आकार— $६\frac{१}{२}'' \times ६\frac{१}{२}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—
पूजा । ग्रन्थ संख्या—१७६५ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—श्रावण कृष्णा ५, सं० १८५७ ।

१२६२. चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा—शुभचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—५० ।

आकार-११" × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५८३ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-आपाढ़ शुक्ला ५, सं० १६६३ ।

१२६३. चतुर्विंशति जिन स्तवन-पं० रविसागर गरिण । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार-१०" × ४" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१७३६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१२६४. चतुर्विंशति जिनस्तवन—जिनप्रभसूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-६ $\frac{३}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या- १६४४ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१२६५. चतुर्विंशति जिनस्तवन—ज्ञानचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-१० $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१८८० । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१२६६. चतुःषष्ठी स्तोत्र— × । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- १२ $\frac{१}{४}$ " × ५ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि- नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७०१ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-चैत्र कृष्णा १, सं० १६०४ ।

१२६७. चतुःषष्ठी महायोगीनी महास्तवन—धर्मनन्दाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-१० $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२६७१ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१२६८. चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा— × । देशी कागज । पत्र संख्या—१० । आकार— ८" × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-हिन्दी और संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संख्या—२२६१ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- भाद्रपद शुक्ला ६ सं० १६५८ ।

विशेष—इसमें गजपंथा जी की पूजा लिखी हुई है ।

१२६९. चिन्तामणि पार्श्वजिनस्तवन (सार्थ) — × । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- ८ $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१८८८ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१२७०. चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र—घरणेन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-१० $\frac{१}{४}$ " × ६ $\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१७०८ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१२७१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार-१० $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१७०७ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-भाघ कृष्णा १४, सं० १८७६ ।

१२७२. चित्र वन्ध स्तोत्र— × । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-६" × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या १३३८ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१२७३. चौबीसजिनआशीर्वाद—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२१५६ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-श्रावण शुक्ला २, सं० १७०१ ।

१२७४. चौबीस तीर्थंकर स्तवन—X । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $८\frac{३}{४}'' \times ४''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२७१८ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-भाद्र शुक्ला ११, सं० १८४१ ।

१२७५. चौबीस तीर्थंकरों की पूजा—वृन्दावनदास । देशी कागज । पत्र संख्या-४२ । आकार- $१२\frac{३}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-१५६७ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

१२७६. चौषष्ठयोगीनी स्तोत्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $६\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२०२२ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

विशेष—ग्रन्थ की लिपि नागरी में की गयी है ।

१२७७. जय तिहुन्नरण स्तोत्र—अभयदेव सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२७८४ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

१२७८. ज्वालामालिनी स्तोत्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $६\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२४६६ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा ५, सं० १८४४ ।

१२७९. जिनगुण सम्पत्ति व्रतोद्यापन—आचार्य देवनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार- $६\frac{१}{४}'' \times ६''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५६६ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

१२८०. जिनपूजापुरन्दरविधान—अमरकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार- $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२८०५ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

१२८१. जिनपंचकल्याणकपूजा—जयकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $११\frac{१}{२}'' \times ५''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-१६०३ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-श्रावण कृष्णा २, रविवार, सं० १६८३ ।

१२८२. जिनयज्ञकल्प—पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या-१५१ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१६७५ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

नोट : प्रारम्भ में श्री वसुनन्दि सैद्धान्ति द्वारा रचित प्रतिष्ठासार संग्रह के ६ परिच्छेद

१२८२. जिनसङ्गतनाम स्तोत्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१७१० । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

१२८६. जिनसङ्गतनाम स्तोत्र—सिद्धसेन दिवाकर । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२७६३ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-माघ शुक्ला १४, सं० १७४७ ।

विशेष — इसी ग्रन्थ में वारणेन्द्रस्तोत्र, पंच परमेष्ठी स्तोत्र, ऋषि मण्डल स्तोत्र और गृह्य पर्वण भी हैं ।

१२८७. जिन स्तवन सार्यं—जयानन्द सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२४६६ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला ५, सं० १७४१ ।

१२८८. जिन स्तुति—X । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-प्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२६६१ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

१२८९. जिन सुप्रभात स्तोत्र—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-प्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१४३३ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

१२९०. जिनेन्द्र वन्दना—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $10'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-प्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१७१५ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-X ।

१२९१. जिनेन्द्र स्तवन-X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्णशीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१४७३ । रचनाकाल-X । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला ६, सं० १६८५ ।

१२९२. तेरह द्वीप पूजा-X । देशी कागज । पत्र संख्या-१७० । आकार- $11\frac{1}{2}'' \times$

अष्टादश सहस्राणि वर्षाणि लक्ष्मणस्य च ।
 आयुः ... परमं सौख्यं भोग सम्पत्ति दायकं ॥ १५ ॥
 रामस्य चरितं रम्यं श्रणोति यश्च दामिकः ।
 लभते सः शिवस्थानं सर्वमुक्ताकरं परं ॥ १६ ॥
 विक्रमस्य गते जाके षोडश (१६५६) गतवर्षके ।
 गतपञ्चाशत समायुक्ते मासे श्रावणिके तथा ॥ १७ ॥
 शुक्लपक्ष त्रयोदश्यां बुधवारे शुभे दिने ।
 निम्नं चरितं रम्यं रामाचन्द्रस्त पावनं ॥ १८ ॥
 महेन्द्रकीर्ति योगीन्द्र प्रासादात् च कृतं मया ।
 सोमसेन रामस्य पुराण पुण्य हेतवे ॥ १९ ॥
 यदुक्तं रविप्रेणेन पुराणं विस्तरा ।
 संकुच्य किञ्चित् विकथितं मया ॥ २० ॥
 गर्वेण न कृतं शास्त्रं नापि कीर्ति फलाप्तये ।
 केवलं पुण्य हेत्वर्थं स्तुता रामगुणा मया ॥ २१ ॥
 नाहं जानामि शास्त्राणि न छन्दो न नाटकं ।
 तथापि च विनोदेन कृतं रामपुराणकं ॥ २२ ॥
 ये संतति विपुषो लोके मोक्षयं उचते मम ।
 शास्त्रं परोपकाराय ते कृता ब्रह्मणामुखि ॥ २३ ॥
 कथा मात्रं च पद्यस्य वर्त्तते वर्णानां विना ।
 अस्मिन् ग्रन्थे उभौ भव्याः श्रवन्तु सावधानतः ॥ २४ ॥
 विस्तार रुचिनः सिद्ध्या ये संति भद्रमानसाः ।
 ते श्रवन्तु पुराणं हि रविप्रेणस्य निमित्तं ॥ २५ ॥
 रविप्रेण कृते ग्रन्थे कथा यावत्पवर्त्तते ।
 तावत् च सकलान्नापि वर्त्तते वर्णं मां विना ॥ २६ ॥
 वर्ण्यविषये रम्ये जितूर नगरे वरे ।
 मन्दिरे पार्श्वनाथस्य मिट्टोः ग्रन्थः शुभे दिने ॥ २७ ॥
 सेनगणेति विख्याति गुणभद्रो भवन्मुनिः ।
 पट्टे तस्यैव संजातः सोमसेनो यतीश्वरः ॥ २८ ॥
 तेनेदं निमित्तं शास्त्रं रामदेवस्य भक्तितः ।
 स्वस्य निवर्णिहेत्वर्थं वक्षेपेण महात्मनः ॥ २९ ॥
 यस्मिन् निदपुरे शास्त्रं श्रवन्ति च पठन्ति च ।
 तत्र सर्वं सुखक्षेमं परं भवति मंगलं ॥ ३० ॥

(पृष्ठ संख्या २२ तक) हैं, पृष्ठ २३ से ६८ तक पूज्यपाद कृत अभिषेक विधि है। ६९ में १५१ तक पं० आशाधर जी कृत जिनयज्ञकल्प निबन्ध यानी 'कल्प दीपक' प्रकरण पर्यन्त है।

१२८३. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या—८८। आकार $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२५०५। रचनाकाल—अश्विन शुक्ला १५, सं० १२८५। लिपिकाल—X।

१२८४. जिनरस वर्णन—वेणीराम। देशी कागज। पत्र संख्या—१७। आकार— $८\frac{३}{४}'' \times ४''$ । दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या—१५६८। रचनाकाल—माघ शुक्ला ११, मंगलवार, सं० १७६६। लिपिकाल—अश्विन कृष्णा ७, सं० १८३६।

१२८५. जिनसहस्रनाम स्तोत्र—X। देशी कागज। पत्र संख्या—२। आकार— $८'' \times ५''$ । दशा—जीर्ण। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या—१७१०। रचनाकाल—X। लिपिकाल—X।

१२८६. जिनसहस्रनाम स्तोत्र—सिद्धसेन दिवाकर। देशी कागज। पत्र संख्या—१३। आकार— $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—प्राचीन। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या—२७६३। रचनाकाल—X। लिपिकाल—माघ शुक्ला १४, सं० १७४७।

विशेष—इसी ग्रन्थ में धरणेन्द्रस्तोत्र, पंच परमेष्ठी स्तोत्र, ऋषि मण्डल स्तोत्र और बृहत् वर्णन भी है।

१२८७. जिन स्तवन सार्थ—जयानन्द सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या—२। आकार— $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—प्राचीन। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या—२५६६। रचनाकाल—X। लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला ५, सं० १७४१।

१२८८. जिन स्तुति—X। देशी कागज। पत्र संख्या—७। आकार— $१०\frac{१}{४}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या—२६६१। रचनाकाल—X। लिपिकाल—X।

१२८९. जिन सुप्रभात स्तोत्र—सि० च० नेमिचन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार— $८\frac{१}{४}'' \times ३\frac{३}{४}''$ । दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या—१५३३। रचनाकाल—X। लिपिकाल—X।

१२९०. जिनेन्द्र वन्दना—X। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार— $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या—१७१५। रचनाकाल—X। लिपिकाल—X।

१२९१. जिनेन्द्र स्तवन—X। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार— $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—जीर्णभीण। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या—१४७३। रचनाकाल—X। लिपिकाल—चैत्र शुक्ला ६, सं० १६८५।

१२९२. तेरह द्वीप पूजा—X। देशी कागज। पत्र संख्या—१७०। आकार— $११\frac{१}{४}'' \times$

१३०४. दशलक्षणपूजा—पं० दानतराय । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $६\frac{१}{४}'' \times ६\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-१७१३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-द्वितीय वैशाख कृष्ण १, सोमवार, सं० १८६६ ।

१३०५. दशलक्षण पूजा—सुमतिसागर । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । आकार- $१७'' \times ६\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२६०७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३०६. द्वादश व्रतोद्यापन—× । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ५''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत, प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पेशाचिकी, अपभ्रंश, बुलिका आदि । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६२८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३०७. द्वात्रिंशी भावना—× । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२२५२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

विशेष—अन्तिम पत्र पर विद्यामंत्र गभित स्तोत्र है ।

१३०८. द्विजपाल पूजादि व विधान—विद्यानंदि । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६०६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३०९. दीपमालिका स्वाध्याय—× । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३१०. देवागम स्तोत्र - समन्तभद्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१३२१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३११. प्रति संख्या—२ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६७४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३१२. नन्दीश्वर पंक्ति पूजा विधान—× । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२१२५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक कृष्ण १२, सं० १८०१ ।

१३१३. नवग्रह पूजा—× । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६३४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३१४. नवग्रह पूजा विधान—× । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $१०''$

१३२२. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $११\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६६१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-पौष शुक्ला ५, शनिवार, सं० १७१२ ।

१३२३. पद्मावती छन्द-कल्याण । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $१०'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२०६६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३२४. पद्मावती पूजन-गोविन्दस्वामी । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२१५७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३२५. पद्मावती पूजा-× । देशी कागज । पत्र संख्या-२१ । आकार- $८\frac{१}{२}'' \times ६\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी एवं संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-१५२३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३२६. पद्मावती स्तोत्र-× । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१७०६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३२७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $७\frac{३}{४}'' \times ४''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१७२१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३२८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $११'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७२४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-पौष शुक्ला १, सं० १८८७ ।

१३२९. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $९\frac{१}{२}'' \times ५''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२२७६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला १०, बृहस्पतिवार, सं० १९०६ ।

१३३०. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४६१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३३१. पद्मावती सहस्रनाम-अमृतवत्स । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $११'' \times ५''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२५४३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३३२. पद्मावत्याष्टक सटीक -पार्श्वदेवगणि । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $१०'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-१६२० । रचनाकाल-वैशाख शुक्ला ५, सं० १२०३ । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा १३, सं० १९२२ ।

१३३३. पत्न्य विधानपूजा-म० शुभचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-७ ।

आकार-११ $\frac{१}{४}$ " × ५" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२८५५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३३४. पत्न्य विधान पूजा—रत्न नन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार-११" × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२७८६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १७६६ ।

१३३५. पत्न्य विधान पूजा—अनन्तकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार-१० $\frac{१}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२४०६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३३६. पार्श्वनाथ स्तवन—× । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-१०" × ४" । दशा-अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१४६४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३३७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-११" × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१४६१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

नोट—इस पत्र में वितराग स्तोत्र तथा शान्ति स्तोत्र भी है ।

१३३८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-१० $\frac{३}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३०३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

नोट—इसी पत्र में वीतराग स्तोत्र तथा शान्तीनाथ स्तोत्र भी है ।

१३३९. पार्श्वनाथ स्तोत्र—शिवसुन्दर । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-८" × ३ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१४७७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३४०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-११" × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५१५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-आषाढ कृष्णा १२, सं० १७१४ ।

१३४१. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-१२ $\frac{१}{४}$ " × ५ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१७०३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-अश्विन कृष्णा ८, सं० १८६२ ।

१३४२. पार्श्वनाथ स्तोत्र सटीक—× । टीकाकार-पद्मप्रभ देव । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार-१०" × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१६१० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३४३. पार्श्वनाथ स्तवन सटीक—पद्मप्रभ सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-१० $\frac{१}{४}$ " × ४" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२३२१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

नोट—इसी पत्र के पीछे की ओर सोमसेनगरि विरचित पार्श्वनाथ स्तोत्र भी है ।

१३४४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्ण क्षीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०६१ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१३४५. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण क्षीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१३२ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१३४६. पार्श्वनाथ स्तुति—X । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $८\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२५७६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१३४७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्ण क्षीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६३५ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला १२, सं० १७२६ ।

१३४८. पाशा केवली—X । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण क्षीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-१७२६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-मंगसिर कृष्णा १०, सं० १६५२ ।

१३४९. पुष्पांजली पूजा—X । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $८\frac{३}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२४४८ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा ५, सं० १६०६ ।

१३५०. पूजासारसमुच्चय—संग्रहीत । देशी कागज । पत्र संख्या-८७ । आकार- $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२५०६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला ११, बृहस्पतिवार, सं० १५१८ ।

१३५१. पूजा संग्रह—X । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश एवं संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२८३१ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला ७, बृहस्पतिवार, सं० १७०४ ।

विशेष—इस ग्रन्थ में देव पूजा, सिद्धों की जयमाल व पूजा, सौलह कारण पूजा व जयमाल, दशलक्षण पूजा व जयमाल श्री भाव शर्मा कृत और अन्त में नन्दीश्वर पूजा व जयमाल है ।

१३५२. प्रतिक्रमण—X । देशी कागज । पत्र संख्या-२३ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ५''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३६४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१३५३. प्रतिक्रमण—X । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और प्राकृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२६२ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा १४, सं० १६८१ ।

१३५४. प्रति २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार- $१०'' \times ५\frac{१}{४}''$ ।

दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५०७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३५५. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार १०"×४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२८२६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३५६. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार-१०^१/_४"×५" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४६७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३५७. प्रतिक्रमण (समाचारी सटीक)—जिनवल्लभ गणि । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-१०^१/_४"×४" । दशा-अति जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत एवं हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७६३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३५८. प्रतिष्ठासारसंग्रह—वसुनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या-२६ । आकार-१०^१/_४"×४^१/_४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२५२७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-श्रावण कृष्ण १५, सं० १५१६ ।

१३५९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३१ । आकार-११"×४^३/_४" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४७० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ३, सं० १५६५ ।

१३६०. पंचकल्याणक पूजा—× । देशी कागज । पत्र संख्या-२३ । आकार-९^३/_४"×४^१/_४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत व प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२८०८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३६१. पंचपरमेष्ठी स्तोत्र—जिनप्रभ सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-२४ । आकार-१०^१/_४"×४^१/_४" । दशा-सुन्दर । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२७६० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-माघ शुक्ला ६, बुधवार, सं० १८५२ ।

१३६२. पंचमेरू पूजा—श्रीकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार-९^१/_४"×४^१/_४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-१६३२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-भाद्र पद कृष्ण २, सं० १८२७ ।

१३६३. पंचमी व्रतोद्यापन पूजा—ताराचन्द श्रावक । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-१०^१/_४"×५" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६१५ । रचनाकाल-चैत्र शुक्ला ५, सं० १८०२ । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ६, सं० १८६२ ।

१३६४. बड़ा स्तवन—अश्वसेन । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार-७^३/_४"×४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३३६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३६५. बाला त्रिपूरा पद्धति—श्रीराम । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । आकार-८^१/_४"×४^३/_४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२५७४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-मंगसिर कृष्ण ६, शुक्रवार, सं० १६६३ ।

१३६६. भक्तामर स्तोत्र—मानतुगाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार-

१० $\frac{१}{४}$ "×४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अति जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र ।
ग्रन्थ संख्या-२००० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

नोट—श्लोक संख्या ४४ हैं ।

१३६७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार-१०"×४" ।
दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१४६७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला १५,
सं० १८१४ ।

नोट—श्लोक संख्या ४४ हैं ।

१३६८. प्रति संख्या—३ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-१० $\frac{१}{४}$ "×४ $\frac{१}{४}$ " ।
दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०३३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-श्रावण कृष्णा २,
सोमवार, सं० १६७८ ।

नोट—श्लोक संख्या ४४ हैं ।

१३६९. भक्तामर स्तोत्र—मानतुंगाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार-
११"×४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-अति जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ
संख्या-२०४८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

नोट—श्लोक संख्या ४८ हैं ।

१३७०. प्रतिसंख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार-८ $\frac{१}{४}$ "×५ $\frac{१}{४}$ " ।
दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२२८५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३७१. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-११"×४ $\frac{३}{४}$ " ।
दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३८२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

नोट—श्लोक संख्या-४८ हैं ।

१३७२. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार-९ $\frac{१}{४}$ "×४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-
जीर्ण । ग्रन्थ संख्या-१४६८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

नोट—श्लोक संख्या ४४ हैं ।

१३७३. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-९ । आकार-९ $\frac{३}{४}$ "×४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-
अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१४६५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

नोट—श्लोक संख्या ४४ हैं ।

१३७४. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार-११ $\frac{३}{४}$ "×५ $\frac{१}{४}$ " ।
दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६५३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १८२३ ।

१३७५. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार-८"×६" ।
दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६१३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

नोट—श्लोक संख्या ४८ हैं ।

१३७६. प्रति संख्या ८ । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३७७ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१३७७. भक्तामर स्तोत्र वृत्ति- X । देशी कागज । पत्र संख्या-२७ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४०० । रचनाकाल- X । लिपिकाल-चैत्र कृष्णा ८, सं० १८६६ ।

विशेष-ग्रन्थ की लिपि भीषाल में की गई ।

१३७८. भक्तामर स्तोत्र (सटीक)-नथमल श्रीर लालचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या-४३ । आकार- $११\frac{३}{४}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत व हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२२६६ । टीकाकाल-ज्येष्ठ शुक्ला १०, बुधवार, सं० १८२६ । लिपिकाल-पौष कृष्णा ११, मंगलवार, सं० १८५० ।

टिप्पणी-रायमल्लजी की टीका को देख करके हिन्दी टीका की गई प्रतीत होती है ।

१३७९. भक्तामर भाषा-पं० हेमराज । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१६६० । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१३८०. भक्तामर स्तोत्र वृत्ति-मानतुंगाचार्य । वृत्तिहार-रत्नचन्द्र मुनि । देशी कागज । पत्र संख्या-३१ । आकार- $११'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५६६ । टीकाकाल-आषाढ़ शुक्ला ५, बुधवार, सं० १६६७ । लिपिकाल-चैत्र कृष्णा ८, रविवार, सं० १७११ ।

१३८१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३३ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३८७ । रचनाकाल- X । टीकाकाल-आषाढ़ शुक्ला ५, बुधवार, सं० १६६७ । लिपिकाल-पौष शुक्ला १, सं० १७७० ।

१३८२. भक्तामर (सटीक)-मानतुंगाचार्य । टीका- X । देशी कागज । पत्र संख्या-१५ । आकार- $११'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७१४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१३८३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $१०'' \times ४''$ । दशा-जीर्णक्षीण । अपूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६८६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

नोट-ग्रन्थ की केवल ३२ श्लोकों में ही समाप्ति की गई है ।

१३८४. भक्तामर स्तोत्र (सटीक)-मानतुंगाचार्य । टीका-अमरप्रभ सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१६८६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१३८५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६६५ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१३८६. भक्तामर तथा सिद्धप्रिय स्तोत्र- X । देशी कागज । पत्र संख्या-१० ।

आकार- $६\frac{1}{2}'' \times ४\frac{1}{8}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४३६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१३८७. भारती स्तोत्र—शंकराचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $१२\frac{1}{2}'' \times ५\frac{3}{8}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२५१६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१३८८. भुवनेश्वरी स्तोत्र—पृथ्वीधराचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $११\frac{3}{8}'' \times ५\frac{3}{8}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२५१० । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१३८९. भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र—पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $१०\frac{3}{8}'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२८०० । रचनाकाल- X । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा २, सं० १७०४ ।

विशेष—इसी ग्रन्थ में वादिराज कृत एकीभाव स्तोत्र तथा अकलंकाष्टक भी है ।

१३९०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $१०'' \times ४\frac{1}{8}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०२६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा ६, सं० १६७५ ।

१३९१. भूपाल चतुर्विंशतिस्तोत्र (सटीक)—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार- $१२\frac{1}{2}'' \times ५\frac{3}{8}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१६६३ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-चैत्र कृष्णा ५, बृहस्पतिवार, सं० १७६६ ।

१३९२. मंगलपाठ—X । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $१०'' \times ४\frac{3}{8}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६०४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१३९३. महर्षि स्तवन—पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $१०\frac{1}{2}'' \times ४\frac{3}{8}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२०३२ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१३९४. महालक्ष्मी कवच—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $६\frac{3}{8}'' \times ५\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१६०३ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१३९५. महालक्ष्मी स्तोत्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार- $८\frac{1}{2}'' \times ४''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१७३८ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१३९६. महिम्नस्तोत्र (सटीक)—अमोघ पुष्पदन्त । टीका-ललिताशंकर । देशी कागज । पत्र संख्या-१७ । आकार- $१२'' \times ५\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१७२७ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-सं० १७६६ ।

१३६७. महिम्नस्तोत्र—अमोघ पुष्पदन्त । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार— $5\frac{3}{4}'' \times 4''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—१३०६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा २, सं० १८५८ ।

१३६८. मुक्तावली पूजा—X । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार— $10'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संख्या—२४०७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१३६९. यमाष्टकस्तोत्र सटीक —X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार— $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२०१६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१४००. रत्नत्रय पूजा— । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार— $11'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संख्या—१६३३ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—आषाढ़ कृष्णा ७, सं० १८२६ ।

१४०१. रत्नत्रय पूजा—X । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार— $11'' \times 4''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संख्या—२२५५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१४०२. रामचन्द्र स्तवन—सनतकुमार । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार— $10'' \times 4''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२०६७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

अन्तभाग —

श्रीसनतकुमारसंहितायां नारदोक्तं श्रीरामचन्द्रस्तवनगतं संयूयम् ॥

विशेष—यह वैष्णव ग्रन्थ है ।

१४०३. लघु प्रतिक्रमण—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । आकार— $11'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—प्राकृत और संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संख्या—२४३४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१४०४. लघु नान्ति पाठ—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार— $11\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६४२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६०७ । टीकाकाल-सं० १३६७ । लिपिकाल-वैशाख शुक्ला १५, सं० १६२२ ।

१४०७. लघुस्वयंभू स्तोत्र—देवनंदि । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३८३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-आषाढ शुक्ला ४, सं० १७१४ ।

१४०८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $११\frac{१}{२}'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा-अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७४६ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-सं० १८२० ।

१४०९. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६७३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

१४१०. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४३८ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-फाल्गुन कृष्णा १४, सोमवार, सं० १८३८ ।

१४११. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $१२'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०६२ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-चैत्र कृष्णा ४, सं० १८१७ ।

१४१२. लघु स्वयंभू स्तोत्र (सटीक)—देवनंदि । टीका— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $११\frac{३}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१७४७ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा ९, बृहस्पतिवार, सं० १८२० ।

१४१३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५७५ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

१४१४. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $९'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५३७ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-चैत्र कृष्णा ८, सं० १८२७ ।

१४१५. लब्धिविधान पूजा—ब्र० हर्षकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२६५८ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-वैशाख कृष्णा १३, सं० १६४३ ।

१४१६. वर्द्धमान जिन स्तवन— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $७\frac{१}{२}'' \times ३''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२८१२ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

१४१७. वर्द्धमान जिन स्तवन (सटीक)—पं० कनककुशल गणि । देशी कागज । पत्र

संख्या-१ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी ।
ग्रन्थ संख्या-२५६४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-सं० १६५३ ।

१४१८. वन्देतान की जयमाल—माघनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या-२ ।
आकार- $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र ।
ग्रन्थ संख्या-२१३५ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-पौष शुक्ला १०, बृहस्पतिवार, सं० १६८२ ।

विशेष—सं० १६८३ वैशाख कृष्णा ९, को ब्रह्मगोपाल ने शोधित किया है ।

१४१९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ ।
दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३६५ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४२०. बृहतप्रतिक्रमण (सार्थ) — X । देशी कागज । पत्र संख्या-४५ । आकार- $१३'' \times ६''$ ।
दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा ।
ग्रन्थ संख्या-२७५४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-आषाढ कृष्णा ३, रविवार, सं० १८५८ ।

१४२१. बृहतशान्ति पाठ — X । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $९\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ ।
दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२५५८ ।
रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४२२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४''\frac{१}{४}$ ।
दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५५९ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४२३. बृहदस्वयंभू स्तोत्र (सटीक) — समन्तभद्राचार्य । टीकाकार—प्रभाचन्द्राचार्य ।
देशी कागज । पत्र संख्या-१३८ । आकार- $१२\frac{३}{४}'' \times ६\frac{१}{४}''$ । दशा-अति जीर्णक्षीण । पूर्ण ।
भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१३४३ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-
फाल्गुन कृष्णा ५, रविवार, सं० १७८८ ।

१४२४. बृहदपोडपकारण पूजा — X । देशी कागज । पत्र संख्या-२८ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ ।
दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ
संख्या-२६३१ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४२५. बृहत्प्रतिक्रमण — X । देशी कागज । पत्र संख्या-६१ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ ।
दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ
संख्या-११५१ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-पौष शुक्ला ८, बृहस्पतिवार, सं० १४९८ ।

१४२६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ ।
दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४५३ । रचनाकाल- X ।
लिपिकाल- X ।

१४२७. विधान व कथा संग्रह — X । देशी कागज । पत्र संख्या-१६६ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ५''$ ।
दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत, अपभ्रंश और संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-
वृत्त, विधान एवं कथा । ग्रन्थ संख्या-१०२६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४२८. विनती संग्रह—पं० भूधरदासजी । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $६\frac{१}{२}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ सं० २७५८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१४२९. विमलनाथ स्तवन—विनीत सागर । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $६\frac{१}{२}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । संख्या-२७८६ । रचनाकाल-अश्विन शुक्ला ९, सं० १७८८ । लिपिकाल—X ।

विशेष—इस ग्रन्थ में पार्श्वनाथ, आदीश्वर, चौबीस तीर्थंकर, सम्मेद शिखरजी, मासा आदि सिद्धचक्र स्तवन भी है ।

१४३०. विषापहार स्तोत्र—धनंजय । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $६\frac{१}{२}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ सं० १८७५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल-फाल्गुन कृष्णा १०, सं० १८७० ।

१४३१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७९७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१४३२. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७२७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला १, सं० १६८२ ।

१४३३. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $१०'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०४१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१४३४. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $१०'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०२५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१४३५. विषापहार स्तोत्रादि टीका—X । टीकाकार-नागचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-२४ । आकार- $६\frac{१}{२}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१००४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

नोट—श्री पं० मोहन ने स्वात्मपठनार्थ लिपि की है । इस ग्रन्थ में श्री देवनांदि कृत सिद्धप्रियै व वादिराज उपनाम वर्द्धमान भूनीश्वर रचित एकीभाव स्तोत्र तथा महापण्डित आशाधर कृत “जिनस्तुति” और अन्त में श्री धनंजय कृत विषापहार आदि स्तोत्रों की टीका नागचन्द्र सूरि ने इसमें की है ।

आदिभाग—

वंदित्वा सद्गुरुन् पंचज्ञानभूषणहेतवः

व्याख्या विषापहारस्य नागचन्द्रेण कथ्यते ॥१॥

अन्तभाग—

इयमर्हन्मतक्षीरपारावारपार्वणशशांकस्थ मूलसंधदेशीगण पुस्तकगच्छप-
नशोकावलीतिलकालंकारस्य तोलवदेशविदेश पवित्रीकरण प्रवण श्रीमल्ललितकीर्तिभ-

ट्टारकस्याग्रणिष्य गुणवद्राण्योपरा—सकलणास्त्राध्ययन प्रतिष्ठायात्राद्युपदेशानून
धर्मप्रभावनाद्युरीण — देवचन्द्रमूनीन्द्रचरणनखकिरण चन्द्रिका — चकोरायमाणेन
करणाय विप्रकुलोत्तरा श्रीवत्सगोत्रपवित्र पार्श्वनाथं गुमटागवातद्वजेन प्रवादिग—
जकेणरिणा नागचन्द्रमूरिणा विपापहारस्तोत्रस्य कृतव्याख्या कल्पान्तं तत्त्वबोधायेति
भद्रम् । इति विपापहारस्तोत्र—टीका समाप्त ।

१४३६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२३ । आकार—१०"×४" ।
दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१२६६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—भाद्रपद शुक्ला १२,
सं० १८६८ ।

१४३७. विपापहार विलाप स्तवन—वादिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या—२ ।
आकार—९ $\frac{३}{४}$ "×४ $\frac{३}{४}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र ।
ग्रन्थ संख्या—२००७ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१४३८. शनि, गौतम और पार्श्वनाथ स्तवन—संग्रह—× । देशी कागज । पत्र संख्या—२ ।
आकार—८ $\frac{१}{४}$ "×४ $\frac{१}{४}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी और संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—
स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या २३१८ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—आषाढ शुक्ला १२, सं० १८६२ ।

टिप्पणी—शनि स्तवन वि० सं० १८६२ आषाढ शुक्ला ११, को लिखा गया । गौतम
स्तवन के कर्ता लालूराम हैं । पार्श्वनाथ स्तोत्र के कर्ता श्री समयसुन्दर हैं ।

१४३९. शनिश्चर स्तोत्र—दशरथ । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार—८ $\frac{३}{४}$ "×
४ $\frac{१}{४}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—
२७६८ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१४४०. शारदा स्तवन—हीर । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—१०"×
४ $\frac{१}{४}$ " । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—
१४४५ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१४४१. शिव पच्चीसी व ध्यान वत्तीसी—वनारसीदास । देशी कागज । पत्र संख्या—
६ । आकार—१०"×४ $\frac{१}{४}$ " । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—
१९३५ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१४४२. शिव स्तोत्र— × । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । आकार—८"×४ $\frac{१}{४}$ " ।
दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—१९२४ । रचना-
काल— × । लिपिकाल—पौष शुक्ला ११, सं० १८६० ।

१४४३. शीतलाष्टक— × । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—११"×४ $\frac{३}{४}$ " ।
दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—१५५४ ।
रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

नोट—नवग्रह मंत्र तथा शीतला देवी स्तोत्र है ।

१४४४. शोभन स्तोत्र—केशरलाल । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२४३६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४४५. षोडशकारण जयमाल—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार- $१२\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश और संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२३८४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४४६. षोडशकारण पूजा—X । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२४१० । रचनाकाल- X । लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला ५, सं० १७०६ ।

१४४७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७२६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४४८. सन्ध्या वन्दन —X । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ६\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१६४७ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४४९. समन्तभद्र स्तोत्र —X । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । आकार- $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२७५६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-भाद्रपद कृष्णा १४, सं० १६७६ ।

१४५०. समवशरण स्तोत्र—विष्णु शोभन (सेन) । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२३५१ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

टिप्पणी—श्वेताम्बर आम्नायानुसार वर्णन है ।

१४५१. समवशरण स्तोत्र—धनदेव । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२६५६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला ११, रविवार, सं० १६४८ ।

१४५२. समाधि शतक—पूज्यपाद स्वामी । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अनिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६६२ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४५३. सम्मेद शिखरजी पूजा—मंतदेव । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $११'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१५०६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४५४. सम्मेद शिखर पूजा—X । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $६'' \times$

४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संख्या—२५५४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१४५५. सम्मेद शिखर महात्म्य—धर्मदास क्षुल्लक । देशी कागज । पत्र संख्या—८ । आकार—६ $\frac{3}{4}$ " × ६ $\frac{3}{4}$ " । दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (गद्य पद्य मिश्रित) । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६३६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—पौष शुक्ला ११, सं० १६४२ ।

१४५६. सम्मेद शिखर विधान—हीरालाल । देशी कागज । पत्र संख्या—१८ । आकार—६" × ४" । दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८७३ । रचनाकाल—वैशाख कृष्णा ६, शुक्रवार, सं० १६८१ । लिपिकाल—X ।

१४५७. सरस्वती स्तोत्र—पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार—१०" × ५" । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२१४८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१४५८. सरस्वती स्तोत्र (सार्थ)—X । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार—११" × ४ $\frac{3}{4}$ " । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२०८८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१४५९. सरस्वती स्तोत्र—पं० बनारसीदास । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—११" × ४ $\frac{3}{4}$ " । दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२६२६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१४६०. सरस्वती स्तोत्र—बृहस्पति । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—१०" × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२०३५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

टिप्पणी—सरस्वती का रंगीन चित्र है, जिसमें सरस्वती हंस पर बैठी हुई है । इसको पं० भाग्य गगुद्र के पठन के लिए लिखा गया बताया गया है ।

१४६१. सरस्वती स्तोत्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार—८ $\frac{1}{2}$ " × ४" । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२८१७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१४६२. सरस्वती स्तोत्र—श्री ब्रह्मा । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार—१० $\frac{3}{4}$ " × ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८१६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१४६३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार—६" × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१०२३ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—मंगसिर शुक्ला १३, शनिवार, सं० १६०६ ।

१४६४. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार—११ $\frac{1}{2}$ " × ६ $\frac{1}{2}$ " । दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१८२८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—सं० १६४८ ।

१४६५. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या- २ । आकार- $६\frac{३}{४}'' \times ६\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६१६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४६६. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $८\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६४३ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४६७. सरस्वती स्तोत्र—विष्णु । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $६'' \times ३\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१८४० । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४६८. सरस्वती स्तोत्र—नागचन्द्र मुनि । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $६'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१६१५ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४६९. सर्वतीर्थमाला स्तोत्र— X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२१४३ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४७०. सहस्र नाम स्तोत्र—पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२३६४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४७१. सहस्र नाम स्तवन—जिनसेनाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-१७ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०३० । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४७२. स्तम्भन पार्श्वनाथ स्तोत्र—नयचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $६\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८६३ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४७३. स्तोत्र संग्रह—संग्रहीत । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२४५८ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

टिप्पणी—चतुर्विंशति स्तोत्र, चन्द्रप्रभ स्तोत्र, चौबीस जिन स्तोत्र, पार्श्वनाथ स्तोत्र, शान्ति जिन स्तोत्र, महावीर स्तोत्र और घण्टा कर्ण मंत्रादि हैं ।

१४७४. स्वर्णकर्षण भैरव पद्धति विधि व स्तोत्र— X । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६०५ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-द्वितीय फाल्गुन कृष्णा ६, सं० १६२२ ।

१४७५. साधु वन्दना—बनारसीदास । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $८\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५०३ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४७६. साधु वन्दना—पार्श्वचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $१०'' \times ३\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२०१४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-वैशाख कृष्ण १, सं० १७७६ ।

विशेष—अन्तिम पत्र पर वर्तमान काल के २४ तीर्थंकरों के नाम तथा सोलह सतीयों के नाम भी हैं ।

१४७७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७३३ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४७८. साधु वन्दना—समयसुन्दर गणि । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । (१८वां पत्र नहीं है) । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-अतिजीर्णक्षीण । अपूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२५३० । रचनाकाल-चैत्र मास सं० १६६७ में अहमदाबाद में । लिपिकाल- X ।

१४७९. साधारण जिनस्तवन (सटीक)—जयनन्द सूरि । टीकाकार—पं० कनक कुशल गणि । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२५६३ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

टिप्पणी—ग्रन्थ की रचना इन्द्रवज्रा छन्द में की गई है ।

१४८०. सामयिक पाठ—X । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११५२ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला ५, सं० १६७६ ।

१४८१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३८१ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४८२. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-२६ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ४''$ । दशा-अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३४७ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४८३. सामयिक पाठ— । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार- $११'' \times ५''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२४३० । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४८४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७५३ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४८५. सामयिक पाठ—X । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार- $१२\frac{३}{४}'' \times ६''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२०८० । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४८६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०५४ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१४८७. सामायिक पाठ सटिक— × । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $१२'' \times ६''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२७७४ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-सं० १७३६ ।

१४८८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२८१८ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१४८९. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । आकार- $१२\frac{१}{४}'' \times ६''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१२१ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१४९०. सामयिक पाठ (सटीक)—× । टीका—× । देशी कागज । पत्र संख्या-४२ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७७६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१४९१. सामायिक पाठ तथा तीन चौबीस नाम—× । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६५२ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१४९२. सिद्धचक्र पूजा—शुभचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-४५ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५८४ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१४९३. सिद्धचक्र पूजा—श्रुतसागर सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-१५ । आकार- $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२०३८ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१४९४. सिद्धचक्र पूजा—पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२३६७ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१४९५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $६\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२२४४ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-मंगसिर कृष्णा ६, सं० १८८६ ।

१४९६. सिद्धप्रिय स्तोत्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $९\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१५६० । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१४९७. सिद्ध प्रिय स्तोत्र (सटीक)—देवनन्दि । टीकाकार—सहस्रकीर्ति । पत्र

संख्या-१४ । आकार- $5\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६६५ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४६८. सिद्ध सारस्वत मन्त्र गभित स्तोत्र—अनुभूति स्वरूपाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $10\frac{3}{8}'' \times 5\frac{1}{8}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१८२२ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१४६९. सिद्धान्त बिन्दु स्तोत्र—शंकराचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $10\frac{1}{8}'' \times 4\frac{3}{8}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१६४६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१५००. सूर्योदय स्तोत्र—पं० कृष्ण ऋषि । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $5\frac{1}{8}'' \times 3\frac{3}{8}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१८३४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-वैशाख शुक्ला ५, सं० १८११ ।

१५०१. शृंगला वद्ध श्री जिन चतुर्विंशति स्तोत्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $6\frac{1}{8}'' \times 4\frac{3}{8}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१६५० । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१५०२. श्रावक प्रतिक्रमण—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $10\frac{1}{8}'' \times 6\frac{1}{8}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६०० । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१५०३. श्रीपाल स्तोत्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $11\frac{1}{8}'' \times 4\frac{3}{8}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१४७२ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१५०४. श्रुत स्कन्ध पूजन भाषा—हेमचन्द्र ब्रह्मचारी । भाषाकार—पं० विरधी चन्द । देशी कागज । पत्र संख्या-१५ । दशा-अच्छी । आकार- $12\frac{1}{2}'' \times 5\frac{1}{2}''$ । पूर्ण । भाषा-संस्कृत व हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२६६६ । भाषाकाल-फाल्गुन कृष्णा ५, सोमवार, सं० १६०५ । लिपिकाल- X ।

१५०५. क्षेत्रपाल पूजा—शान्तिदास । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $10'' \times 4\frac{3}{8}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२३६६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१५०६. प्राताष्टक—X । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- $6\frac{1}{8}'' \times 4\frac{1}{8}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४६० । रचनाकाल- X । लिपिकाल-परिवर्तन पुनः १३, सं० १७०६ ।

१५०७. ज्ञानाकुंश स्तोत्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार—६ $\frac{3}{4}$ "X ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत एवं हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२४८६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

विशेष—ग्रन्थ के अन्त में पं० दानतरायजी कृत पार्श्वनाथ स्तोत्र है ।

विषय—मन्त्र एवं यन्त्र

१५०८. अनादि मूल मन्त्र × । देशी कागज । पत्र संख्या -१ । आकार-६" × २ $\frac{1}{2}$ " ।
दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-मन्त्र शास्त्र । ग्रन्थ संख्या-१३२६ ।
रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१५०९. अर्घ काण्ड यन्त्र-× । वस्त्र पर । पत्र संख्या-१ । आकार- २६" × २६"
दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत व संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय यन्त्र । ग्रन्थ संख्या-२८११ ।
रचनाकाल-× ।

१५१०. उच्छिष्ट गणपति पद्धति —× । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार—
१०" × ५ $\frac{3}{4}$ " । दशा अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-मन्त्र शास्त्र । ग्रन्थ
संख्या-१८८५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ३ सं० १९२२ ।

१५११. ऋषि मण्डल यन्त्र —× । वस्त्र पर । पत्र संख्या-१ । आकार-१२ $\frac{3}{4}$ " ×
१२ $\frac{3}{4}$ " । दशा-अच्छी । अपूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-यन्त्र । रचनाकाल-× ।

विशेष—वस्त्र पर यन्त्र के पुरे कोठे भरे हुए नहीं हैं ।

१५१२. ऋषि मण्डल यन्त्र—× । वस्त्र पर । पत्र संख्या-१ । आकार-२१" × २१"
दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-यन्त्र । ग्रन्थ संख्या-२२०७ । रचना
काल-× ।

टिप्पणी—वस्त्र कट जाने से छिद्र हो गये हैं ।

१५१३. ऋषि मण्डल व पार्श्वनाथ चिन्तामणि बड़ा यन्त्र—× । वस्त्र पर । पत्र
संख्या-१ । आकार-४३ $\frac{1}{2}$ " × २१ $\frac{1}{2}$ " । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी ।
विषय-यन्त्र । ग्रन्थ संख्या-२२२३ । रचनाकाल-× ।

टिप्पणी—ऋषि मण्डल व चिन्तामणि दोनों यन्त्र एक ही कपड़े पर बने हुए हैं ।

१५१४. कर्म दहन मण्डल यन्त्र —× । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार—
२२" × १८ $\frac{1}{2}$ " । दशा-अच्छी । अपूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-यन्त्र । ग्रन्थ
संख्या-२२१० । रचनाकाल-अश्विन शुक्ला १, मंगलवार, सं० १८४५, महाराष्ट्र नगर में रचना
की गई ।

विशेष—कागज पर यन्त्र बनाकर कपड़े पर न फटने के लिए चिपका दिया गया है ।

१५१५. कलश स्थापना मन्त्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार—
११" × ५" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-मन्त्र शास्त्र । ग्रन्थ
संख्या-२७८२ । रचनाकाल—× । लिपिकाल-× ।

१५१६. गणधर वलय यन्त्र—× । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । आकार— $१३\frac{१}{२}'' \times १३\frac{१}{२}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२०४ । रचनाकाल—भाद्रपद शुक्ला १५, बृहस्पतिवार सं० १७८६ ।

१५१७. गाथा यन्त्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—प्राकृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२४२६ । रचना काल—× । लिपिकाल—× ।

१५१८. गुण स्थान चरचा—× । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । आकार— $२४\frac{१}{२}'' \times १५\frac{१}{२}''$ । दशा—सुन्दर । पूर्ण । भाषा—प्राकृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२२२५ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

विशेष—कपड़े पर गुण स्थानों का पूर्ण विवरण दिया गया है ।

१५१९. चिन्तामणि पार्श्वनाथ यन्त्र—× । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । आकार— $१८'' \times १८''$ । दशा—सुन्दर । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२१७ । रचनाकाल—× ।

विशेष—कपड़े पर चिन्तामणि पार्श्वनाथ का रंगीन यन्त्र है ।

१५२०. ज्वालामालिनी यन्त्र—× । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । आकार— $१७\frac{१}{२}'' \times १७\frac{१}{२}''$ । दशा—सुन्दर । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२१८ । रचनाकाल—× ।

१५२१. दशलक्षण धर्म यन्त्र—× । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । आकार— $६\frac{१}{२}'' \times ६\frac{१}{२}''$ । दशा—सुन्दर । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२३० । रचना—काल—भाद्रपद शुक्ला ६, सं० १६१८ ।

विशेष—वस्त्र पर दशलक्षण धर्म यन्त्र बना हुआ है ।

१५२२. ध्यानावस्था विचार यन्त्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $२४\frac{३}{४}'' \times २४\frac{३}{४}''$ । दशा—सुन्दर । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२२६ । रचनाकाल—× ।

टिप्पणी—इस यन्त्र में माला फेरते समय ध्यानावस्था के विचारों को बताया गया है । इसी यन्त्र में रत्न त्रय के तीन कोठे हैं, दूसरे चक्र में दशलक्षण धर्मों का वर्णन, तीसरे में चौबीस तीर्थङ्करों के तथा अन्तिम वलय में १०८ खाने हैं । उनमें कृत, कारित, अनुमोदना पूर्वक क्रोध, मान, माया और लोभ के त्याग का ध्यानावस्था में विचार करने का वर्णन है ।

१५२३. नवकार महामन्त्र कल्प—× । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $१०'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—मन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२८३६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१५२४. नवकार रास—जिनदास श्रावक । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $१\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—मन्त्र । ग्रन्थ संख्या—१७५४ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१५२५. पद्मावती देवी यन्त्र— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $२१\frac{१}{२}'' \times १६''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२३७ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१५२६. परमेष्ठी यन्त्र— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—मन्त्र । ग्रन्थ संख्या—१४६७ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१५२७. पंच परमेष्ठीमण्डल यन्त्र— $\times$ । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । आकार— $२१\frac{१}{२}'' \times १८\frac{१}{२}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२०६ । रचनाकाल—अश्विन शुक्ला १, मंगलवार सं० १८४५ ।

१५२८. भैरव पताका यन्त्र— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $२५'' \times २०\frac{१}{२}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२३६ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१५२९. भैरव पद्मावती कल्प—मल्लिकार्जुन सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—३६ । आकार— $११\frac{१}{२}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२७५२ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१५३०. घृहपोड्य कारण यन्त्र— $\times$ । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । आकार— $२६\frac{१}{२}'' \times २६\frac{१}{२}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२१४ । रचनाकाल— $\times$ ।

१५३४. शान्ति चक्र मण्डल—× । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । आकार—६ $\frac{3}{4}$ " × ८ $\frac{3}{4}$ " । दशा—सुन्दर । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२२७ । रचना-काल— × । लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्ण २, सं० १८०१ ।

१५३५. शिवार्चन चन्द्रिका—श्रीनिवास भट्ट । देशी कागज । पत्र संख्या ४ । आकार—११" × ५" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—मन्त्र शास्त्र । ग्रन्थ संख्या—१८८७ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१५३६. षट्कोण यन्त्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—७" × ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा—अच्छी । अपूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२३४ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

नोट—कपड़े पर षट्कोण का अपूर्ण यन्त्र बना हुआ है ।

१५३७. सम्यक चरित्र यन्त्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—६" × ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२३३ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१५३८. सम्यग्दर्शन यन्त्र—× । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । आकार—५ $\frac{1}{2}$ " × ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२३२ । रचना-काल— × ।

१५३९. सम्यग्दर्शन यन्त्र—× । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । आकार—५ $\frac{1}{2}$ " × ५" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२३१ । रचनाकाल— × ।

१५४०. स्वर्णकिर्षण भैरव—× । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार—१०" × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—मन्त्र शास्त्र । ग्रन्थ संख्या—१६०४ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला ३, सं० १६२३ ।

१५४१. हमल वर्ज यन्त्र—× । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । आकार—१८" × १७" । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२२२ । रचनाकाल— × ।

विशेष—यह यन्त्र श्वेताम्बराम्नायानुसार है । यन्त्र में सुनहरी काम है, वह अति सुन्दर लगता है ।

योग शास्त्र

१५४२. योग शास्त्र—हेमचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-४८ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-योग । ग्रन्थ संख्या-१६७० । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला १४, सं० १६६०

१५४३. योगसार संग्रह— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-३५ । आकार- $११'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-योग । ग्रन्थ संख्या-१५६३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

१५४४. योगसाधनविधि (सटीक)— गोरखनाथ । टीकाकार—रूपनाथ ज्योतिषी । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । आकार- $११'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-योग । ग्रन्थ संख्या-१७२२ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

१५४५. योग ज्ञान — $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-योग । ग्रन्थ संख्या-१४२३ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

१५४६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०५७ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

१५४७. हठ प्रदीपिका आत्माराम योगीन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-१५ । आकार- $९\frac{३}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-योग । ग्रन्थ संख्या-१६४० । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला १, सं० १८८० ।

१५४८. ज्ञान तरंगिणी-मुमुक्षु भट्टारक ज्ञानभूषण । देशी कागज । पत्र संख्या-२७ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८१७ । रचनाकाल-सं० १५६० । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला १२, सं० १८१८ ।

१५४९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२८ । आकार- $९\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२७५ । रचनाकाल-सं० १५६० । लिपिकाल-सं० १८५० ।

१५५०. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१७ । आकार- $११\frac{३}{४}'' \times ५''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४४१ । रचनाकाल-सं० १५६० । लिपिकाल-माघ शुक्ला १२, सं० १७६२

१५५१. ज्ञानार्णव--शुनचन्द्रदेव । देशी कागज । पत्र संख्या-१४३ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-प्रतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-

१२०५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा ११, सोमवार, सं० १५०७ ।

टिप्पणी—पन्ने परस्पर चिपके हुए हैं ।

१५५२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—६८ । आकार—११" × ४^३/_४" । दशा—प्रति जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११४७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—ज्येष्ठ बुदी ३, शनिवार, सं० १५२३ ।

१५५३. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—२५१ । आकार—१०^३/_४" × ६^३/_४" । दशा—सामान्य । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१२६७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला १, बृहस्पतिवार, सं० १८४३ ।

१५५४. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—१३७ । आकार—१०^३/_४" × ५" । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२७६२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—माघ कृष्णा ४, सं० १६१२ ।

१५५५. ज्ञानार्णव गद्यटीका—श्रुतसागर । देशी कागज । पत्र संख्या—११ । आकार—६^३/_४" × ४^३/_४" । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२७६५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—आषाढ कृष्णा १, शनिवार, सं० १७८० ।

१५५६. ज्ञानार्णव तत्व प्रकरण—X । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार—११" × ५" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६६५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

विशेष—श्री शुभचन्द्राचार्य कृत ज्ञानार्णव के आधार पर हिन्दी में तत्व प्रकरण को लिखा गया है ।

१५५७. ज्ञानार्णव तत्व प्रकरण—X । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार—११^३/_४" × ४^३/_४" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२१५२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१५५८. ज्ञानार्णव वचनिका—पं० जयचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या—२७१ । आकार—११" × ७^३/_४" । दशा—बहुत अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत टीका हिन्दी में । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८०० । रचनाकाल—माघ शुक्ला ५, सं० १८६६ । लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा ८, सं० १८७५ ।

विशेष—वचनिकाकार की विस्तृत प्रशस्ति है ।

१५५९. ज्ञानार्णव वचनिका—शुभचन्द्राचार्य । टीकाकार—पं० जयचन्द छाबड़ा । देशी कागज । पत्र संख्या—२ से ४० (प्रथम पत्र नहीं है) । आकार—१३^३/_४" × ५^३/_४" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । पूर्ण । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२८५३ । रचनाकाल—X ।

व्याकरण शास्त्र

१५६१. अनिट कारिका—× । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-११"×४^१/_२" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-व्याकरण । ग्रन्थ संख्या-१४८७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१५६२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार-१०"×४" । दशा-अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१४८८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१५६३. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार-८^३/_४"×४" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१४८९ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१५६४. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-१०^१/_४"×४^१/_४" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१५० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१५६५. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-१०^३/_४"×४^१/_२" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६२८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला १३, सं० १७१३ ।

१५६६. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-११"×४^३/_४" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६३३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१५६७. अनिट कारिका (सार्थ)—× । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-११"×५" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२७६७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१५६८. अनिट सेट कारकण्टी—× । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-१०^१/_२"×४^३/_४" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२००६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१५६९. अव्यय तथा उपसर्गार्थ—× । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार-११^३/_४"×५^१/_४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-व्याकरण । ग्रन्थ संख्या-१६६४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१५७०. अव्यय दीपिका—× । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार-१२"×६" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३०६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १८२३ ।

१५७१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार-६^३/_४"×४^३/_४" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०८६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा १०, सं० १८२१ ।

१५७२. अव्यय दीपिका वृत्ति—X । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२००८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१५७३. उपसर्ग शब्द—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $१२'' \times ६''$ । दशा—सुन्दर । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—व्याकरण । ग्रन्थ संख्या—१८८२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—सं० १६१४ ।

१५७४. कातन्त्र रूपमाला—शिव वर्मा । देशी कागज । पत्र संख्या—१०५ । आकार— $१२'' \times ५''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६८२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१५७५. कातन्त्र रूपमाला वृत्ति—भावसेन । देशी कागज । पत्र संख्या—६८ । आकार— $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२३७८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१५७६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१२८ । आकार— $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२३७२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१५७७. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—२२ । आकार— $६\frac{३}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२६६२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा ७, सोमवार, सं० १५२४ ।

१५७८. कारक परीक्षा—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१५ । आकार— $११\frac{१}{४}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८३१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१५७९. कारक विवरण—X । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार— $८\frac{३}{४}'' \times ४''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१७४० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा ४, सं० १८७३ ।

१५८०. क्रिया कलाप—विजयानन्द । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार— $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१४५५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—सं० १७८४ ।

१५८१. धातु पाठ—हर्षकीर्ति सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—१४ । आकार— $११'' \times ५''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२७५० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१५८२. धातु पाठ—हेमसिंह खण्डेलवाल । देशी कागज । पत्र संख्या—१३ । आकार— $१०'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२०३१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

विशेष—कर्ता ने अपना पूर्ण परिचय दिया है । यह रचना सारस्वत मतानुसार है ।

१५८३. धातु रूपावली—X । देशी कागज । पत्र संख्या—२४ । आकार— $12\frac{3}{4}'' \times 5\frac{3}{4}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८०८ । रचना-काल—X । लिपिकाल—X ।

१५८४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—५४ । आकार— $11\frac{1}{2}'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११८७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१५८५. वद संहिता—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१० । आकार— $10\frac{1}{2}'' \times 4''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८३६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

नोट—परमहंस परिव्राजक अनुभूति स्वरूपाचार्य कृत सारस्वत प्रक्रिया के पद्यों का सरल हिन्दी में अनुवाद है ।

१५८६. पाणिनीय सूत्र परिभाषा—व्याडि । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार— $10'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२२५३ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा १, सं० १८४४ ।

१५८७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $8\frac{3}{4}'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२३१२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१५८८. पंच सन्धि शब्द X । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार— $8'' \times 4''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२११६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१५८९. प्रक्रिया कौमुदी—रामचन्द्राश्रम । देशी कागज । पत्र संख्या—१७२ । आकार— $12\frac{1}{2}'' \times 8\frac{3}{4}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६६७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

नोट—द्वितीया वृत्ति है ।

१५९०. प्रक्रिया कौमुदी—रामचन्द्राश्रम । देशी कागज । पत्र संख्या—५१ । आकार— $12\frac{1}{2}'' \times 8\frac{3}{4}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६६८ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—अश्विन शुक्ला १, सं० १६५४ ।

नोट—तृतीया वृत्ति है ।

१५९१. प्राकृत लक्षण—पं० चण्ड । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार— $10\frac{3}{4}'' \times 4''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—प्राकृत और संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१३३३ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१५९२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१४ । आकार— $11'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१४६२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१५९३. प्राकृत लक्षण विधान—कवि चण्ड । देशी कागज । पत्र संख्या—२० ।

आकार-१२ $\frac{१}{२}$ "×५ $\frac{१}{२}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, पैशाची, मागधी और सौरसेनी । लिपि-नागरी । विषय-व्याकरण । ग्रन्थ संख्या-१०४३ । रचना-काल-× । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला १२, सं० १७३२ ।

१५६४. लघु सारस्वत-कल्याण सरस्वती । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । आकार-६ $\frac{३}{४}$ "×४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-व्याकरण । ग्रन्थ संख्या-१६६० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-पोष कृष्ण २, सं० १८०७ ।

१५६५. लघु सिद्धान्त कौमुदी-पाणिनी ऋषिराज । देशी कागज । पत्र संख्या-६२ । आकार-१०"×४ $\frac{१}{२}$ " । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-व्याकरण । ग्रन्थ संख्या-११६७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१५६६. वाक्य प्रकाश सूत्र सटीक-दामोदर । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । आकार-१०"×४ $\frac{१}{२}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३१४ । रचनाकाल-सं० १६०७ । लिपिकाल-× ।

नोट-ग्रन्थाग्रन्थ संख्या ६३२ है ।

१५६७. वाक्य प्रकाशमिधस्य टीका-× । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-१०"×४ $\frac{१}{२}$ " । दशा-अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४७१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१५६८. शब्द बोध-× । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार-१० $\frac{१}{२}$ "×४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-व्याकरण । ग्रन्थ संख्या-१७६० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१५६९. शब्द भेद प्रकाश-महेश्वर कवि । देशी कागज । पत्र संख्या-१७ । आकार-१२"×५ $\frac{१}{२}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-व्याकरण । ग्रन्थ संख्या-१६८५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१६००. शब्द रूपावली-× । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । आकार-१२"×५ $\frac{३}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८०७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१६०१. प्रति संख्या-२ । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । आकार-१२"×५ $\frac{१}{२}$ " । दशा-सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२७४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-फाल्गुन कृष्ण १२ सं० १८८७ ।

१६०२. शब्द रूपावली-× । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-१८ $\frac{१}{२}$ "×५ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२०१७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१६०३. शब्द रूपावली (अकारान्त पुलिग शब्द)-× । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार-१० $\frac{१}{२}$ "×४ $\frac{१}{२}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-

२०१७ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१६०४. शब्द रूपावली— × । देशी कागज । पत्र संख्या—२६ । आकार— $5\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२११६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—माघ शुक्ला ६, सं० १८८३ ।

१६०५. शब्द समुच्चय—अमरचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार— $10\frac{1}{2} \times 8\frac{3}{4}$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२३३२ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१६०६. शब्द साधन — × । देशी कागज । पत्र संख्या—१० । आकार— $5\frac{1}{2} \times 8$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—व्याकरण । ग्रन्थ संख्या—१८५१ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—माघ शुक्ला ६, सं० १८८३ ।

१६०७. शब्दानुशासन वृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—५२ । आकार— $11\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ । दशा—अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१२६६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१६०८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार— $10\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ । दशा—अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१६७१ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

नोट—चतुर्थ अध्याय पर्यन्त है ।

१६०९. षट् कारक प्रक्रिया— । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार— $10 \times 8\frac{1}{2}$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२१२७ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—कार्तिक शुक्ला, ७ सं० १८२१ ।

१६१०. सन्धि अर्थ—पं० योगक । देशी कागज । पत्र संख्या—२० । आकार— 6×8 । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत व हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२१४७ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—पौष शुक्ला १, सं० १८१९ ।

१६११. सप्त सूत्र— × । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $7\frac{1}{2} \times 8$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—व्याकरण । ग्रन्थ संख्या—१४५० । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१६१२. समास चक्र— × । देशी कागज । पत्र संख्या—८ । आकार— $6\frac{1}{2} \times 8\frac{3}{4}$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६८५ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— सं० १९१७ ।

१६१३. समास प्रयोग पटल—वररुचि । । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार— $11\frac{1}{2} \times 8\frac{3}{4}$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—व्याकरण । ग्रन्थ संख्या—१९४५ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१६१४. समास प्रयोग पटल—पं० वररुचि । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $10\frac{1}{2} \times 8\frac{3}{4}$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—

२६५३। रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१६१५. सर्वधातु रूपावली— × । देशी कागज । पत्र संख्या—३० । आकार— $११\frac{३}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि नागरी । विषय—व्याकरण । ग्रन्थ संख्या—१२४२ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—अश्विन शुक्ला १४, सं० १८५५ ।

१६१६. सारस्वत दीपिका—अनुभूति स्वरूपाचार्य । टीकाकार—मेघरत्न । देशी कागज । पत्र संख्या—३०६ । आकार— $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—व्याकरण । ग्रन्थ संख्या—१०६५ । रचनाकाल— × । टीकाकाल—विक्रम सं० १५३६ । लिपिकाल— × ।

१६१७. सारस्वत धातु पाठ—हर्षकीर्ति सूरी । देशी कागज । पत्र संख्या—२० । आकार— $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—व्याकरण । ग्रन्थ संख्या—१३६६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला ३, सं० १७५८ ।

१६१८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । आकार— $१० \times ४\frac{१}{४}$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१०४ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा ८, शुक्रवार सं० १६५८ ।

नोट—ग्रन्थ की नागपुर के तपागच्छ में रचना हुई लिखा है ।

१६१९. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । आकार— $९\frac{१}{४} \times ४\frac{१}{४}$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१०० । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१६२०. सारस्वत प्रक्रिया पाठ—परमहंस परिव्राजक अनुभूति स्वरूपाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार— $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—व्याकरण । ग्रन्थ संख्या—१४८३ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१६२१. सारस्वत ऋजुप्रक्रिया—परमहंस परिव्राजक अनुभूति स्वरूपाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—९ । आकार— $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१९१६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१६२२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१० । आकार— $९'' \times ४''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६०८ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—माघ कृष्णा ८, सं० १७०३ ।

१६२३. सारस्वत प्रक्रिया—परिव्राजक अनुभूति स्वरूपाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—१०३ । आकार— $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६८८ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा ७, सं० १६४२ ।

१६२४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—७६ । आकार— $११\frac{३}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२४२५ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१६२५. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-५६ । आकार $१०'' \times ४''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६७३ । रचनाकाल-फाल्गुन शुक्ला १, बृहस्पतिवार सं० १७६० ।

१६२६. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-१०२ । आकार- $१०'' \times ४''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या- १५८८ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-आषाढ़ कृष्णा १४, सं० १७८६ ।

१६२७. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-२८ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११४८ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१६२८. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-८६ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ५''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१००६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- कतिक शुक्ला ३, बृहस्पतिवार सं० १५७६ ।

१६२९. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र संख्या-४१ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११४३ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१६३०. प्रति संख्या ८ । देशी कागज । पत्र संख्या-५६ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०६८ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१६३१. प्रति संख्या ९ । देशी कागज । पत्र संख्या-६१ । आकार- $११\frac{१}{४}'' \times ५''$ । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२६० । रचनाकाल- X । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ११, शुक्रवार सं० १८०५ ।

१६३२. प्रति संख्या १० । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३३० । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१६३३. प्रति संख्या ११ । देशी कागज । पत्र संख्या-४३ । आकार- $१०'' \times ५''$ । दशा-अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०६७ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

नोट —अनेक पत्र जीर्णक्षीण अवस्था में हैं । अनुभूति स्वरूपाचार्य का दूसरा नाम नरेन्द्रपुरीचरण है ।

१६३४. प्रति संख्या १२ । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार- $११\frac{३}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२२१ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१६३५. प्रति संख्या १३ । । देशी कागज । पत्र संख्या-४३ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११२६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

नोट—अनुभूति स्वरूपाचार्य का दूसरा नाम नरेन्द्रपुरीचरण है, उसी नाम से उल्लेख किया गया है ।

१६३६. प्रति संख्या १४ । टीकाकार—श्री मिश्र वासव । देशी कागज । पत्र संख्या—८३ । आकार- $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११८० । रचनाकाल- X । लिपिकाल-चैत्र कृष्णा ५, रविवार, सं० १६१५ ।

नोट—टीका का नाम बालबोधिनी टीका है ।

१६३७. प्रति संख्या १५ । देशी कागज । पत्र संख्या-५२ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ ।
दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१८७१ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-पौष कृष्ण ८, सोमवार
सं० १८४४ ।

१६३८. प्रति संख्या १६ । देशी कागज । पत्र संख्या-४७ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ ।
दशा-अच्छी । अपूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११५३ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

नोट—अन्तिम पत्र नहीं है ।

१६३९. प्रति संख्या १७ । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $११'' \times ४\frac{१}{२}''$ ।
दशा-अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३९३ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-सं०
१५४६ ।

१६४०. प्रति संख्या १८ । देशी कागज । पत्र संख्या-१०४ । आकार- $११\frac{१}{२}'' \times ४\frac{३}{४}''$ ।
दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४५० । रचनाकाल- X । लिपिकाल-माघ शुक्ल
७, सं० १६५७ ।

१६४१. प्रति संख्या १९ । देशी कागज । पत्र संख्या-५९ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ ।
दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४९४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१६४२. प्रति संख्या २० । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार- $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ ।
दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२८०६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

विशेष—केवल विसर्ग सन्धि है ।

१६४३. प्रति संख्या २१ । देशी कागज । पत्र संख्या-९ । आकार- $९\frac{१}{२}'' \times ४\frac{३}{४}''$ ।
दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६८६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१६४४. सारस्वत ऋजू प्रक्रिया—अनुसूति स्वरूपाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-
६ । आकार- $११\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-
नागरी । ग्रन्थ संख्या-२०७६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

विशेष—पं० उषा ने नागरी में लिपि किया ।

१६४५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार- $९'' \times ४\frac{१}{२}''$ ।
दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१३७ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

नोट—संज्ञा प्रकरण पर्यन्त ही है ।

१६४६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ ।
दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०२९ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-माघ कृष्ण २,
मंगलवार, सं० १७०३ ।

नोट—ग्रन्थ संज्ञा पर्यन्त ही है ।

१६४७. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-
अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३३० । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१६४८. सारस्वत व्याकरण (सटीक)—अनुभूति स्वरूपाचार्य । टीका—धर्मदेव । देशी कागज । पत्र संख्या—६५ । आकार— $11\frac{3}{4}" \times 4"$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१०५८ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—भाद्रपद शुक्ला १, वृहस्पतिवार, सं० १६०३ ।

१६४९. सारस्वत शब्दाधिकार— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—६१ । आकार— $11\frac{3}{4}" \times 3\frac{3}{4}"$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५६४ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—चैत्र कृष्णा ६, सं० १६८६ ।

१६५०. सिद्धान्त कौमुदी (सूत्र मात्र)— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—१७ । आकार— $11" \times 4\frac{1}{4}"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—व्याकरण । ग्रन्थ संख्या—१३०५ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१६५१. सिद्धान्त चन्द्रिका (केवल विसर्ग सन्धि)— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार— $11\frac{1}{2}" \times 4\frac{1}{4}"$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२२८८ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१६५२. सिद्धान्त चन्द्रिका सटीक—उद्भट्ट । देशी कागज । पत्र संख्या—१ से १० । आकार— $12" \times 4\frac{3}{4}"$ । दशा—अच्छी । अपूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२८५० । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१६५३. सिद्धान्त चन्द्रिका मूल—रामचन्द्राश्रम । देशी कागज । पत्र संख्या—२४ । आकार— $12\frac{1}{2}" \times 4\frac{3}{4}"$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८४६ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१६५४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—४८ । आकार— $15\frac{3}{4}" \times 6\frac{1}{4}"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१८७४ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—सं० १९६० ।

१६५५. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—५१ । आकार— $15\frac{3}{4}" \times 6\frac{1}{4}"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१८७८ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—मंगसिर शुक्ला ४, सोमवार सं० १९०६ ।

१६५६. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—२४ । आकार— $15\frac{3}{4}" \times 6\frac{1}{4}"$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१७३५ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

नोट—ग्रन्थ में केवल स्वर सन्धि प्रकरण है ।

१६५७. प्रति संख्या—५ । देशी कागज । पत्र संख्या—२५ । आकार— $10\frac{1}{2}" \times 6"$ । दशा—सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—११३९ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१६५८. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या—४० । आकार— $10\frac{1}{2}" \times 4\frac{1}{4}"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२२६४ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

नोट—चूरादिक प्रकरण से ग्रन्थ प्रारम्भ किया गया है ।

१६५९. सिद्धान्त चन्द्रिका—रामचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—१३० ।

आकार-१०"×४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२८०४ ।
रचनाकाल- × । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला ११, सं० १८०६ ।

१६६०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१२१ । आकार-१०"×४ $\frac{१}{४}$ " ।
दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७४० । रचनाकाल- × । लिपिकाल-पौष शुक्ला १३,
शुक्रवार सं० १७८४ ।

१६६१ सिद्धान्त चन्द्रिका वृत्ति—रामचन्द्राश्रमचार्य । वृत्तिकार-सदानन्द । देशी
कागज । पत्र संख्या-८० । आकार-९ $\frac{३}{४}$ "×४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा संस्कृत । लिपि-
नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०७१ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१६६२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१३२ । आकार-१०"×४ $\frac{१}{४}$ " ।
दशा-सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०५७ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१६६३. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-२४२ । आकार-११ $\frac{१}{४}$ "×५ $\frac{१}{४}$ " ।
दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०६२ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-श्रावण बुदी ८,
सं० १८६६ ।

१६६४. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-१३३ । आकार-१० $\frac{१}{४}$ "×४ $\frac{३}{४}$ " ।
दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११२१ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१६६५. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-६५ । आकार-१०"×४ $\frac{१}{४}$ " ।
दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११२० । रचनाकाल- × । लिपिकाल-पौष शुक्ला १४,
मंगलवार, सं० १८४० ।

१६६६. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-१०३ । आकार-११"×५ $\frac{१}{४}$ " ।
दशा-सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३१८ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१६६७. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र संख्या-११३ । आकार-११"×५ $\frac{१}{४}$ " ।
दशा-सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३२७ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१६६८. संस्कृत मंजरी—× । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-१०"×४ $\frac{१}{४}$ " ।
दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२१०८ । रचनाकाल- × ।
लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ६, सोमवार, सं० १८१६ ।

व्रत विधान साहित्य

१६६६. अणुव्रत रत्नप्रदीप—साहल सुवलरकण । देशी कागज । पत्र संख्या—१२४ । आकार— $११\frac{१}{२}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश । लिपि—नागरी । विषय—व्रत विधान । ग्रन्थ संख्या—१४११ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—भाद्रपद कृष्ण ६, शनिवार, सं० १५६६ ।

१६७०. अनन्त विधान कथा— × । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश । लिपि—नागरी । विषय—व्रत विधान । ग्रन्थ संख्या—१४३२ । रचनाकाल— × ।

१६७१. अष्टक सटीक—शुभचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—१८ । आकार— $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—प्राकृत और संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—विधि विधान । ग्रन्थ संख्या—२४०४ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

नोट—ग्रन्थ के दीमक लगजाने से अक्षरों को क्षति हुई है ।

१६७२. अक्षय निधि व्रत विधान— × । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार— $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—व्रत विधान । ग्रन्थ संख्या—२६६३ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१६७३. एकली करण विधान— × । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $११\frac{३}{४}'' \times ५\frac{१}{२}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—विधि विधान । ग्रन्थ संख्या—२५०६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१६७४. कल्याण पंचका रूपण विधान— × । देशी कागज । पत्र संख्या—२१ । आकार— $११'' \times ५''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—व्रत विधान । ग्रन्थ संख्या—११६१ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१६७५. कल्याण माला— × । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार— $९\frac{१}{२}'' \times ४''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—विधान । ग्रन्थ संख्या—१५४३ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— सं० १६६२ ।

१६७६. जलयात्रा पूजा विधान—देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $११'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—पूजा विधान । ग्रन्थ संख्या—१८५६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१६७७. जिनयज्ञ कल्प — पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या—७२ । आकार— $११" \times ४\frac{३}{४}"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—विधि विधान । ग्रन्थ संख्या—२५१४ । रचनाकाल—अश्विन शुक्ला १५, सं० १२८५ । लिपिकाल—त्रैशाख शुक्ला ३ सं० १५०३ ।

१६७८. दशलक्षण व्रतोद्यापन— × । देशी कागज । पत्र संख्या—१८ । आकार— $१०\frac{३}{४}" \times ४\frac{३}{४}"$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—व्रत विधान । ग्रन्थ संख्या—२१५४ । रचनाकाल— × । लिपिकाल सं० १७२१ ।

१६७९. द्वादश व्रत कथा— देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $९\frac{१}{४}" \times ४\frac{१}{४}"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—व्रत विधान । ग्रन्थ संख्या—१३२७ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१६८०. नन्दीश्वर कथा— × । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार— $११" \times ४\frac{३}{४}"$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—व्रत कथा । ग्रन्थ संख्या—१६८४ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१६८१. नन्दीश्वर पंक्ति विधान—शिव वर्मा । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $११\frac{१}{४}" \times ४\frac{३}{४}"$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—विधि विधान । ग्रन्थ संख्या—२०११ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१६८२. प्रतिमा भंग शान्ति विधि— × । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $९" \times ४"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—शान्ति विधि । ग्रन्थ संख्या—१४४४ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१६८३. पंच मास चतुर्दशी व्रतोद्यापन—सुरेन्द्रकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या—२३ । आकार— $१०\frac{१}{४}" \times ५"$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—व्रत विधान । ग्रन्थ संख्या—१२२७ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१६८४. पंचमी व्रत पूजा विधान—हर्षकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार— $१०" \times ५\frac{१}{४}"$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—व्रत विधान । ग्रन्थ संख्या—१८४१ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—माघ कृष्णा ४, रविवार, सं० १६१३ ।

१६८५. पंचाशत त्रिया व्रतोद्यापन— × । देशी कागज । पत्र संख्या—८ । आकार— $१०" \times ४\frac{३}{४}"$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—व्रत विधान । ग्रन्थ संख्या—२४०८ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१६८६. चारह व्रत टिप्पणी— × । देशी कागज । पत्र संख्या—८ । आकार— $९" \times ४\frac{१}{४}"$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—व्रत विधान । ग्रन्थ संख्या—२०५१ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१६८७. राई प्रकरण विधि—X । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार— $६\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—विधि विधान । ग्रन्थ संख्या—२७८५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

विशेष—इस ग्रन्थ में विवाह के समय की जाने वाली क्रियाओं का वर्णन है ।

१६८८. राम विष्णु स्थापना—X । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार— $६\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—विधि विधान । ग्रन्थ संख्या—२७९२ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

विशेष—इस ग्रन्थ में वैष्णव मतानुसार राम और विष्णु की स्थापना का वर्णन है ।

१६८९. रुक्मणी व्रत विधान कथा—विशालकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार— $१३\frac{१}{४}'' \times ८\frac{१}{४}''$ । दशा—सुन्दर । पूर्ण । भाषा—मराठी । विषय—व्रत विधान । ग्रन्थ संख्या—२६१० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—अश्विन कृष्ण १, शनिवार, सं० १९४५ ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ में पद्यों की संख्या १६९ हैं ।

१६९०. व्रतों का वर्णन—X । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार— $१२'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—व्रत विधान । ग्रन्थ संख्या—१९५१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१६९१. व्रत विधान कथा—देवनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । आकार— $१०\frac{३}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा—जीर्ण-शीर्ण । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश । लिपि—नागरी । विषय—व्रत कथा । ग्रन्थ संख्या—१३३५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१६९२. व्रत विधान रासो—जिनमति । देशी कागज । पत्र संख्या—१९ । आकार— $११'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—व्रत विधान । ग्रन्थ संख्या—१९०८ । रचनाकाल—अश्विन शुक्ला १०, सं० १७६७ । लिपिकाल—भाद्रपद कृष्ण १४, सं० १८५९ ।

१६९३. व्रत विधान रासो—पं० दौलतराम । देशी कागज । पत्र संख्या—२९ । आकार— $८\frac{१}{४}'' \times ४''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । विषय—रासो साहित्य । ग्रन्थ संख्या—१६९४ । रचनाकाल—अश्विन शुक्ला १०, वृहस्पतिवार, सं० १७६० । लिपिकाल—आषाढ़ शुक्ला १३, सं० १८६४ ।

१६९४. व्रतसार—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—व्रत विधान । ग्रन्थ संख्या—२४६४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१६९५. वसुधारानाम धारिणी महाशास्त्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या—६ ।

आकार-६ $\frac{3}{4}$ "×४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-विधि विधान ।
ग्रन्थ संख्या-१६६२ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१६६६ श्रुतस्तपन विधि - × । देशी कागज । पत्र संख्या-४४ । आकार-
११"×५" दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-विधि विधान । ग्रन्थ
संख्या-२४०२ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

लोक विज्ञान साहित्य

१६६७. जम्बूद्वीप वर्णन— $\times$ । देशी कागज। पत्र संख्या—८। आकार— $10\frac{1}{2}'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—लोक विज्ञान। ग्रन्थ संख्या—१६०१। रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१६६८. त्रिलोक प्रज्ञप्ति—सि० च० नेमिचन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या—२८६। आकार— $10\frac{1}{2}'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा—जीर्ण। पूर्ण। भाषा—प्राकृत। लिपि—नागरी। विषय—लोक विज्ञान। ग्रन्थ संख्या—१७६६। रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१६६९. त्रिलोक स्थिति—देशी कागज। पत्र संख्या—३३। आकार— $10\frac{1}{2}'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा—जीर्ण। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—लोक विज्ञान। ग्रन्थ संख्या—११५६। रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला ६, सं० १६०४।

१७००. त्रिलोकसार-सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या—२३। आकार— $11'' \times 8\frac{3}{4}''$ । दशा—जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा—प्राकृत। लिपि—नागरी। विषय—लोक विज्ञान। ग्रन्थ संख्या—१३४२। रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१७०१. प्रति संख्या—२। देशी कागज। पत्र संख्या—७६। आकार— $10\frac{1}{2}'' \times 8\frac{3}{4}''$ । दशा—जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—११६६। रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—माघ शुक्ला १५, सोमवार, सं० १५५१।

१७०२. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या—२०। आकार— $12'' \times 8\frac{3}{4}''$ । दशा—जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२४६६। रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—कार्तिक शुक्ला १२, सं० १५१०।

१७०३. त्रिलोकसार (सटीक)—नेमिचन्द्र। टीकाकार—सहस्त्रकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या—८५। आकार— $10'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा—जीर्ण। पूर्ण। भाषा—मूल प्राकृत में और टीका संस्कृत में। लिपि—नागरी। विषय—लोक विज्ञान। ग्रन्थ संख्या—११४०। रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—भाद्रपद शुक्ला ११, सोमवार, सं० १५८४।

१७०४. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या—८५। आकार— $10\frac{3}{4}'' \times 8\frac{3}{4}''$ । दशा—जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—१२५७। रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा ११, बृहस्पतिवार, सं० १५६५।

१७०५. त्रिलोकसार सटीक—सि० च० नेमिचन्द्र। टीका—ब्रह्मश्रुताचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या—४६। आकार— $11'' \times 8\frac{3}{4}''$ । दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—प्राकृत एवं संस्कृत। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—१४१३। रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१७०६. त्रिलोकसार सटीक—सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्द्र। टीका— $\times$ । देशी

कागज । पत्र संख्या-२२१ । आकार- $११\frac{१}{४}$ " $\times$ $५\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-
प्राकृत (मूल) टीका संस्कृत में । लिपि-नागरी । विषय-लोक विज्ञान । ग्रन्थ संख्या-१२१६ ।
रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल- $\times$ ।

नोट—टीका का नाम तत्त्व प्रदीपिका है ।

१७०७. त्रिलोकसार भाषा—सुमतिकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । आकार-
 $६\frac{३}{४}$ " $\times$ $४\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६२६ ।
रचनाकाल-माघ शुक्ला १२, सं० १६२७ । लिपिकाल- $\times$ ।

नोट—त्रिलोकसार (प्राकृत)मूल के कर्ता सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्द्र हैं । उसी के आधार
पर प्रस्तुत ग्रन्थ में भाषा की गई है ।

१७०८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार- $१२\frac{१}{२}$ " $\times$ $५\frac{३}{४}$ " ।
दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७३० । रचनाकाल-माघ शुक्ला १२, सं० १६२७ । लिपिकाल-
चैत्र कृष्णा १, सं० १८६० ।

१७०९. त्रिलोकसार भाषा—दत्तनाथ योगी । देशी कागज । पत्र संख्या-६२ ।
आकार- ११ " $\times$ $५\frac{१}{२}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-
१११७ । रचनाकाल- $\times$ । लिपिकाल-आषाढ़ बुदी ५, सोमवार, सं० १८६२ ।

वकाचार साहित्य

१७१०. आचारसार—वीरनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या—६६ । आकार—१०"×४ $\frac{१}{२}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—आवकाचार । ग्रन्थ संख्या—१०८५ (ब) । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१७११. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—६२ । आकार—११"×४ $\frac{१}{२}$ " । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१३०२ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—पौष कृष्णा ३, रविवार, सं० १६६५ ।

१७१२. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—४१ । आकार—११"×४ $\frac{३}{४}$ " । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१२६५ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१७१३. प्रति ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—४६ । आकार—११"×४ $\frac{३}{४}$ " । दशा—अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२४६२ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१७१४. उपदेश माला—धर्मदास गरिण । देशी कागज । पत्र संख्या—३० । आकार—१० $\frac{१}{४}$ "×४ $\frac{१}{४}$ " । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—प्राकृत । लिपि—नागरी । विषय—आवकाचार । ग्रन्थ संख्या—११४५ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१७१५. उपदेश रत्नमाला—सकलभूषण । देशी कागज । पत्र संख्या—१२७ । आकार—१० $\frac{१}{४}$ "×३ $\frac{३}{४}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—आवकाचार । ग्रन्थ संख्या—१६७४ । रचनाकाल—आवण शुक्ला ६, सं० १६२७ । लिपिकाल—भाद्रपद कृष्णा ८, सोमवार, सं० १८०४ ।

नोट—इस ग्रन्थ का नाम षट्कर्मोपदेश रत्नमाला भी है ।

१७१६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—६८ । आकार—१२ $\frac{१}{४}$ "×५ $\frac{३}{४}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२७०८ । रचनाकाल—आवण शुक्ला ६, सं० १६२७ । लिपिकाल—भाद्रपद कृष्णा २, शुक्रवार, सं० १८८७ ।

आदिभाग—

वंदे श्रीवृषभदेवं दिव्यलक्षणलक्षितम् ।

प्रीणित-प्राणिसद्वर्गं युगादिपुरुषोत्तमम् ॥१॥

अन्तभाग—

श्रीमूलसंघतिलके वरनन्दिसंघे गच्छे सरस्वतिसुनाम्नि जगत्प्रसिद्धे ।

श्रीकुन्दकुन्दगुरु पट्टपरम्परायां श्री पद्मनन्दि मुनीपः समभुज्जिताक्षः ॥

तत्पट्टधारी जनहितकारी पुराणमुख्योत्तमशास्त्रकारी ।

भट्टारकः श्री सकलादिकीर्तिः प्रसिद्धनामाऽजनि पूण्यमूर्तिः ।
 भुवनकीर्तिगुरुस्तत उज्जितो भुवनभासनशासन मण्डनः ।
 अजनि नीत्र तपश्चरगुक्षयो विविधवर्मममृद्धि मुदेशकः ॥
 श्रीज्ञानभूषण परिभूषितांगः प्रसिद्ध पाण्डित्यकलानिवानः ।
 श्रीज्ञानभूषाख्यगुरुस्तदीय पट्टोदयाद्राविव भानुरासीत् ॥
 भट्टारकः श्रीविजयादिकीर्तिस्तदीय पट्टे परितन्ध्वकीर्तिः ।
 महामता मोक्षसुखाभिनापी बभूवः जैनावनिपाश्वपादः ॥
 भट्टारकः श्रीशुभचन्द्रसूरिस्तत्पट्टपके गृहतिमरश्मिः ।
 वैविद्यवंशः सकल प्रसिद्धो वादीभसिहो जयतादृरिष्यां ।
 पट्टे तस्य प्रीणिन प्राणिवर्गः शान्तो दान्तः शीलशाली सुधीमान् ।
 जीयात्मसूरिः श्रीमुमत्यादिकीर्तिर्गच्छाधीशः कमकान्तिः कलावान् ॥
 तम्याभूच्च गुरु भ्राता नाम्ना सकलसुपणः ।
 सूरिजिनमने लीनमनाःमन्त्रोपपोषकः ॥
 नेनोपदेशगद्वत्तमानामंजो मनोहरः ।
 कृतः कृति जनानन्द-निमित्तं ग्रन्थः एषकः ॥
 श्रीनेमिचन्द्राचार्यादि यतीनामाग्रहात्कृतः ।
 महवंमानाटोलादि प्रार्थनातो मर्यपकः ॥
 सप्तविंशत्यधिके षोडशजतवत्सरेषु विक्रमनः ।
 श्रावणमासे शुक्लपक्षे पण्ड्यां कृतो ग्रन्थः ॥

१७१७. उपासकाचार — पूज्यपाद स्वामि । देशी कागज । पत्र संख्या-४ ।
 आकार-१० $\frac{३}{४}$ " × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्गंक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-
 श्रावकाचार । ग्रन्थ संख्या-२७६० । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१७१८. उपासकाध्ययन — वसुनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या-२६ । आकार-
 ११" × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्गं । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-श्रावकाचार । ग्रन्थ
 संख्या-१३७५ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१७१९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३३ । आकार-१० $\frac{३}{४}$ " × ४ $\frac{३}{४}$ " ।
 दशा-जीर्गं । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३७७ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-सं० १६५३ ।

१७२०. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-२६ । आकार-११ $\frac{३}{४}$ " × ४ $\frac{३}{४}$ " ।
 दशा-अतिजीर्गंक्षीण । पूर्ण । । ग्रन्थ संख्या-१३६७ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१७२१. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-३८ । आकार- १० $\frac{३}{४}$ " × ४ $\frac{३}{४}$ " ।
 दशा-अतिजीर्गंक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३७८ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-काल्पुन
 कृष्णा ६, रविवार, सं० १५२४ ।

१७२२. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-३८ । आकार-१२"×४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६७५ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१७२३. क्रिया कलाप सटीक—पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या-१०८ । आकार-१४"×५ $\frac{१}{२}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२७५५ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-वैशाख कृष्णा १, सं० १५३६ ।

१७२४. क्रिया कलाप टीका—प्रभाचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-१२३ । आकार-१० $\frac{१}{२}$ "×४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३६६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१७२५. क्रियाकोश भाषा—किशनसिंह । देशी कागज । पत्र संख्या-८६ । आकार- १२"×५ $\frac{१}{२}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०६६ । रचनाकाल-भाद्रपद शुक्ला १५, रविवार, सं० १७८४ । लिपिकाल-पौष शुक्ला १५, सं० १८६४ ।

१७२६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-७६ । आकार-११ $\frac{१}{२}$ " ५" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१८०४ । रचनाकाल-भाद्रपद शुक्ला १५, रविवार, सं० १७८४ । लिपिकाल-वैशाख शुक्ला ८, शनिवार, सं० १८४६ ।

१७२७. क्रिया विधि मंत्र- × । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- ६ $\frac{३}{४}$ "×४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६५७ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-वैशाख शुक्ला १२, रविवार, सं० १८४८ ।

१७२८. जिन कल्याण माला—पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार- ६ $\frac{३}{४}$ "×४ $\frac{१}{२}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७८४ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१७२९. जैनरास— × । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार-१० $\frac{३}{४}$ "×५ $\frac{१}{२}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या २५३५ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला ११, रविवार, सं० १६०५ ।

१७३०. धर्म परीक्षा—अमितगति । देशी कागज । पत्र संख्या-६२ । आकार- ११"×४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६८६ । रचनाकाल-सं० १०७० । लिपिकाल- × ।

नोट—ग्रन्थ कर्ता की पूर्ण प्रशस्ति लिखि हुई है ।

१७३१. धर्म प्रश्नोत्तर श्रावकाचार—मट्टारक सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-६६ । आकार-१०"×४ $\frac{१}{२}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७७६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

विद्यानंदि गुरुप्रपट्टकमलोल्लास प्रदो भास्करः ।
 श्री भट्टारकमल्लिभूपणगुरुः सिद्धान्तसिधुमंहा —
 स्तच्छिष्यो मुनिसिंहनंदि सुगुरुर्जीयात् सतां भूतले ॥१॥
 तेषां पादांजयुग्मे निहित निजमतिर्नेमिदत्तः स्वशक्त्या ।
 भक्त्या शास्त्रं चकार प्रचुरसुखकरं श्रावकाचारमुच्चैः ।
 नित्यं भव्यैर्विशुदैः सकलगुणनिधैः प्राप्तिहेतुं च मत्वा ।
 युक्त्या संसेवितोऽसौ दिशतु शुभतमं मंगलं सज्जनानां ॥१८॥
 लेखकानां वाचकानां पाठकानां तथैव च
 पालकानां सुखं कुर्यान्नित्यं शास्त्रमिदं शुभं ॥१९॥

इति श्री धर्मोपदेशपीयूषवर्पनाम श्रावकाचारे भट्टारक श्री मल्लिभूपण-
 शिष्यब्रह्मनेमिदत्तविरचितेः सल्लेखनाक्रम व्यावर्णनोनाम पंचमोऽधिकारः । इति
 समाप्तः ।

१७४०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२३ । आकार-६ $\frac{3}{4}$ " × ४ $\frac{1}{2}$ " ।
 दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११४६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-श्रावण शुक्ल ११,
 सोमवार, सं० १६२६ ।

१७४१. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । आकार-१०" × ४ $\frac{1}{2}$ " ।
 दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३६२ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ल २,
 सं० १६७७ ।

१७४२. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-२१ । आकार-११" × ४ $\frac{1}{2}$ " ।
 दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६१८ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-वैशाख शुक्ल
 ५, सं० १७०५ ।

१७४३. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-३१ । आकार-१० $\frac{1}{8}$ " × ४ $\frac{1}{2}$ " ।
 दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५२३ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- सं० १६४४ ।

१७४४. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-२५ । आकार-१० $\frac{1}{2}$ " × ४ $\frac{3}{4}$ " ।
 दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६६६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-भाद्रपद कृष्ण १,
 सं० १६६० ।

१७४५. धर्मोपदेशामृत — पद्मनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या-२४ । आकार-
 ११ $\frac{1}{8}$ " × ५ $\frac{1}{8}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२७०२ ।
 रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

विशेष — ग्रन्थ के प्रारम्भ में पद्मनन्दि पच्चीसी लिखा है ।

१७४६. पद्मनन्दि पंचविंशति — पद्मनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या-२२४ ।
 आकार-११" × ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-
 श्रावकाचार । ग्रन्थ संख्या-१२७६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-सं० १५८० ।

नोट-पत्र गल चुके हैं ।

१७४७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-६६ । आकार- $१२\frac{३}{४}'' \times ५\frac{३}{४}''$ ।
दशा-ग्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२८२ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१७४८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-५८ । आकार- $११\frac{३}{४}'' \times ७''$ ।
दशा-ग्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१५३७ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१७४९. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-६८ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ ।
दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०४५ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१७५०. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-८६ । आकार- $१२\frac{३}{४}'' \times ६''$ ।
दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१००६ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१७५१. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-६४ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ ।
दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१८५७ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल-आवण कृष्णा ६,
गुरुवार, सं० १८०७ ।

१७५२. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र संख्या-४८ । आकार- $११\frac{३}{४}'' \times ५\frac{३}{४}''$ ।
दशा-ग्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६३२ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ३,
सोमवार, सं० १८१६ ।

१७५३. प्रति संख्या ८ । देशी कागज । पत्र संख्या-६८ । आकार- $१२\frac{३}{४}'' \times ५\frac{३}{४}''$ ।
दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३२३ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१७५४. पञ्चनवि पंचविंशति (सटीक)— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-
१४७ । आकार- $१२\frac{३}{४}'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी ।
ग्रन्थ संख्या-२५४६ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१७५५. प्रबोधसार—यशःकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । आकार-
 $११\frac{३}{४}'' \times ५''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६५६ ।
रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१७५६. प्रयत्नोत्तरोपासकाचार—मट्टारक सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-
१२३ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी ।
ग्रन्थ संख्या-१३६५ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१७५७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-७३ । आकार- $११\frac{३}{४}'' \times ६\frac{३}{४}''$ ।
दशा-बहुत सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१५६२ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल-माघपद
कृष्णा १२, सं० १८२१ ।

१७५८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१११ । आकार- $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ ।
दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१७४२ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल-आषाढ़ कृष्णा
७, रविवार, सं० १७११ ।

नोट—प्रणालि दी गई है ।

१७५६. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-१२७ । आकार- $५\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१८६८ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१७६०. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-११४ । आकार- ५ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२६२ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-मंगसिर ६, सोमवार, सं० १६६५ ।

१७६१. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-१३८ । आकार- $१०\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३५० । रचनाकाल- X । लिपिकाल-अश्विन कृष्ण १, सोमवार, सं० १७२६ ।

१७६२. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र संख्या-१५६ । आकार- $४\frac{३}{४}$ " । दशा-अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२३३ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१७६३. प्रति संख्या ८ । देशी कागज । पत्र संख्या-१३३ । आकार- $११"$ X $५\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३०१ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-आषाढ़ कृष्ण १, सं० १६५० ।

१७६४. प्रति संख्या ९ । देशी कागज । पत्र संख्या-११० । आकार- $११\frac{१}{४}"$ X $४\frac{३}{४}"$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०३६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-माघ बुदी ६, सोमवार, सं० १५६० ।

१७६५. प्रति संख्या १० । देशी कागज । पत्र संख्या-११३ । आकार- $९\frac{१}{४}"$ X $५\frac{१}{४}"$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४६२ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१७६६. प्रति संख्या ११ । देशी कागज । पत्र संख्या-१३४ । आकार- $११\frac{१}{४}"$ X $५"$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६२४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-मंगसिर कृष्ण ३, सोमवार, सं० १५६३ ।

टिप्पणी—लिपिकार ने पूर्ण प्रशस्ति लिखि है ।

१७६७. प्रति संख्या १२ । देशी कागज । पत्र संख्या-१७१ । आकार- $११\frac{१}{४}"$ X $५\frac{१}{४}"$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६०० । रचनाकाल- X । लिपिकाल-माघ शुक्ल ६, बृहस्पतिवार, सं० १६५३ ।

१७६८. प्रति संख्या १३ । देशी कागज । पत्र संख्या-८६ । आकार- $११\frac{१}{४}"$ X $४\frac{३}{४}"$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६१६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-आषाढ़ कृष्ण २, शनिवार, सं० १७०६ ।

नोट—लिपिकार की प्रशस्ति का पत्र नहीं है ।

१७६९. प्रायश्चित्त शास्त्र—अकलंक स्वामी । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $१०"$ X $५"$ । दशा-अच्छी सुन्दर । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४७८ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१७७०. मूलाचार प्रदीपिका—भट्टारक सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या—१०७ । आकार— $१५\frac{१}{४}'' \times ६\frac{१}{४}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—श्रावकाचार । ग्रन्थ संख्या—१०७७ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१७७१. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (सटीक)—समन्तभद्र । टीकाकार—प्रभाचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—३८ । आकार— $१५'' \times ६\frac{३}{४}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१२७२ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—प्रथम आषाढ़ कृष्ण ७, सं० १८६६ ।

१७७२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—६६ । आकार $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या १००० । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—माघ शुक्ला १२, सं० १५४३ ।

१७७३. रत्नकरण्ड श्रावकाचार—श्रीचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या—१४० । आकार— $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश । लिपि—नागरी । विषय—श्रावकाचार । ग्रन्थ संख्या—१०६१ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—आषाढ़ कृष्ण ११, रविवार, सं० १६५१ ।

१७७४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१३१ । आकार— $१२\frac{३}{४}'' \times ५''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१७६८ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१७७५. रत्नमाला—शिवकोट्याचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार— $१२\frac{१}{४}'' \times ५\frac{१}{४}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२०१५ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१७७६. रत्नसार—पं० जीवनधर । देशी कागज । पत्र संख्या—३० । आकार— $११'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२७०३ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१७७७. रात्रि भोजन दोष विचार—धर्म समुद्र वाचक । देशी कागज । पत्र संख्या—१८ । आकार— $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२४७२ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—चैत्र शुक्ला ५, सोमवार, सं० १६८७ ।

१७७८. विवेक विलास—जिनदत्त सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—४६ । आकार— $६\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२४३२ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—सं० १६०६ ।

विशेष—श्री शेरशाह के राज्य में लिपि की गई । परस्पर में पत्र चिपक जाने से अक्षरों को क्षति हुई है ।

१७७९. व्रतसार श्रावकाचार— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार— $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२५६१ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१७८०. षट्कर्मोपदेश माला—अमरकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या—६३ । आकार— $११\frac{१}{४}'' \times ५''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश । लिपि—नागरी । विषय—श्रावकाचार । ग्रन्थ संख्या—१४०८ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—भाघ कृष्णा १३, सं० १६०७ ।

१७८१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१०१ । आकार— $११\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—११३३ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—पौष वृदी १३, सोमवार, सं० १५६३ ।

१७८२. षट्कर्मोपदेश रत्नमाला—मट्टारक लक्ष्मणसेन । पत्र संख्या—६५ । आकार— $११\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—श्रावकाचार । ग्रन्थ संख्या—१०८५ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—पौष शुक्ला १५, शुक्रवार, सं० १७३३ ।

नोट—प्रशस्ति विस्तृत रूप से दी हुई है ।

१७८३. श्रावकचूर्णी— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—३६ । आकार— $१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—श्रावकाचार । ग्रन्थ संख्या—१४१६ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१७८४. श्रावक धर्म कथन— $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार— $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१३११ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१७८५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार— $६'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१६१२ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—कार्तिक शुक्ला १२, सं० १६७१ ।

१७८६. श्रावक व्रत झण्डा प्रकरण सार्थ - $\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार— $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—प्राकृत और संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२०६४ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल— $\times$ ।

१७८७. श्रावकाचार—पद्मनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या—६४ । आकार— $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—प्राकृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१०१३ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—आषाढ सुदी १३, सोमवार, सं० १७०३ ।

नोट—प्रशस्ति विस्तृत रूप में उपलब्ध है ।

१७८८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—६४ । आकार— $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—११८६ । रचनाकाल— $\times$ । लिपिकाल—फाल्गुन कृष्णा २, बृहस्पतिवार सं० १६१५ ।

१७८९. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—६८ । आकार— $११\frac{३}{४}'' \times$

४ $\frac{3}{4}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४३७ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ५, बृहस्पतिवार, सं० १६०० ।

१७६०. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-६८ । आकार-१० $\frac{1}{2}$ " X ४ $\frac{3}{4}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६६६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-पौष शुक्ला १, रविवार, सं० १६७६ ।

१७६१. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-७७ । आकार-१० $\frac{1}{2}$ " X ४ $\frac{3}{4}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५३४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-वैत्र कृष्णा ८, सं० १६७२ ।

विशेष—लिपिकार ने अपनी प्रशस्ति में भट्टारकों का अच्छा वर्णन किया है ।

१७६२. श्रावकाचार - पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या-१७ से ६५ । आकार-१०" X ४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-श्रावकाचार । ग्रन्थ संख्या-१२१० । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१७६३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार-११" X ४ $\frac{3}{4}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३६३ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१७६४. श्रावकाचार - X । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । आकार-१२" X ५" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३५६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१७६५. श्रावकाचार—भट्टारक सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-७० । आकार-१२" X ५" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-श्रावकाचार । ग्रन्थ संख्या-१७३४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१७६६. श्रावकाचार—पूज्यपाद स्वामी । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-१० $\frac{3}{4}$ " X ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२०५६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-प्राषाढ शुक्ला ५, सं० १६७५ ।

१७६७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार-१०" X ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या- २४४६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१७६८. श्रावकाराधन - समय सुन्दर । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार-१० $\frac{1}{2}$ " X ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२७१६ । रचनाकाल-सं० १६६७ । लिपिकाल- X ।

१७६९. स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा—कार्तिकेय । देशी कागज । पत्र संख्या-२७ । आकार-१० $\frac{3}{4}$ " X ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-श्रावकाचार । ग्रन्थ संख्या-१३६८ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ५, सं० १६३५ ।

१८००. सागार धर्मामृत—पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या-५६ । आकार-११" × ५" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-श्रावकाचार । ग्रन्थ संख्या-१२४० । रचनाकाल-सं० १२६६ । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला २, बृहस्पतिवार, सं० १६५३

१८०१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-६६ । आकार-१०^३/_४" × ५^३/_४" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१००१ । रचनाकाल-पौष कृष्णा ७, सं० १२६६ । लिपिकाल-फाल्गुन कृष्णा ८, सोमवार, सं० १६१२ ।

नोट—प्रशस्ति विस्तृत रूप से उपलब्ध है ।

१८०२. सागार धर्मामृत सटीक—पं० आशाधर । टीकाकार-× । देशी कागज । पत्र संख्या-६२ । आकार-१०" × ४^३/_४" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-श्रावकाचार । ग्रन्थ संख्या-१००८ । रचनाकाल-पौष बुदी ७, सं० १२६६ । लिपिकाल-× ।

नोट—टीका का नाम "कुमुद चन्द्रिका" है ।

१८०३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-११४ । आकार-११^३/_४" × ५" । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३२५ । रचनाकाल-सं० १३०० । लिपिकाल-भाद्रपद कृष्णा ५, मंगलवार, सं० १६८७ ।

विशेष—वि० सं० १३०० कार्तिक मास में नलकच्छपुर में नेमिनाथ चैत्यालय में रचना की गई ।

१८०४. सार समुच्चय—कुलभद्र । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । आकार-११" × ४^३/_४" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२०१३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-फाल्गुन कृष्णा २, मंगलवार, सं० १६६६ ।

विशेष—इस ग्रन्थ की मालपूरा में लिपि की गई ।

१८०५. प्रति २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१७ । आकार-११" × ५" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४०६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१८०६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१५ । आकार-११^३/_४" × ५" । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६५५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-माघ शुक्ला ७, सोमवार, सं० १६४५ ।

१८०७. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-२३ । आकार-१०" × ४^३/_४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६६७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१८०८. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार-१०^३/_४" × ४^३/_४" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६६४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-भाद्रपद कृष्णा ११, मंगलवार, सं० १५६२ ।

विशेष—लिपिकार ने अपनी पूर्ण प्रशस्ति लिखि है ।

१८०६. सम्बोध पंचासिका सार्थ - X । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार-
१०" × ४^३/_४" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत व संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या
२४२२ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-माघ कृष्ण १४, शनिवार, सं० १७०६ ।

१८१०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-८१ । आकार-११^३/_४"
× ५^३/_४" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१३० । रचनाकाल- X । लिपिकाल-आषाढ़
कृष्ण २, शनिवार, सं० १८१७ ।

१८११. त्रिवर्णचार—जिनसेनाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-२०२ । आकार-
१३" × ६" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-श्रावकाचार ।
ग्रन्थ संख्या-१५८६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

— — — — —

अवशिष्ट साहित्य

१८१२. अट्ठारह नाता को व्योरो— × । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $५\frac{1}{2}" \times २\frac{3}{4}"$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-एक ही भव में १८ नाते जीव का वर्णन है । ग्रन्थ संख्या-१६४१ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१८१३. आतुर पंचखण (आतुर प्रत्याख्यान)— × । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $१०" \times ४\frac{1}{2}"$ । दशा-अति जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-मंगल पाठ । ग्रन्थ संख्या-१४६६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

नोट—श्वेताम्बर आम्नायानुरूप रचना है ।

१८१४. एकविंशति स्थानक—सिद्धसेन सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार- $१०\frac{1}{2}" \times ४\frac{1}{2}"$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत व हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-धर्म । ग्रन्थ संख्या-२७८३ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१८१५. ऋषभदास विनती — × । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $७\frac{1}{2}" \times ६\frac{1}{2}"$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५४७ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-माघ कृष्ण १२, बृहस्पतिवार, सं० १७८४ ।

१८१६. कोकसार—आनन्द । देशी कागज । पत्र संख्या-४० । आकार- $८\frac{1}{2}" \times ५\frac{3}{4}"$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । विषय-कामशास्त्र । ग्रन्थ संख्या-१०८६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला ६, मंगलवार, सं० १६२८ ।

१८१७. खण्ड प्रशस्ति— × । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । आकार- $११" \times ४\frac{3}{4}"$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-काव्य । ग्रन्थ संख्या-१०४८ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१८१८. गजसिंह कुमार चौपई—ऋषि देवीचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार- $१०\frac{1}{2}" \times ५"$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८६५ । रचनाकाल-कार्तिक शुक्ला ५, मंगलवार, सं० १८२७ । लिपिकाल- × ।

१८१९. खंधक मुनि की सज्जाय-- × । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $११" \times ५\frac{1}{2}"$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-धर्म । ग्रन्थ संख्या-२८२४ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१८२०. गद्य पद्यति— × । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- $१०\frac{1}{2}" \times ४"$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३१३ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- सं० १६३० ।

१८२१. गुर्वावली—× । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार—१२ $\frac{१}{४}$ " × ६" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—इतिहास । ग्रन्थ संख्या—२६४० । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

टिप्पणी—अन्तिम पत्र पर प्रायश्चित्त विधि भी है ।

१८२२. चुने हुए रत्न—× । देशी कागज । पत्र संख्या—३३ । आकार—१०" × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—भिन्न-भिन्न विषयों के पद्य । ग्रन्थ संख्या—१२२६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१८२३. छाया पुरुष लक्षण —× देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—१०" × ४ $\frac{१}{२}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत व प्राकृत । लिपि—नागरी । विषय—सामुद्रिक शास्त्र । ग्रन्थ संख्या—१६२८ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१८२४. जम्बूद्वीप संग्रहणी—हरिभद्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार—१० $\frac{१}{२}$ " × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—गणित । ग्रन्थ संख्या—१५२८ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—अश्विन शुक्ला १, सं० १७६८ ।

१८२५. जिनधर्म पद—समय सुन्दर । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—१२ $\frac{१}{२}$ " × ५ $\frac{१}{२}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—पदावली । ग्रन्थ संख्या—१४४६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१८२६. जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश चौपई—कवि जगरूप । देशी कागज । पत्र संख्या—२६ । आकार—११ $\frac{३}{४}$ " × ५ $\frac{१}{४}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१७५८ । रचनाकाल—ज्येष्ठ कृष्णा १२, बुधवार, सं० १८१६ । लिपिकाल—बैशाख शुक्ला १५, सं० १८७२ ।

१८२७. दुण्डिया मत खण्डन—ढाढसी मुनि । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार—१०" × ४ $\frac{१}{२}$ " । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—दुण्डिया मत का खण्डन । ग्रन्थ संख्या—१५२६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला २, सं० १८४७ ।

१८२८. दान विधि—× । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार—९ $\frac{३}{४}$ " × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—वर्म । ग्रन्थ संख्या—१६५१ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१८२९. दानादि संवाद—समय सुन्दर । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार—१०" × ४ $\frac{१}{२}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—काव्य । ग्रन्थ संख्या—१५५७ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१८३०. दीक्षा प्रतिष्ठा विधि—× । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार—११" × ४ $\frac{१}{२}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत एवं हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—१६२७ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१८३१. नन्दीश्वर जयमाल— X । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार- $६\frac{३}{४}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-अति जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत, संस्कृत व हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-१६६८ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-माघ कृष्ण ६, सं० १७१० ।

१८३२. नवनिधि नाम— X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $११'' \times ५\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-नव निधियों के नाम । ग्रन्थ संख्या-२८२१ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१८३३. नेमजी का पद—उदय रत्न । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-सुन्दर । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-काव्य । ग्रन्थ संख्या-१४१८ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

नोट—नेमजी का राजुल से भव-भव का सम्बन्ध बताया गया है ।

१८३४. नेमजी राजुल सवैया—रामकरण । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $१०'' \times ४\frac{१}{४}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५१४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१८३५. नेमीश्वर पद—धर्मचन्द नेमिचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $१३'' \times ४''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-काव्य । ग्रन्थ संख्या-१७६१ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१८३६. पार्श्वनाथ विनती—जिनसमुद्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $६\frac{३}{४}'' \times ४''$ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । विषय-विनती । ग्रन्थ संख्या-१४३४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१८३७. पिण्ड विशुद्धावचूरी—जिनवल्लभ सूरि । टीका—श्रीचन्द सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत एवं प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-पिण्ड शुद्धि वर्णन । ग्रन्थ संख्या-२७८८ । रचनाकाल- X । टीकाकाल-कार्तिक कृष्ण ११, सं० ११७८ । लिपिकाल- X ।

१८३८. प्रद्युम्न चरित्र—महासेनाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-७१ । आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-चरित्र । ग्रन्थ संख्या-२४८८ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-बैशाख कृष्ण १३, सं० १६६८ ।

१८३९. पञ्चवक्त्राण— X । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार- $१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{२}''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-आचार । ग्रन्थ संख्या-२७३४ । रचनाकाल- X । लिपिकाल- X ।

१८४०. बुद्धिसागर दृष्टान्त—बुद्धिसागर । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- $६\frac{३}{४}'' \times ४''$ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-उपदेश । ग्रन्थ संख्या-१३१६ । रचनाकाल- X । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला १५, बुधवार, सं० १६४६ ।

१८४१. भजन व भारती संग्रह— × । देशी कागज । पत्र संख्या-४३ । आकार-१२" × ५ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-भजन व भारतीयों का संग्रह । ग्रन्थ संख्या-११६० । रचनाकाल- × । लिपिकाल-आषाढ़ शुक्ला ६, सं० १८६१ ।

१८४२ भविष्यदत्त चरित्र—पं० धनपाल । देशी कागज । पत्र संख्या-१०४ । आकार-११ $\frac{३}{४}$ " × ५" । दशा-अति जीर्णोद्गीर्ण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । विषय-चरित्र । ग्रन्थ संख्या-२५८८ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा ६, बृहस्पतिवार, सं० १५६७ ।

१८४३. भावना वत्तीसो — × । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-१० $\frac{३}{४}$ " × ४ $\frac{३}{४}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-काव्य । ग्रन्थ संख्या-२६५७ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१८४४. भावी कुलकरो की नामावली— × । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार-११" × ५ $\frac{३}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-नामावली । ग्रन्थ संख्या-२८३२ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१८४५. भुवनेश्वरी स्तोत्र—पृथ्वीधराचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार-११ $\frac{३}{४}$ " × ५ $\frac{३}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२५१० । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१८४६. मूर्ति पूजा मण्डन—पं० मिहिर चन्द्र दास जैनी । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार-८ $\frac{३}{४}$ " × ५" । दशा-सुन्दर । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-तर्कों के आधार पर मूर्ति पूजा का मण्डन किया गया है । ग्रन्थ संख्या-१६३७ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-सं० १९४५ ।

१८४७. मुद्राविधि— × । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-१०" × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-मुद्रा पहिने का वर्णन । ग्रन्थ संख्या-२७७७ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१८४८. रघुवंश के राजाओं की नामावली— × । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-१० $\frac{३}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-इतिहास । ग्रन्थ संख्या-१८८१ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१८४९. रत्नकोश— × । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार-१० $\frac{३}{४}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-जीर्णोद्गीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-संगीत । ग्रन्थ संख्या-२११२ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१८५०. रत्न परीक्षा— × । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार-१०" × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-रत्नों की परीक्षा । ग्रन्थ संख्या-२७४३ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१८५१. रत्न परीक्षा (रत्न दीपिका)—चण्डेश्वर सेठ । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार— $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—रत्न परीक्षा वर्णन । ग्रन्थ संख्या—२७४४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—वैशाख शुक्ला ३, शुक्रवार, सं० १८७८ ।

१८५२ शील श्री चरित्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार— $12\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—चरित्र । ग्रन्थ संख्या—२१०३ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

विशेष—गीतम स्वामी से राजा श्रेणिक ने यह चरित्र सुना है, उसी का वर्णन है ।

१८५३ षोडश कारण पूजा—X । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार— $10'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—प्राकृत व संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संख्या—२४१० । रचनाकाल—X । लिपिकाल—वैशाख शुक्ला ५, सं० १७०६ ।

१८५४. स्त्री के सोलह लक्षण—X । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार— $10\frac{3}{4}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—लक्षणावली । ग्रन्थ संख्या १४६३ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१८५५. स्वर सन्धि—पं० योगक । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । आकार— $10\frac{3}{4}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—व्याकरण । ग्रन्थ संख्या—२०८४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१८५६. सज्जन चित्त वल्लभ—मल्लिखेण । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार— $10\frac{1}{2}'' \times 4''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१४४१ । काल—X । लिपिकाल—X ।

१८५७. सवैया बत्तीशो—कवि जगन् पोहकरण (ब्राह्मण) देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार— $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । संख्या—१४३१ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—पौष कृष्णा ८, मंगलवार, सं० १६६५ ।

१८५८. संग्रह ग्रन्थ—संग्रहीत । देशी कागज । पत्र संख्या—७४ । आकार— $11\frac{3}{4}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१२८३ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—फाल्गुन कृष्णा १२, सं० १८६६ ।

१८५९. संदीप्त वेदान्त शास्त्र—परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री मध्वकर । देशी कागज । पत्र संख्या—१४ । आकार— $10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—जीर्णशीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—वेदान्त । ग्रन्थ संख्या—१४३५ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१८६०. संयम वर्णन—X । देशी कागज । पत्र संख्या—८ । आकार— $12'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा—जीर्णशीर्ण । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२१४६ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

१८६१. हरिवंश पुराण—मुनि यशःकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या—२६३ ।
आकार—११ $\frac{३}{४}$ " × ५ $\frac{३}{४}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश । लिपि—नागरी । विषय—पुराण ।
ग्रन्थ संख्या—२६४४ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—आषाढ शुक्ला ७, बृहस्पतिवार, सं० १६५२ ।

१८६२. त्रिलोचन चन्द्रिका—प्रगल्भ तर्कसिंह । देशी कागज । पत्र संख्या—३ ।
आकार—९ $\frac{१}{२}$ " × ४ $\frac{१}{४}$ " । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—
दर्शन । ग्रन्थ संख्या—१७३७ । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

— — — — —

अज्ञात एवं अप्रकाशित ग्रन्थों की नामावली

क्र०सं०	ग्रन्थ सूची का क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	भाषा
१.	११८६	अकलंक स्तुती	वीरदाचार्य	संस्कृत
२.	५१३	अन्यापदेश शतक	मैथिली गधुसूदन	"
३.	११६२	अपामार्ग स्तोत्र	गोविन्द	"
४.	७१६	अंबड़ चरित्र	पं० अमरसुन्दर	"
५.	७१३	अवन्ति सुकुमाल महामुनि वर्णन	महानन्दमुनि	हिन्दी
६.	२८६	अश्विनी कुमार संहिता	अश्विनी कुमार	संस्कृत, हिन्दी
७.	३७३	आख्य दशमी व्रत कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी
८.	१६	आत्मानुशासन	पार्श्वनाथ	संस्कृत
९.	६५३	आराधना कथाकोश	मुनि सिंहनन्द	"
१०.	२४	आलाप पद्धति	कवि विष्णु	"
११.	११६६	आशाधराष्टक	शुभचन्द्रसूरि	संस्कृत
१२.	११६६	इन्द्र वधुचितहुलास आरती	रुचिरंग	हिन्दी
१३.	२७	इष्टोपदेश टीका	गौतम स्वामी	संस्कृत
१४.	१८१४	एकविंशति स्थानक	सिंहसेन सूरि	प्राकृत, संस्कृत
१५.	६५४	काल ज्ञान	महादेव	संस्कृत
१६.	३८७	काष्ठांगार कथा	—	हिन्दी
१७.	५३६	कुमारसम्भव सटीक	टीका लालु की	संस्कृत
१८.	६१७	खुदीप भाषा	कुवरभुवानीदास	हिन्दी
१९.	६६१	ग्रह दीपक	—	संस्कृत
२०.	१२६७	चतुषष्टि महायोगिनी महास्तवन	धर्मनन्दाचार्य	हिन्दी
२१.	३६३	चन्दनराजा मलय गिरी चौपई	जिनहर्ष सूरि	"
२२.	७२८	चन्द्रलेहा चरित्र	जिनहर्ष सूरि	"
२३.	५४७	चातुर्मास व्याख्यान पद्धति	शिवनिधान पाठक	"
२४.	२६६	चिन्त चमत्कार सार्थ	—	संस्कृत, हिन्दी
२५.	५४८	चौबोली चतुष्पदी	जिनचन्द्र सूरि	हिन्दी
२६.	१०८	चौबीस दण्डक	गजसार	प्राकृत
२७.	१३६	जयति उखाण (बालावबोध)	अभयदेव सूरि	प्राकृत, हिन्दी
२८.	१२८०	जिनपूजा पुरन्दर विवान	अमरकीर्ति	अपभ्रंश

क्र०सं०	ग्रन्थ सूची का क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	भाषा
२९.	१२८६	जिन सहस्र नाम स्तोत्र	सिद्धसेन दिवाकर	संस्कृत
३०.	१२८७	जिनस्तवन सार्थ	जयानन्द सूरि	"
३१.	११२	जीव तत्व प्रदीप	केशवाचार्य	प्राकृत, संस्कृत
३२.	६७७	ज्योतिष चक्र	हेमप्रभ सूरि	संस्कृत
३३.	१२८	तत्व ज्ञान तरंगिणी	मुमुक्षु भट्टारक ज्ञानभूषण	संस्कृत
३४.	६६८	ज्ञानहीमवी	कवि जगरूप	हिन्दी
३५.	६६२	ताजिकपद्मकोश		संस्कृत
३६.	५१२	त्रेषठ श्लाका पुरुष चौपई	पं० जिनमति	हिन्दी
३७.	१४३	दश अछेरा	—	हिन्दी, अपभ्रंश
३८.	४१०	द्वादश चक्री कथा	ब्रह्म नेमिदत्त	संस्कृत
३९.	१६८	धर्म संवाद	—	"
४०.	५६५	नन्दीश्वर काव्य	मृगेन्द्र	"
४१.	१६८१	नन्दीश्वर पंक्ति विधान कथा	शिववर्मा	"
४२.	१७२	नयचक्र बालावबोध	सदानन्द	हिन्दी
४३.	७५०	नागकुमारी चरित्र	पुष्पदन्त	अपभ्रंश
४४.	१३१६	नारायण पृच्छा जयमाल	—	
४५.	१३६१	पंचपरमेष्ठी स्तोत्र	जिनप्रभ सूरि	संस्कृत
४६.	११५५	पद्मनाभ पुराण	भ० सकलकीर्ति	"
४७.	१३२४	पद्मावती पूजन	गोविन्द स्वामी	"
४८.	१६५	प्रथम ब्रह्माण	—	हिन्दी
४९.	७६५	प्रद्युम्न चरित्र	महाकवि सिंह	अपभ्रंश
५०.	६२४	पार्श्वनाथजी से देशान्तरी छंद	कविराज	हिन्दी
५१.	६२५	पिंगल छंद	पहुष सहाय	अपभ्रंश
५२.	६२७	पिंगलरूप दीपक	जयकिशन	हिन्दी
५३.	?	पिंगल भाषा	पं० सुखदेव मिश्र	"
५४.	१८३७	पिण्डविशुद्धावचूरी	जिनवल्लभ सूरि	संस्कृत, प्राकृत
५५.	४२६	प्रियमेलक कथा	ब्रह्मवेणीदास	हिन्दी
५६.	१३६५	बाला त्रिपुरा पद्धति	श्रीराम	संस्कृत
५७.	५६०	बुद्धि रसायण	पं० महिराज	अपभ्रंश, हिन्दी
५८.	४३७	बाहुबली पाथड़ी	—	अप०, सं०
५९.	४४१	भरत बाहुबली वर्णन	शीशराज	हिन्दी

क्र०सं०	ग्रन्थ सूची का क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	भाषा
६०.	७८८	भविष्यदत्त चरित्र	पं० धनपाल	अपभ्रंश
६१.	२१२	भव्य मार्गणा	—	हिन्दी
६२.	१३८७	भारती स्तोत्र	शंकराचार्य	संस्कृत
६३.	३३६	भूपण बावनी	द्वारकादास पाटणी	हिन्दी
६४.	६१३	मंगल कलश चौपई	लक्ष्मी हर्ष	"
६५.	५६८	मयुराष्टक	कवि मयुर	संस्कृत
६६.	१३६३	महर्षि स्तवन	पं० आशाधर	"
६७.	४४८	मूलसंधाग्रणी	रत्नकीर्ति	"
६८.	६०५	मेघदूत सटीक	लक्ष्मी निवास	"
६९.	३१४	योग शतक	विदग्ध वीर्य	"
७०.	१५४५	योग ज्ञान	—	"
७१.	८२०	रत्नचूड़रास	यशः कीर्ति	हिन्दी
७२.	१८५१	रत्न परीक्षा	चण्डेश्वर सेठ	संस्कृत
७३.	१७७६	रत्नसार	पं० जीवंधर	"
७४.	१६८७	राई प्रकरण विधि	—	हिन्दी
७५.	६२०	रामाज्ञा	तुलसीदास	हिन्दी
७६.	१४०२	रामचन्द्र स्तवन	सनत्कुमार	संस्कृत
७७.	१७७७	रात्रि भोजन दोष विचार	धर्मसमुद्रवाचक	हिन्दी
७८.	१६८६	रुक्मणी व्रत विधान कथा	विशालकीर्ति	मराठी
७९.	६२१	लघुस्तवन सटीक	लघु पण्डित	संस्कृत
८०.	३२५	लंघन पथ्य निर्णय	वाचक दीपचन्द्र	"
८१.	४६२	लब्धि विधान व्रत कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी
८२.	६२२	लक्ष्मी-सरस्वती संवाद	श्रीभूषण	संस्कृत
८३.	३२६	वनस्पति सत्तरी सार्थ	मुनिचन्द सूरि	प्राकृत, संस्कृत
८४.	१४१७	वर्द्धमान जिनस्तवन सटीक	पं० कनककुशलगरिण	संस्कृत
८५.	१०४४	वर्ष कुण्डली विचार	—	"
८६.	६२५	वसुधारा महाविद्या	नन्दन	संस्कृत
८७.	१५६६	वाक्य प्रकाश सूत्र सटीक	दामोदर	"
८८.	२३१	वाद पञ्चीसी	ब्रह्म गुलाल	हिन्दी
८९.	८२८	विक्रमसेन चौपई	मानसागर	"
९०.	१०४६	विचित्रमणि अंक	—	"
९१.	६३१	विद्वद्भूषण काव्य	बालकृष्ण भट्ट	संस्कृत

क्र०सं०	ग्रन्थ सूची का क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	भाषा
६२.	१४२६	विमलनाथ स्तवन	विनीत सागर	हिन्दी
६३.	१०५१	विवाहपटल सार्थ	—	संस्कृत, हिन्दी
६४.	१७७८	विवेक विलास	जिनदत्त सूरि	संस्कृत
६५.	१४३७	निषाणहार विलाप स्तवन	वादिचन्द्र	"
६६.	६३३	वैराग्य माला	सहल	"
६७.	१४३६	शनिश्चर स्तोत्र	दशरथ	"
६८.	६२६	वृन्दावत काव्य	कवि माना	"
६९.	४६५	शायक चूल कथा	—	"
१००.	५११	शुक्लककुमार (राजकृपिचर चौपड़ी)	सुन्दर	हिन्दी
१०१.	२८१	श्रेणिक भीतम संवाद	—	संस्कृत
१०२.	१६६६	श्रुतस्तवन विधि	—	"
१०३.	६५१	सप्त व्यसन समुच्चय	पं० भीममेन	"
१०४.	४८०	सम्पन्न	कवि यशमेन	"
१०५.	१४५१	समवशरत्न स्तोत्र	धनदेव	"
१०६.	१८६०	संगम वर्णन	—	अपभ्रंश, हिन्दी
१०७.	१४५६	सरस्वती स्तुति	बनारसीदास	हिन्दी
१०८.	१०६३	संवत्सर फल	—	संस्कृत
१०९.	१४७६	साधु वन्दना	पाण्डे चन्द्र	"
११०.	१४७८	साधु वन्दना	समयसुन्दर गणेश	हिन्दी
१११.	२६६	सामायिक सटीक	पाण्डे जगन्नाथ	संस्कृत, हिन्दी
११२.	१४६२	सिद्धचक्र पूजा	भूतसागर	संस्कृत
११३.	३४१	सिद्धुरपकरण	सोमप्रभाचार्य	"
११४.	४८५	सिद्धल मुक्त चतुष्टयी	समयसुन्दर	हिन्दी
११५.	४६०	सुगन्धदशमी वधा	सुशीलदेव	अपभ्रंश
११६.	४२१	सुगन्धदशमी वधा	मल्ल जिनदास	संस्कृत
११७.	२७०	सुन्दरानो चौदशीकी	कवि मानसागर	हिन्दी

क्र०सं०	ग्रन्थ सूची का क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	भाषा
११८.	२७१	सुभाषित कोश	हरि	संस्कृत
११९.	८४४	सुरपति कुमार चतुष्पदि	पं० भानसागर	हिन्दी
१२०.	६६४	स्थूलभद्रमुनि गीत	नयमल	"
१२१.	५००	हरिश्चन्द्र चौपई	ब्रह्मवेणीदाम	"
१२२.	५०९	हंसवत्स कथा	—	"
१२३.	५०८	हंसराज वच्छराज चौपई	भावहर्ष	"
१२४.	५०२	हेम कथा	रक्षामणि	संस्कृत और हिन्दी

अनुक्रमणि । अ त्रादि स्वर

ग्रंथ का नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रंथ सूची क्रमांक
(अ)				
अकलंक स्तुति	बोद्धाचार्य	संस्कृत	१३१	११८६
अक्षयनिवि व्रत-विधान	—	"	१८०	१६७२
अग्नि स्तोत्र	—	"	१३१	११८७
अर्घ कांड यंत्र	—	प्राकृत-संस्कृत	१६३	१५०६
अट्टारह नाता को व्योरो	—	हिन्दी	१६८	१८१२
अढ़ाई द्वीप चित्र	—	—	६३	८६५
अढ़ाई द्वीप चित्र	—	—	६३	८६६
अढ़ाई द्वीप चित्र	—	—	६३	८६७
अढ़ाई द्वीप पूजन भाषा	डालूराम	हिन्दी	१३१	११८८
अढ़ाई द्वीप पूजा	—	"	१३१	११८९
अणुव्रत रत्नदीप	साहल सुवलरकण	अपभ्रंश	१८०	१६६६
अध्यात्म तरंगिणी	सोमदेव शर्मा	संस्कृत	१०३	६४६
अनन्तव्रत कथा	पद्मनन्दि	"	१३७	३६६
अनन्तव्रत कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	३७	३६८
अनन्त विधान कथा	—	अपभ्रंश	१८०	१६७०
अन्नपूर्णा स्तोत्र	शंकराचार्य	संस्कृत	१३१	११६०
अन्यापदेश शतक	मैथिली मधुसूदन	"	५३	५१३
अनादि मूल मंत्र	—	प्राकृत	१६३	१५०८
अनिट कारिका	—	संस्कृत	१७०	१५६१
अनिट कारिका सार्थ	—	"	१७०	१५६७
अनिट सेट कारकण्ठी	—	"	१७०	१५६८
अनित्य निरूपण चतुर्विंशति	—	"	५३	५१७
अनेकार्थ ध्वनि मंजरी	कवि सूद	"	६८	६७१
अनेकार्थ ध्वनि मंजरी	—	"	६८	६७२
अनेकार्थ नाममाला	हेमचन्द्राचार्य	"	६८	६७४
अनेकार्थ मंजरी	नन्ददास	हिन्दी	६८	६६६
अपामार्ग स्तोत्र	गोविन्द	संस्कृत	१३१	११६२
अमक्ष वर्णन	—	हिन्दी	१	१
अभिधान चिन्तामणि	हेमचन्द्राचार्य	संस्कृत	६८	६७६
अमर कोश	अमरसिंह	"	६८	६७७
अमरकोश वृत्ति	—	"	६६	६८१
"	भट्टोपाध्याय सुनुलिंगयसूरि	"	६६	६८२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
अर्जुन चौपाई	समयसुन्दर	हिन्दी	७२	७१२
अरहनाथ चित्र	—	—	६३	८६८
अरिष्ट फल	—	संस्कृत	१०३	६५०
अवन्ति सुकुमाल कथा	हस्ती सूरि	हिन्दी	३७	३६६
अवन्ति सुकुमाल महामुनि वर्णन महानन्द मुनि	—	—	७२	७१३
अवयव केवली	—	संस्कृत	१०३	६५१
अव्यय तथा उपसर्गार्थ	—	—	१७०	१५६६
अव्यय दीपिका	—	—	१७०	१५७०
अव्यय दीपिका वृत्ति	—	—	१७१	१५७२
अश्विनी कुमार संहिता	अश्विनी कुमार	—	२६	२८६
अशोक सप्तमी कथा	—	—	३७	३७०
अष्टक सटीक	शुभचन्द्राचार्य	प्राकृत-संस्कृत	१८०	१६७१
अष्ट नायिका लक्षण	—	संस्कृत	५६	५१६
अष्ट दल पूजा और षोडश दल पूजा	—	हिन्दी	१३१	११६३
अष्ट सहस्रि	विद्यानन्दि	संस्कृत	११७	१०६६
अष्टाह्निका पूजा	भ० शुभचन्द्राचार्य	—	१३२	११६५
अष्टाह्निका व्रत कथा	—	—	३७	३७१
अष्टोत्तरी शतक	पं० भगवती दास	हिन्दी	१	२
अंक गर्भ खण्डार चक्र	देव नन्दि	संस्कृत	५	४२
—	—	—	१३२	११६५
अंक प्रमाण	—	प्राकृत-हिन्दी	५	४६
अंग फूरकण शास्त्र	—	हिन्दी	१०३	६५२
अंजन निदान सटीक	अग्निवेश	संस्कृत-हिन्दी	२६	२६०
अंबड़ चरित्र	पं० अमर सुन्दर	संस्कृत	७२	७१६
(आ)				
आकाश पंचमी व्रत कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	३७	३७२
आख्य दशमी व्रत कथा	—	—	३७	३७३
आख्या दन्तवाद	—	संस्कृत	११७	११००
आगम	—	प्राकृत-हिन्दी	१	३
आचारसार	वीर नन्दि	संस्कृत	१८६	१७१०
आठ कर्म प्रकृति विचार	—	हिन्दी	१	४
आत्म मीमांसा वचनिका	समन्तभद्र	संस्कृत-हिन्दी	१	५
आत्म मीमांसा वचनिका	जयचन्द्र छावड़ा	—	१	५

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रंथ सूची क्रमांक
आत्म सम्बोध काव्य	रघू	अपभ्रंश	१	६
आत्म सम्बोध काव्य	—	„	५३	५१८
आत्म सम्बोध पंचासिका	—	„	५३	५२०
आत्मानुशासन	गुणभद्राचार्य	संस्कृत	२	१४
आत्मानुशासन	पार्श्वनाथ	संस्कृत	३	१६
आत्मानुशासन सटीक	पं० प्रभाचन्द्राचार्य	„	२	१८
आत्मानुशासन सटीक	—	हिन्दी	२	१७
आतुर पंचखण्ड	—	संस्कृत	१६८	१८३
आदित्यवार कथा	भानुकीर्ति	हिन्दी	३८	३७५
आप्त मीमांसा	समन्तभद्राचार्य	संस्कृत	११७	११०१
आयुर्वेद संग्रहीत ग्रंथ	—	संस्कृत-हिन्दी	२६	२६१
आर्य वसुधारा धारणी नाम महाविद्या	श्री नन्दन	संस्कृत	५३	५२१
आराधना कथा कोश	ब्रह्म नेमिदत्त	„	३८	३७६
आराधना कथा कोश	मुनि सिंहनन्दि	„	१०३	६५३
आराधनासार	मित्रसागर	प्राकृत-संस्कृत और हिन्दी	३	२०
आराधनासार	पं० देवसेन	प्राकृत	३	२२
आलाप पद्धति	कवि विष्णु	संस्कृत	३	२४
आलाप पद्धति	पं० देवसेन	„	११७	११०३
आलोचना पाठ	जोहरी लाल	हिन्दी	३	२५
आशाधराष्टक	शुभचन्द्र सूरि	संस्कृत	१३२	११६६
आसव विधि	—	हिन्दी	२६	२६२

(इ + ई)

इन्द्रध्वज पूजन	भ० विश्वभूषण	संस्कृत	१३२	११६८
इन्द्रध्वज पूजा	—	„	१३२	११६७
इन्द्र वधुचित हुलास आरती	रुचिरंग	हिन्दी	१३२	११६६
इन्द्र स्तुति	—	अपभ्रंश	१३२	१२००
इन्द्राक्षि जगच्चिन्तामणि कवच	—	संस्कृत	१३२	१२०१
इन्द्राक्षि नित्य पूजा	—	„	१३२	१२०३
इन्द्राक्षि सहस्र नाम स्तवन	—	„	१३२	१२०३
इष्टोपदेश	पूज्यपाद गीतम स्वामी	„	३	२७
इष्टोपदेश	पूज्यपाद	„	४	२६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
इष्टोपदेश टीका	पं० आशाधर	संस्कृत	४	३२
ईश्वर कार्तिकेय संवाद एवं रुद्राक्ष उत्पत्ति, धारण मंत्र विधान	—	„	५४	५२३
ईश्वर प्रत्यभिज्ञा सूत्र	अभिनव गुप्ताचार्य	„	११७	११०८

(उ)

उच्छिष्ट गणपति पद्धति	—	संस्कृत	१६३	१५१०
उत्तम चरित्र	—	„	७२	७१४
उत्तर पुराण	पुष्पदन्त	अपभ्रंश	१२४	११४२
उत्तर पुराण सटीक	—	अपभ्रंश, संस्कृत	१२४	११४३
उत्तर पुराण सटीक	प्रभाचन्द्राचार्य	संस्कृत	१२४	११४५
उत्तराध्ययन	—	प्राकृत	४	३५
उदय उदीरण त्रिभंगी	सि० च० नेमिचन्द्र	„	४	३६
उपदेश माला	धर्मदास गरिण	अपभ्रंश	१८६	१७१४
उपदेश रत्नमाला	सकलभूषण	संस्कृत	१८६	१७१५
उपसर्ग शब्द	—	„	१७१	१५७३
उपासकाचार	पूज्यपाद	„	१८७	१७१७
उपासकाध्ययन	वसुनन्दि	संस्कृत	१८७	१७१८

(ए—ऐ)

एक गीत	श्रीमति कीर्तिवाचक	हिन्दी	५४	५२४
एक पद	रंगलाल	„	३८	३७८
एक पद	गुलाबचन्द	„	३८	३७७
एक स्तवणी	—	„	४	४०
एकलीकरण विधान	—	संस्कृत	१८०	१६७३
एक विशन्ति स्थानक	सिद्धसेन सूरि	प्राकृत और हिन्दी	१६८	१८१४
एकाक्षर नाममाला	पं० वररुचि	संस्कृत	६६	६८४
एकाक्षरी नाममाला	प्राक्सूरि	„	६६	६८६
एकीभाव व कल्याण मन्दिर स्तोत्र	—	„	१३३	१२१५
एकीभाव स्तोत्र	वादिराज सूरि	„	१३२	१२०४
एकीभाव स्तोत्र सार्थ	—	„	१३३	१२११
एकीभाव स्तोत्र टीका	नागचन्द्र सूरि	„	१३३	१२१२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
(ऋ)				
ऋषभदास चिन्ती	—	हिन्दी	१२८	१८१५
ऋषभदेव स्तवन	—	संस्कृत	१३३	१२१६
ऋषभनाथ चरित्र	भ० सुकलकीर्ति	,,	७२	७१५
ऋषि मण्डल व पाश्वनाथ	—	—	—	—
चिन्तामणी वड़ा यन्त्र	—	,,	१६३	१५१३
ऋषि मण्डल पूजा	गुणानन्दि	,,	१३३	१२१७
ऋषि मण्डल यन्त्र	—	,,	१६३	१५१२
ऋषि मण्डल यन्त्र	—	,,	१६३	१५११
ऋषि मण्डल स्तोत्र	—	,,	१३४	१२२०
ऋषि मण्डल स्तोत्र सार्थ	गीतम स्वामी	संस्कृत—हिन्दी	१३४	१२२३
(क)				
कथाकोश	ब्रह्म नेमिदत्त	संस्कृत	३८	३७९
कथा प्रवन्ध	प्रभावन्द	,,	३८	३८३
कथा संग्रह	—	अपभ्रंश व संस्कृत	३८	३८४
कथा संग्रह	—	संस्कृत	३८	३८५
कनकावली व शील कथा	—	,,	३६	३८६
करकण्डु चरित्र	कनकामर	अपभ्रंश	७२	७१७
कर्म काण्ड सटीक	पं० हेमराज	हिन्दी	५	४७
कर्मकाण्ड सटीक	—	,,	५	४८
कर्म दहन पूजा	—	संस्कृत, हिन्दी	१३४	१२२४
कर्म दहन मण्डल यन्त्र	—	संस्कृत	१६३	१५१४
कर्म प्रकृति	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	५	५०
कर्म प्रकृति सार्थ	—	प्राकृत—संस्कृत	६	५८
कर्म प्रकृति भूय भाषा	—	हिन्दी	६	६५
कल्याण पंचका रोषण विधान	—	संस्कृत	१८०	१६७४
कल्याण मन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्राचार्य	,,	१३४	१२२५
कल्याण मन्दिर स्तोत्र (सटीक)	—	,,	१३५	१२४०
कल्याण मन्दिर स्तोत्र टीका	भं० हर्षकीर्ति	,,	१३५	१२४१
कल्याण मन्दिर स्तोत्र सार्थ	—	,,	१३६	१२४२
कल्याण मन्दिर स्तोत्र सार्थ	सिद्धसेनाचार्य	,,	१३६	१२४७
कल्याण मन्दिर स्तोत्र सार्थ	हृकमचन्द्र	संस्कृत—हिन्दी	१३६	१२४८
कल्याण माला	—	संस्कृत	१८०	१६७५
कलश स्थापना मन्त्र	—	,,	१६३	१५१५

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
काठिन्य श्लोक	—	संस्कृत	५४	५२५
कातन्त्र रूपमाला	शिव वर्मा	,,	१७१	१५७४
कातन्त्र रूपमाला वृत्ति	भावसेन	,,	१७१	१५७५
कार्तिकेयानुप्रेक्षा	कार्तिकेय	प्राकृत	७	६७
कारक परीक्षा	—	संस्कृत	१७१	१५७८
कारक विवरण	—	,,	१७१	१५७९
काल ज्ञान	—	,,	२९	२९५
कालज्ञान	महादेव	,,	१०३	९५४
कालज्ञान	लक्ष्मी वल्लभगणि	हिन्दी	१०३	९५६
काव्य टिप्पण	—	संस्कृत	७	६९
काण्टागार कथा	—	हिन्दी	३९	३८७
क्रिया कलाप	विजयानन्द	संस्कृत	१७१	१५८०
क्रिया कलाप टीका	प्रभाचन्द्र	,,	७	७०
क्रियाकलाप सटीक	पं० आशाधर	,,	१८८	१७२३
क्रियाकलाप सटीक	प्रभाचन्द्र	,,	१८८	१७२४
क्रियाकोश	किशनसिंह	हिन्दी	७, ७०, १८८	७१, ६९० १७२५
क्रिया गुप्त पद्य	—	संस्कृत	५४	५२६
किरातार्जुनीय	भारवि	,,	५४	५२७
किरातार्जुनीय सटीक	मल्लिनाथ सूरि	,,	५४	५३२
किरातार्जुनीय सटीक	एकनाथ भट्ट	,,	५४	५३३
क्रिया विधि मन्त्र	—	,,	१८८	१७२७
कुन्थनाथ चित्र	—	—	९३	८६९
कुमार-सम्भव	कालिदास	,,	५५	५३४
कुमार सम्भव सटीक	पं० लालु	,,	५५	५३६
कुल ध्वज चौपड़	पं० जयसर	हिन्दी	७२	७१८
केशव बावनी	केशवदास	,,	५५	५३७
कोकसार	आनन्द	,,	१९८	१८१६
(ख)				
खण्ड प्रशस्ति	—	संस्कृत	१९८	१८१७
खण्ड प्रशस्ति	—	,,	५५	५३८
खंघक मुनि की सज्जामाय	—	हिन्दी	१९८	१८१९
खूदीप भाषा	कुंवर भुवानीदास	,,	९९	९१७

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
(ग)				
गजसिंह कुमार चौपई	ऋषि देवीचन्द	हिन्दी	१९८	१८१८
गणधर वलय	—	संस्कृत	१३६	१२४९
गणधर वलय ग्रन्थ	—	"	१६४	१५१६
गद्य पद्धति	—	"	१९८	१८२०
गणेश चित्र	—	—	९३	८७०
गणेश व सरस्वती चित्र	—	—	९३	८७२
गणितनाम माला	हरिदत्त	संस्कृत	७०, १०३	६९१, ९५७
गर्भ क्षण्डार चक्र	देवनन्दि	"	१३६	१२५१
गाभिण्यादि प्रश्न विचार	—	हिन्दी	१०३	९५८
गरुडोपनिषद्	हरिहर ब्रह्म	संस्कृत	११७	११०९
गरुड पुराण	वेदव्यास	"	१२४	११४६
गृह दृष्टि वर्णन	—	"	१०४	९६०
गृह दीपक	—	"	१०४	९६१
गृह शान्ति विधि	—	"	१०४	९६२
गृह शान्ति विधान	पं० आशाधर	"	१०४	९६३
गहायु प्रमाण	—	"	१०४	९६४
गाथा ग्रन्थ	—	प्राकृत	१६४	१५१७
गायक का चित्र	—	—	९३	८७३
गीत गोविन्द (सटीक)	जयदेव	हिन्दी, संस्कृत	५५	५४०
गुज सन्घट्ट चरित्र	पं० जयसर	हिन्दी	७२	७१९
गुणधर ढाल	—	"	५५	५४१
गुणरत्न माला	दामोदर	संस्कृत	२६	२९७
गुण स्थान कथा	काहना छावड़ा	हिन्दी	७	७२
गुण स्थान चर्चा	—	प्राकृत और हिन्दी	७	७३
गुण स्थान चर्चा सार्य	रत्नशेखर सूरि	संस्कृत	७	७५
गुण स्थान चर्चा सार्य	—	प्राकृत-हिन्दी	१६४	१५१८
गुण स्थान बंध	—	संस्कृत	७	७६
गुणस्थान स्वरूप	रत्नशेखर सूरि	संस्कृत	११८	१११०
गुरुचार व्युत्पत्ति प्रकरण	—	हिन्दी	१०४	९५९
गुर्वावली	—	संस्कृत	१९९	१८२१

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
गोम्मटसार	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	७	७७
गोम्मटसार भाषा	पं० टोडरमल	राजस्थानी	८	८३
गोम्मटसार सटीक (जीवकाण्ड मात्र)	—	प्राकृत-संस्कृत	८	८२
गोम्मटसार सटीक	—	"	८	८०
गोरख यन्त्र	—	हिन्दी	१०४	९६५
गौतम ऋषि कुल	—	प्राकृत-हिन्दी	३६	३८९
गौतम पुरुखरी	सिद्धस्वरूप	हिन्दी	५५	५४२
गौतम स्वामी चरित्र	मण्डलाचार्य श्रीवर्मचन्द्र	संस्कृत	७२	७२०
गौतम स्तोत्र	जिनप्रभसूरि	"	१३६	१२५२
(घ)				
घटकपर्परा काव्य	—	संस्कृत	५५	५४३
(च)				
चक्रधर पुराण	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	१२४	११४७
चक्रवर्ती ऋद्धि वर्णन	—	हिन्दी	८	८४
चतुर्दश गुणस्थान चर्चा	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत-संस्कृत	८	८७
चतुर्दश गुणस्थान	—	हिन्दी	३९	३६०
चतुर्दशी गरुड़ पंचमी कथा	—	मराठी	११८	११११
चतुर्दशी व्रतोद्यापनपूजा	पं० ताराचन्द्र श्रावक	संस्कृत	१३६	१२५३
चतुर्विंशति स्थानक चर्चा	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	६	८८
चतुर्विंशति तीर्थंकर चित्र	—	—	६४	१८७४
चतुर्विंशति तीर्थंकर चित्र	—	—	६४	१८७५
चतुर्विंशति जिन नमस्कार	—	हिन्दी	१३७	१२५४
चतुर्विंशति जिनस्तवन	—	संस्कृत	१३७	१२५५
चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति	समन्तभद्र	"	१३७	१२५६
चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति	पं० घनश्याम	"	१३७	१२६०
चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा	चौधरी रामचन्द्र	हिन्दी	१३७	१२६१
चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा	शुभचन्द्राचार्य	संस्कृत	१३७	१२६२
चतुर्विंशति जिनस्तवन	पं० रविसागर गणेश	"	१३८	१२६३
चतुर्विंशति जिनस्तवन	जिनप्रभसूरि	"	१३८	१२६४
चतुर्विंशति जिनस्तवन	ज्ञानचन्द्र	"	१३८	१२६५

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
चतुःपण्ठी स्तोत्र	—	संस्कृत	१३८	१२६६
चतुःपण्ठी महायोगिनी महास्तवन	धर्म नन्दाचार्य	हिन्दी	१३८	१२६७
चतुःस्निग्ध भावना	मुनि पद्मनंदि	संस्कृत	६	६०
चन्दनमलय गिरिवार्ता	भद्रसेन	हिन्दी	३६	३६१
चन्दनराजमलयगिरि चौपई	जिनहर्ष सूरि	—	३६	३६३
चन्द्रप्रभ चरित्र	पं० दामोदर	संस्कृत	७३	७२४
चन्द्रप्रभ चरित्र	यशःकीर्ति	अपभ्रंश	७४	७२६
चन्द्रप्रभु चित्र	—	—	६४	८७६
चन्द्रप्रभ ढाल	—	हिन्दी	५६	५४६
चन्द्रलेहा चरित्र	रामवल्लभ	"	७४	७२८
चन्द्रहासासव विधि	—	"	२६	२६८
चन्द्रसूर्य कालानल चक्र	—	संस्कृत	१०४	६६६
चमत्कार चिन्तामणि	स्थानपाल द्विज	"	१०४	६६७
चरचा पत्र	—	हिन्दी	६	६१
चर्चायें	—	प्राकृत-हिन्दी	६	६४
चर्चा तथा शील की नवपाढी	—	"	६	६५
चरचा शतक टीका	हरजीमल	हिन्दी	६	६६
चरचा शास्त्र	—	"	१०	६६
चरचा समाधान	भूधरदास	प्राकृत हिन्दी	१०	१००
चारित्रसार टिप्पण	चामुण्डराय	संस्कृत	७४	७३०
चारणक्यनीति	चारणक्य	"	१२२	११३०
चिन्त चमत्कार सार्थ	—	संस्कृत हिन्दी	२६	२६६
चिन्तामणि नाममाला	हरिदत्त	संस्कृत	७०	६६१
चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा	—	संस्कृत-हिन्दी	१३८	१२६८
चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र	धरणेन्द्र	संस्कृत	१३८	१२७०
चिन्तामणि पार्श्वनाथ यन्त्र	—	"	१६४	१५१६
चित्रबन्ध स्तोत्र	—	"	१३८	१२७२
चुने हुए रत्न	—	"	१६६	१८२२
चेतन कर्म चरित्र	भैया भगवतीदास	हिन्दी	७४	७३१
चेतन चरित्र	यशःकीर्ति	"	७४	७३२
चौघड़िया चक्र	—	संस्कृत और हिन्दी	१०४	६६६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
चौबीस कथा	पं. कामपाल	हिन्दी	३६	३६४
चौबीस जिन आशीर्वाद	—	संस्कृत	१३६	१२७३
चौबीस तीर्थकर स्तवन	—	"	१३६	१२७४
चौबीस तीर्थकरों की पूजा	वृन्दावनदास	संस्कृत और हिन्दी	१३६	१२७५
चौबीस ठाणा चौपाई	पं० लोहर	प्राकृत और हिन्दी	१०	१०३
चौबीस ठाणा भाषा	—	प्राकृत	१०	१०५
चौबीस ठाणा पिठिका	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत और संस्कृत	१०	१०६
तथा बंध व्युच्छति प्रकरण				
चौबीस ठाणा सार्थ	सि० च० नेमिचन्द्र	संस्कृत	१०	१०७
चौबीस दण्डक	गजसार	प्राकृत	१०, ११	१०८, १०९
चौबीस दण्डक गीत विवरण	—	हिन्दी	११	११०
चौबोली चतुष्पदी	जिनचन्द्र सूरि	"	५६	५४८
चौर पंचासिका	कवि चोर	संस्कृत	५६	५४९
चौषठ योगिनी स्तोत्र	—	"	१३६	१२७६

(छ)

छन्द रत्नावली	हरिराम	हिन्दी	६६	६१८
छन्द शतक	हर्ष कीर्ति सूरि	अपभ्रंश	६६	६१९
छन्द शास्त्र	—	संस्कृत	६६	६२०
छन्दसार	नारायणदास	हिन्दी	६६	६२१
छन्दोमंजरी	गंगादास	प्राकृत-संस्कृत	६६	६२२
छन्दोवतस	—	संस्कृत	६६	६२३
छाया पुरुष लक्षण	—	संस्कृत-प्राकृत	१६६	१८२३

(ज)

जन्म कुण्डली विचार	—	संस्कृत	१०५	६७०
जन्म पद्धति	—	संस्कृत-हिन्दी	१०५	६७४
जन्म पत्रिका	—	संस्कृत	१०५	६७१
जन्म पत्री पद्धति	हर्षकीर्ति द्वारा संकलित	"	१०५	६७२
जन्म फल विचार	—	"	१०५	६७३
जन्मान्तर गाथा	—	प्राकृत	११	१११
जम्बू स्वामी कथा	पाण्डे जिनदास	हिन्दी	३६	३६५
जम्बू स्वामी चरित्र	भं० सकलकीर्ति	संस्कृत	७४	७३३
जम्बूद्वीप चित्र	—	"	६४	८७६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
जम्बूद्वीप वर्णन	—	हिन्दी	१८४	१३६७
जम्बूद्वीप संग्रहणी	हरिभद्र सूरि	प्राकृत	१६६	१८२४
जयतिहुण स्तोत्र	अभयदेव सूरि	प्राकृत-हिन्दी	१३६	१२७७
जलयात्रा पूजा विधान	—	संस्कृत	१८०	१६७६
ज्वर पराजय	पं० जयरत्न	,,	३०	
ज्योतिष चक्र	हेमप्रभ सूरि	,,	१०५	६७७
ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति	,,	१०५	६७८
ज्योतिष सार	नारचन्द्र	,,	१०६	६८०
ज्योतिष सार भाषा	कवि कृपाराम	हिन्दी	१०६	६३७
ज्योतिष सार सटीक	भुजोदित्य	संस्कृत	१०६	६८९
ज्वाला मालिनी स्तोत्र	—	,,	१३६	१२७८
ज्वाला मालिनी यन्त्र	—	,,	१६४	१५२०
जातक	दण्डिराज दैवज्ञ	,,	१०५	६७५
जातक प्रदीप	सांवला	गुजराती व हिन्दी	१०५	६७६
जिन कल्याण माला	पं० आशाधर	संस्कृत	१८८	१७२८
जिन गुण सम्पत्तिव्रतोद्घापन	आ० देवनंदि	,,	१३६	१२७६
जिनदत्त कथा	गुणभद्राचार्य	,,	३६	३९६
जिनदत्त चरित्र	—	,,	७५	७३८
जिनधर्म पद	समयसुन्दर	हिन्दी	१६६	१८२५
जिनपूजा पुरन्दर कथा	—	संस्कृत	४०	४०२
जिनपूजा पुरन्दर अमर विधान	अमरकीर्ति	अपभ्रंश	१३६	१२८०
जिनपंच कल्याणक पूजा	जयकीर्ति	संस्कृत	१३६	१२८१
जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश चौपई	कवि जगरुप	हिन्दी	१६६	१८२६
जिन यज्ञकल्प	पं० आशाधर	संस्कृत	१३६, १८१, १२८२, १६७७	
जिन रस वर्णन	वेण्णिराम	हिन्दी	१४०	१२८४
जिन सहस्र नाम स्तोत्र	सिद्धसेन दिवाकर	संस्कृत	१४०	१२८६
जिन स्तवन सार्थ	जयानन्द सूरि	,,	१४०	१२८७
जिन स्तुति	—	,,	१४०	१२८८
जिन सुप्रभात स्तोत्र	सि० च० नेमिचन्द्र	,,	१४०	१२८९
जिन रात्रि कथा	—	,,	४०	४०३
जिनान्तर वर्णन	—	अपभ्रंश, हिन्दी	४०	४०४
जिनेन्द्र वन्दना	—	संस्कृत	१४०	१२९०
जिनेन्द्र स्तवन	—	,,	१४०	१२९१

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
जीव चौपई	पं० दीलतराम	हिन्दी	११८	१११२
जीव तत्व प्रदीप	केशवाचार्य	प्राकृत और संस्कृत	११	११२
जीवन्धरचरित्र	भ० शुभचन्द्राचार्य	संस्कृत	७५	७३६
जीव प्रहूपण	गुणरयणभूषण	प्राकृत	११	११३
जीव विचार प्रकरण	—	प्राकृत और संस्कृत	११	११४
जीव विचार सूत्र सटीक	शान्ति सूरि	„	११	११६
जैन रास	—	हिन्दी	१८८	१७२६
जैन शतक	भूधरदास खण्डेलवाल	„	११	११६
(ट-ठ)				
टीपणै री पाटी	—	संस्कृत और हिन्दी	१०६	६६०
ढुण्डिया मत खण्डन	ढाढसी मुनि	प्राकृत और संस्कृत	१६६	१८२७
ढाढसी मुनि गाथा	ढाढसी	„	१२	१२०
ढाल बारह भावना	—	हिन्दी	५६	५५०
ढाल मंगल की	—	„	५६	५५१
ढाल सुभद्रारी	—	„	५६	५५२
ढाल श्रीमन्दिर जी	—	„	५६	५५३
ढाल क्षमा की	मुनि फकीरचन्द	„	५६	५५४
(त)				
तत्वधर्मामृत	चन्द्रकीर्ति	संस्कृत	१२	१२२
तत्वबोध प्रकरण	—	„	१२	१२५
तत्वसार	पं० देवसेन	प्राकृत	१२	१२६
तत्वत्रय प्रकाशिनी	ब्रह्मश्रुतसागर	संस्कृत	१२	१२७
तत्वज्ञान तरंगिणी	भ० ज्ञानभूषण	संस्कृत	१२	१२८
तत्त्वार्थ रत्नप्रभाकर	प्रभाचन्द्र देव	„	१३	१३०
तत्त्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	„	१३	१३३
तत्त्वार्थ सूत्र टीका	श्रुतसागर	„	१३	१३५
तत्त्वार्थ सूत्र टीका	सदासुख	संस्कृत और हिन्दी	१३	१३७
तत्त्वार्थ सूत्र भाषा	कनककीर्ति	„	१३	१३८
तत्त्वार्थ सूत्र वचनिका	पं० जयचन्द	„	१३	१३९
तर्क परिभाषा	केशव मिश्र	संस्कृत	१२, ११८, १२१, १११४	
तर्क संग्रह	अनन्त भट्ट	„	११८	१११४
ताजिक नीलकण्ठी	पं० नीलकण्ठ	„	१०६	६६१

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
ताजिक पद्मकोश	—	संस्कृत	१०७	६६२
ताजिक रत्नकोश	—	संस्कृत और हिन्दी	१०७	६६३
तार्किकसार संग्रह	पं० वरदराज	संस्कृत	११८	१११५
तीन लोक का चित्र	—	—	६४	१८८१
तीन लोक चित्र	—	—	६४	१८८२
तीर्थ जयमाल	सुमति सागर	हिन्दी	४०	४०५
तीस बोल	—	—	५६	५५५
तेरह द्वीप पूजा	—	संस्कृत और हिन्दी	१४०	१२६२
तेरह पंथ स्रण्डन	पं० पन्नालाल	हिन्दी	१४	१४०

(द)

दण्डक चौपई	पं० दौलतराम	हिन्दी	१४	१४१
दण्डक सूत्र	गजसार मुनि	प्राकृत	१४	१४२
दशअच्छेरा	—	अपभ्रंश	१८	१४३
दश अच्छेरा ढाल	रायचन्द्र	हिन्दी	५७	१५७
दर्शनसार	म० देवसेन	प्राकृत	१४	१४६
दर्शनसार सटीक	शिवजीलाल	प्राकृत और संस्कृत	१४	१४४
दर्शनसार कथा	पं० भारमल	हिन्दी	४१	४०६
दशलक्षण कथा	पं० लोकनेन	संस्कृत	४०	४०६
दशलक्षण कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	४०	४०८
दशान्तर दशा फलाफल	—	संस्कृत	१०७	६६४
दशलक्षण जयमाल	भाव शर्मा	संस्कृत और प्राकृत	१४१	१२६३
दशलक्षण जयमाल	पाण्डे रघु	अपभ्रंश	१४१	१२६८
दशलक्षण पूजा	पं० दानतराय	हिन्दी	१४२	१३०४
दशलक्षण पूजा	सुमतिसागर	संस्कृत	१४२	१३०५
दशलक्षण धर्मयन्त्र	—	—	१६४	१५२१
दशलक्षण व्रतोद्यापन	—	—	१८१	१६७८
द्रव्य संग्रह	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	१४	१४७
द्रव्य संग्रह सटीक	प्रभाचन्द्राचार्य	प्राकृत और संस्कृत	१५	१५१
द्रव्य संग्रह सटीक	पर्वत धर्मार्थी	—	१५	१५२
द्रव्य संग्रह सटीक	ब्रह्मदेव	—	१५	१५३
द्रव्य संग्रह सार्थ	—	—	१५	१५५
द्रव्य संग्रह टिप्पण	प्रभाचन्द्रदेव	—	१५	१५७

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
दान निर्णय शतक	कवि सूत	संस्कृत	५७	५५८
दान विधि	—	"	१६६	१८२८
दानशील तप संवाद शतक	सयमसुन्दर गणि	हिन्दी	३४	३३८
दानादि संवाद	सयमसुन्दर	"	१६६	१८२६
द्वादश चक्री कथा	ब्रह्म नेमिदत्त	संस्कृत	४१	४१०
द्वादश भावना	श्रुतसागर	"	१६	१६०
द्वादश भूजा हनुमत्चित्र	—	—	६५	८८६
द्वादश राशि फल	—	"	१०७	६६५
द्वादशव्रतोद्यापन	—	"	१४२	१३०६
द्वादश व्रतकथा	—	"	१८१	१६७६
द्वात्रिंशी भावना	—	"	१४२	१३०७
द्वि घटिक विचार	पं० शिवा	"	१०७	६६६
द्विसन्धान काव्य	नेमिचन्द्र	"	५७	५५६
द्विसन्धान काव्य सटीक	पं० राघव	"	५७	५६०
द्वि अभिधान कोश	—	"	७०	६६३
द्विजपाल पूजादि व विधान	विद्यानन्दि	"	१४२	१३०८
दिनमान पत्र	—	हिन्दी	१०७	६६७
दीपमालिकास्वाध्याय	—	"	१४२	१३०९
दीक्षा प्रतिष्ठा विधि	—	संस्कृत और हिन्दी	१६६	१८३०
दुर्गादेवी चित्र	—	—	६४, ६५	८८३, ८८५
दुषड्डिया विचार	पं० शिवा	संस्कृत	१०७	१०००
देवागम स्तोत्र	समन्तभद्राचार्य	"	१४२	१३१०
दोहा पाहुड़	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	१५	१५८
(घ)				
घनंजय नाममाला	घनंजय	संस्कृत	७०	६६४
घन्यकुमार चरित्र	ब्रह्म नेमिदत्त	"	७६	७४०
घन्यकुमार चरित्र	गुणभद्राचार्य	"	७६	७४५
घन्यकुमार चरित्र	भ० सकलकीर्ति	"	७६	७४२
घन्यकुमार चरित्र	पं० रघू	अपभ्रंश	७७	७४८
धर्मपरीक्षा रास	सुमति कीर्ति सूरि	हिन्दी	१६	१६३
धर्मप्रश्नोत्तर	भ० सकलकीर्ति	संस्कृत	१६	१६४
धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचार	भ० सकलकीर्ति	"	१८८	१७३१
धर्मरसायण	मुनि पञ्चनंदि	प्राकृत	१६	१६५

ग्रन्थानुक्रमणिका

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
धर्म परीक्षा	पं० हरिप्रसाद	अपभ्रंश	५७	५६३
धर्म परीक्षा	अमितगति सूरि	संस्कृत	५७, १८८	५६१, १७३०
धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई	बिजयराज	हिन्दी	४१	४११
धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई	लालचन्द	"	४१	४१२
धर्मशर्माभ्युदय	हनुमन्चन्द्र कायस्थ	संस्कृत	५७	५६४
धर्मसंग्रह	पं० मेघावी	"	१८६	१७३७
धर्म संवाद	—	"	१६	१६८
धर्माभूत सूक्ति	पं० आशाधर	"	१८६	१७३३
धर्मोपदेश पियुष	ब्रह्म नेमिदत्त	"	१८६	१७३६
धर्मोपदेशाभूत	पद्मनंद	"	१६	१६६
ध्यान वृत्तीसी	वनारसीदास	हिन्दी	१६४	१५२२
ध्यानावस्था विचार यंत्र	—	संस्कृत	१७१	१५८१
घातुपाठ	हर्षकीर्ति सूरि	"	१७१	१५८२
घातु पाठ	हेमसिंह खण्डेलवाल	"	१७२	१५८३
घातु रूपावली	—	"	४१	४१४
घूफ दशमी तथा अनन्तव्रत कथा	—	"	—	—
(न)				
नन्द वृत्तीसी	नन्दसेन	संस्कृत और हिन्दी	१२२	११३१
नन्द सप्तमी कथा	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	४१	४१५
नन्दीश्वर कथा	—	संस्कृत	४१, १८१	४१६, १६८०
नन्दीश्वर काव्य	मृगेन्द्र	"	५७	५६५
नन्दीश्वर जयमाल	—	प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी	२००	१८३१
नन्दीश्वर पंक्तिपूजा विधान	—	संस्कृत	१४२	१३१२
नन्दीश्वर पंक्ति विधान	शिववर्मा	"	१८१	१६८१
नन्दी सूत्र	—	अपभ्रंश	१७	१७०
नयचक्र	देवसेन	संस्कृत और प्राकृत	१७	१७१
नयचक्रवालाव बोध	सदानन्द	हिन्दी	१७	१७२
नयचक्र भाषा	पं० हेमराज	"	१७	१७४
नलदमयन्ती चउपई	सयमसुन्दर सूरि	"	५८	५६६
नलोदय काव्य	रविदेव	संस्कृत	५८	५६८
नलोदय टीका	रामकृष्ण मिश्र	"	५८	५६७
नवकार कथा	श्रीमत्पाद	"	४१	४१८
नरकों के पाथड़ों का चित्र	—	—	६५	८८७

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
नवतत्त्व टीका	—	संस्कृत	१७	१७५
नवतत्त्व वर्णन	अभयदेव सूरि	प्राकृत और हिन्दी	१७	१७६
नवपद यन्त्र चक्रद्वार (श्रीपाल चरित्र)	—	प्राकृत	७७	७४६
नवग्रह पूजा	—	संस्कृत	१४२	१३१३
नवग्रह पूजा विधान	—	"	१४२	१३१४
नवग्रह पूजा सामग्री	—	हिन्दी	१४३	१३१५
नवग्रह फल	—	"	१०७	१००१
नवग्रह स्तोत्र व दान	—	संस्कृत और हिन्दी	१०८	१००३
नवकार महामन्त्र कल्प	—	संस्कृत	१६४	१५२३
नवकार रास	जिनदास श्रावक	हिन्दी	१६५	१५२४
नवरथ	—	"	१७	१७६
नवरत्न काव्य	—	संस्कृत और हिन्दी	५८	५७१
न्याय दीपिका	अभिनव धर्मभूषणाचार्य	संस्कृत	११८	१११७
न्याय सूत्र	मिथिलेश्वर सूरि	"	११८	१११६
नवनिधि नाम	—	हिन्दी	२००	१८३२
नागकुमार चरित्र	पुष्पदन्त	अपभ्रंश	७८	७५०
नागकुमार चरित्र	पं० धर्मधर	संस्कृत	७८	७५२
नागकुमार चरित्र	मल्लिषेण सूरि	"	७८	७५३
नागकुमार पंचमी कथा	मल्लिषेण सूरि	"	४१	४१६
नागश्री कथा	ब्रह्म नेमिदत्त	"	४२	४२०
नागश्री चरित्र	कवि किशनसिंह	हिन्दी	७८	७५४
नाड़ी परीक्षा सार्थ	—	संस्कृत	३०	३०४
नाममाला	हेमचन्द्राचार्य	"	७१	७०४
नाममाला	कवि धनंजय	"	७१	७०५
नारद संहिता	—	"	१०८	१००४
नारायण पृच्छा जयमाल	—	अपभ्रंश	१४३	१३१६
नास्तिकवाद प्रकरण	—	संस्कृत	१७	१८०
निघण्टु	हेमचन्द्र सूरि	"	३०	३०६
निघण्टु	सोमश्री	"	३०	३०८
निघण्टु नाम रत्नाकर	परमानन्द	"	३०	३०७
नित्य क्रिया काण्ड	—	प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी	१७	१८१
निर्दोष सप्तमी कथा	—	हिन्दी	४३	४२२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
निर्वाणकाण्ड भाषा	भगवतीदास	संस्कृत और हिन्दी	१४३	१३१७
निर्वाण क्षेत्र पूजा	—	हिन्दी	१४३	१३१८
नीतिशतक	भर्तृहरि	संस्कृत	५८	५७२
नीतिवाक्यामृत	सोमदेव सूरि	,,	१२२	११३३
नीतिशतक सटीक	—	,,	१२२	११३
नीति संग्रह	—	,,	१२२	११३७
नेमजिन पुराण	ब्रह्म नेमिदत्त	,,	१२४	११४८
नेमजी की ढाल	रायचन्द्र	हिन्दी	५८	५७३
नेमजी का पद	उदयरत्न	,,	२००	१८३
नेमिदूत काव्य	विक्रमदेव	संस्कृत	५८	५७४
नेमजी राजूल सर्वैया	रामकरण	हिन्दी	२००	१८३४
नेमि निर्वाण महाकाव्य	कवि वाग्भट्ट	संस्कृत	५६	५७३२
नेमीश्वर पद	घर्मचंद नेमिचंद	हिन्दी	२००	१८३५
नेपथकाव्य	हर्षकीर्ति	संस्कृत	५६, ७६	५८१, ७५६
(प)				
पद्यापथ्य संग्रह	—	संस्कृत	३०	३१०
पद संहिता	—	संस्कृत और हिन्दी	१७२	१५८५
पद्मनंदि पंचविंशति	पद्मनंदि	संस्कृत	४३, १६०, १६१	४२५, १७४६, १७५४
पद्मप्रभू चित्र	—	—	६५	८६१
पद्म पुराण	भ० सकलकीर्ति	,,	१२५	११५५
पद्मपुराण भाषा	पं० लक्ष्मीदास	हिन्दी	१२५	११५६
पद्म पुराण	रविवेणाचार्य	संस्कृत	१२५	११५७
पद्मावती कथा	महीचन्द सूरि	,,	४३	४२४
पद्मावती छन्द	कल्याण	हिन्दी	१४४	११२३
पद्मावती देवी व पार्श्व- नाथ का चित्र	—	,,	६५	८६३
पद्मावती देवी यन्त्र	—	संस्कृत	१६५	१५२८
पद्मावती पूजन	गोविन्द स्वामी	,,	१४४	१३२४
पद्मावती पूजा	—	संस्कृत और हिन्दी	१४४	१३२५
पद्मावती स्तोत्र	—	संस्कृत	१४४	१३२६
पद्मावती सहस्रनाम	अमृतवत्स	संस्कृत	१४४	१३३१
पद्मावत्याष्टक सटीक	पार्श्वदेवगणि	,,	१४४	१३३२
पण्डानो गीत	—	हिन्दी	५६	५८३
परमहंस चौपई	ब्रह्म रायमल्ल	,,	४३	२४७

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सू. क्रमां
परमात्म छत्तीसी	पं० भगवतीदास	हिन्दी	१८	१८
परमात्म प्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	१८	१८
परमात्म प्रकाश टीका	ब्रह्मदेव	"	१८	१८
परमेष्ठी मन्त्र	—	संस्कृत	१६५	१५२६
पल्य विचार	वसन्तराज	"	१०८	१००६
पल्य विधान पूजा	भ० शुभचन्द्राचार्य	"	१४४	१३३३
पल्य विधान पूजा	अनन्तकीर्ति	"	१४५	१३३५
पल्य विधान पूजा	रत्ननन्दि	"	१४५	१३३४
पहंजण महाराज चरित्र	पं० दामोदर	अपभ्रंश	७६	७५७
प्राक्रिया कौमुदी	रामचन्द्राश्रम	संस्कृत	१७२	१५८६
प्रतापसार काव्य	जीवन्धर	हिन्दी	५६	५८५
प्रतिक्रमण	—	प्राकृत	१४६	१३५२
प्रतिक्रमण सार्थ	—	प्राकृत, हिन्दी	१६	१६३
प्रतिक्रमण सार्थ	—	प्राकृत, संस्कृत	१४६	१३५३
प्रतिमा बहोत्तरी	द्यानतराय	हिन्दी	१६	१६४
प्रतिमा भंग शान्ति विधि विधान	—	"	१८१	१६८२
प्रथम बखार	—	"	१६	१६५
प्रद्युम्न कथा	ब्रह्म वेणीदास	"	४४	४३५
प्रद्युम्न चरित्र	पं० रघू	अपभ्रंश	७६	७६३
प्रद्युम्न चरित्र	महासेनाचार्य	संस्कृत	७६,	७६४,
			२००	१८३८
प्रद्युम्न चरित्र	श्री सिंह	अपभ्रंश	७६	७६५
प्रद्युम्न चरित्र	सोमकीर्ति	संस्कृत	८०	७६८
प्रबोधसार	यशः कीर्ति	"	१६१	१७५५
प्रभंजन चरित्र	—	"	८०	७६६
प्रमेयरत्नमाला वचनिका	—	संस्कृत, हिन्दी	१६	१६६
प्रमेयरत्नमाला	पं० माणिक्यनन्दि	संस्कृत	११८	१११८
प्रलय प्रमाण	—	"	१६	१६७
प्रवचनसार वृत्ति	—	प्राकृत, संस्कृत	१६	१६८
प्रवचनसार वृत्ति	अमृतचन्द्र सूरि	"	१६	१६६
प्रवचनसार सटीक	—	प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी	१६	२०२
प्रतारवर्गुन	हर्षकीर्ति सूरि	संस्कृत	१००	६२८
प्रश्नसार	हयग्रीव	"	१०८	१००७

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
पुण्याश्रव कथाकोश	रामचन्द्र	संस्कृत	४३,	४३०,
			७१	७०६
पुण्याश्रव कथाकोश सार्थ	—	"	४३	४३१
पुराणसार संग्रह	भ० सकलकीर्ति	"	१२६	११६३
पुरुषार्थ सिद्धयुपाय	अमृतचन्द्राचार्य	"	१८	१८७
पुष्पदन्त चित्र	—	—	६६	६००
पुष्पांजली पूजा	—	संस्कृत	१४६	१३४६
पुष्पांजली व्रतोद्यापन	पं० गंगादास	हिन्दी	६०	५८८
पूजासार समुच्चय	संग्रहीत	संस्कृत	१४६	१३५०
पूजा संग्रह	—	अपभ्रंश	१४६	१३५१
पंचक्वाराण	—	प्राकृत	२००	१८३६
पंच कल्याणक पूजा	—	संस्कृत, प्राकृत	१४७	१३६०
पंचतन्त्र	विष्णु शर्मा	संस्कृत	१२२	११३८
पंच परमेष्ठी यन्त्र	—	"	१६५	१५२७
पंच परमेष्ठी स्तोत्र	जिनप्रभसूरि	"	१४७	१३६१
पंच प्रकाशसार	—	प्राकृत, संस्कृत	१८	१८६
पंच मास चतुर्दशी व्रतोद्यापन	सुरेन्द्रकीर्ति	संस्कृत	१८१	१६८३
पंचमी सप्ताय	कीर्तिविजय	हिन्दी	६०	५८६
पंच संग्रह	—	प्राकृत	१८	१८८
पंच सन्धि शब्द	—	संस्कृत	१७२	१५८८
पंचमीव्रत पूजा विधान	हर्षकीर्ति	"	१८१	१६८४
पंचाशत क्रिया व्रतोद्यापन	—	"	१८१	१६८५
पांच बोल	—	"	५६	५८४

(ब)

बड़ा स्तवन	अश्वसेन	हिन्दी		
बंध स्वामित्व (बंधतत्व)	देवेन्द्र सूरि	प्राकृत और हिन्दी	२०	२०६
बंधोदयउदीरण सत्ता विचार	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	२०	२०८
बंधोदयउदीरणसत्ता स्वामित्व सार्थ	—	प्राकृत, संस्कृत	२०	२१०
ब्रह्म प्रदीप	पं० काशीनाथ	संस्कृत	१०८	१०१०
वारह व्रत कथा	—	"	४४	४३६
वारह व्रत टिप्पणी	—	हिन्दी	१८१	१६८६
वाला त्रिपुरा पद्धति	श्रीराम	संस्कृत		
यावन दोहा बुद्धि रसायन	पं० महिराज	अपभ्रंश, हिन्दी	६०	५६०

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
बाहुवली चरित्र	धनपाल	अपभ्रंश	८०	७७६
बाहुवली पाथड़ी	—	अपभ्रंश, संस्कृत	४४	४३७
बाहुवली पाथड़ी	अभयवली	प्राकृत	८१	७७७
बुद्ध वर्णन	कविराज सिद्धराज	संस्कृत	४४	४३६
बुद्धिसागर दृष्टान्त	बुद्धिसागर	,,	२००	१८४०
बंकचूल कथा	ब्रह्म जिनदास	,,	४४	४३६
(भ)				
भक्तामर री ढाल	—	हिन्दी	६०	५६१
भक्तामर स्तोत्र	मानतुगांचायं	संस्कृत	१४८	१३६६
भक्तामर भाषा	नथमल और लालचन्द	संस्कृत-हिन्दी	१४६	१३७८
भक्तामर भाषा	पं० हेमराज	हिन्दी	१४६	१३७६
भक्तामर स्तोत्र वृत्ति	रत्नचन्द मुनि	संस्कृत	१४६	१३८०
भक्तामर सटीक	—	,,	१४६	१३८२
भक्तामर तथा सिद्धप्रिय स्तोत्र	—	,,	१४६	१३८६
भगवती आराधना सटीक	—	प्राकृत-संस्कृत	२०	२११
भजन व आरती संग्रह	—	हिन्दी	२०१	१८४१
भद्रबाहु चरित्र	आ० रत्नचन्द	संस्कृत	८१	७७८
भरत बाहुवली वर्णन	शीशराज	हिन्दी	४५	४४१
भरत क्षेत्र विस्तार चित्र	—	संस्कृत	६६	६०१
भव्य मार्गणा	—	हिन्दी	२०	२१२
भविष्यदत्त चरित्र	पं० श्रीधर	संस्कृत	८१	७७७
भविष्यदत्त चरित्र	पं० धनपाल	अपभ्रंश	८२, २०१	७८८, १८४२
भविष्यदत्त चौपई	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	८२	७६१
भविष्यपुराण	—	संस्कृत	१२६	११६४
भाडली पुराण	भाडली ऋषि	हिन्दी	१०८	१०११
भामिनी विलास	पं० जगन्नाथ	संस्कृत	६०	५६२
भारती स्तोत्र	शंकराचार्य	,,	१५०	१३८७
भावनासार संग्रह	महाराजा चामुण्डराय	,,	२१	२१५
भाव संग्रह	देवसेन	प्राकृत	२१	२१६
भाव संग्रह	श्रुतमुनि	,,	२१	२१८
भाव संग्रह	पं० वामदेव	संस्कृत	२२	२२१

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
भाव संग्रह सटीक	—	हिन्दी	२२	२२२
भाव त्रिभंगी सटीक	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत, संस्कृत	२०१	१८४४
भावी कुलकरों की नामावली	—	,,	२०१	१८४४
भाषाभूषण	महाराजा जसवन्तसिंह	हिन्दी	१००	६२६
भुवन दीपक	पद्मप्रभ सूरि	संस्कृत, हिन्दी	१०८	१०१३
भुवनेश्वरी स्तोत्र	पृथ्वीधराचार्य	संस्कृत	२०१	१८४५
भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र	पं० आशाधर	,,	१५०	१३८६
भूषण भावनी	भूषण स्वामी	हिन्दी	३४	३४०
भैरव चित्र	—	—	६६	६०२
भैरव पताका यन्त्र	—	संस्कृत, हिन्दी	१६५	१५२८
भैरव पद्मावती कल्प	मल्लिपेण सूरि	संस्कृत	१६५	१५२६
भोज प्रबन्ध	कवि बल्लाल	,,	६०	५६३
(म)				
मदन पराजय	जिनदेव	संस्कृत	६०, १२०	५६४, ११२२
मदन पराजय	हरिदेव	अपभ्रंश	६०	५६७
मदन युद्ध	बूचराज	हिन्दी	४५	४४२
मयुराष्टक	कवि मयुर	संस्कृत	६१	५६८
मलय सुन्दरी चरित्र	अखयराम लुहाड़िया	हिन्दी	८२	७६२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
यशोधर चरित्र	सोमदेव सूरि	"	८४	७६७
यशोधर चरित्र	पुष्पदन्त	अपभ्रंश	८४	७६८
यशोधर चरित्र	पद्मनाभ कायस्थ	संस्कृत	८४	८०६
यशोधर चरित्र	भ० सकलकीर्ति	"	८६	८११
यशोधर चरित्र	पूरादिव	"	८६	८१५
यशोधर चरित्र	वासवसेन	"	८७	८१७
यशोधर चरित्र (पीठिका बंध)	—	"	८७	८१८
यशोधर चरित्र टिप्पण	प्रभाचन्द्र	"	८७	८१९
यज्ञदत्त कथा	—	"	४५	४५१
योग चिन्तामणि	—	संस्कृत, हिन्दी	३१	३१३
योग शतक	विदग्ध वैद्य पूर्णासेन	संस्कृत	३१	३१४
योग शतक	—	"	३१	३१५
योग शतक टिप्पण	—	संस्कृत, हिन्दी	३१	३१६
योग शतक सटीक	—	संस्कृत	३१	३१७
योग शतक	धन्वन्तरि	संस्कृत, हिन्दी	३१	३१८
योग शतक सार्थ	—	"	३१	३१९
योग शास्त्र	हेमचंद्राचार्य	संस्कृत	१६७	१५४२
योग साधन विधि (सटीक)	गोरखनाथ	हिन्दी	१६७	१५४४
योगसार गृहफल	—	संस्कृत	१०९	१०२२
योगसार संग्रह	—	"	१६७	१५४३
योग ज्ञान	—	"	१६७	१५४५

(२)

रघुवंश महाकाव्य	कालिदास	संस्कृत	६२	६१५
रघुवंश राजाश्री की नामावली	—	"	२०१	१८४८
रघुवंश	कालिदास	"	६२	६१८
रघुवंश टीका	आनंददेव	"	६२	६१९
रत्नकरण्ड श्रावकाचार	समन्तभद्र	"	१९३	१७७१
रत्नकरण्ड श्रावकाचार सटीक	प्रभाचंद्राचार्य	"	१९३	१७७२
रत्नकरण्ड श्रावकाचार	श्रीचन्द्र	अपभ्रंश	१९३	१७७३
रत्नकोश	—	संस्कृत	२०१	१८४९
रत्न चूड़रास	यशः कीर्ति	हिन्दी	८७	८२०
रत्नमाला	शिवकोट्याचार्य	संस्कृत	१९३	१७७५

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
रत्नसार	पं० जीवन्धर	„	१६३	१७७६
रात्रि भोजन दोष विचार	धर्मसमुद्रवाचक	हिन्दी	१६३	१७७७
रत्नत्रय विधान कथा	पं० रत्नकीर्ति	संस्कृत	४६	४५३
रत्नत्रय व्रत कथा	श्रुतसागर	„	४६	४५२
रत्नत्रय पूजा	—	„	१५१	१४००
रत्न परीक्षा (रत्न दीपिका)	चण्डेश्वर सेठ	„	२०२	१८५१
रत्न परीक्षा	—	हिन्दी	२०१	१८५०
रत्नावली व्रत कथा	—	संस्कृत	४६	४५४
रमल शकुनावली	—	हिन्दी	१०६	१०२३
रमल शास्त्र	पं० चिन्तामणी	„	११०	१०२५
रस मंजरी	—	संस्कृत	३१	३२०
रस रत्नाकर (धातु रत्नमाला)	—	„	३१	३२१
रसेन्द्र मंगल	नागार्जुन	„	३१	३२२
रक्षा बन्धन कथा	—	हिन्दी	४६	४५५
राजनीति शास्त्र	चम्पा	„	१२२	११३६
राई प्रकरण विधि	—	„	१८२	१६८७
राजवार्तिक	अकलंकदेव	संस्कृत	२२	२२७
राम आज्ञा	तुलसीदास	हिन्दी	६२	६२०
रामपुराण	भट्टारक सोमसेन	संस्कृत	१२६	११६६
रामायण शास्त्र	चिरन्तन महामुनि	„	१२८	११६८
रामचन्द्र स्तवन	सनतकुमार	„	१५१	१४०२
राम विष्णु स्थापना	—	हिन्दी	१८२	१६८८
राम विनोद	रामचन्द्र	„	३२	३२३
राशि नक्षत्र फल	महादेव	संस्कृत	११०	१०२७
राशिफल	—	संस्कृत, हिन्दी	११०	१०२८
राशि लाभ व्यय चक्र	—	हिन्दी	११०	१०२९
राशि संक्रान्ति	—	„	११०	१०३०
रात्रि भोजन दोष चौपई	मेघराज का पुत्र	„	४६	४५६
रात्रि भोजन त्याग कथा	भ० सिंहनंदि	संस्कृत	४६	४५६
रात्रि भोजन त्याग कथा	—	हिन्दी	४६	४६०
रुक्मिणी व्रत विधान कथा	विशाल कीर्ति	मराठी	१८२	१६८९
रोटतीज कथा	गुणनंदि	संस्कृत	४६	४६१

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
(ल)				
लग्न चक्र	—	संस्कृत	११०	१०३१
लग्न चन्द्रिका	काशीनाथ	,,	११०	१०३२
लग्न प्रमाण	—	संस्कृत, हिन्दी	११०	१०३३
लग्नादि वर्णन	—	संस्कृत	११०	१०३४
लग्नाक्षत फल	—	,,	११०	१०३५
लघु जातक (सटीक)	भट्टोत्पल	,,	१११	१०३६
लघु जातक भाषा	कृपाराम	हिन्दी	१११	१०३७
लघु तत्त्वार्थ सूत्र	—	प्राकृत, संस्कृत	२२	२२८
लघुनाम माला	हर्ष कीर्ति सूरि	संस्कृत	७१	७०६
लघु प्रतिक्रमण	—	संस्कृत, प्राकृत	१५१	१४०३
लघु शान्ति पाठ	—	संस्कृत	१५१	१४०४
लघु सहस्र नाम स्तोत्र	—	,,	१५१	१४०५
लघु स्तवन (सटीक)	सोमनाथ	,,	१५१	१४०६
लघु स्त्वरज काव्य सटीक	लघु पण्डित	,,	६३	६२१
लघु स्तवन टीका	मुनि नन्दगुण क्षोणी	,,	१५१	१४०६
लघु स्वयंभू स्तोत्र	देवनंदि	,,	१५२	१४०७
लघु स्वयंभू स्तोत्र (सटीक)	देवनंदि	संस्कृत, हिन्दी	१५२	१४१२
लघु सारस्वत	कल्याण सरस्वती	संस्कृत	१७३	१५६४
लघु सिद्धान्त कौमुदी	पाणिनी ऋषिराज	,,	१७३	१५६५
लघ्वि विधान पूजा	ब्र० हर्षकीर्ति	,,	१५२	१४१५
लघ्वि विधान व्रत कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	४६	४६२
लक्ष्मी सरस्वती संवाद	श्री भूपण	संस्कृत	६३	६२२
लंघन पथ्य निर्णय	वाचक दीपचन्द	,,	३२	३२५
लिङ्गानुशासन	अमरसिंह	,,	७१	७१०
लीलावती भाषा	लालचन्द	हिन्दी	१११	१०४१
लीलावती सटीक	भास्कराचार्य	संस्कृत	१११	१०४२
लीलावती भाषा	लालचन्द	हिन्दी	१११	१०४१
(व)				
वद्धमान काव्य	जयमित्र हल	अपभ्रंश	६३	६२४
वद्धमान काव्य	पं० नरसेन	,,	८७	८२१
वद्धमान चरित्र	कवि असग	संस्कृत	८७	८२२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
वर्द्धमान चरित्र	पुष्पदन्त	अपभ्रंश	८७	८२५
वर्द्धमान जिन स्तवन	—	संस्कृत	१५२	१४१६
वर्द्धमान जिन स्तवन सटीक	पं० कनककुशल गरिण	,,	१५२	१४१७
वर्द्धमान पुराण	नवलदास शाह	हिन्दी	१२८	११६६
वन्देतान की जयमाल	माधनन्दि	संस्कृत	१५३	१४१८
वनस्पति सत्तरी सार्थ	मुनिचन्द्र सूरि	प्राकृत, संस्कृत	३२	३२६
व्युच्छति त्रिभंगी	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	२३	२३०
वरांग चरित्र	पं० तेजपाल	अपभ्रंश	८८	८२६
वरांग चरित्र	भट्टारक वर्द्धमान	संस्कृत	८८	८२७
वर्ष कुण्डली विचार	—	,,	१११	१०४३
वर्ष फलाफल चक्र	—	,,	१११	१०४४
वसुधारा धारिणी नाम महाविद्या	नंदन	,,	६३	६२५
वसुधारा धारिणी नाम महाशास्त्र	—	,,	१८२	१६६५
व्रत कथा कोश	श्रुतसागर	,,	४६	४६३
व्रतसार	—	,,	१८२	१६६४
व्रतसार श्रावकाचार	—	,,	१६३	१७७६
विजय पताका मंत्र	—	,,	१६५	१५३३
विजय पताका मंत्र	—	,,	१६५	१५३२
वृत्त रत्नाकर	केदारनाथ भट्ट	,,	१००	६३०
वृत्त रत्नाकर सटीक	पं० केदार का पुत्र राम	,,	१००	६३५
वृत्त रत्नाकर सटीक	केदारनाथ भट्ट	,,	१००,	६३६,
			१०१	६३७
वृत्त रत्नाकर टीका	समय सुन्दर उपाध्याय	,,	१००	६३६
वृत्त रत्नाकर टीका	कवि सुल्हण	,,	१०१	६३८
वृन्दावन काव्य	काव्य माना	,,	६३	६२६
वृहद् कलिकुण्ड चित्र	—	—	६६	६०५
वृहद् जातक (सटीक)	वराहमिहिराचार्य	,,	१११	१०४५
वृहद् जातक टीका	भट्टोत्पल	,,	१११	१०४५
वृहद् चारणवय राजनीति शास्त्र	चारणवय	,,	१२३	११४०
वृहद् द्रव्य संग्रह सटीक	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	२३	२२६
वृहद् प्रतिक्रमण सार्थ	—	प्राकृत, संस्कृत	१५३	१४२०
वृहद् प्रतिक्रमण	—	,,	१५३	१४२५

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
वृहत् स्वयंभू स्तोत्र (सटीक)	समन्तभद्राचार्य	संस्कृत	१५३	१४२३
वृहत् स्वयंभू टीका	प्रभाचन्द्राचार्य	"	१५३	१४२३
वृहत् षोडश कारण पूजा	—	"	१५३	१४२४
वृहत्षोडश कारण यन्त्र	—	"	१६५	१५३०
वृहद् सिद्धचक्र यन्त्र	—	"	१६५	१५३१
वाक्य प्रकाश सूत्र सटीक	दामोदर	"	१७३	१५६६
वाक्य प्रकाशभिषय टीका	—	"	१७३	१५६७
वाद पञ्चीसी	ब्रह्मगुलाल	हिन्दी	२३	२३१
वासपूज्य चित्र	—	—	६६	६०६
विक्रमसेन चौपई	—	हिन्दी	६३	६२७
विक्रमसेन चौपई	मानसागर	"	८८	८२८
विक्रमादित्योत्पत्ति कथानक	भगवती	संस्कृत	४७	४६४
विचार षट् त्रिशंक (चौबीसदण्डक सार्थ)	गजसार	प्राकृत, हिन्दी	२३	२३२
विचिन्तमणी अंक	—	हिन्दी	११२	१०४६
विजय पताका यन्त्र	—	संस्कृत	१६५	१५३३
विदग्ध मुख मण्डन	धर्मदास बौद्धाचार्य	"	६३,	६२८,,
			१०१	६४१
विद्वद्भूषण	बालकृष्ण भट्ट	"	६३	६३१
विद्वद्भूषण टीका	मधुसूदन भट्ट	"	६३	६३१
विधान व कथा संग्रह	—	"	४७	४६५
विधान व कथा संग्रह	—	प्राकृत व अपभ्रंश	१५३	१४२७
विधि सामान्य	—	संस्कृत	११८	१११६
विनती संग्रह	पं० भूधरदास	हिन्दी	१५४	१४२८
विपरीत ग्रहण प्रकरण	—	संस्कृत	११२	१०४७
विमलनाथ स्तवन	विनीत सागर	हिन्दी	१५४	१४२६
विवाह पटल भाषा	पं० रूपचन्द्र	संस्कृत, हिन्दी	११२	१०५०
विवाह पटल	श्रीराम मुनि	संस्कृत	११२	१०४६
विवाह पटल सार्थ	—	संस्कृत, हिन्दी	११२	१०५१
विवेक विलास	जिनदत्त सूरि	संस्कृत	१६३	१७७८
विषापहार स्तोत्र	धनजय	"	१५४	१४३०
विषापहार स्तोत्रादि टीका	नागचन्द्र सूरि	"	१५४	१४३५
विषापहार विलाप स्तवन	वादिचन्द्र सूरि	"	१५५	१४३७

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
विशेष सत्ता त्रिभंगी	नयनन्दि	प्राकृत	२३	२३३
विशेष महाकाव्य सटीक (ऋतु संहार)	कालिदास	संस्कृत	६४	६३२
विशेष महाकाव्य टीका	अमर कीर्ति	"	६४	६३२
वेद क्रान्ति	—	"	२३	२३५
वैताल पच्चीसी कथानक	शिवदास	"	४७	४६६
वैद्यकसार	नयन सुख	हिन्दी	३२	३२७
वैद्य जीवन	पं० लोलिमराज कवि	संस्कृत	३२	३२८
वैद्य जीवन टीका	रुद्र भट्ट	"	३२	३३०
वैद्य मनोत्सव	पं० नयनसुख	हिन्दी	३२	३३१
वैद्य रत्नमाला	सि० च० नेमिचन्द्र	"	३३	३३३
वैद्य विनोद	शंकर भट्ट	संस्कृत	३३	३३४
वैराग्य माला	सहल	"	६४	६३३
वैराग्य शतक	भर्तृहरि	"	६४	६३४
वैराग्य शतक सटीक	—	प्राकृत, हिन्दी	६४	६३६
वैराग्य शतक सार्थ	—	"	६४	६३८
शकुन रत्नावली	—	हिन्दी	११२	१०५३
शकुन शास्त्र	भगवद् भाषित	संस्कृत	११२	१०५४
शकुनावली	—	हिन्दी	११२	१०५५
शत श्लोक	वैद्यराज त्रिमल्ल भट्ट	संस्कृत	३३	३५५
शनिश्चर कथा	जीवणदास	हिन्दी	४७	४६८
शनि, गोतम और पार्श्वनाथ स्तवन संग्रह	हरि	हिन्दी, संस्कृत	१५५	१४३८
शनिश्चर स्तोत्र	हरि	हिन्दी	१५५	१४३९
शब्द बोध	—	संस्कृत	१७३	१५६८
शब्द भेद प्रकाश	महेश्वर कवि	"	१७३	१५६९
शब्द रूपावली	—	"	१७३,	१६००,
	"	"	१७४	१६०४
शब्द समुच्चय	अमरचन्द्र	"	१७४	१६०५
शब्द साधन	—	"	१७४	१६०६
शब्दानुशासन वृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	"	१७४	१६०७
शत्रुजय तीर्थद्वार	नयसुन्दर	हिन्दी	६४	३३९
शान्ति चक्र मण्डल	—	संस्कृत	१६६	१५३४
शान्तिनाथ चरित्र	भट्टारक सकलकीर्ति	"	८८	८१६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
शान्तिनाथ पुराण (सटीक)	भ० सकलकीर्ति	संस्कृत, हिन्दी	१२८	११७०
शालिभद्र महा'मुनि चरित्र	जिनसिंह सूरि (जिनराज)	हिन्दी	८८	८३१
शिव पञ्चीसी एवं ध्यान बत्तीसी	वनारसीदास	"	१५५	१४४१
शिव पुराण	वेद व्यास	संस्कृत	१२८	११७१
शिव स्तोत्र	—	"	१५५	१४४२
शिवार्चन चन्द्रिका	श्रीनिवास भट्ट	"	१६६	१५३५
शिशुपालवध सटीक	—	"	६४	६४२
शिशुपालवध सटीक	महाकवि माघ	"	६४	६४०
शिशुपालवध टीका	आनन्द देव	"	६४	६४३
शीघ्रबोध टीका	तिलक	"	११३	१०५७
शीघ्रबोध सार्थ	—	संस्कृत, हिन्दी	११३	१०६३
शीतलनाथ चित्र	—	—	६७	६०७
शीतलाष्टक	—	संस्कृत	१५५	१४४३
शीलरथ गाथा	—	प्राकृत	६५	६४४
शील विनती	कुमुदचन्द्र	हिन्दी, गुजराती	६५	६४५
शिलोपारी चितासन पद्मावती	—	संस्कृत	६५	६४६
नथानक				
शीलश्री चरित्र	—	"	२०२	१८५२
शोभन स्तोत्र	केशरलाल	"	१५६	१४४४
शोभन श्रुति	पं० धनपाल	"	२३	२३६
शोभन श्रुति टीका	क्षेमसिंह	"	२३	२३६
(स)				
संगीतसार	पं० दामोदर	संस्कृत	१२१	११२६
सज्जन चित्तवल्लभ	मल्लिपेण	"	६५,	६४७,
			२०२	१८५६
सत्ता त्रिभंगी	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	१५	६६१
संख्या वन्दन	—	संस्कृत	१५६	१४४८
सन्धि अर्थ	पं० योगक	संस्कृत, हिन्दी	१७४	१६१०
सन्मति जिन चरित्र	रयघू	अपभ्रंश	८८	८३२
सन्निपात कलिका लक्षण	धन्वन्तरि वैद्य	संस्कृत, हिन्दी	३३	३३७
सप्त पदार्थ सत्रावचूरि	—	संस्कृत	११६	११२०

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
सप्त व्यसन कथा	ग्राचार्य सोमकीर्ति	"	४७	४७०
सप्त व्यसन समुच्चय	पं० भीमसेन	"	६५	६५१
सप्त सूत्र	—	"	१७४	१६११
समगत बोल	—	हिन्दी	६५	६५२
समन्तभद्र स्तोत्र	—	संस्कृत	१५६	१४४६
समयसार नाटक सटीक	अमृतचन्द्र सूरि	"	२४, २५	५२०, २५१
समयसार नाटक भाषा	पं० बनारसीदास	हिन्दी	२५	२५७
समयसार भाषा	पं० हेमराज	"	२५	२५६
समवधारण स्तोत्र	विष्णू शोभन	संस्कृत	१५६	१४५०
समवधारण स्तोत्र	धनदेव	"	१५६	१४५१
सम्भवनार्थ चरित्र	पं० तजपाल	अपभ्रंश	८८	८३३
सम्यक्त्व कौमुदी	जयशेखर सूरि	संस्कृत	४८	४७३
सम्यक्त्व कौमुदी	पं० खेत्ता	"	४६	४७६
सम्यक्त्व कौमुदी	कवि यणःमेन	"	४६	४८०
सम्यक्त्व कौमुदी	जोधराज गोदीका	हिन्दी	४६	४८२
सम्यक्त्व कौमुदी सार्थ	—	संस्कृत	४६	४८४
सम्यक्त्व कौमुदी पुराण	महीचन्द्र	संस्कृत, हिन्दी	१२६	११७२
सम्यक्त्व रास	ब्रह्म गिनदास	हिन्दी	६६	६५३
सम्यक् चरित्र ग्रन्थ	—	संस्कृत	१६६	१५३७
सम्यक् दर्शन ग्रन्थ	—	"	१६६	१५३८
सम्मेदशिखरजी पूजा	मन्तदेव	हिन्दी	१५६	१४५३
सम्मेदशिखर महात्म्य	धर्मदास कुल्लक	"	१५७	१४५५
सम्मेदशिखर विधान	हीरालाल	"	१५७	१४५६
समाधि शतक	पूज्यपाद स्वामी	संस्कृत	२५, १५६	२६०
समास चक्र	—	"	१७४	१६१२
समास प्रयोग पटल	पं० वररुचि	"	१७४	१६१३
सरस्वती चित्र	—	—	६७	६१०
सरस्वती स्तुति सार्थ	—	संस्कृत	१५७	१४५८
सरस्वती स्तुति	नागचन्द्र मुनि	"	१५८	१४६८
सरस्वती स्तोत्र	पं० बनारसीदास	हिन्दी	१५७	१४५९
सरस्वती स्तोत्र	बृहस्पति	संस्कृत	१५७	१४६०
सरस्वती स्तोत्र	श्री ब्रह्मा	"	१५७	१४६२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ
सरस्वती स्तोत्र	विष्णु	"	१५८	
सर्वतीर्थमाल स्तोत्र	—	"	१५८	
स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा	—	"	२६	
स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा	कार्तिकेय	प्राकृत	१६५	
स्वर सन्धि	पं० योगक	संस्कृत, हिन्दी	२०२	
सर्वधातु रूपावली	—	संस्कृत	१७५	
सर्वैया वत्तीसी	कवि जगन पोहकरण	हिन्दी	२०२	
सहस्रनाम स्तोत्र	पं० आशाधर	संस्कृत	१५८	
सहस्रनाम स्तवन	जिनसेनाचार्य	"	१५८	
स्तवन पार्श्वनाथ	नयचन्द्र सूरि	"	१५८	
स्तोत्र संग्रह	—	"	१५८	
स्थूलभद्र मुनि गीत	नथमल	हिन्दी	६७	
स्याद्वाद रत्नाकर	देवाचार्य	संस्कृत	२६	
स्वर्णाकर्षण भैरव	—	"	१५८, १६६	
स्वप्न विचार	—	हिन्दी	११४	
स्वप्नाध्याय	—	संस्कृत	११५	
स्वरोदय	—	"	११४	
स्त्री के सोलह लक्षण	—	संस्कृत, हिन्दी	२०२	
सागरधर्ममृत	पं० आशाधर	संस्कृत	१६६	
साठी संवत्सरी	—	"	११५	
साधारण जिन स्तवन सटीक	जयनन्द सूरि	"	१५६	
साधारण जिन स्तवन	पं० कनककुशल गणि	"	१६०	
साधु वन्दना	बनारसीदास	हिन्दी	१५८	
साधु वन्दना	पार्श्वचन्द्र	संस्कृत	१५६	
साधु वन्दना	समय सुन्दर गणि	हिन्दी	१५६	
सामायिक पाठ	—	प्राकृत, संस्कृत	१५६	
सामायिक पाठ सटीक	—	संस्कृत, हिन्दी	१६०	
सामायिक पाठ सटीक	पाण्डे जयवन्त	"	२६	
सामायिक पाठ तथा	—	प्राकृत, संस्कृत,	१६०	
तीन चौबीसी नाम	—	हिन्दी		
सामुद्रिक शास्त्र	—	संस्कृत	११५	
सामुद्रिक विचार चित्र	—	—	६७	

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
सारणी	—	हिन्दी	११५	१०६१
सार समुच्चय	कुलभद्र	संस्कृत	१६६	१८०४
सारस्वत दीपिका	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	"	१७५	१६१६
सारस्वत दीपिका	मेघरत्न	"	१७५	१६१६
सारस्वत प्रक्रिया पाठ	परमहंस परिव्राजक अनुभूतिस्वरूपाचार्य	"	१७५	१६२०
सारस्वत ऋजू प्रक्रिया	—	संस्कृत, हिन्दी	१७७	१६४४
सारस्वत व्याकरण सटीक	श्र० स्वरूपाचार्य	संस्कृत	१७८	१६४८
सारस्वत व्याकरण टीका	धर्मदेव	"	१७८	१६४८
सारस्वत शब्दाधिकार	—	"	१७८	१६४९
सिद्ध चक्र पूजा	शुभचन्द्र	"	१६०	१४६२
सिद्ध चक्र पूजा	श्रुतसागर सूरि	"	१६०	१४६३
सिद्ध चक्र पूजा	प० आशाधर	"	१६०	१४६४
सिद्ध दण्डिका	देवेन्द्र सूरि	प्राकृत, संस्कृत	२६	२६७
सिन्दुर प्रकरण	सोमप्रभाचार्य	संस्कृत	३४, ६६	३४१, ६५४
सिन्दुर प्रकरण सार्थ	—	"	६६	६५७
सिद्धप्रिय स्तोत्र	—	"	१६०	१४६६
सिद्धप्रिय स्तोत्र	देवनन्दि	"	१६०	१४६६
सिद्धप्रिय स्तोत्र टीका	सहस्र कीर्ति	"	१६०	१४६७
सिद्ध सारस्वत मन्त्र गणित स्तोत्र	अनुभूति स्वरूपाचार्य	"	१६१	१४६८
सिद्धान्त कोमुदी	—	"	१७८	१६५०
सिद्धान्त चन्द्रिका	—	"	१७८	१६५१
सिद्धान्त चन्द्रिका मूल	उद्भट	"	१७८	१६५२
सिद्धान्त चन्द्रिका मूल	रामचन्द्राश्रम	"	१७८	१६५३
सिद्धान्त चन्द्रिका	रामचन्द्राश्रमाचार्य	"	१७९	१६६१
" " वृत्तिका	सदानन्द	"	१७९	१६६१
सिद्धान्त चन्द्रिका	रामचन्द्राचार्य	"	१७८	१६५६
सिद्धान्त चन्द्रोदय टीका	श्री कृष्ण धूर्जरी	"	११६	११२१
सिद्धान्त चन्द्रोदय	अनन्त भट्ट	"	११६	११२१
सिद्धान्त विन्दु स्तोत्र	शंकराचार्य	"	१६१	१४६९
सिद्धान्त सार	जिनचन्द्र देव	प्राकृत	२६	२६८

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
सिंहल सुत चतुष्पदी	समय सुन्दर	हिन्दी	४६	४८५
सिंहासन वत्तीसी	सिद्धसेन	"	४६	४८६
सीता पञ्चीसी	वृद्धिचन्द	"	६६	६५८
सुकुमाल महामुनि चौपई	शान्ति हर्ष	"	८८	८३४
सुकुमाल स्वामी चरित्र	भट्टारक सकलकीर्ति	संस्कृत	८८	८३५
सुखबोधार्थ माला	पं० देवसेन	"	२७	२७६
सुगन्ध दशमी कथा भाषा	खुशालचन्द	हिन्दी	५०	४८६
सुगन्ध दशमी कथा	सुशील देव	अपभ्रंश	५०	४८७
सुगन्ध दशमी कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	५०	४८८
सुगन्ध दशमी कथा	ब्रह्मज्ञानसागर	"	५०	४८९
सुगन्ध दशमी व पुष्पांजली कथा	—	संस्कृत	५०	४९०
सुदर्शन चरित्र	भट्टारक सकलकीर्ति	"	८६	८३८
सुदर्शन चरित्र	मुमुक्षु श्री विद्यानन्दि	"	८६	८३९
सुदर्शन चरित्र	ब्रह्म नेमिदत्त	"	८६	८४०
सुदर्शन चरित्र	मुनि नयनन्दि	अपभ्रंश	८९	८४१
सुप्य दोहड़ा	—	"	३५	३५०
सुभद्रानो चोदालियो	कवि मानसागर	हिन्दी	२६	२७०
सुभाषित काव्य	भ० सकलकीर्ति	संस्कृत	३५	३५१
सुभाषित कोश	हरि	"	२६	२७१
सुभाषित रत्न संदोह	अमितगति	"	३५,	३५२,
			६६	६६०
सुभाषित रत्नावली	भ० सकलकीर्ति	"	३५	३५३
सुभाषितार्णव	—	प्राकृत, संस्कृत	३५	३५५
सुभाषितावली	भ० सकलकीर्ति	संस्कृत	३६	३६०
सुमतारी ढाल	शिब्वराम	हिन्दी	६६	६६१
सुरपति कुमार चतुष्पदी	पं० भावसागर गणि	"	८६	८४४
सूक्ति मुक्तावली शास्त्र	सोमप्रभाचार्य	संस्कृत	३४	३४३
सूक्ति मुक्तावली सटीक	—	"	३५	३४६
सूर्य ग्रह घात	पं० सूर्य	हिन्दी	११५	१०६२
सूर्योदय स्तोत्र	पं० कृष्ण ऋषि	संस्कृत	१६१	१५००
सोनागिरी पञ्चीसी	कवि भागीरथ	हिन्दी	६६	६६२
सोली रो दास	—	"	६६	६६२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
संग्रह ग्रन्थ	भिन्न-भिन्न कर्ता हैं	संस्कृत	२०२	१८५८
संदीप्त वेदान्त शास्त्र	परमहंस परिव्राजकाचार्य	,,	२०२	१८५९
सम्बोध पंचासिका सार्थ	—	प्राकृत, संस्कृत	१९७	१८०९
सम्बोध पंचासिका	कवि दास	,,	२७	२७३
सम्बोध सन्नरी	जयशेखर सूरि	,,	२७	२७४
सम्बोध सत्तरी	—	प्राकृत, हिन्दी	२७	२७५
संस्कृत मंजरी	—	संस्कृत	१७९	१६६८
संयम वर्णन	—	अपभ्रंश, हिन्दी	२०२	१८६०
संवत्सर फल	—	संस्कृत	११६	१०९३

(ष)

षट् कर्मोपदेशे माला	अमर कीर्ति	अपभ्रंश	१९४	१७८०
षट् कर्मोपदेश रत्नमाला	भट्टारक लक्ष्मणसेन	संस्कृत	१९४	१७८२
षट् कर्मोपदेश रत्नमाला	अमरकीर्ति	अपभ्रंश	२३	२३७
षट् कारक प्रक्रिया	—	संस्कृत	१७४	१६०९
षट्कोण यन्त्र	—	,,	१६६	१५३६
षट् दर्शन विचार	—	,,	२३	२३९
षट् दर्शन समुच्चय टीका	हरिभद्र सूरि	,,	२३	२४०
षट् द्रव्यसंग्रह टिप्पण	प्रभाचन्द्र देव	प्राकृत, संस्कृत	२४	२४२
षट् द्रव्य विवरण	—	हिन्दी	२४	२४३
षट् पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	२४	२४४
षट् पाहुड सटीक	,,	प्राकृत, संस्कृत	२४	२४४
षट् पाहुड	,,	,,	२४	२४५
षट् पाहुड सटीक	श्रुत सागर	,,	२४	२४६
षट् पंचासिका	भट्टोत्पल	संस्कृत	११३	१०६५
षट् पंचासिका सटीक	—	,,	११४	१०७२
षट् पंचासिका सटीक	वराहमिहिराचार्य	,,	११४	१०७३
षट् त्रिशति गाथा सार्थ	मुनिराज ढाढ़सी	प्राकृत, संस्कृत	२४	२४९
षोडश कारण कथा	—	हिन्दी, संस्कृत	५०	४९४
षोडश कारण जयमाल	—	अपभ्रंश, संस्कृत	१५६	१४४५
षोडश कारण पूजा	—	प्राकृत, संस्कृत	१५६,	१४४६.
			२०२	१८५३
षोडश योग	—	संस्कृत	११४	१०७४

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
(क्ष)				
श्रावचूर्णी	—	संस्कृत	१६४	१७८३
श्रावक चूल कथा	—	”	५०	४६५
श्रावक धर्म कथन	—	”	१६४	१७८४
श्रावक प्रतिक्रमण	—	प्राकृत, संस्कृत	१६१	१५०२
श्रावक व्रत भण्डा प्रकरण सार्थ	—	”	१६४	१७८६
श्रावकाचार	पद्मनन्दि	प्राकृत	१६४	१७८७
श्रावकाचार	पं० आशावर	संस्कृत	१६५	१७६२
श्रावकाचार	—	प्राकृत	१६५	१७६४
श्रावकाचार	भट्टारक सकलकीर्ति	संस्कृत	१६५	१७६५
श्रावकाचार	पूज्यपाद स्वामी	”	१६५	१७६६
श्रावकाराधन	समय सुन्दर	”	१६५	१७६८
श्री कृष्ण का चित्र	—	—	६७	६०८
श्रीपाल कथा	पं० खेमल	संस्कृत	५०	४६६
श्रीपाल चरित्र	पं० रयधू	अपभ्रंश	६०	८४६
श्रीपाल चरित्र	—	संस्कृत, हिन्दी	६०	८५०
श्रीपाल रास	यशः विजय गरि	हिन्दी	६०	८५१
श्रीमान कुतूहल	विजय देवी	अपभ्रंश	६७	६६६
श्रुतबोध	कालिदास	संस्कृत	१०१	६४२
श्रुतबोध सटीक	गुजर	”	१०१	६४७
श्रुत स्कन्ध	ब्रह्मचारी हेमचन्द्र	संस्कृत, हिन्दी	१६१	१५०४
श्रुत स्कन्ध भाषाकार	पं० बिरधीचन्द्र	संस्कृत, हिन्दी	१६१	१५०४
श्रुतस्कन्ध	ब्रह्म हेमचन्द्र	प्राकृत	२७	२७७
श्रुतस्तपन विधि	—	संस्कृत	१८३	१६६६
श्रुतज्ञान कथा	—	”	५०	४६७
श्रेणिक गौतम संवाद	—	प्राकृत	२७	२८१
श्रेणिक चरित्र	शुभचन्द्राचार्य	संस्कृत	६०	८५३
श्रेणिक चरित्र	—	—	६१	८५५
श्रेणिक महाराज चरित्र	अमरकुमार	हिन्दी	६१	८५६
शृङ्खला वद्धश्री जिन- चतुर्विंशति स्तोत्र	—	संस्कृत	१६१	१५०१

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
------------	------	------	--------------	---------------------

(ह)

हट प्रदीपिका	आत्माराम योगीन्द्र	संस्कृत	१६७	१५४७
हरणवन्त चौपाई	ब्रह्मरायमल	हिन्दी	५०	४६६
हनुमान चरित्र	ब्रह्मजित	संस्कृत	६१	८५७
हनुमान टीका	प. दामोदर मिश्र	"	१२०	११२५
हनुमान कथा	ब्रह्म. रायमल	हिन्दी	५०	४६८
हनुमान चित्र	—	—	६६	६१२
हमन वर्जु यन्त्र	—	संस्कृत	१६६	१५४१
हरिवंशपुराण	ब्रह्म. जिनदास	"	१२६	११७३
हरिवंशपुराण	मुनि यशः कीर्ति	अपभ्रंश	१२६, २०३	११७६, १८६१
हरिश्चन्द्र चौपाई	ब्रह्म. वेणीदास	हिन्दी	५१	५००
हेमकथा	रक्षामणि	संस्कृत, हिन्दी	५१	५०२
होरा चक्र	—	संस्कृत	११६	१०६५
होली कथा	छोत्तर ठोलिया	हिन्दी	५१	५०३
होली पर्व कथा	—	संस्कृत	५१	५०५
होली पर्व कथा सार्थ	—	"	५१	५०७
होली रेणुका चित्र	पं० जिनदास	"	६२	८६२
हंसराज वच्छराज चौपाई	भावहर्ष सूरि	हिन्दी	५१	५०८
हंस वत्स कथा	—	"	५१	५०९
हंसराज वैद्यराज चौपाई	जिनोदय सूरि	अपभ्रंश	६२	८६३

(त्र)

क्षपणसार	माधवचन्द्र गीण	प्राकृत, संस्कृत	२७	२८२
क्षत्र चूड़ामणि	वादिभसिह सूरि	संस्कृत	५१	५१०
क्षुल्लक कुमार	सुन्दर	हिन्दी	५१	५११
क्षेम कुतूहल	क्षेम कवि	संस्कृत	६७	६६७
क्षेत्रपाल पूजा	शान्तिदास	"	१६१	१५०५

(ज)

जाताष्टक	—	संस्कृत	१६१	१५०६
जिपताचक्र	—	हिन्दी	११६	१०६६
जिभंगी	मि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	२७	२८३

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
त्रिभंगी टिप्पण	—	प्राकृत, संस्कृत	२७	२८४
त्रिभंगी भाषा	—	प्राकृत, हिन्दी	२८	२८७
त्रिलोक प्रज्ञप्ति	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	१८४	१६६८
त्रिलोक स्थिति	—	संस्कृत	१८४	१६६९
त्रिलोकसार	सिद्धान्त च०, नेमिचन्द्र	प्राकृत	१८४	१७००
त्रिलोकसार टीका	सहस्र कीर्ति	संस्कृत	१८४	१७०३
त्रिलोकसार टीका	ब्रह्मश्रुताचार्य	संस्कृत, प्राकृत	१८४	१७०५
त्रिलोकसार भाषा	सुमतिकीर्ति	हिन्दी	२८५	१७०७
त्रिलोकसार भाषा	दत्तनाथ योगी	"	१८५	१७०९
त्रिलोचन चन्द्रिका	प्रगल्भतर्कसिंह	संस्कृत	२०३	१८६२
त्रिवर्णाचार	जिनसेनाचार्य	"	१९७	१८११
त्रिषष्ठि पवणस्थविरावली चरित्र	हेमचन्द्राचार्य	"	६२	८६४
त्रिषष्ठि लक्षण महापुराण	पुष्पदन्त	अपभ्रंश	१२६	११७६
त्रिषष्ठि लक्षण महापुराण	गुणभद्राचार्य	संस्कृत	१२६	११८२
त्रिषष्ठि स्मृति	पं० आशाधर	संस्कृत	१२६	११७७
श्रेयठ इलाका पुरुष चौपई	पं० जिनमति	हिन्दी	५२	५१२

(३)

ज्ञान चौपड़	—	हिन्दी	६८	६१५
ज्ञान तरंगिणी	मुमुक्षु भट्टारक ज्ञानभूषण	संस्कृत	१६७	१५४८
ज्ञान पञ्चमीसी	पं० बनारसीदास	हिन्दी	२८	२८८
ज्ञान प्रकाशित दीपार्णव	—	संस्कृत	११६	१०९७
ज्ञान हिमची	कवि जगरूप	हिन्दी	६७	६६८
ज्ञानसूर्योदय नाटक	वादिचन्द्र	संस्कृत	१२०	११२६
ज्ञानाकुशं स्तोत्र	—	संस्कृत, हिन्दी	१६२	१५०७
ज्ञानाकुशं	—	संस्कृत	१६६	१५६०
ज्ञानार्णव	शुभचन्द्रदेव	"	१६७	१५५१
ज्ञानार्णव गद्य टीका	श्रुतसागर	"	१६८	१५५५
ज्ञानार्णव तत्त्व प्रकरण	—	हिन्दी, संस्कृत	१६८	१५५६
ज्ञानार्णव वचनिका	पं० जयचन्द्र	संस्कृत	१६८	१५५८
ज्ञानार्णव वचनिका	शुभचन्द्राचार्य	हिन्दी	१६८	१५५९
ज्ञानार्णव वचनिका टीका	पं० जयचन्द्र छावड़ा	"	१६८	१५५९

ग्रन्थकार एवं ग्रन्थ

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
अकलंक	प्रायश्चित्त शास्त्र	१७६६	संस्कृत
	राजवार्तिक	२०७	"
अक्षयराम लुहाड़िया	मलय सुन्दर चरित्र	७६२	हिन्दी
अग्निवेश	अंजन निदान सटीक	२६०	संस्कृत और हिन्दी
अनन्तकीर्ति	पल्लव विधान पूजा	१३३५	संस्कृत
अनन्त भट्ट	तर्क संग्रह	१११४	"
	सिद्धान्त चन्द्राय	११२१	"
अनुप कवि	मित्यात्म खण्डन	११२३	हिन्दी
अनुमति स्वरूपाचार्य	सारस्वत दीपिका	१६१६	संस्कृत
	सारस्वत प्रक्रिया पाठ	१६२०	"
अभयकुमार	श्रेणिक चरित्र	८५६	हिन्दी
अमरदेव सूरि	जयतिद्वय स्तोत्र	१२७७	प्राकृत और हिन्दी
	नवतत्त्व वर्णन	१७६	"
अमरवल्लो	ब्राह्मवली पाश्चिमी	७७७	प्राकृत
अभिनव गुप्ताचार्य	ईश्वर प्रत्यभिज्ञा सूत्र	११०८	संस्कृत
अभिनव धर्मभूषणाचार्य	न्यायदीपिका	१११७	"
अमरकीर्ति	जिनपूजा पुरन्दर अमर विधान	१२८०	अपभ्रंश
	विशेष महाकाव्य टीका (ऋतुसंहार)	६३२	संस्कृत
	पद्म कर्मोपदेश रत्नमाला	२३७, १७८०	अपभ्रंश
अमरचन्द	अमर समुच्चय	१६०५	संस्कृत
अमरसिंह	अमरकोश	६७७	"
	निगानुशासन	७१०	"
अमोघपुष्प दन्त	महिम्न स्तोत्र सटीक	१३६६, १३६७	"
अमोघ हर्ष	प्रश्नोत्तर रत्नमाला	२०४	"
अमृतचन्द्र सूरि	प्रवचनसार वृत्ति	१६६	प्राकृत और संस्कृत
	समयसार सटीक	२५१, ५२०	"

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
अमृतचन्द्राचार्य	पुरुषार्थ सिद्धयुपाय	१८७	संस्कृत
अमृतवत्स	पद्मावती सहस्रनाम	१३३१	"
अमितगति सूरि	धर्म परीक्षा	५६१, १७३०	"
	सुभाषित रत्न संदीप	३५२, ६६०	"
अशग कवि	वर्द्धमान चरित्र	८२२	"
अश्वसेन	वडा स्तवन	१३६४	हिन्दी
अश्विनीकुमार	अश्विनी कुमार संहिता	२८६	संस्कृत
आत्माराम योगीन्द्र	हट प्रदीपिका	१५४७	"
आनन्द	कोकसार	१८१६	हिन्दी
आनन्ददेव	रघुवंश टीका	६१६	संस्कृत
	शिशुपालवध टीका	६४३	"
पं० आशाधर—	इष्टोपदेश टीका	३२	"
	ग्रहशान्ति विधान	६६३	"
	जिनकल्याणमाला	१७२८	"
	जिन यज्ञकल्प	११८२, १६७७	"
	धर्मामृत सूक्ति	१७३३	"
	भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र	१३८६	"
	महर्षि स्तोत्र	१३६३	"
	सहस्रनाम स्तोत्र	१४७०	"
	सागारधर्मामृत	१८०१	"
	सिद्धचक्रपूजा	१४६४	"
	श्रावकाचार	१७६२	"
	त्रिषष्टि स्मृति	११७७	"
उद्भट्ट	सिद्धान्त चन्द्रिका	१६५२	"
उदय रत्न	नेमजी का पद	१८३	हिन्दी
उ ति	तत्त्वार्थसूत्र	१३३	संस्कृत
एकनाथभट्ट	किरातार्जुनीय सटीक	५३३	"
ऋषि देवीचन्द्र	यजसिंह कुमार चौपई	१८१८	हिन्दी
तिर्ति	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	१३८	संस्कृत और हिन्दी
पं० कनककुशलगण	वर्द्धमान जिनस्तवन सटीक	१४१७, १४७६	संस्कृत

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
कनकामर	करकण्डु चरित्र	७१७	अपभ्रंश
कन्निराम शाह	मिथ्यात्व खण्डन नाटक	११२४	हिन्दी
कल्याण	पद्मावती छन्द	११२३	"
कल्याण सरस्वती	लघु सारस्वत	१५६४	संस्कृत
कार्तिकेय	कार्तिकेयानुप्रेक्षा	६७, १७६६	प्राकृत
पं० कामपाल	चौबीस कथा	३६४	हिन्दी
कालिदास	कुमारसम्भव	५३४	संस्कृत
	मेघदूत	६००	"
	रघुवंश महाकाव्य	६१५, ६१८	"
	श्रुतबोध	६४२	"
	ऋतुसंहार	६३२	"
काहना छावड़ा	गुणस्थान कथा	७२	हिन्दी
पं० काशीनाथ	ब्रह्म प्रदीप	१०१०	संस्कृत
	लग्न चन्द्रिका	१०३२	"
किशनसिंह	क्रिया कोश	७१, ६६०	हिन्दी
	नागश्री चरित्र	७५४	"
कीर्तिवाचक	एक गीत	५२४	"
कीर्तिविजय	पञ्चमी सप्ताय	५८६	"
कुन्दकुन्दाचार्य	दोहा पाहुड़	१५८	प्राकृत
	षट् पाहुड़	२४४	"
कुमुदचन्द्राचार्य	कल्याण मन्दिर स्तोत्र	१२२५	संस्कृत
	शील विनती	६४५	हिन्दी
कुलभद्र	सार समुच्चय	१८०४	संस्कृत
कुंवर भूवानीदास	खूदीप भाषा	६१७	हिन्दी
कृपाराम	ज्योतिषसार भाषा	६३७	"
	लघु जातक भाषा	१०३७	"
पं० कृष्ण ऋषि	सूर्योदय स्तोत्र	१५००	संस्कृत
पं० केदारनाथ नट्ट	वृत्त रत्नाकर सटीक	३६६	"
केशरलाल	शोभन स्तोत्र	१४४४	"
केशवदास	केशव वावनी	५३७	हिन्दी
केशव मिश्र	तर्क परिभाषा	१२१, १११४	संस्कृत

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
केशवाचार्य	जीव तत्व प्रदीप	११२	प्राकृत और संस्कृत
खुशालचन्द	सुगन्धदशमी कथा भाषा	४८६	हिन्दी
पं० खेत्ता	सम्यक्त्व कौमुदी	४७६	संस्कृत
पं० खेमल	श्रीपाल कथा	४६६	,,
गंगादास	छन्दोमंजरी	६२२	प्राकृत और संस्कृत
	पुष्पांजली व्रतोद्यापन	५८८	हिन्दी
गजसार	चौबीस दण्डक	१०८	प्राकृत
	दण्डक सूत्र	१४२	,,
	विचार षट्त्रिंशक	२३२	प्राकृत और हिन्दी
गोरखनाथ	योगसाधन विधि	१५४४	हिन्दी
गोविन्द स्वामी	अपामार्ग स्तोत्र	११६२	संस्कृत
	पद्मावती पूजन	१३२४	,,
गौतमस्वामी	इष्टोपदेश	२७	,,
	ऋषिमण्डलस्तोत्र सार्थ	१२२३	,,
गुर्जर	श्रुतबोध सटीक	६४७	,,
गुणनन्द	ऋषि मण्डल पूजा	१२१७	,,
	रोटतीज कथा	४६१	,,
गुणभद्राचार्य	आत्मानुशासन	१४	,,
	जिनदत्त कथा	३६६	,,
	त्रिषष्टि लक्षण महापुराण	११७६	,,
गुणरयणभूषण	जीव प्ररूपण	११३	प्राकृत
गुलाबचन्द	एक पद	३७७	हिन्दी
गुलाल	वाद पच्चीसी	२३१	,,
पं० घनश्याम	चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति	१२६०	संस्कृत
चण्ड कवि	प्राकृत लक्षण विधान	३३१	प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश इत्यादि
चण्डेश्वर सेठ	रत्न परीक्षा	१८५१	संस्कृत
चन्द्रकीर्ति	तत्त्वधर्मामृत	१२२	,,
चम्पा	राजनीतिशास्त्र	११३६	हिन्दी
चाणक्य	चाणक्यनीति	११३०	संस्कृत
	बृहद् चाणक्य राजनीतिशास्त्र	११४०	,,

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
	बंकचूल कथा	४३६	"
	लब्धि विधान व्रत कथा	४६२	"
	सम्यक्त्व रास	६५३	"
	सुगन्धदशमी कथा	४६१	"
	हरिवंश पुराण	११७३	संस्कृत
जिनदेव	मदन पराजय	५६४	"
जिनदास श्रावक	नवकार रास	१५२४	हिन्दी
जिनप्रभसूरि	गौतम स्तोत्र	१२५२	संस्कृत
	चतुर्विंशति जिन स्तवन	१२६४	"
	पंच परमेष्ठी स्तोत्र	१३६१	"
पं० जिनमति	त्रेपठ श्लाकापुरुष चौपई	५१२	हिन्दी
जिनवल्लभ सूरि	प्रश्नावली	१००६	संस्कृत
	पिण्डविशुद्धावकूरि	१८३७	संस्कृत और प्राकृत
जिनसमुद्रसूरि	पार्श्वनाथ विनती	१८३६	अपभ्रंश
जिनसेनाचार्य	चक्रधर पुराण	११४७	संस्कृत
	सहस्रनाम स्तोत्र	१४७१	"
	त्रिवर्णाचार	१८११	"
जिनहर्ष सूरि	चन्दनराजमलयगिरि चौपई	३६३	हिन्दी
	शालीभद्र महामुनि चरित्र	८३१	"
जिनोदय सूरि	हंसराज वैद्यराज चौपई	८६३	अपभ्रंश
जीवन्धर	प्रतापसार काव्य	५८५	हिन्दी
	रत्नसार	१७७६	संस्कृत
जीवणदास	शनिश्चर कथा	४६८	हिन्दी
जोधराज गोदीका	प्रीतिकर मुनि चरित्र भाषा	७७५	"
	सम्यक्त्व कौमुदी	४८२	"
जोहरीलाल	आलोचना पाठ	२५	"
पं० टोडरमल	गोम्मटसार भाषा	७७	राजस्थानी
	मोक्षमार्ग प्रकाशक वचनिका	२२५	"
डालूराम	अढाई द्वीप पूजन भाषा	११८८	हिन्दी
मुनि ढाढसी	ढुण्डिया मत खण्डन	१८२७	प्राकृत और संस्कृत
	ढाढसी मुनि गाथा	१२०	"

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
	षट् त्रिशंति गाथा	२४६	"
तर्कसिंह	त्रिलोचन चन्द्रिका	१८६२	संस्कृत
पं० ताराचन्द्र श्रावक	चतुर्दशीव्रतोद्यापन	१२५३	"
तिलक	शीघ्रबोध टीका	१०५७	"
तुलसीदास	रामाज्ञा	६२०	हिन्दी
पं० तेजपाल	वरांग चरित्र	८२६	अपभ्रंश
	सम्भवनाथ चरित्र	८३३	"
दण्डिराज दैवज्ञ	जातक	६७५	संस्कृत
दत्तनाथ योगी	त्रिलोकसार भाषा	१७०६	हिन्दी
पं० दामोदर	गुण रत्नमाला	२६७	संस्कृत
	चन्द्रप्रभ चरित्र	७२४	"
	पञ्चहण महाराज चरित्र	७५७	अपभ्रंश
	वाक्य प्रकाश सूत्र सटीक	१५६६	संस्कृत
	संगीतसार	११२६	"
दामोदर मिश्र	हनुमान टीका	११२५	"
दास कवि	सम्बोध पंचासिका	२७३	प्राकृत और संस्कृत
दीपचन्द्र वात्सक	संघनपथ्य निर्णय	३२५	संस्कृत
देवकीराम	मूर्तचिन्तामणि सटीक	१०१५	"
देवकुमार	माधवानन्द कामकन्दला चौपई	४४६	हिन्दी
देवनन्दि	शंक गर्भ खण्डार चक्र	४२	संस्कृत
	जिनगुण सम्प्रति व्रतोद्यापन	१२७६	"
	लघु स्वयम्भू स्तोत्र	१४०७	"
	सिद्धप्रिय स्तोत्र	१४६६	"
देवसेन	पाराधनासार	२२	प्राकृत
	आनाप गह्वति	११०३	संस्कृत
	दर्शनसार	१४६	"
	नयनक	११०३	संस्कृत और प्राकृत
	भाव संग्रह	२१६	प्राकृत
	सुखबोधार्थ माला	२७६	संस्कृत
देवाचार्य	स्वाहादरत्नाकर	२६२	"
देवेश्वर	बन्धस्वामित्व	२०६	प्राकृत और हिन्दी

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
	सिद्ध दण्डिका	२६७	प्राकृत और संस्कृत
दौलतराम	जीव चौपई	१११२	हिन्दी
	दण्डक चौपई	१४१	"
धनंजय	धनंजयनाममाला	६६४	संस्कृत
	नाममाला	७०५	"
धनदेव	समवशेरण स्तोत्र	१४५१	"
धन्वन्तरि	योग शतक	३१८	संस्कृत और हिन्दी
	सन्निपातकलिका लक्षण	३३७	"
पं० धनपाल	बाहुबली चरित्र	७७६	अपभ्रंश
	भविष्यदत्त चरित्र	७८८, १८४२	"
	शोभन श्रुति	२३६	संस्कृत
धरणेन्द्र	चिन्तामणि पार्श्वनाथस्तोत्र	१२७०	"
धर्मचन्द	गीतमस्वामी चरित्र	७२०	"
धर्मदास गरिण	उपदेशमाला	१७१४	अपभ्रंश
धर्मदेव	सारस्वत व्याकरण टीका	१६४८	संस्कृत
पं० धर्मधर	नागकुमार चरित्र	७५२	"
धर्मनन्दाचार्य	चतुःषष्ठी महायोगिनी महास्तवन	१२६७	हिन्दी
धर्मदास क्षुल्लक	सम्मेदशिखर महात्म्य	१४५५	"
धर्म समुद्रवाचक	रात्रि भोजन दोष विचार	१७७७	"
द्यानतराय	दशलक्षण पूजा	१३०४	"
	प्रतिमा बहोत्तरी	१६४	"
नथमल	महिपाल चरित्र भाषा	७६४	"
	स्थूलभद्र मुनि गीत	६६४	"
नन्दगुणक्षोणी	लघु स्तवन सटीक	१४०६	संस्कृत
नन्ददास	अनेकार्थ मंजरी	६६६	हिन्दी
	मान मंजरी नाममाला	७०८	संस्कृत
नन्दन	आर्य वसुधाराधारिणी- नाम महाविद्या	५२१, ६२५, १६६५	"
नन्दसेन	नन्द वत्तीसी	११३१	संस्कृत और हिन्दी
नयचन्द्र सूरि	पार्श्वनाथ स्तवन	१४७२	संस्कृत
नयनन्दि	विशेष सत्ता त्रिभंगी	२३३	प्राकृत

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
नयनसुख	सुदर्शन चरित्र	७४३	अपभ्रंश
	वैद्यकसार	३२७	हिन्दी
	वैद्यमनोत्सव	३३१	,,
नयसुन्दर	शत्रुंजय तीर्थद्वार	३३६	,,
पं० नरसेन	वर्द्धमान काव्य	८२१	अपभ्रंश
नवलदास शाह	वर्द्धमान पुराण	११६६	हिन्दी
नागचन्द्र मुनि	सरस्वती स्तुति	१४६८	संस्कृत
नागचन्द्र सूरि	एकीभाव स्तोत्र सटीक	१२१२	,,
	विपापहार स्तोत्रादि टीका	१४३५	,,
नागार्जुन	रमेन्द्रमंगल	३२२	,,
नारचन्द्र	ज्योतिषसार	६८०	,,
नारायण	मुहूर्तचिन्तामणि	१०१६	,,
नारायणदास	छन्दसार	६२१	हिन्दी
नीलकण्ठ	ताजिक नीलकण्ठी	६६१	संस्कृत
सि०च० नेमिचन्द्राचार्य	उदय उदीरण त्रिभंगी	३६	प्राकृत
	कर्म प्रकृति	५०	,,
	गोम्मटसार	७७	,,
	चतुर्दशगुणस्थान चर्चा	८७, ८८	हिन्दी
	चौबीस ठाणा चौपई	१०६	संस्कृत
	जिन सुप्रभात स्तोत्र	१२८६	,,
	द्रव्य संग्रह	१४७	प्राकृत
	द्विसन्धानकाव्य	५५६	संस्कृत
	बन्धोदय उदीरण सत्ता विचार	२०८	प्राकृत
	भाव त्रिभंगी सटीक	१८४४	प्राकृत और संस्कृत
	व्युच्छति त्रिभंगी	२३०	प्राकृत
	बृहद् द्रव्य संग्रह सटीक	२२६	,,
	वैद्य रत्नमाला	३३३	हिन्दी
	सत्ता त्रिभंगी	२८३, ६६१	प्राकृत
	त्रिलोक प्रज्ञप्ति	१६६८	,,
	त्रिलोकसार	१७००	,,

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
पद्मकीर्ति	पार्श्वनाथ पुराण	११५८	अपभ्रंश
पद्मनन्दि	अनन्तव्रतकथा	३६६	संस्कृत
	चतुस्त्रिंशद भावना	६०	,,
	धर्म रसायण	१६५	प्राकृत
	धर्मोपदेशामृत	१७४५	संस्कृत
	पद्मनन्दि पंचविंशति	४२५, १७४६, १७५४	संस्कृत
	श्रावकाचार	१७८७	प्राकृत
पद्मनाभ कायस्थ	यशोधर चरित्र	८०६	संस्कृत
पद्मप्रभसूरि	पार्श्वनाथ स्तवन सटीक	१३४३	,,
	भूवन दीपक	१०१३	संस्कृत और हिन्दी
पद्मलाल	तेरहपंथखण्डन	१४०	हिन्दी
परमानन्द	निघण्टुनाम रत्नाकर	३०७	संस्कृत
पर्वतधर्मार्थी	द्रव्यसंग्रह सटीक	१५२	प्राकृत और संस्कृत
पद्म सहाय	पिंगलछन्दशास्त्र	६२५	अपभ्रंश
पाणिनी	लघु सिद्धान्त कौमुदी	१५६५	संस्कृत
पार्श्वचंद्र	साधू वन्दना	१४७६	,,
पार्श्वदेवगण्ड	पद्मावत्याष्टक सटीक	१३३२	,,
पार्श्वनाग	आत्मानुशासन	१६	,,
पुष्पदन्त	उत्तरपुराण	११४२	अपभ्रंश
	नागकुमार चरित्र	७५०	,,
	यशोधर चरित्र	७६८	,,
	वर्द्धमान चरित्र	८२५	,,
	त्रिपण्डि लक्षण महापुराण	११७६	,,
पूज्यपाद	इष्टोपदेश	२६	संस्कृत
	उपासकाचार	१७१७	,,
	समाधिशतक	२६०	,,
	श्रावकाचार	१७६६	,,
पूरादेव	यशोधर चरित्र	८१५	,,
पूरासिन	योगशतक	३१४	,,
पृथ्वीधराचार्य	भूवनेश्वरी स्तोत्र	१८४५	,,

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
	धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई	४१२	"
पं० लालू	कुमार सम्भव सटीक	५३६	संस्कृत
मुनि लिंगयसूरि भट्टोपाध्याय	अमरकोशवृत्ति	६८२	"
पं० लोकसेन	दशलक्षण कथा	४०६	"
लोलिमराज कवि	वैद्य जीवन	३३०	"
पं० लोहर	चौबीस ठाणा चौपई	१०३	प्राकृत और हिन्दी
वत्स	मेघदूत सटीक	६०७	संस्कृत
पं० वरदराज	ताकिकसार संग्रह	१११५	"
भ० वर्द्धमान	परांग चरित्र	८२७	"
वररुचि	एकाक्षर नाममाला	६८४	"
	समास प्रयोग पटल	१६३३	"
बराहमिहिराचार्य	बृहद् जातक सटीक	१०४५	"
	षट् पंचासिका सटीक	१०७३	"
राज	पल्य विचार	१००६	"
वसुनन्दि	उपासकाध्ययन	१७१८	"
वाग्भट्ट	नेमि निर्वाण महाकाव्य	१७३२	"
वादिचन्द्र	ज्ञान सुर्योदय नाटक	११२६	प्राकृत और संस्कृत
वादिभसिंह	क्षत्र चुड़ामणि	५१०	संस्कृत
वादिराजसूरि	एकीभाव स्तोत्र	१२०४	"
	विषापहार विलाप स्तवन	१४३७	"
वामदेव	भाव संग्रह	२२१	"
वासवसेन	यशोधर चरित्र	८१७	"
विक्रमदेव	नेमिदूत काव्य	५७४	"
विजयदेवी	श्रीमान् कुतुहल	६६६	अपभ्रंश
विजयराम	धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई	४१२	हिन्दी
विजयानन्द	क्रियाकलाप	१५८०	संस्कृत
मुमुक्षु विद्यानन्द	यशोधर चरित्र	७६५	"
	सुदर्शन चरित्र	८३६	"
विद्यानन्दि	अष्टसहस्रि	१०६६	"
	द्विजपाल पूजादि विधान	१२०८	"
विनीतसागर	विमलनाथ स्तवन	१४२६	हिन्दी

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
विमल	प्रश्नोत्तर रत्नमाला	५८६	संस्कृत
भ० विश्वभूषण	इन्द्रध्वज पूजन	११६८	"
विशाल कीर्ति	रुक्मणी व्रत विधान कथा	१६८६	मराठी
विष्णु	आलाप पद्धति	२४	संस्कृत
	पंचतंत्र	११३८	"
	सरस्वती स्तोत्र	१४६७	"
विष्णुशोभन	समवशरण स्तोत्र	१४५०	"
वीरनन्दि	आचारसार	१७१०	"
वृन्दावनदास	चौबीस तीर्थंकरों की पूजा	१२७५	संस्कृत और हिन्दी
वेण्णिराम	जिन रस वर्णन	१२८४	हिन्दी
वेद व्यास	गण्डपुराण	११४६	संस्कृत
	शिवपुराण	११७१	"
शान्तिदास	क्षेत्रपाल पूजा	१५०५	"
शान्ति हर्ष	गुणुमाल महागुनि चोपई	८३४	हिन्दी
शिब्वराम	गुमतारी ढाल	६६१	"
शिवजीलाल	दर्शनसार सटीक	१४४	प्राकृत और संस्कृत
शिवदास	वैताल पच्चीसी कथानक	४६६	संस्कृत
शिववर्मा	कातन्त्ररूपमाला	१५७४	"
	नन्दीश्वर पंक्ति विधान	१३१२	"
शिव सुन्दर	पार्श्वनाथ स्तोत्र	१३३६	"
पं० शिवा	द्वि घटिक विचार	६६६	"
शीशराज	भरत बाहुवली वर्णन	४४१	हिन्दी
शुभचन्द्र सूरि	आणाधराष्टक	११६६	संस्कृत
शुभचन्द्राचार्य	अष्टक सटीक	१६७१	प्राकृत और संस्कृत
	चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा	१२६२	संस्कृत
	पत्यविधान पूजा	१३३३	"
	सिद्धचक्र पूजा	१४६२	"
	श्रेणिक चरित्र	८५३	"
	ज्ञानरिण्य	१५५६	"
शंकर भट्ट	वैद्य विनोद	३३४	"
शंकराचार्य	अन्नपूर्णा स्तोत्र	११६०	"

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
सकलकीर्ति	भारती स्तोत्र	१३८७	"
	सिद्धान्त विन्दु स्तोत्र	१४६६	"
	ऋषभनाथ चरित्र	७१५	"
	जम्बू स्वामी चरित्र	७३३	"
	धन्यकुमार चरित्र	७४२	"
	धर्म प्रश्नोत्तर श्रावकाचार	१६४, १७३१	"
	पद्मपुराण	११५५	"
	प्रश्नोत्तरपासकाचार	२०३, १७५६	"
	पुराणसार संग्रह	११६३	"
	मल्लिनाथ चरित्र	७६३	"
	मूलाचार प्रदीपिका	१७७०	"
	यशोधर चरित्र	८११	"
	शान्तिनाथ चरित्र	८१६	"
	सुकुमाल चरित्र	८३५	"
	सुदर्शन चरित्र	८३८	"
	सुभाषित काव्य	२५१	"
	सुभाषित रत्नावली	३५३, ३६०	"
	श्रावकाचार	१७६५	"
सकल भूषण	उपदेशरत्नमाला	१७१५	"
सनतकुमार	रामचन्द्र स्तवन	१४०२	"
सदानन्द	नयचक्रवालावबोध	१७२	हिन्दी
सदासुख	तत्त्वार्थ सूत्र टीका	१३७	संस्कृत और हिन्दी
समन्तभद्र	आत्ममीमांसा	५	संस्कृत
	आप्त मीमांसा	११०१	"
	चतुर्विंशति तीर्थकर स्तुति	१२५६	"
	देवागम स्तोत्र	१३१०	"
	रत्नकरण्ड श्रावकाचार	१७७१	"
	वृहद् स्वयंभू स्तोत्र	१४२३	"
समय सुन्दर उपाध्याय	वृत्त रत्नाकर सटीक	६३६	"
समय सुन्दर गणेश	साधू वन्दना	१४७८	हिन्दी
	अर्जुन चौपई	७१२	"